सद्गत मोदी श्रीयुत प्रेमचंद दोलतराम स्मारक-ग्रन्थांक १







अमदावाद निवासी सद्गत श्रावक श्रीयुत प्रेमचंद दोलतराम मोदीना पुण्यस्मरणार्थ, तेमना स्नेही रा. ब. श्रीगिरधरलाल उत्तमराम पारेख, बी ए, एल्एल् बी, (पब्लिकप्रोसीक्युटर-अमदावाद) एमणे अर्पण करेला द्रव्यमाथी आ ग्रन्थ प्रकाशित करवामा आव्यो छे.

जैन साहित्य
संशोधक ग्रन्थमाला

जीतकल्प-सूत्र

संपादक—
मुनि जिन वि

अस्य जीतकल्पसूत्रस्य प्रथमप्रकाशनकर्तृभ्यः
जर्मनि-विषयवास्तव्य-अध्यापक
श्री अर्न्स्त लॉयमान्
(Ernst Leumann)
नामधेय-पण्डितप्रवरेभ्यः
समर्पितमिदं ग्रन्थरत्नम्

सम्पादकेन

जैन साहित्य संशोधक ग्रन्थमाला

ग्रन्थाङ्क ७.

श्रीजिनभद्रगणि-क्षमाश्रमण-विरचितं

जीतकल्प-सूत्रम्

[श्रीचन्द्रसूरिसन्दृब्ध-विषमपदव्याख्याविभूषित-

श्री सि द्ध से न ग णि कृ त-

बृहच्चूर्णिसमन्वितम्]



संशोधक तथा संपादक

मुनि जिन विजय

[आचार्य-गूजरात पुरातत्त्व मन्दिर-अमदाबाद]

प्रकाशक

जैन साहित्य संशोधक समिति

(अ म दा बा द)

खि० स० १९२६] [वि० स० १९८२

[मूल्यं रूप्यक-त्रयम्]

अस्य जीतकल्पसूत्रस्य प्रथमप्रकाशनकर्तृभ्यः
जर्मनि-विषयवास्तव्य-अध्यापक
श्री अर्न्स्त लॉयमान्
(Ernst Leumann)
नामधेय-पण्डितप्रवरेभ्यः
समर्पितमिदं ग्रन्थरत्नम्
सम्पादकेन

जैन साहित्य संशोधक ग्रन्थमाला

ग्रन्थाङ्क ७

श्रीजिनभद्रगणि–क्षमाश्रमण–विरचितं

जीतकल्प-सूत्रम्

[श्रीचन्द्रसूरिसन्दब्ध-विषमपदव्याख्याविभूषित-

श्रीसिद्धसेनगणिकृत-

बृहच्चूर्णिसमन्वितम्]



संशोधक तथा संपादक

मुनि जिन विजय

[आचार्य–गूजरात पुरातत्त्व मन्दिर–अमदाबाद]

प्रकाशक

जैन साहित्य संशोधक समिति

(अमदाबाद)

ख्रि० स० १९२६]

[वि० सं० १९८२

[मूल्यं रूप्यक-त्रयम्]

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya Sagar Press,
26-28, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by—
Muni Jina Vijayaji,
(Jaina Sāhitya Samśodhaka Samiti)
AHMEDABAD

संपादकीय प्रस्तावना

आधारभूत प्रतिओनो परिचय

जीतकल्पसूत्रनी प्रस्तुत आवृत्ति नीचे जणावेली हस्तलिखित प्रतिओना आधारे तैयार करवामा आवी छे.—

[१] जीतकल्पसूत्र मूलपाठ

(A) ताडपत्र ऊपर लखेली बृहच्चूर्णिसाथेनी, पूनाना भाडारकर ओरिएन्टलरीसर्च इन्स्टीट्युटमांना राजकीय ग्रन्थ संग्रहनी ।

(B) कागळ ऊपर लखेली केवळ मूलमात्रनी ३ पानानी, गूजरातपुरातत्त्वमन्दिरमा (अमदावाद) ना संग्रहनी ।

(C) तिलकाचार्यकृत वृत्तिसमेतनी श्रीयुत के. प्रे मोदी मारफत आवेली ।

(D) जर्मन विद्वान् डॉ अर्नस्त लॉयमान संपादित अने Sitzungsberichte der Koniglich Preussischen Akademie der Wissenschaften, Berlin, 1892 मा रोमनाक्षरमा मुद्रित ।

[२] सिद्धसेनसूरिकृत बृहच्चूर्णि

(A) पूनाना भाडारकर ओरिएन्टल रीसर्च इन्स्टीट्युटमांना संग्रहमानी ताडपत्रनी न २३, १८८०–८१ वाळी प्रति । ए प्रतिने आ आवृत्तिमा पाठान्तर सूचववा माटे A संज्ञा आपवामा आवी छे । ए प्रतिमा लेखनकाल आपेलो नथी पण लीपिनी आकृति ऊपरथी ते विक्रमना १२ मा सैकामा लखाएली होय तेम लागे छे। प्रति बहु शुद्ध नथी। एमा मूळ सूत्र-पाठ पूर्ण आपेलो छे ।

(B) उक्त संग्रहमानी ताडपत्रनी न २४ , १८८०–८१ वाळी बीजी प्रति । ए प्रतिना पाठान्तर सूचववा माटे, एने अहिं B संज्ञा आपी छे । ए, प्रमाणमा काईक वधारे शुद्ध छे। हासियाओमा घणी जग्याए टूंका टिप्पणो पण आपेला छे। पण एनां अन्तनां केटलांक पाना नष्ट थई गया छे तेथी एनो पण लेखनकाल ज्ञात थई शक्यो नथी। वर्णाकृति ऊपरथी अनुमाने ए १३ मा सैकामा लखाएली होय तेम जणाय छे ।

[३] श्रीचंद्रसूरिरचित चूर्णिविषमपदव्याख्या.

(A) श्रीयुत के प्रे मोदी मारफत मळेली मुनिवर्य्य श्रीहंसविजयजीना शास्त्रसंग्रहमांनी कागळ ऊपर लखेली नवीन प्रति ।

(B) आचार्य श्रीविजयनेमी सूरिना संग्रहमानी ए ज जातनी बीजी प्रति ।

आ बन्ने प्रतिओ कोई एक ज मूल प्रति ऊपरथी लखाएली नवीन नकलो छे । प्रतिओ सामान्यरीते बहु ज अशुद्धतावाळी छे । जूनी प्रतिनी लीपिना वळणने बराबर नहीं सम-

जनार एवा कोई सीखाउ लहियाओना हाथे आ नकलो थई छे तेथी एमां, ए लहि ओए, एक अक्षरना बदले बीजो अक्षर लखी नाखी, ग्रन्थनी अशुद्धिमा घणो व करी दीधो छे। उदाहरण तरीके–'ए' अक्षरनी जग्याए 'प', 'थ' नी जग्याए 'घ', ना बदले 'इ', 'ख' ना बदले 'सू', 'म' ना माटे 'च', अने 'घ' ना माटे 'ब', पक्तिए पक्तिए अनेक वर्णोनो विपर्यय करी दीधेलो नजरे पडे छे। आम, जूनी शुद्ध प्रतिनी प्राप्तिना अभावे ए व्याख्याना संशोधनमां घणी कठिनता अनुभववी पडी अने तेथी कचित्स्थळे तो अशुद्ध पाठने ज स्थानस्थित राखवो पड्यो छे।

जिनभद्रगणि-क्षमाश्रमण

आ जीतकल्पसूत्रना कर्ता जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण छे, एम चूर्णिकारनो स्पष्ट उल्लेख छे, अन्यान्य टीकाकारोए तथा अन्य ग्रथकारोए पण ए बाबतनो घणा ठेकाणे निर्देश करेलो छे

आवश्यक सूत्रना सामायिकाध्ययन ऊपरनुं लगभग पाच हजार ग्रन्थप्रमाण प्राकृतगाथावद्ध भा ते विशेषावश्यक भाष्यना नामे सुप्रसिद्ध छे तेना कर्ता पण आ ज जिनभद्र गणी छे भाष्यग्रन्थ जैन प्रवचनमा एक मुकुटमणि समान लेखाय छे अने तेथी भाष्यकार जिनभ ... जैनशास्त्रकारोमा अग्रणी मनाय छे। जैन दर्शन प्रतिपादित ज्ञानविषयक विचारने केव श्रद्धागम्य–विषयनी कोटिमाथी बुद्धिगम्य–विषयनी कोटिमा उतारवानो सुसंगत प्रयत्न, सौ प्रथम एमणे ज ए महाभाष्यमा कर्यो होय, एम जैन साहित्यना विकासक्रमनु सिंहावलोक करता जणाई आवे छे। जैन आगमोना संप्रदायगत रहस्य अने अर्थना, पोताना समय अद्वितीय ज्ञाता तरीके, ए आचार्य सर्वसम्मत गणाता हता, अने तेथी एमने 'युगप्रधान' एवु मह त्त्वस्थापक उपपद मळेलु हतु। जीतकल्पचूर्णिना कर्ताए, प्रारभमा, ५ थी ११ मा सुधीना पद्य आ आचार्यनी जे गभीरार्थक स्तुति करेली छे ते ऊपरथी एमनी ज्ञानगभीरता अने साम्प्रदायि प्रतिष्ठिततानुं काईक सूचन थाय छे। आ पद्योनो भावार्थ आ प्रमाणे छे.—

५. अनुयोग एटले आगमोना अर्थ ज्ञानना धारक, युग-प्रधान, प्रधानज्ञानियोने बहुमत, स श्रुति अने शास्त्रमा कुशल, अने दर्शन–ज्ञान उपयोगना मार्गस्थ एटले मार्गरक्षक।

६ कमलना सुवासने अधीन थएला भ्रमरो जेम कमलनी उपासना करे छे तेम ज्ञानरूप मक रन्दना पिपासु मुनियो जेमना मुखरूप निर्झरमाथी नीकळेला ज्ञानरूप अमृतनु सदा सेवन करे छे

७ स–समय अने पर–समयना आगम, लीपि, गणित, छन्द अने शब्दशास्त्रो ऊपर करेल व्याख्यानोथी निर्मित थएलो जेमनो अनुपम यश.पटह दशे दिशाओमा भमी रहेलो छे।

८. जेमणे पोतानी अनुपम मतिना प्रभावे ज्ञान, ज्ञानी, हेतु, प्रमाण, अने गणधरपृच्छा सविशेष विवेचन विशेषावश्यकमा ग्रन्थनिबद्ध कर्युं छे।

९ जेमणे छेद सूत्रोना अर्थाधारे, पुरुष विशेषना पृथक्करण प्रमाणे, प्रायश्चित्तना विधि विधान करनार जीतकल्पसूत्रनी रचना करी छे।

१० एवा, परसमयना सिद्धान्तोमा निपुण, संयमशील श्रमणोना मार्गना अनुगामी, अने क्षमाश्रमणोमा निधानभूत जिनभद्र गणी क्षमाश्रमणने नमस्कार।

आमाना ५ मा पद्यना तात्पर्यार्थ ऊपरथी ए जणाय छे के—जिनभद्र गणी आगमोना अद्वितीय व्याख्याता हता, युगप्रधान पदना धारक हता, तत्कालीन प्रधान प्रधान श्रुतधरो पण एमने बहु मानता हता, श्रुति अने अन्य शास्त्रोना पण ए कुशल विद्वान् हता, अने जैन सिद्धान्तोमा जे ज्ञान–दर्शनरूप उपयोगनो विचार करवामा आव्यो छे तेना ए समर्थक हता। ६ ट्ठा पद्यना तात्पर्यथी ए जणाय छे के एमनी सेवामा घणा मुनियो ज्ञानाभ्यास करवा माटे सदा उपस्थित रहेता हता। ७ मा पद्यमा, जुदा जुदा दर्शनोना शास्त्रो, तथा, लीपि विद्या, गणित शास्त्र, छन्द शास्त्र, अने शब्द (व्याकरण) शास्त्र आदिमा एमनु अनुपम पांडित्य सूचित कर्युं छे। ८ मा पद्यमा विशेषावश्यकभाष्य, अने ९ मामा, जीतकल्पसूत्र विषयक एमनु कर्तृत्व प्रकट कर्युं छे। १० मा पद्यमा, एमनी परसमयना आगम विषेनी निपुणता, स्वाचारपालननी प्रवणता, अने सर्व जैन श्रमणोमा रहेली मुख्यतानु सूचन कर्युं छे।

आटला संक्षिप्त परिचय सिवाय अन्यत्र क्याए पण ए महान् आचार्यनो कशो पण विशेष उल्लेख दृष्टिगोचर थतो नथी।

हरिभद्रसूरि, शीलाकाचार्य, जिनेश्वरसूरि, अभयदेवसूरि, हेमचद्रसूरि, वादीदेवसूरि, मलयगिरि अने देवेन्द्रसूरि विगेरे पाछळना प्रसिद्ध ग्रन्थकारो अने टीकाकारोए एमनो नामनिर्देश पोतानी कृतिओमा अनेकश करेलो छे। "**भाष्यसुधाम्भोधिः भाष्यपीयूषपाथोधि, भगवान् भाष्यकारः दुष्षमान्धकारनिमग्नजिनवचनप्रदीपप्रतिमः दलितकुवादिप्रवादः प्रशस्यभाष्यसस्यकाश्यपीकल्पः त्रिभुवनजनप्रथितप्रवचनोपनिषद्वेदीः सन्देहसन्दोहशैलशृगभंगदम्भोलिः**" इत्यादि प्रकारना विशिष्ट विशेषणोपूर्वक एमनु नामस्मरण करवामा आव्यु छे, अने ए रीते एमनी आप्ततानो गौरवपूर्वक स्वीकार करवामा आव्यो छे।

दरेक संप्रदायमा विद्वानोना बे प्रकार नजरे पडे छे एक तो आगमप्रधान, अने बीजो तर्कप्रधान। आगमप्रधान पडितो हमेशा पोताना परपरागत आगमोने–सिद्धान्तोने शब्दश पुष्टरीते पकडी रहेवाना स्वभाववाळा होय छे, त्यारे तर्कप्रधान विद्वानो आगमगत पदार्थव्यवस्थाने तर्कसगत अने रहस्यानुकूल मानवानी वृत्तिवाळा होय छे। आथी केटलीक वखते आगमप्रधान अने तर्कप्रधान विचारकोनी संप्रदायगत तत्त्वविवेचननी पद्धतिमा विचारभेद पडे छे। ए विचारभेद जो उग्र प्रकारनो होय छे तो कालक्रमे सप्रदाय-भेदना अवतारमा अवसान पामे छे, अने सौम्य प्रकारनो होय छे तो ते मात्र मतभेदना रूपमा ज विरमी जाय छे। जैन संप्रदायना इतिहासनु अवलोकन करता तेमा आवा अनेक विचारभेदो, मतभेदो अने संप्रदायभेदो अने तेना मूलभूत उक्त प्रकारना कारणो बुद्धि आगळ स्पष्ट तरी आवे छे। ए विचारना एक उदाहरणभूत जिनभद्र गणी क्षमाश्रमण पण छे, अने तेथी जैन प्रवचनना इतिहासमा एमने घणी प्रसिद्धि प्राप्त थई छे। जिनभद्रगणी आगम-प्रधान आचार्य छे। जैन आगमाम्नाय जे परपराथी चाल्यो आवतो हतो

तेने शब्दशः अनुसरी ते ऊपर संगतवार भाष्य रचवानुं प्रधान कार्य एमणे कर्युं हतुं । ए भाष्यमां आम्नायथी विरुद्ध जनारा दरेक पक्ष ऊपर एमणे यथेष्ट आक्षेप-प्रतिक्षेप कर्या छे अने स्वसमदायनु समर्थन कर्युं छे । ए पोताना समर्थनमा तर्कनो उपयोग करे छे पण ते तर्क आम्नायानुकूल होय तो ज तेने महत्त्व आपे छे । आम्नायथी आगळ जनार तर्कने ए उपेक्षणीय गणे छे ।

उदाहरण तरीके एक प्रसंग लईए—सिद्धसेन दिवाकर जिनभद्रना पुरोगामी आचार्य छे । जैनवाङ्मयमा अने इतिहासमा तेमनु स्थान घणुं ऊचु छे । जैनधर्मना जे महान् समर्थक अने प्रभावक आचार्यो थई गया छे तेमा सिद्धसेनसूरि घणा आगळ पडता छे । सम्मतितर्क, न्यायावतार, महावीरस्तुति विगेरे मौलिक–सिद्धान्त–प्रतिपादक अने प्रौढविचार–पूर्ण एमना ग्रन्थो छे । जैन तर्कशास्त्रना ए व्यवस्थापक अने विवेचक छे । एथी ए तर्कप्रधान आचार्य मनाय छे । जैनदर्शनना ए एक अनन्य आधारभूत आप्त पुरुष छे । एमना पाछळना सर्व समर्थ आचार्यो ए एमने आप्तरूपे स्वीकार्या छे । ए आचार्ये पोताना सम्मतितर्क नामना तात्त्विकग्रन्थमा, केवलज्ञान अने केवलदर्शनना स्वरूपनो विचार करता, ए सिद्धात प्रतिपादित कर्यो छे के केवलज्ञानीने ज्ञान अने दर्शन बन्ने युगपत् ज होई शके छे, अने तेथी यथार्थमा बन्ने एक स्वरूप ज छे । आगमोमा जे "जुगवं दो णत्थि उवओगा" ए विचार प्रतिपादेलो छे तेनाथी सिद्धसेननो सिद्धान्त जराक विरुद्ध देखाय छे । एटले आगमवादी जिनभद्र गणी क्षमाश्रमणे पोताना भाष्यमा सिद्धसेनना विचारनो विगतवार प्रतिक्षेप कर्यो छे अने तात्पर्यमा जणाव्यु छे के तर्कथी गमे ते विचार सिद्ध थतो होय पण आगमथी बहार जता तर्कनो स्वीकार न करी शकाय । आगममा क्याए पण युगपदुपयोगनु सूचन नथी अने तेथी ए विचार अग्राह्य छे । आ विषयनो उपसंहार करता जिनभद्र गणी क्षमाश्रमण जणावे छे के—

> कस्स व नाणुमयमिण जिणस्स जइ हुज्ज दोवि उवओगा ।
> नूण न हुंति जुवगं जओ निसिद्धा सुए बहुसो ॥
> न वि अभिनिवेसबुद्धी अम्हं एगंतरोवओगम्मि ।
> तह वि भणिमो न तीरइ जं जिणमयमन्नहा काउं ॥
>
> (विशेपावश्यकभाष्य, पृष्ठ १२१३)

अर्थात्–जो जिनने–केवलीने युगपद् बन्ने उपयोग होत तो ते कोईने अनभिमत न थात । पण ते छे ज नहीं, कारण के सूत्रमा तेनो घणी जग्याए निषेध करवामा आवेलो छे । तेम ज क्रमोपयोगमा–एक पछी एक थनार ज्ञानमा—अमारी काई अभिनिवेशबुद्धी नथी । पण तथापि कहीए छीए के जिनना मतने अर्थात् आगमनी परपराने अन्यथा न ज करी शकाय ।

आम जिनभद्रगणी आगमपरपराना महान् सरक्षक हता अने तेथी तेओ आगमवादी के सिद्धान्तवादी ना बिरुदथी जैन वाङ्मयमा ओळखाय छे ।

जिनभद्रगणीनी ग्रन्थकृतिओ

जिनभद्रगणीना बनावेला ग्रन्थोनी चोकस माहिती काई मळती नथी । सामान्य रीते नीचे जणावेला पाच ग्रन्थो तेमनी कृति तरीके सुप्रसिद्ध छे ।

१ **विशेषावश्यक भाष्य मूळ अने टीका.** आ भाष्य बहु प्रसिद्ध अने प्रकाशित छे। आना ऊपर ग्रन्थकारे पोते ज एक सस्कृत टीका लखी हती पण ते अत्यारे दुर्लभ छे।

बीजी टीका शीलाकाचार्य जेमनु बीजु नाम कोट्याचार्य पण प्रसिद्ध छे तेमणे लखी छे। ए टीकानी ताडपत्र ऊपर लखेली एक अतिजीर्ण प्रति पूनाना राजकीय ग्रन्थसग्रहमा सुरक्षित छे।

त्रीजी टीका मलधारी हेमचद्रसूरिनी बनावेली छे अने ते प्रकट थई गई छे।

२ **बृहत्संग्रहणी.** आ लगभग ४०० थी ५०० गाथानो ग्रन्थ छे। एना ऊपर मलयगिरि सूरिए सस्कृत टीका लखी छे। ग्रन्थ सटीक प्रसिद्ध थई चुक्यो छे।

३ **बृहत्क्षेत्रसमास.** आ पण प्राकृत गाथाबद्ध ग्रन्थ छे। आना ऊपर पण मलयगिरि विगेरे आचार्योए टीकाओ लखी छे। ग्रन्थ प्रसिद्ध छे।

४ **विशेषणवती.** लगभग ४०० गाथाओनो बनेलो आ एक प्रकरण ग्रन्थ छे, अने अद्यापि अप्रकाशित छे।

५ **जीतकल्पसूत्र.** प्रस्तुत ग्रन्थ। आ सिवाय **ध्यानशतक** नामनो एक ग्रन्थ जे हरिभद्र-सूरिनी आवश्यक टीकामा समुद्धृत छे तेना कर्ता पण जिनभद्रगणी कहेवाय छे पण ते सन्दिग्ध छे।

जिनभद्रगणीनी भाष्यकार तरीकेनी बहु ख्याति छे। तेमा मुख्यतया तो विशेषावश्यक भाष्य ने लईने ज ए प्रसिद्धि प्राप्त थई होय तेम जणाय छे। कारण के ज्या ज्या भाष्यकारना नामे एमनो उल्लेख आवे छे त्या त्या घणा भागे विशेषावश्यकना अवतरणो टाकवामा आव्या होय छे। पण, ए भाष्य सिवाय बीजा पण कोई भाष्यो एमणे रच्या होय तो ते सभवित छे। एनु काईक अस्पष्ट सूचन, कोट्याचार्यनी विशेषावश्यकभाष्यटीकामाना एक उल्लेखथी थाय छे **'पोग्गल-मोयगदन्ते'** ए पदथी शुरुथती विशेषावश्यकभाष्यनी २३४* मी गाथामा जे दृष्टान्तो सूचव्या छे तेमनु विवरण आ भाष्यमा करवामा आव्यु नथी। पण निशीथसूत्रना भाष्यनी पीठिकामा आ गाथा अने एमा सूचवेला दृष्टान्तोनु विवरण विगतपूर्वक आपेलु छे। एटलामाटे कोट्याचार्ये पोतानी टीकामा आ दृष्टात–सूचक गाथानी व्याख्या करता विवरणमाटे लखे छे के—**'निशीथे वक्ष्यामः'**—निशीथमा आ विवरण करीशु।' आ वाक्य कोट्याचार्यनु होय एम तो संभवे ज नहीं। कारण के निशीथभाष्य कोट्याचार्यकृत छे एवी प्रसिद्धि के परपरा बिल्कुल सभळाती नथी। तेथी आ वाक्य जिनभद्रगणीनी स्वोपज्ञटीकामानु होवु जोइए। अने जो तेम होय तो ग्रन्थकारे आ गाथानु विवरण निशीथ भाष्यमा कर्यु होय एटले विशेषावश्यकभाष्यमा पुन ते करवानी आवश्यकता नहीं रहेवाथी अहि मात्र तेनु सूचन ज करी दीधु होय। विशेषावश्यकटीकाकार हेमचद्रसूरि पण आ गाथानी व्याख्यामा अते एम लखे छे के—**'एतान्युदाहरणानि विशेषतो निशीथादवसेयानि।'** मारी पासे केटलाक प्रकीर्ण पानाओनो एक सग्रह छे तेमा भाष्यो अने चूर्णिओमानी केटलीक नोंधो कोई विद्वाने करेली छे।

---

*काशीथी प्रकट थएल आवृत्तिमा आ गाथानो क्रमाक २३५ छे, पण पूनानी कोट्याचार्यवाळी टीकानी प्रतिमां ए अंक २३४ छे।

ए संग्रह आसरे ३०० करता वधारे वर्षनो जूनो लखेलो छे। एमां एक ठेकाणे निशीथभाष्यनी ३ गाथा लखेली छे, अने ते पछी "इति जिनभद्रक्षमाश्रमणकृतनिशीथभाष्यसाष्टमोद्देशके" आवी स्पष्ट नोंध करी छे। अभ्यासिओए आ बाबतमा विशेष शोध करवानी आवश्यकता छे।*

जिनभद्रगणीनो समय

जिनभद्र गणीना गण–गच्छादिनो के गुरु–शिष्यादिनो कोई उल्लेख जोवामा आवतो नथी। सोळमा सैका पछी लखाएली पट्टावलिओमा तेमना समयनो निर्देश थएलो जोवामा आवे छे अने ते प्रमाणे महावीर निर्वाण पछी स० ११९५ मा तेमनो स्वर्गवास थयो मानवामा आवे छे। वीरनिर्वाण ११९५ ते विक्रम सवत् ६४५ बराबर थाय छे। पट्टावलिओमा उल्लेखेलो आ समय केटलो असन्दिग्ध छे ते जाणवानां विशेष प्रमाणो अद्यापि दृष्टिगोचर थया नथी। तपागच्छ, अचलगच्छ, उपकेशगच्छ, लघुपोशालिक, बृहत्पोशालिक, आदि गच्छोनी जे आधुनिक पट्टावलिओ उपलब्ध छे तेमनी मुख्य परपरामा तो जिनभद्रनो कोई निर्देश नथी। पण खरतर गच्छीय पट्टावलिओमा कोक ठेकाणे मूल पट्टपरपरामां जिनभद्रने दाखल करी दीधेला जोवामा आवे छे खरा। पण तेमा परस्पर घणो ज विरोध नजरे पडे छे। उदाहरण तरीके, मारी पासे जे केटलाक आवा पट्टावलिना पानाओ छे तेमाथी एकमां जिनभद्रने महावीरथी ३५ मी पाटे लख्या छे, बीजा पानामा ३८ मी पाटे लख्या छे, त्यारे वळी त्रीजा पानामा २७ मी पाटे लख्या छे। केटलाक पानाओमा जिनभद्रनी पाटे हरिभद्रने बेसार्या छे, तो केटलाकमा जिनभद्रनी पाटे शीलाकाचार्यने बेसार्या छे। एक पट्टावलिमा हरिभद्रने महावीर निर्वाण पछी ५८५ वर्षे अने जिनभद्रने ९८० वर्षे थएला जणाव्या छे। आम पट्टावलिओनी विगतो बहु ज असंबद्ध होवाथी तेमाना कोई पण कथनने अन्यान्य पुरावाओना आधारे निर्णीत कर्या सिवाय सत्य मानी शकाय तेम नथी ए स्पष्ट ज छे।

धर्मसागर गणीकृत तपागच्छ पट्टावलि के जे केटलाक ऐतिहासिक ऊहापोह पछी लखवामा आवी छे अने जेनु सशोधन पण केटलाक विद्वानोनी बनेली खास समितिए कर्युं छे, तेना उल्लेख प्रमाणे जिनभद्र गणी, हरिभद्र पछी ६०–६५ वर्षे थया हता। पण आ उल्लेख पण एटलो ज मूलभरेलो छे। कारण के प्रथम तो हरिभद्रनो स्वर्ग समय जे ए पट्टावलिमा वीरसवत् १०५५, विक्रम संवत् ५८५ आप्यो छे ते ज बराबर नथी, ए में हरिभद्रना समय निर्णयमा विस्तृत चर्चा करी सिद्ध कर्युं छे, अने बीजु, हरिभद्र सूरिए पोतानी आवश्यक टीकामा अनेक ठेकाणे जिनभद्रनु स्मरण कर्युं छे अने विशेषावश्यकनो स्पष्ट उल्लेख पण कर्यो छे। एटले हरिभद्र पछी जिनभद्र कोई पण रीते होई शके नहीं ए निश्चित छे। धर्मसागरकृत पट्टावलिनो उल्लेख आ प्रमाणे छे —

श्री वीरात् १०५५ वि० ५८५ वर्षे याकिनीसूनुः श्रीहरिभद्रसूरिः स्वर्गभाक्। निशीथ–बृहत्कल्प-भाष्यावश्यकादिचूर्णिकाराः श्रीजिनदासगणिमहत्तरादयः पूर्वगत-

* पट्टावलिओनां केटलांक पानाओमां तो एमने "सर्व भाष्यकर्ता" पण लखेला छे।

श्रुतधर-श्रीप्रद्युम्नक्षमाश्रमणादिशिष्यत्वेन श्रीहरिभद्रसूरितः प्राचीना एव यथाकालभाविनो बोध्याः । ११११५ श्रीजिनभद्रगणिर्युगप्रधानः । अयं च जिनभद्रीयध्यानशतककरणान् भिन्नः संभाव्यते ।

—इण्डियन एण्टीक्वेरी, पु ११, पृ २५२

खरतर गच्छनी पट्टावलिओ—जेमा छेल्ला सैकामा थई गयेला क्षमाकल्याणमुनिनी बनावेली मुख्य कही शकाय अने जेनो सार डॉ क्लाटे इण्डियन एण्टिकेरीना पु० ११, पृ० २४३–४९ मा आप्यो छे—ते अनुसारे जिनभद्रनो समय वीरनिर्वाणनो दशमो सैको छे । ए पट्टावलिमा लख्या प्रमाणे वीर सं० ९८० मा देवर्द्धिगणी थया । ते ज समयमा चतुर्थीनी संवत्सरी स्थापन करनार कालकाचार्य थया (वी सं ९९३), ते ज अरसामा विशेषावश्यक भाष्यादिना कर्ता [बीजी प्रतिप्रमाणे सर्व भाष्यकर्ता] जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण (वी स ९८०), तथा आचारागादि सूत्रोनी टीका करनार तेमना शिष्य शीलाकाचार्य थया, अने ते ज जमानामा १४४४ ग्रन्थोना रचनार हरिभद्रसूरि थया । आ प्रमाणे आ पट्टावलिलेखकना हिसाबे देवर्धिगणी, कालकाचार्य, जिनभद्र, शीलाकाचार्य अने हरिभद्रसूरि ए बधा समकालीन छे । आ बधामा हरिभद्रसूरि सिवाय बाकीमा आचार्योनो समय हजी प्रमाण-पुरस्सर निर्णीत थयो नथी । पण, सामदायिक इतिहासनु एकदर वळण जोता ए बधा समकालीन होय तेम सभवतु नथी । हरिभद्रनो समय, लगभग विक्रमना आठमा सैकानो छेल्लो भाग निश्चित थयो छे । देवर्धिगणी अने कालकाचार्य छठ्ठा सैकानी शुरुआतमा थएला मनाय छे । एटले एमनी वच्चे ओछामा ओछु २५० वर्ष जेटलु अतर पडे छे । एमाथी हरिभद्रने बाद करी देवामा आवे—कारण के तेमनो समय निर्णीत छे—अने बाकीना बधाने समकालीन मानी लेवामा आवे तो ते सप्रमाण होई शके के केम, ए प्रश्न विचारणीय रहे छे खरो । पण, आ स्थळे देवर्धिगणी अने कालकाचार्यना समयना विचारने पुरतो अवकाश नथी, तेथी हु ए बाबतने वगर चर्चे ज मुकी देवा मागु छु ।

जिनभद्रगणी अने शीलाकाचार्यनी समकालीनता अने गुरु शिष्य सम्बन्ध माटे काईक विचार अवश्य कर्तव्य छे । कमनशीबे, शीलाकाचार्य सबधी जे सवत्नो उल्लेख मळे छे ते पण परस्पर विरोधी छे । आचारागसूत्रनी टीकानी केटलीक प्रतिओमा टीका बनाव्याना समयनो निर्देश बे रीते मळे छे. एक निर्देश गद्यमा छे, अने बीजो पद्यमा छे । तेमाए वळी दरेकमा बब्बे पाठभेद छे ।

(१) A पहेलो गद्य निर्देश आ प्रमाणे —

"शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु चतुरशीत्यधिकेषु वैशाखपञ्चम्यां आचारटीका दृब्धेति ।"

खमातना शान्तिनाथना भडारमा स० १३२७ मा लखाएली ताडपत्रनी प्रति छे तेमा आ पक्ति छे जुओ, पीटर्सन रीपोर्ट ३, पृ ९०

B. बीजो गद्य निर्देश आ प्रमाणेः—

"शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु अष्टानवत्यधिकेषु वैशाखशुद्धपञ्चम्य आचारटीका कृतेति ।"—इण्डियन एण्टीकेरी, सन् १८८६, पृ० १८८.

(२) बीजो, जे पद्य निर्देश छे ते आ प्रमाणे·—

द्वासप्तत्यधिकेषु हि शतेषु सप्तसु गतेषु गुप्तानाम् ।
संवत्सरेषु मासि च भाद्रपदे शुक्लपञ्चम्याम् ॥
शीलाचार्येण कृता गम्भूतायां स्थितेन टीकैषा ।
सम्यगुपयुज्य शोध्या मात्सर्यविनाकृतैरार्यैः ॥

—आगमोदयसमिति प्रकाशित आवृत्ति, पृ. ३१७ ।

मारी पासेनी एक नोंधमा, गुप्तानां ना बदले शकाना आवो पण पाठ छे । तेम ज केट लीक प्रतिओमा आमानो कोई पण उल्लेख सर्वथाए नथी मळतो ।

आ रीते, आ उल्लेखो, जुदी जुदी ४ सालो बतावे छे । पहेलो, शक संवत् ७८८ नी, बीजे ७९८ नी, त्रीजो, गुप्त संवत् ७७२ नी, अने चोथो शक संवत् ७७२ नी । आमानी कई साल साची छे ते चोकस कही शकाय तेम नथी* । गुप्त संवत्नी जे गणत्री अद्यापि विद्वानो करता

* आचारांगटीकाना आ संवत्सरविषयक उल्लेखना संबंधमा डॉ० फ्लीटे इण्डियन एण्टीकेरी, पु. १५, पृ १८८ मां एक टिप्पणी लखी छे ते जाणवा जेवी होवाथी तेनु भाषान्तर अहिं आपवामा आवे छे ।

आचार टीकामांथी बे उताराओ

श्रीयुत के बी पाठके जैन हरिवंशमाथी एक महत्त्वनो उतारो १४१ मा पान उपर आप्यो छे । एमा गुप्त राजाओना उल्लेख उपरांत महावीरना निर्वाण पछीना वंशोनो नियमित क्रम आपी ए समयनो संबंध बताववा प्रयत्न कर्यो छे । जो के ए संबंध बराबर नथी ।

हु अहिं थोडीघणी एने मळती ज साहित्यविषयक ध्यान खेंचे एवी बाबत आपवा इच्छु छु । डॉ भगवानलाल इन्द्रजीए १८८३ नी शुरुआतमां, जैनग्रन्थ आचारांग सूत्र ऊपरनी शीलाचार्यनी आचारटीकानी एक हस्तलिखित प्रति मने बतावी हती । ए लगभग ३०० वर्ष पहेला लखाएली मनाय छे । एमांथी हु बे उतारा आपु छु । पहेलो पद्यबद्ध उतारो २०७ B अने २०८ A पान ऊपर छे, अने ते आ प्रमाणे छे.—

द्वासप्तत्यधिकेषु हि शतेषु सप्तसु गतेषु गुप्तानाम् ।
संवत्सरेषु मासि च भाद्रपदे शुक्लपञ्चम्याम् ॥
शीलाचार्येण कृता गम्भूताया स्थितेन टीकैषा ।
सम्यगुपयुज्य शोध्या मात्सर्यविनाकृतैरार्यै. ॥

आ उतारो, शीलाचार्ये टीकानो आ भाग गुप्तसंवत् ७७२ ना भादरवा सुदी पाचमने दिवसे गंभूता (खंभात) मां पूरो कर्यो एम जणाये छे ।

बीजो उतारो पुस्तकना अंते २५६ B पान ऊपर आवेलो छे । अने ते गद्यमा होई आ प्रमाणे छे —

शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु अष्टानवत्यधिकेषु वैशाखशुद्ध पञ्चम्यामाचारटीका कृतेति ।

२५६ B पान अहिं पुरु थाय छे अने ए पछीनु पानु जेमां आ तिथिनु आंकडामां पुनरावर्तन अने लेखकना उपसंहारना शब्दो छे ते नष्ट थई गयु छे ।

आ उतारो संपूर्ण टीकानी समाप्तिनी तिथि तरीके शकसंवत् ७९८ नी वैशाख सुदी पांचमने मुके छे ।

आव्या छे ते प्रमाणे जो गणीए तो गुप्त संवत् ७७२ एटले ११४१ विक्रम सवत् (१०९१ई स०) थाय । ए समय तो शेषनवाग टीकाकार अभयदेवसूरिनो छे । प्रथमद्वितीयागटीकाकर्ता शीलांकाचार्य तो ए अगाऊ घणा वर्षो पूर्वे थई गयाना घणा पुरावाओ उपलब्ध छे । तेथी का तो गुप्त सवत् ७७२ वाळो उल्लेख भ्रमपूर्ण होवो जोईए, अने का तो गुप्त सवत्नी जे गणत्री आज पर्यंतना बधा शोधको गणता आव्या छे ते खोटी होवी जोईए । पण, मात्र आ अनिश्चित पाठभेदना आधारे ज गुप्त सवत्नी गाठने आपणे ऊकेली शकीए तेम नथी, तेथी ज्या सुधी गुप्तसवत्नी गणना अन्य प्रमाणोथी खोटी न ठरे त्या सुधी आ प्रस्तुत उल्लेखने आपणे सत्य न मानी शकीए । हवे रह्या शक सवत्सरवाळा उल्लेखो । एमा जो के ७७२, ७८४ अने ७९८ आम त्रण भिन्न भिन्न सवत्सरो छे, पण ते बधानो अन्तर्भाव एक ज पचीसीमा थाय छे तेथी

आ बधे उताराओ एम बतावे छे के शीलाचार्ये गुप्त अने शक सवत्ने एक गण्यो छे । एमां स्पष्टरीते एक प्रकारनी भूल तो छे ज । अने आ भूल, गुप्त अथवा शक सवत् जेने विषे एनु अधुरु ज्ञान हतु, तेनो निर्देश, कोईपण रीते दाखल करी पोतानी विद्वत्ता बताववाना हेतुने लइने थई छे ।

ज्यां सुधी, गुप्त संवत् ७७२ थी ७९८ (ई स १०९१ थी १११७) अथवा शक संवत् ७७२ थी ७९८ (ई स ८५० थी ८७६) ए बेमांथी कया वरसामां आचारटीका लखाई ए बताववा माटे पुरती थई पडे एवी शीलाचार्यनो खरो समय प्रदर्शित करती माहिती न मळी आवे त्यां सुधी ए भूल दूर थवानी नथी ।

परंतु आ उताराओ एम बताववा माटे महत्त्वना छे के शीलाचार्यना समयसुधी पण ए वातनु स्मरण हतु के ए सवत् (गुप्त सवत्) के जे वल्लभीना राजाओना वापरने लीधे जाणीतो हतो अने छेवटे काठियावाडमां वल्लभी सवत् तरीके प्रचलित थयो हतो, एनो मूळ अने खास संबंध गुप्त राजाओ साथे हतो जेमणे काठियावाड अने बीजा पाडोशना भागोमां एनो फेलावो कर्यो हतो ।"

आ सवत् अने डॉ फ्लीटनी टिप्पणी ऊपर प्रो पीटर्सने, हस्तलिखित पुस्तकोनी शोधवाळा, पोताना त्रीजा रीपोर्टना पृ० ३६-३७ ऊपर जे नोंध करी छे ते पण आ बाबतमा उपयोगी होवाथी अहिं अवतार वामां आवे छे —

न २५५ आचारागसूत्र ऊपरनी शीलाचार्यनी टीका

शीलाचार्य के शीलांक सुप्रसिद्ध नगर अणहिलवाड पाटणना सस्थापक वनराजना धर्मगुरु तरीके सुविदित छे ।

२४७ मां पान ऊपर जे अवतरण आपेलु छे ते ऊपरथी जणाय छे के शीलांकनी आचारांगवृत्तिमां एनो रचना-समय श स ७७८ छे । वधारेमां जणाय छे के जे श्लोकमा ए मिति छे ते छेवटना पान ऊपर छे एटले बहु भार मूकवा जेवी नथी । १८८६ ना मार्चना इ ए मा फ्लीटनी शीलाचार्यना ग्रथ ऊपर एक टूकी नोंध छे । एमां भगवानलाल इन्द्रजीनी प्रतिना आधारे ए लखे छे के ग्रथना अंदरना भागमा गुप्त सवत् ७७२ अने अंतना भागमां श स ७९८ आपवामा आव्या छे । हाल तो हु, अहिं आपेलो गुप्त अने शक सवत् वच्चेनो गोटाळो टाळी शकु एम नथी, परंतु सवत् १३२७ अर्थात् इ स १२७१ मा लखाएली ए ग्रथनी खभातवाळी प्रतिमां ए मूळ ग्रथ रचायानो जे समय आपेलो छे ते विषे मने नहीं जेवी ज शका छे । ए ग्रथ श स ७८५—इ स ८६३ मां पूरो करवामां आव्यो हतो । बीजा श्लोकमांनो जे शब्द हु बराबर नहोतो समजी शक्यो ते "गंभूता" छे, एम फ्लीटना अवतरणथी समजाय छे । गंभूता एटले खभात एम फ्लीटनो अभिप्राय देखाय छे । मारावाळा उतारामां ए श्लोकनो अक बीजो आप्यो छे परंतु पहेला अकवाळो श्लोक एमां नथी । एनु स्थान समयनिर्देशक गद्य पक्तिए लीधु छे । शीलाचार्ये पोतानी टीका धीरे धीरे पूरी करी हती एटले एमणे ए बे श्लोक अथवा एना जेवु कांइक वच्चे वच्चे मूकी दीधु होय एम लागे छे ।"

चूक्या हता अने तेनी घणी जूदी जूदी पाठभेदोवाळी प्रतिओ पण थई चूकी हती। आ वस्तु-स्थिति त्यारे ज बध बेसती बनी शके ज्यारे शीलाकाचार्य अने जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण वच्चे कालकृत विशेष अन्तर होय। जो ए बन्नेनी वच्चे काई अन्तर न होय अने पट्टावलि लेखकना कथन प्रमाणे एमनामा गुरु-शिष्यनो ज सबन्ध रहेलो होय तो विशेषावश्यकभाष्यमा आवा पाठभेदो अने प्रत्यन्तरोनी नोंध लेवा जेवी स्थिति शीलाकाचार्यनी सन्मुख उपस्थित ज शी रीते थई शके। माटे ज्या सुधी बीजा कोई स्पष्ट साधक बाधक प्रमाण न मळी आवे त्या सुधी शीला-काचार्यने जिनभद्रगणीना शिष्य पण मानी शकाय तेम नथी, तेम ज ते बन्ने समकालीन हता एम पण कही शकाय तेम नथी।

जिनभद्रगणी क्षमाश्रमणना समय निर्णय माटे हजी बीजी घणी बाबतो चर्चवा जेवी छे, पण आ स्थळे ते बधीनी चर्चा करवा जेटलो अवकाश न होवाथी हु ए बाबतनो कोई स्पष्ट निर्णय आपी शकु तेम नथी। पण, खास काई विरोधी प्रमाण नजरे न पडे त्या सुधी पट्टावलियोमा जे वीर सवत् १११५–विक्रम सवत् ६४५ नी साल एमना माटे लखेली छे तेनो स्वीकार करीए तो तेमा कशी हरकत नथी।

जीतकल्पसूत्र

आ सूत्र, एना नाम प्रमाणे जैन श्रमणोना आचार विषयक छे अने एमा १० प्रकारना प्रायश्चित्तनु विधान करवामा आव्यु छे। आ प्रायश्चित्त सबन्धी विषय छेद सूत्रो अने बीजा घणा ग्रन्थोमा चर्चवामा आव्यो छे। तेमा, केटलीक जग्याए ते बहु ज सक्षिप्त रीते चर्चेलो छे, तो केटलीक जग्याए घणी ज विस्तृत रीते वर्णवेलो छे। एटला माटे जिनभद्रगणी क्षमाश्रमणे बहु सक्षिप्त नहीं तेमज बहु विस्तृत नहीं एवी मध्यमरीते ए विषयने समजाववा माटे आ ग्रन्थनी सकलना करी होय तेम संभवे छे।

आ प्रायश्चित्तना विषयमा एक वात नोंधवा जेवी छे, अने ते ए छे, के श्वेताबर सप्रदायना सर्व आगमोमा अने अन्य ग्रन्थोमा आ जीतकल्पसूत्र प्रमाणे ज १० प्रकारना प्रायश्चित्त वर्णवेला मळे छे। पण तत्त्वार्थसूत्रना नवमा अध्यायना २१—२२ सूत्रमा प्रायश्चित्तना प्रकार ९ ज गणाव्या छे, अने तेमा, आ सूत्रमा वर्णवेला मूल, अनवस्थाप्य अने पारचिक आ छेल्ला त्रणना स्थाने, परिहार अने उपस्थापना नामना बे प्रायश्चित्त कह्या छे। दिगम्बर सप्रदायना साहित्यमा प्राय सर्वत्र तत्त्वार्थसूत्र प्रमाणे ९ ज प्रायश्चित्त मळी आवे छे। श्वेताबर साहित्यमा एक तत्त्वार्थ-सूत्र सिवाय बीजे क्याए आ प्रकार दृष्टि गोचर नथी थतो। जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण जीत कल्पसूत्रनी अते एम पण कहे छे के तप–अनवस्थाप्य अने तप–पाराचिक आ बन्ने प्रायश्चित्त भद्रबाहुस्वामी पछी व्युच्छेद पाम्या छे। दिगम्बर साहित्यमा आ विचार क्याए नथी। तेम ज तत्त्वार्थभाष्यमा पण आ सबधे काई सूचन नथी। विद्वान् अभ्यासिओ तत्त्वार्थसूत्रना कर्तृत्वना प्रश्नो ऊहापोह करे त्यारे आ विषय पण तेमा विचारवा जेवो छे, ए सूचन करवा सारु अहिं आ नोंध करवी उचित लागी छे।

जीतकल्पसूत्र-व्याख्या-साहित्य

आ सूत्र ऊपर उपलब्ध थता व्याख्या-साहित्यमा जूनामा जूनी कृति ते आ आवृत्तिमा प्रकाशित सिद्धसेनकृत चूर्णि छे। आ चूर्णि रचाया पहेला पण कोई चूर्णि ए सूत्र ऊपर रचाएली हती एम प्रस्तुत चूर्णिमा, पृष्ठ २३, पंक्ति २३ ऊपर, आवेला उल्लेखथी ज्ञात थाय छे, पण ते उपलब्ध नथी। आ मुद्रित चूर्णिना कर्ता सिद्धसेनगणिना समयादि विषेनो निर्णय करवा माटेना साधनोविषे विशेष शोध खोळ थई शकी नथी, तेथी आ सिद्धसेन कोण अने क्यारे थया—ए प्रश्नने छेड्या वगर ज हाल तो चलावी लेवु प्राप्त छे।

आ चूर्णि ऊपर जे टिप्पण आपवामा आव्यु छे तेना कर्ता श्रीचन्द्रसूरिना समयादिनो उल्लेख टिप्पणनी प्रशस्तिमा आपेलो छे, अने ते अनुसारे विक्रम संवत् १२२७ मा अणहिलपुरमा तेमणे आनी रचना करेली छे। आ श्रीचंद्रसूरिए श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति (संवत् १२२२), पंचोपांगवृत्ति (संवत् १२२८), निशीथविंशोद्देशकवृत्ति, विगेरे बीजा पण केटलाक व्याख्याग्रन्थो रच्या छे।

प्रस्तुत चूर्णि सिवाय आ सूत्र ऊपर एक प्राकृत गाथाबद्ध भाष्य पण उपलब्ध थाय छे। ए भाष्यना कर्ता कोण छे ते काई ज्ञात थई शक्यु नथी। एनो आदि-अंतनो भाग आ प्रमाणे छे—

आदि—कयपवयणप्पणामो वुच्छ पच्छित्तदाणसखेवं।
जीयव्ववहारगयं जीवस्स विसोहण परमं॥
पवयणदुवालसंगं सामाइयमाइबिन्दुसारन्तं।
अह व चउव्विहसघो जत्थेव पइट्ठिय नाणं॥
अह वा पगयपसत्थ पहाणवयण च पवयणं तेण।
अह व पवत्तयतीई नाणाई पवयणं तेण॥

अन्त—अप्पग्गन्थमहत्थो इति एसो वण्णिओ समासेण।
पचमतो ववहारो नामेण जीयकप्पो त्ति॥
कप्पव्ववहाराण उदहिसरिच्छाण तह णिसीहस्स।
सुतरतणनिन्दुणवणीतभूतसारेस णातव्वो॥
कप्पादीए चिण्णिनि जो सुत्तत्थेहि णाहिती णितुणं।
णिगदिस्सति सो एय सीसपसीसाण णहु अण्णो॥

॥ इति श्रीजीतकल्पभाष्यं ॥ २२०० ॥

सं० १७२० वर्षे मार्गशीर्ष शुदि १ शुक्रवासरे अद्येह श्रीपत्तने लि० श्रीमोढज्ञातिना श्रीकाशीदासात्मजेन अबादत्तेन। शुभ भवतु। शिवमस्तु।

चूक्या हता अने तेनी घणी जूदी जूदी पाठभेदोवाळी प्रतिओ पण थई चूकी हती। आ वस्तु-स्थिति त्यारे ज बंध बेसती बनी शके ज्यारे शीलाकाचार्य अने जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण वच्चे कालकृत विशेष अन्तर होय। जो ए बन्नेनी वच्चे काई अन्तर न होय अने पट्टावलि लेखकना कथन प्रमाणे एमनामा गुरु-शिष्यनो ज सबन्ध रहेलो होय तो विशेषावश्यकभाष्यमा आवा पाठभेदो अने मत्यन्तरोनी नोंध लेवा जेवी स्थिति शीलाकाचार्यनी सन्मुख उपस्थित ज शी रीते थई शके। माटे ज्या सुधी बीजा कोई स्पष्ट साधक बाधक प्रमाण न मळी आवे त्यां सुधी शीला-काचार्यने जिनभद्रगणीना शिष्य पण मानी शकाय तेम नथी, तेम ज ते बन्ने समकालीन हता एम पण कही शकाय तेम नथी।

जिनभद्रगणी क्षमाश्रमणना समय निर्णय माटे हजी बीजी घणी बाबतो चर्चवा जेवी छे, पण आ स्थळे ते बधीनी चर्चा करवा जेटलो अवकाश न होवाथी हु ए बाबतनो कोई स्पष्ट निर्णय आपी शकु तेम नथी। पण, खास काई विरोधी प्रमाण नजरे न पडे त्या सुधी पट्टावलियोमा जे वीर सवत् ११९५–विक्रम सवत् ६४५ नी साल एमना माटे लखेली छे तेनो स्वीकार करीए तो तेमा कशी हरकत नथी।

जीतकल्पसूत्र

आ सूत्र, एना नाम प्रमाणे जैन श्रमणोना आचार विषयक छे अने एमा १० प्रकारना प्रायश्चित्तनु विधान करवामा आव्यु छे। आ प्रायश्चित्त सबन्धी विषय छेद सूत्रो अने बीजा घणा ग्रन्थोमा चर्चवामा आव्यो छे। तेमा, केटलीक जग्याए ते बहु ज सक्षिप्त रीते चर्चेलो छे, तो केटलीक जग्याए घणी ज विस्तृत रीते वर्णवेलो छे। एटला माटे जिनभद्रगणी क्षमाश्रमणे बहु सक्षिप्त नहीं तेमज बहु विस्तृत नहीं एवी मध्यमरीते ए विषयने समजाववा माटे आ ग्रन्थनी सकलना करी होय तेम सभवे छे।

आ प्रायश्चित्तना विषयमा एक वात नोंधवा जेवी छे, अने ते ए छे, के श्वेतांबर सप्रदायना सर्वे आगमोमा अने अन्य ग्रन्थोमा आ जीतकल्पसूत्र प्रमाणे ज १० प्रकारना प्रायश्चित्त वर्णवेला मळे छे। पण तत्त्वार्थसूत्रना नवमा अध्यायना २१—२२ सूत्रमा प्रायश्चित्तना प्रकार ९ ज गणाव्या छे, अने तेमा, आ सूत्रमा वर्णवेला मूल, अनवस्थाप्य अने पारचिक आ छेल्ला त्रणना स्थाने, परिहार अने उपस्थापना नामना बे प्रायश्चित्त कह्या छे। दिगम्बर सप्रदायना साहित्यमा प्राय सर्वत्र तत्त्वार्थसूत्र प्रमाणे ९ ज प्रायश्चित्त मळी आवे छे। श्वेताबर साहित्यमा एक तत्त्वार्थ-सूत्र सिवाय बीजे क्याए आ प्रकार दृष्टि गोचर नथी थतो। जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण जीत-कल्पसूत्रनी अते एम पण कहे छे के तप–अनवस्थाप्य अने तप–पारांचिक आ बन्ने प्रायश्चित्त भद्रबाहुस्वामी पछी व्युच्छेद पाम्या छे। दिगम्बर साहित्यमा आ विचार क्याए नथी। तेम ज तत्त्वार्थभाष्यमा पण आ सबधे काई सूचन नथी। विद्वान् अभ्यासिओ तत्त्वार्थसूत्रना कर्तृत्वना प्रश्ननो ऊहापोह करे त्यारे आ विषय पण तेमा विचारवा जेवो छे, ए सूचन करवा सारु अहिं आ नोंध करवी उचित लागी छे।

जीतकल्पसूत्र-व्याख्या-साहित्य

आ सूत्र ऊपर उपलब्ध थता व्याख्या-साहित्यमा जूनामा जूनी कृति ते आ आवृत्तिमा प्रकाशित सिद्धसेनकृत चूर्णि छे। आ चूर्णि रचाया पहेला पण कोई चूर्णि ए सूत्र ऊपर रचाएली हती एम प्रस्तुत चूर्णिमा, पृष्ठ २३, पंक्ति २३ ऊपर, आवेला उल्लेखथी ज्ञात थाय छे, पण ते उपलब्ध नथी। आ मुद्रित चूर्णिना कर्ता सिद्धसेनगणिना समयादि विषेनो निर्णय करवा माटेना साधनोविषे विशेष शोध खोळ थई शकी नथी, तेथी आ सिद्धसेन कोण अने क्यारे थया—ए प्रश्नने छेड्या वगर ज हाल तो चलावी लेवु प्राप्त छे।

आ चूर्णि ऊपर जे टिप्पण आपवामा आव्यु छे तेना कर्ता श्रीचन्द्रसूरिना समयादिनो उल्लेख टिप्पणनी प्रशस्तिमा आपेलो छे, अने ते अनुसारे विक्रम संवत् १२२७ मा अणहिलपुरमा तेमणे आनी रचना करेली छे। आ श्रीचंद्रसूरिए श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति (संवत् १२२२), पंचोपांगवृत्ति (संवत् १२२८), निशीथविंशोद्देशकवृत्ति, विगेरे बीजा पण केटलाक व्याख्याग्रन्थो लख्या छे।

प्रस्तुत चूर्णि सिवाय आ सूत्र ऊपर एक प्राकृत गाथाबद्ध भाष्य पण उपलब्ध थाय छे। ए भाष्यना कर्ता कोण छे ते काई ज्ञात थई शक्यु नथी। एनो आदि-अंतनो भाग आ प्रमाणे छे—

आदि—कयपवयणप्पणामो वुच्छं पच्छित्तदाणसंखेवं।
जीयव्ववहारगयं जीवस्स विसोहणं परमं॥
पवयणदुवालसंगं सामाइयमाइबिन्दुसारन्तं।
अह व चउव्विहसंघो जत्थेन पइट्ठियं नाणं॥
अह वा पगयपसत्थं पहाणवयणं व पवयणं तेण।
अह व परत्तयतीई नाणाई पवयणं तेण॥

अन्त—अप्पगन्थमहत्थो इति एसो वण्णिओ समासेणं।
पंचमतो ववहारो नामेणं जीयकप्पो त्ति॥
कप्पव्ववहाराणं उदहिसरिच्छाण तह णिसीहस्स।
सुतरतणनिन्दुणवणीतभूतसारेस णातव्वो॥
कप्पादीए विण्णिवि जो सुत्तत्थेहि णाहिती णितुणं।
णिगदिस्सति सो एय सीसपसीसाण णहु अण्णो॥

॥ इति श्रीजीतकल्पभाष्यं॥ ३३००॥

सं० १७२० वर्षे मार्गशीर्ष शुदि १ शुक्रवासरे अद्येह श्रीपत्तने लि० श्रीमोढज्ञातिना श्रीकाशीदासात्मजेन अबादत्तेन। शुभं भवतु। शिवमस्तु।

आ भाष्य, प्रस्तुत चूर्णि रचाया बाद लखायुं होय तेम जणाय छे, कारण के चूर्णिमां भाष्यनो क्याए उल्लेख थएलो नथी देखातो। चूर्णि पहेला जो भाष्यनी रचना थई होत तो चूर्णिकार तेनो अवश्य उल्लेख करत।

चूर्णि अने भाष्य सिवाय, आ सूत्र ऊपर, एक संस्कृत टीका पण स्वतंत्र रीते लखाएली मळे छे। ए टीका, आवश्यकसूत्रनी लघुवृत्ति रचनार श्रीतिलकाचार्ये रची छे। ए टीकानो आदि अने अन्त भाग आ प्रमाणे छेः—

वन्दे वीरं तपोवीरं तपसा दुस्तपेन यः। शुद्धं स्वं विदधे स्वर्णं स्वर्णकार इवाग्निना॥
जिनस्य वचनं नौमि नवं तेजस्विमण्डलम्। यतो ज्योतींषि धावन्ति हर्तुमन्तर्गतं तमः॥
निःप्रत्यूहं प्रणिदधे भवानीतनयानहम्। सर्वानपि गणाध्यक्षानक्षामोदरसङ्गतान्॥
जिनभद्रगणिं स्तौमि क्षमाश्रमणमुत्तमम्। यः श्रुताज्जीतमुद्दध्रे शौरिः सिन्धोः सुधामिव॥
प्रणमाम्यात्मगुरूंस्तान् घनसारशलाकयेव यद्वाचा। अज्ञानतिमिरपूरितमुद्घाटितं ममान्तरं चक्षुः
इति नुतिकृतसुकृतः श्रुतरहस्यकल्पस्य जीतकल्पस्य। विवरणलवं करिष्ये स्वस्मृतिबीजप्ररोधाय॥

श्रीमान् चन्द्रप्रभः सूरिर्युगप्राधान्यभागभूत्। तदासनमलंचक्रुः श्रीधर्मघोषसूरयः॥
तत्पट्टश्रीभुजोऽभूवन् श्रीचक्रेश्वरसूरयः। श्रीशिवप्रभसूरिस्तत्पट्टश्रीहीरनायकः॥
तदीयशिष्यलेशोऽहं सूरिश्रीतिलकाभिधः। अनन्यसमसौरभ्यश्रुताम्भोजमधुव्रतः॥
इमामीदृग्विधां चूर्णेः तस्याश्चोपनिबन्धतः। गुरूणां संप्रदायाच्च विज्ञायार्थं स्वशक्तितः॥
अकार्षं जीतकल्पस्य वृत्तिमत्यल्पधीरपि। सा विशोध्या श्रुतधरैः सर्वैर्मयि कृपापरैः॥
सहस्रमेकं श्लोकानामधिकं सप्तभिः शतैः। प्रत्यक्षरेण संख्याय मानमस्य विनिश्चितम्॥

जीतकल्पसूत्रना अनुकरण–ग्रन्थ

आ सूत्रना अनुकरण रूपे, पाछळना आचार्योए यतिजीतकल्प अने श्राद्धजीतकल्प ए नामना बीजा बे त्रण स्वतंत्र ग्रन्थो पण लख्या छे, अने तेमना ऊपर टीका-टिप्पणी आदि केटलाक व्याख्या ग्रन्थो पण उपलब्ध थाय छे†

आ ग्रन्थने, आ रूपमा प्रकट करवा माटे, श्रीयुत मोदी केशवलाल प्रेमचन्द भाईना उत्साह अने आग्रह ज मुख्य कारणभूत थया छे अने तेथी आ प्राचीन ग्रन्थरत्नना उद्धारनुं मुख्य श्रेय तेमने ज घटे छे।

गूजरात पुरातत्त्व मन्दिर
अमदाबाद
आश्विनमास, संवत् १९८२

—मुनि जिनविजय

---

† जुओ, जैनग्रन्थावली, पृष्ठ ५६

परिशिष्ट

शीलांकाचार्य विषे वधारे विगत

पाछळनां पानाओमा शीलांकाचार्य विषे केटलीक चर्चा करी छे अने तेमा में एम अभिप्राय दर्शाव्यो छे के शीलांकाचार्य घणु करीने हरिभद्र सूरिना समकालीन होवा जोईए। आ प्रस्तावना प्रेसमां गया बाद डॉ हर्मन याकोबीनी लखेली हरिभद्रकृत समराइच्चकहानी प्रस्तावना मारा जोवामां आवी। ए प्रस्तावनामां प्रसंगवशात् शीलाकाचार्य विषे एक बे ठेकाणे डॉ याकोबीए उल्लेख करेलो छे अने एमना मते ए आचार्य हरिभद्र करतां एक सैका पछी थया हता तेम लागे छे। प्रमाण जो के कोई नवु ए नथी आपता पण आचारांग टीकानी अंते जे शक सवत् ७९८ नी पंक्ति मळी आवे छे तेने ज प्रमाण मानी ए पोतानो अभिप्राय व्यक्त करे छे। प्रस्तावनाना पृष्ठ १० नी नोटमा ए जणावे छे के—

In the Laghuvrtti [of Ganadhara Sārdha S'ataka] V 60 According to that source and to the Pattavalī of the Kharataragaccha S'ilāṇk was the successor of Haribhadra, but that is impossible, since the date of his Āchārāngatika is said to be S'aka 798=872 A D, or more than century later than Haribhadra

ए ज प्रस्तावनाना पृष्ठ १२ ऊपर एक बीजी रीते पण हरिभद्र अने शीलांक वच्चे एक सैकानु अतर सूचवतां ए विद्वान् लखे छे के—

For according to Prof Leumann Haribhadra commented on the text in Sanskrit, but retained the Kathānakas and certain other parts of the Cūrni in the original Prakrit, while S'ilānk who flourished more than a century later, translates such passages also into Sanskrit

आमाना प्रथम अवतरणमां तो आचाराग टीकाना शक संवत् ७९८ वाला उल्लेखने, ज्यां सुधी ते अन्य प्रमाणोथी असिद्ध न ठरे, प्रमाणभूत मानी, खरतरगच्छ पट्टावलीमां जे शीलांकने हरिभद्रना शिष्य लख्या छे तेने डॉ याकोबी असभव माने छे, अने हरिभद्रनो जे समय में निर्णीत कर्यो छे तेनो संपूर्ण स्वीकार करी, ते ज समयना हिसाबे, ए बने आचार्यो वच्चे एक सैका जेटलु अतर बतावे छे।

बीजा अवतरणमां प्रो लॉयमाने पोताना दशवैकालिक सूत्र ऊपरना निबधमां (Z D M G, vol 46 p 581 ff) जैन आगमो ऊपरना व्याख्या साहित्यना कालक्रम सबधे जे अभिप्राय जणाव्यो छे तेने अनुसरीने डॉ याकोबीए हरिभद्र अने शीलाक वच्चे एक सैका जेटलु व्यवधान सूचव्यु छे।

आ प्रस्तावनाना वाचकोनी विशेष समजण खातर प्रो लॉयमाने दोरेला व्याख्या-साहित्यना कालक्रमनु स्पष्टीकरण करवु आवश्यक छे। जैन आगमो ऊपर सौथी प्रथम निर्युक्ति नामे प्राकृत गाथाबद्ध टुंकी टिप्पणीओ रचाई, ते पछी प्राकृत गाथामा ज विस्तृत भाष्यो रचायां, ते पछी प्राकृतबहुल अने क्वचित् सस्कृतवाला गद्यमा चूर्णिओ रचाई, ते पछी सस्कृतबहुल अने क्वचित् प्राकृतवाला गद्यमां टीकाओ रचाई, अने ते पछी छेवटे केवल संस्कृतमां ज व्याख्याओनी रचना थई। आ प्रकारना दरेक व्याख्या-निबधोनो कालक्रम साधारण रीते एक-एक सैका जेटलो समजी लेवानो अभिप्राय ए विद्वानोनो थाय छे। उदाहरण तरीके—आवश्यक अने नदिसूत्रनी[१] चूर्णिना कर्ता जिनदासगणि महत्तर विक्रमना आठमा सैकाना पूर्वार्धमां थया। तेमना पछी एक सैका बाद सस्कृतबहुल एवी टीकाओ लखवानी शुरुआत करनार हरिभद्र थया। हरिभद्रे पोतानी टीकाओ माटे जो के सस्कृतमा ज लखवानी

१ नंदिसूत्रनी चूर्णि शक सवत् ५९८-विक्रमसवत् ७३३ मां रचाई हती।

पद्धतिनो अंगीकार कीधो हतो पण वच्चे वच्चे प्रमाणरूपे जे कथानको विगेरे आपवानी जरूर पडी ते तेमणे पूर्वनी चूर्णिओमांथी प्राकृतमां ज तद्वत् तारवी लीधां। ए पछी, एक सैका बाद शीलांकाचार्य थया जेमणे पोतानी व्याख्याओने परिपूर्णरीते संस्कृतमां ज लखवानी शैलीनो स्वीकार कीधो।

प्रो. लॉयमाने दोरेलो आ कालक्रम जो के सामान्यरीते बंध बेसतो जणाय छे अने जैन आगम-साहित्यना विकासक्रमनो इतिहास जोता ए विचार घणाभागे स्वीकारणीय पण जणाय छे। छतां एमां कोक अपवाद पण दृष्टिगोचर थाय छे। दाखला तरीके इग्यारमा सैकामा शांत्याचार्ये उत्तराध्ययनसूत्र ऊपर जे टीका लखी छे ते हरिभद्रनी पद्धतीए लखी छे। मूळ सूत्र अने निर्युक्तिनी व्याख्या ज्यारे ए आचार्य संस्कृतमां लखी छे त्यारे एमां आवतां बधां कथानको प्राकृतमां ज पूर्वनी चूर्णिमांथी तद्वत् उतारी लीधां छे, अने एथी ए टीकानुं बीजुं नाम पाइय (प्राकृत) टीका तरीके वधारे प्रसिद्ध छे। केवल शांत्याचार्य ज नहि पण तेमना पछीना सैकामां थएला ए ज सूत्रना बीजा टीकाकार देवेंद्रगणिए पण ए पद्धतिनुं अनुसरण करी पोतानी टीकामां लांबी लांबी कथाओ प्राकृतमां ज गुंथी छे।

आ ऊपरथी आपणे जोई शकीए छीए के शीलांकाचार्यना समयमाटे प्रो. लॉयमान-अंकित कालक्रम सर्वथा साधकरूप नथी। तेम ज, आचारांग टीका प्रांते आवेली शक संवत् वाळी पंक्ति पण विविध पाठभेदो धरावती होवाने लीधे, जेम में प्रस्तावना पृष्ठ १४ ऊपर जणाव्युं छे, तेम अभ्रान्त गणी शकाय तेम नथी। पण ए आचारांग टीकावाळी पंक्तिनुं समर्थन करे एवुं जे एक बीजुं प्रमाण हमणा मारी दृष्टिगोचर थयुं छे तेनी नोंध हुं अहिं लउं छुं जैन साहित्य संशोधकना प्रथम भागना, २ जा अंकमां, बृहट्टिप्पनिका नामनी एक प्राचीन जैन ग्रंथ सूचि में प्रकट करी छे। ए सूचि लगभग ५०० वर्ष जेटली जूनी छे अने बहु गवेषणा पूर्वक तैयार करवामां आवी होय तेवी तेनी संकलना छे। ए सूचिना २८३ क्रमांक ऊपर शीलाचार्ये रचित प्राकृत मुख्य महापुरुष चरित्रनी नोंध छे। जेनी १०००० जेटली श्लोकसंख्या, अने ९२५ वर्षे रचना [illegible] छे। मूलग्रंथ अद्यापि मारा जोवामां आव्यो नथी तेथी एना रचना-समयनो उल्लेख केवा प्रकारनो छे [illegible] शकाय तेम नथी, परंतु

॥ णमो समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

सिरि-जिणभद्द-खमासमण-विरइयं

जीयकप्प-सुत्तं

कय-पवयण-प्पणामो वोच्छं पच्छित्तदाण-संखेवं ।
जीयव्ववहार-गयं जीयस्स विसोहणं परमं ॥ १ ॥

संवर-विणिज्जराओ मोक्खस्स पहो, तवो पहो तासिं ।
तवसो य पहाणंगं पच्छित्तं, जं च नाणस्स ॥ २ ॥

सारो चरणं, तस्स वि नेव्वाणं, चरण-सोहणत्थं च ।
पच्छित्तं, तेण तयं नेयं मोक्खत्थिणाऽवस्सं ॥ ३ ॥

तं दसविहमालोयण १ -पडिकमणोभय २-३ -विवेग ४ -वोस्सग्गे ५ ।
तव ६ -छेय ७ -मूल ८ -अणवट्ठया ९ य पारञ्चिए १० चेव ॥ ४ ॥

१. करणिज्जा जे जोगा तेसुवउत्तस्स निरइयारस्स ।
छउमत्थस्स विसोही जइणो आलोयणा भणिया ॥ ५ ॥

आहाराइ-ग्गहणे तह बहिया निग्गमेसुऽणेगेसु ।
उच्चार-विहारावणि-चेइय-जइ-वन्दणाईसु ॥ ६ ॥

जं चऽन्नं करणिज्जं जइणो हत्थ-सय-बाहिरायरियं ।
अवियडियम्मि असुद्धो, आलोएन्तो तयं सुद्धो ॥ ७ ॥

कारण-विणिग्गयस्स य स-गणाओ पर-गणागयस्स वि य ।
उवसंपया-विहारे आलोयण-निरइयारस्स ॥ ८ ॥

२. गुत्ती-समिइ-पमाए गुरुणो आसायणा विणय-भंगे ।
इच्छाईणमकरणे लहुस मुसाऽदिन्न-मुच्छासु ॥ ९ ॥

अविहीइ कास-जंभिय-खुय-वायासंकिलिट्ठ कम्मेसु ।
कन्दप्प-हास-विगहा-कसाय-विसयाणुसंगेसु ॥ १० ॥

खलियस्स य सव्वत्थ वि हिंसमणावज्जओ जयन्तस्स ।
सहसाऽणाभोगेण व मिच्छुक्कारो पडिक्कमणं ॥ ११ ॥

आभोगेण वि तणुएसु नेह-भय-सोग-बाउसाईसु ।
कन्दप्प-हास-विगहाईएसु नेयं पडिक्कमणं ॥ १२ ॥

३. संभम-भयाउराबइ-सहसाऽणाभोगऽणप्प-वसओ वा ।
सव्व-वयाईयारे तदुभयमासंकिए चेव ॥ १३ ॥

दुचिन्तिय-दुब्भासिय-दुचेट्ठिय-एवमाइयं बहुसो ।
उवउत्तो वि न जाणइ जं देवसियाइ-अइयारं ॥ १४ ॥

सव्वेसु वि बीय-पए दंसण-नाण-चरणावराहेसु ।
आउत्तस्स तदुभयं सहसक्काराइणा चेव ॥ १५ ॥

४. पिण्डोवहि-सेज्जाई गहियं कडजोगिणोवउत्तेण ।
पच्छा नायमसुद्धं सुद्धो विहिणा विगिञ्चन्तो ॥ १६ ॥

कालऽद्धाणाइच्छिय-अणुग्गयत्थमिय-गहियमसढो उ ।
कारण-गहि-उव्वरियं भत्ताइ-विगिञ्चियं सुद्धो ॥ १७ ॥

५. गमणागमण-विहारे सुयम्मि सावज्ज-सुविणयाईसु ।
नावा-नइ-सन्तारे पायच्छित्तं विउस्सग्गो ॥ १८ ॥

भत्ते पाणे सयणासणे य अरिहन्त-समण-सेज्जासु ।
उच्चारे पासवणे पणवीसं होन्ति ऊसासा ॥ १९ ॥

हत्थ-सय-बाहिराओ गमणाऽऽगमणाइएसु पणवीसं ।
पाणिवहाई-सुविणे सयमट्ठसयं चउत्थम्मि ॥ २० ॥

देसिय-राइय-पक्खिय-चाउम्मास-वरिसेसु परिमाणं ।
सयमद्धं तिन्नि सया पंच-सयऽट्ठुत्तरसहस्सं ॥ २१ ॥

उद्देस-समुद्देसे सत्तावीसं अणुण्णवणियाए ।
अट्ठेव य ऊसासा पट्ठवण-पडिक्कमणमाई ॥ २२ ॥

६. (१) उद्देसऽज्झयण-सुयक्खन्धंगेसु कमसो पमाइस्स ।
कालाइक्कमणाइसु नाणायाराइयारेसु ॥ २३ ॥

निव्विगइय-पुरिमड्ढेगभत्त-आयंबिलं चणागाढे ।
पुरिमाई खमणन्तं आगाढे, एवमत्थे वि ॥ २४ ॥

सामन्नं पुण सुत्ते मयमायामं चउत्थमत्थम्मि ।
अप्पत्ताऽपत्ताऽवत्त-वायणुद्देसणाइसु य ॥ २५ ॥

कालाविसज्जणाइसु मण्डलि-वसुहाऽपमज्जणाईसु य ।
निव्वीइयमकरणे अक्ख-निसेज्जा अभत्तट्ठो ॥ २६ ॥

आगाढाणागाढम्मि सव्व-भंगे य देस-भंगे य ।
जोगे छट्ठ-चउत्थं चउत्थमायम्बिलं कमसो ॥ २७ ॥

(२) संकाइएसु देसे खमणं मिच्छोववूहणाइसु य ।
पुरिमाई खमणन्तं भिक्खु-प्पभिईण व चउण्हं ॥ २८ ॥

एव चिय पत्तेयं उववूहाईणमकरणे जइणं ।
आयामन्त निव्वीइगाइ पासत्थ-सड्ढेसु ॥ २९ ॥

परिवाराइ-निमित्तं ममत्त-परिपालणाइ वच्छल्ले ।
साहम्मिओ त्ति संजम-हेउं वा सव्वहि सुद्धो ॥ ३० ॥

(३) एगिन्दियाण घट्टणमगाढ-गाढ-परियावणुद्दवणे ।
निव्वीयं पुरिमड्ढं आसणमायामगं कमसो ॥ ३१ ॥

पुरिमाई खमणन्तं अणन्त-विगलिन्दियाण पत्तेयं ।
पञ्चिन्दियम्मि एगासणाइ कल्लाणयमहेगं ॥ ३२ ॥

मोसाइसु मेहुण-वज्जिएसु दव्वाइ-वत्थु-भिन्नेसु ।
हीणे मज्झुक्कोसे आसणमायाम-खमणाइं ॥ ३३ ॥

लेवाडय-परिवासे अभत्तट्ठो सुक्क-सन्निहीए य ।
इयराए छट्ठ-भत्तं, अट्ठमगं सेस-निसिभत्ते ॥ ३४ ॥

१ उद्देसिय-चरिम-तिगे कम्मे पासण्ड-स-घर-मीसे य ।
बायर-पाहुडियाए सपच्चवायाहडे लोभे ॥ ३५ ॥

अइरं अणन्त-निक्खित्त-पिहिय-साहरिय-मीसयाईसु ।
संजोग-स-इंगाले दुविह-निमित्ते य खमणं तु ॥ ३६ ॥

२ कम्मुद्देसिय-मीसे धायाइ-पगासणाइएसुं च ।
पुर-पच्छ-कम्म-कुच्छिय-ससत्तालित्त-कर-मत्ते ॥ ३७ ॥

अइरं परित्त-निक्खित्त-पिहिय-साहरिय-मीसयाईसु ।
अइमाण-धूम-कारण विवज्जए विहिय मायामं ॥ ३८ ॥

३ अज्झोयर-कड-पूइय-मायाऽणन्ते परंपरगए य ।
मीसाणन्ताणन्तरगया इए चे गमासणयं ॥ ३९ ॥

४ ओह-विभागुद्देसोवगरण-पूइय-ठविय-पागडिए ।
लोउत्तर-परियट्टिय-पमिच-परभावकीए य ॥ ४० ॥

सग्गामाहड-दद्दर-जहन्न-मालोहडोज्झरे पढमे ।
सुहुम-तिगिच्छा-सन्थव-तिग-मक्खिय-दायगो वहए ॥ ४१ ॥

पत्तेय-परंपर-ठविय-पिहिय-मीसे अणन्तराईसु ।
पुरिमड्ढं संकाए जं संकइ तं समावज्जे ॥ ४२ ॥

५ इत्तर-ठविए सुहुमे ससणिद्ध-ससरक्ख-मक्खिए चेव ।
मीस-परंपर-ठवियाइएसु बीएसु यावि गई ॥ ४३ ॥

सहसाऽणाभोगेणव जेसु पडिक्कमणमभिहियं तेसु ।
आभोगओत्ति बहुसो-अइप्पमाणे य निव्विगई ॥ ४४ ॥

धावण-डेवण-संघरिस-गमण-किड्डा-कुहावणाईसु ।
उक्कुट्ठि-गीय-छेलिय-जीवरुयाईसु य चउत्थं ॥ ४५ ॥

तिविहोवहिणो विच्चुय-विस्सारियऽपेहियानिवेयणए ।
निव्वीय-पुरिममेगासणाइ, सव्वम्मि चायामं ॥ ४६ ॥

हारिय-धो-उग्गमियानिवेयणादिन्न-भोग-दाणेसु ।
आसण-आयाम-चउत्थगाइ, सव्वम्मि छट्ठं तु ॥ ४७ ॥

मुहणन्तय-रयहरणे फिडिए निव्वीययं चउत्थं च ।
नासिय-हारविए वा जीएण चउत्थ-छट्ठाई ॥ ४८ ॥

कालऽद्धाणाईए निव्विइयं खमणमेव परिभोगे ।
अविहि-विगिञ्चणियाए भत्ताईणं तु पुरिमड्ढं ॥ ४९ ॥

पाणस्सासंवरणे भूमि-तिगापेहणे य निव्विगई ।
सव्वस्सासंवरणे अगहण-भंगे य पुरिमड्ढं ॥ ५० ॥

एयं चिय सामन्नं तवपडिमाऽभिग्गहाइयाणं पि ।
निव्वीयगाइ पक्खिय-पुरिसाइ-विभागओ नेयं ॥ ५१ ॥

फिडिए सयमुस्सारिय-भग्गे वेगाइ चन्दणुस्सग्गे ।
निव्वीइय-पुरिमेगासणाइ, सव्वेसु चायामं ॥ ५२ ॥

अकएसु य पुरिमासण-आयामं, सव्वसो चउत्थं तु ।
पुव्वमपेहिय-थण्डिल-निसि-वोसिरणे दिया सुवणे ॥ ५३ ॥

कोहे बहुदेवसिए आसव-कक्कोलगाइएसुं च ।
लसुणाइसु पुरिमड्ढं, तन्नाई-बन्ध-मुयणे य ॥ ५४ ॥

अज्झुसिर-तणेसु निव्वीइयं तु, सेस-पणएसु पुरिमड्ढं ।
अप्पडिलेहिय-पणए आसणयं, तस-वहे जं च ॥ ५५ ॥

ठवणमणापुच्छाए निव्विसओ विरिय-गूहणाए य ।
जीएणेक्कासणयं, सेसय-मायासु खमणं तु ॥ ५६ ॥

दप्पेणं पश्चिन्दिय-वोरमणे संकिलिट्ठ-कम्मे य ।
दीहऽद्धाणासेवी गिलाण-कप्पावसाणे य ॥ ५७ ॥
सव्वोवहि-कप्पम्मि य पुरिमत्ता पेहणे य चरिमाए ।
चाउम्मासे वरिसे य सोहणं पश्च-कल्लाणं ॥ ५८ ॥
छेयाइमसद्दहओ मिउणो परियाय-गव्वियस्स वि य ।
छेयाईए वि तवो जीएण गणाहिवइणो य ॥ ५९ ॥
जं जं न भणियमिहइं तस्सावत्तीएँ दाण-संखेवं ।
भिन्नाइया य वोच्छं छम्मासन्ताय जीएणं ॥ ६० ॥
भिन्नो अविसिट्ठो चिय मासो चउरो य छच लहु-गुरुया ।
निव्वियगाई अट्ठमभत्तन्तं दाणमेएसिं ॥ ६१ ॥
इय सव्वावत्तीओ तवसो नाउं जह-क्कमं समए ।
जीएण देज्ज निव्वीइगाइ-दाणं जहाभिहियं ॥ ६२ ॥
एयं पुण सव्वं चिय पायं सामन्नओ विणिद्दिट्ठं ।
दाणं विभागओ पुण दव्वाइ-विसेसियं जाण ॥ ६३ ॥
दव्वं १ खेत्तं २ कालं ३ भावं ४ पुरिस ५-पडिसेवणाओ ६ य ।
नाउमियं चिय देज्जा तम्मत्तं हीणमहियं वा ॥ ६४ ॥
(१) आहाराई दव्वं बलियं सुलहं च नाउमहियं पि ।
देज्जा हि, दुब्बलं दुल्लहं च नाऊण हीणं पि ॥ ६५ ॥
(२) लुक्खं सीयल-साहारणं च खेत्तमहियं पि सीयम्मि ।
लुक्खम्मि हीणतरयं (३) एवं काले वि तिविहम्मि ॥ ६६ ॥
गिम्ह-सिसिर-वासासुं देज्जऽट्ठम-दसम-बारसन्ताई ।
नाउं विहिणा नवविह-सुयववहारोवएसेणं ॥ ६७ ॥
(४) हट्ठ-गिलाणा भावम्मि—देज्ज हट्ठस्स, न उ गिलाणस्स ।
जावइयं वा विसहइ तं देज्ज, सहेज्ज वा कालं ॥ ६८ ॥
(५) पुरिसा गीयाऽगीया सहाऽसहा तह सढाऽसढा केई ।
परिणामाऽपरिणामा अइपरिणामा य वत्थूणं ॥ ६९ ॥
तह धिइ-संघयणोभय-संपन्ना तदुभएण हीणा य ।
आय-परोभय-नोभय-तरगा तह अन्नतरगा य ॥ ७० ॥
कप्पट्ठियादओ वि य चउरो जे सेयरा समक्खाया ।
सावेक्खेयर-भेयादओ वि जे ताण पुरिसाणं ॥ ७१ ॥

जो जह-सत्तो बहुतर-गुणो व तस्साहियं पि देज्जाहि ।
हीणस्स हीणतरगं, झोसेज्ज व सव्व-हीणस्स ॥ ७२ ॥

एत्थ पुण बहुतरा भिक्खुणो त्ति अकयकरणाणभिगया य ।
जन्तेण जीयमट्ठमभत्तन्तं निव्वियाईयं ॥ ७३ ॥

(६) आउट्टियाइ दप्प-प्पमाय-कप्पेहि वा निसेवेज्जा ।
दव्वं खेत्तं कालं भावं वा सेवओ पुरिसो ॥ ७४ ॥

जं जीय-दाणमुत्तं एयं पायं पमायसहियस्स ।
एत्तो च्चिय ठाणन्तरमेगं वड्ढेज्ज दप्पवओ ॥ ७५ ॥

आउट्टियाइ ठाणन्तरं च, सट्ठाणमेव वा देज्जा ।
कप्पेण पडिक्कमणं तदुभयमहवा विणिद्दिट्ठं ॥ ७६ ॥

आलोयण-कालम्मि वि संकेस-विसोहि-भावओ नाउं ।
हीणं वा अहियं वा तम्मत्तं वा वि देज्जाहि ॥ ७७ ॥

इति दव्वाइ-बहु-गुणे गुरु-सेवाए य बहुतरं देज्जा ।
हीणतरे हीणतरं, हीणतरे जाव झोस त्ति ॥ ७८ ॥

झोसिज्जइ सुबहुं पि हु जीएणऽन्नं तवारिहं वहओ ।
वेयावच्चकरस्स य दिज्जइ साणुग्गहतरं वा ॥ ७९ ॥

७. तव-गव्विओ तवस्स य असमत्थो तवमसद्दहन्तो य ।
तवसा य जो न दम्मइ अइपरिणाम-प्पसंगी य ॥ ८० ॥

सुबहुत्तर-गुण-भंसी छेयावत्तिसु पसज्जमाणो य ।
पासत्थाई जो वि य जईण पडितप्पिओ बहुसो ॥ ८१ ॥

उक्कोसं तव-भूमिं समईओ सावसेस-चरणो य ।
छेयं पणगाईयं पावइ जा धरइ परियाओ ॥ ८२ ॥

८. आउट्टियाइ पञ्चिन्दिय-घाए, मेहुणे य दप्पेणं ।
सेसेसुक्कोसाभिक्ख-सेवणाईसु तीसुं पि ॥ ८३ ॥

तव-गव्वियाइएसु य मूलुत्तर-दोस-वइयर-गएसु ।
दंसण-चरित्तवन्ते चियत्त-किच्चे य सेहे य ॥ ८४ ॥

अच्चन्तोसन्नेसु य परलिंग-दुगे य मूलकम्मे य ।
भिक्खुम्मि य विहिय-तवे ऽणवट्ठ-पारञ्चियं पत्ते ॥ ८५ ॥

छेएण व परियाए ऽणवट्ठ-पारञ्चियावसाणे य ।
मूलं मूलावत्तिसु बहुसो य पसज्जओ भणियं ॥ ८६ ॥

९. उक्कोसं बहुसो वा पउट्ठ-चित्तो वि तेणियं कुणइ ।
पहरइ जो य स-पक्खे निरवेक्खो घोर-परिणामो ॥ ८७ ॥

अहिसेओ सव्वेसु वि बहुसो पारञ्चियावराहेसु ।
अणवट्टप्पावत्तिसु पसज्जमाणो अणेगासु ॥ ८८ ॥

कीरइ अणवट्टप्पो, सो लिंग१-खेत्त२-कालओ३-तवओ४ ।
(१) लिंगेण दव्व-भावे भणिओ पव्वावणाऽणरिहो ॥ ८९ ॥

अप्पडिविरओ-सन्नो न भाव-लिंगारिहोऽणवट्टप्पो ।
(२) जो जत्थ जेण दूसइ पडिसिद्धो तत्थ सो खेत्ते ॥ ९० ॥

(३) जत्तियमित्तं कालं (४) तवसा उ जहन्नएण छम्मासा ।
संवच्छरमुक्कोसं आसायइ जो जिणाईणं ॥ ९१ ॥

वासं बारस वासा पडिसेवी, कारणेण सव्वो वि ।
थोवं थोवतरं वा वहेज्ज, मुञ्चेज्ज वा सव्वं ॥ ९२ ॥

वन्दइ न य वन्दिज्जइ, परिहार-तवं सुदुचरं चरइ ।
संवासो से कप्पइ, नालवणाईणि सेसाणि ॥ ९३ ॥

१०. तित्थयर-पवयण-सुयं आयरियं गणहरं महिड्ढियं ।
आसायन्तो बहुसो आभिणिवेसेण पारञ्ची ॥ ९४ ॥

जो य स-लिंगे दुट्ठो कसाय-विसए हिं राय-वहगो य ।
राय ग्गमहिसि-पडिसेवओ य बहुसो पगासो य ॥ ९५ ॥

थीणद्धि-महादोसो अन्नोऽन्नासेवणापसत्तो य ।
चरिमट्ठाणावत्तिसु बहुसो य पसज्जए जो उ ॥ ९६ ॥

सो कीरइ पारञ्ची लिंगाओ१-खेत्त२-कालओ३-तवओ य ४ ।
(१) संपागड-पडिसेवी लिंगाओ थीणगिद्धी य ॥ ९७ ॥

(२) वसहि-निवेसण-वाडग-साहि-निओग-पुर-देस-रज्जाओ ।
खेत्ताओ पारञ्ची कुल-गण-संघालयाओ वा ॥ ९८ ॥

जत्थुप्पन्नो दोसो उप्पज्जिस्सइ य जत्थ नाऊणं ।
तत्तो तत्तो कीरइ खेत्ताओ खेत्त-पारञ्ची ॥ ९९ ॥

(३) जत्तिय-मेत्तं कालं. (४) तवसा पारञ्चियस्स उ स एव ।
कालो दु-विगप्पस्स वि अणवट्टप्पस्स जोऽभिहिओ ॥ १०० ॥

एगागी खेत्त-बहिं कुणइ तवं सु-विउलं महासत्तो ।
अवलोयणमायरिओ पइ-दिणमेगो कुणइ तस्स ॥ १०१ ॥

अणवट्ठप्पो तवसा तव-पारञ्ची य दो वि वोच्छिन्ना ।
चोद्दस-पुव्वधरम्मी, धरन्ति सेसा उ जा तित्थं ॥ १०२ ॥
इय एस जीयकप्पो समासओ सुविहियाणुकम्पाए ।
कहिओ, देयोऽयं पुण पत्ते सुपरिच्छिय-गुणम्मि* ॥ १०३ ॥

॥ सिरि-जिणभद्द-खमासमण-विरइयं जीयव्ववहार-कप्प-सुत्तं समत्तं ॥

---

*प्रत्यन्तरे सूत्रपाठे १०६ गाथा लिखिता उपलभ्यते । तत्र

वत्तणुवत्तपवत्तो बहुसो आसेविओ महाणेण ।
एसो उ जीयकप्पो पञ्चमओ होइ नायव्वो ॥
–इय गाथा प्रथमगाथाऽनन्तरम्,

अप्पा मूलगुणेसुं विराहणा अप्प उत्तरगुणेसु ।
अप्पा पासत्थाइसु दाणग्गहसंपओगाहा ॥
–इयं गाथा अष्टमगाथाऽनन्तरम्,

सोलस उग्गमदोसा सोलस उप्पायणा य दोसाओ ।
दस एसणाए दोसा संजोयणमाइ पंचे व ॥
–इय गाथा चतुस्त्रिंशत्तमगाथाऽनन्तर च लिखिता सन्दृश्यते। एतद् गाथात्रितय मन्थान्तरगत न तु प्रकृतसूत्रकारकृत चूर्ण्यादिव्याख्याकृद्भिस्तथैव सूचितत्वात् ।

नमो त्थु ण समणस्स भगवओ महावीरस्स

सिद्धसेणसूरिकया

जीयकप्प-चुण्णी

सिद्धत्थ सिद्ध-सासण सिद्धत्थ-सुय सुय च सिद्धत्थस्स ।
धीर-घर घर-चरय[1] घर घरएहि महिय नमह जीव हिय ॥ १ ॥
एक्कारस वि गणहरे दुद्धर-गुण धारए धराहिव सारे ।
जम्बु प्पभवाईए पणमह सिरसा समत्त-सुत्तत्थ धरे ॥ २ ॥
दस नव-पुव्वी अइसेसिणो य अवसेस-नाणिणो य जत्तेण[2] ।
सव्वे वि सव्व-काल तिगरण-सुद्धेण नमह जइ गुण प्पवरे[3] ॥ ३ ॥
एत्तो नेव्वाणग[4] नेव्वाण गमयतीति निव्वाणग ।
पगय पसत्थ-वयण पहाण वयण च पवयणं नमह सया[5] ॥ ४ ॥
नमह य अणुओग धर जुग-प्पहाण पहाण नाणीण मय[6] ।
सव्व-सुइ-सत्थ-कुसल दसण-नाणोवओग मग्गम्मि ठिय ॥ ५ ॥
जस्स मुह निज्झरामय मय-वस-गन्धाहिवासिया इव भमरा ।
नाण मयरन्द तिसिया रत्ति[7] दिया य मुणिवरा सेवन्ति सया ॥ ६ ॥
स-समय पर-समयागम लिवि गणिय-च्छन्द-सद्द निम्माओ ।
दससु वि दिसासु जस्स य अणुओगो[8] भमइ अणुवमो जस पडहो ॥ ७ ॥
नाणाण नाणीण य हेऊण[9] य पमाण-गणहराण य पुच्छा ।
अविसेसओ विसेसा विसेसियाऽऽव स्सयम्मि अणुवम महणा ॥ ८ ॥
जेण य छेयसुयत्था आवत्ती-दाण विरयणा जत्तेण ।
पुरिस विसेसेण[10] फुडा निज्जूढा जीयदाणकप्पम्मि विही ॥ ९ ॥
पर-समयागम निउण सुसमिय-सु-समण-समाहि मग्गेण गय ।
जिणभद्दखमासमण खमासमणाण[11] निहाणमिव एक ॥ १० ॥
त नमिउ मय महण माणरिह लोभ-वज्जिय जिय रोस ।
तेण[12] य जीय विरइय-गाहाण विवरणं भणिहामि जहत्थ ॥ ११ ॥

को वि सीसो विणीओ आवस्सय-दसकालिय-उत्तरज्झयणा ऽऽयार निसीह-सूयगड दसा कप्प ववहार-माइय अग पविट्ठ बाहिर च सुत्तओ अत्थओ य अहिज्जिऊण गुरुमुवगम्म अणुजाणावेऊण बारसावत्त कय किइकम्मो पायवडिओ ठिओ कर-यल-जुयल मत्थए ठवेउ विन्नवेइ—'भगव ! कप्प ववहार कप्पियाकप्पिय चुल्लकप्प महाकप्पसुय निसीहाइएसु छेद सुत्तेसु अइ वित्थरेण पच्छित्त भणिय । पइ दिवस च तेण असमत्थो विसोहिं काउ । मइ-वामोहो य मे भवइ[13] अइघन[14]-गन्थेसु[15] । नाणाइयारेसु[16] आवत्ती का, कम्मि वा क दाण दिज्जइ त्ति ।

---

1 B वरद । 2 B जत्तेण । 3 B पव० । 4 B निव्वा० । 5 B सदा । 6 B बहु-मय ।
7 B रति च । 8 B ०ओगे । 9 B हेऊण य । 10 B विसेसे य । 11 B ०समणनि० ।
12 B तेणे । 13 B भवति । 14 B अघोष । 15 B ०न्थेसु य । 16 A ०णातियारे० ।

पढमस्स य कज्जस्स दसविहमालोयणं निसामेत्ता। नक्खत्ते मे पीला छम्मासतवं कुणह सुके॥
एवं ता उग्घाए[1] अणुघाए ताणि चेव कण्हम्मि। मास चउमास छ मासियाणि च्छेद[2] अओ वोच्छ॥
छिन्दन्तु तय भाणं गच्छन्तु तवस्स साहुणो मूलं। अव्वावडावगच्छे अधीइया[3] वावि विहरन्तु॥
छब्भागगुल[4]पणए[5] दसभाए[6] ति भाग अड्डपन्नरसे। वीसाए तिभागूण छब्भागूण तु पणवीसे[7]॥
5 मास चउमास छक्के अंगुल चउरो तहेव छक्कं तु। एए छेयविभागा णायव्वाऽहक्कमेण तु॥
बिइयस्स य कज्जस्स तहिय चउवीसय निसामेत्ता। आउत्त नमोकारा हवंतु एवं भणिज्जाहि[8]॥
एव नाऊण तहिं जहोवएसेण देइ पच्छित्त। आणाए एस भणिओ[9] ववहारो धीरपुरिसेहिं॥
एवं सो आयरिओ दव्वखेत्तकालभावसंघयणधिइ[10]बलाइयं च परिपुच्छिऊण सयं गमण, सीस वाऽगीयत्थ पेसेइ, अविज्जमाणे वा तस्सेव पेसवितस्स निगूढमेव अतिचारविसोहि पेसेइ।

10 [४] धारणाववहारो—संविग्गेण गीयत्थेणायरिएण दव्वखेत्तकालभावपुरिस[11]पडिसेवणासु[12] अवलोएऊण जम्मि ज अवराहे दिन्नं पच्छित्त त पासिऊण अन्नो वि तेसु चेव दव्वाइएसु तारिसावराहे तं चेव पच्छित्त देइ, एस धारणाववहारो। अहवा वेयावच्चगरस्स[13] गच्छोवग्गहकारिणो फड्डगपइणो वा संविग्गस्स देसदरिसणसहायस्स वा बहुसो पडितप्पियस्स अवसेस सुयाणुओगस्स [14]उचियपायच्छित्तट्ठाणदाणधारण धारणाववहारो भन्नइ।

15 [५] पञ्चमो जीयववहारो—सो पुण दव्वखेत्तकालभावपुरिसपडिसेवणाणुवत्तिं सरीरसंघयणधीबलपरिहाणिं वावेक्खिऊण तहा[15] पायच्छित्तदाण[16] जीय[17], जो वा जम्मि गच्छे केणइ कारणेण सुयाइरित्तो पायच्छित्त विसेसो पवत्तिओ अन्नेहि य[18] बहूहिं अणुवत्तिओ नय पडिसिद्धो। भणियं च—

वत्तणुवत्तपवत्तो बहुसो आसेविओ महाणेण। एसो उ जीयकप्पो पंचमओ होइ ववहारो॥

20 जीय ति वा करणिज्ज ति वा आयरणिज्ज ति वा एगट्ठ। जीवेइ[19] वा तिविहे वि काले तेण जीय[20]। सुत्ताओ पुण हीण सम अइरित्त वा जीयदाणमिति[21]। पंचसु वि पुण ववहारेसु विज्जमाणेसु आगमेण ववहार ववहरेज्जा, न सेसेहि। एव सुएण, आणाए, धारणाए, जाव जीयववहारेण। पुव्विल्लेहिं ववहार ववहरेज्जा न सेसेहिं[22] ति। किं कारण? आगमववहारी अइसइणो संकिलिस्समाण विसुज्झमाणं अवट्ठियपरिणाम वा पच्चक्खमुवलभन्ति, तावइय च से दिन्ति[23]
25 जावइएण विसुज्झइ, सुत्तभणियाओ अहिय ऊण तम्मत्तं वा, न सुयमणुवत्तए। जे पुण सुयववहारी ते सुयमणुवत्तमाणा इंगिआगार वत्त णेत्त-वयण विगाराइएहि[24] भावमुवलक्खिऊण[25] तिक्खुत्तो अइयार आलोयावेऊण, तं जहा—सुओवएसेण पलिउञ्चियमपलिउञ्चिय वा आलोयणाकाले ज जहा आलोएज्जा त तहा सुओवएसेण ववहरन्तीति। एस[26] सुयववहारो।[27] सुयाभावे आणाए ववहार ववहरेज्जा। आणाववहारो वि सुयववहाराणुसरिसो केवल [28]निगूढाइयारविसेसेण[29] विसे-
30 सिओ[30]। धारणाववहारो वि सुयववहाराणुसरिसो, केवल सुओवएसेण[31] उचियपयाणं वेयावच्चकराईणमणुग्गहत्थो[32] विसेसिओ। सुयववहारेगदेसो[33] धारणाववहारो त्ति। धारणाणन्तर जीयववहारो। सव्वत्थ य जीयववहारोऽणुवत्तए। दव्वखेत्तकालभावपुरिसपडिसेवणाधिइसंघयणा

---

1 B तागुघा०। 2 B छेय। 3 B ०इता। 4 B ०यगु०। 5 B ०णगे। 6 A ०राते। 7 A पणुवी०। 8 B ०णेज्जा। 9 ०गितो। 10 A ०यणइ०। 11 A ०रिस। 12 A ०णाय। 13 B ०करस्स। 14 B उचित। 15 ०B तहा तहा। 16 B पच्छित्त०। 17 A जीत। 18 B 'य'नास्ति। 19 B जीवति। 20 A जीत। 21 A जीत०। 22 B सेसएहिं। 23 B देइ। 24 B विका०। 25 B लक्खे०। 26 A सुत्त०। 27 A सुत्ता०। 28 A ०ढाविया०। 29 A विसेसण। 30 B ०सितो। 31 A ०णुचिय। 32 A ०कराणुगहत्थ। 33 B ०गएसो।

घत्तिरूव[1] परूवेऊण पचविहववहारमज्झे जीयववहारेण पगयं । जेण सो सावेक्खो चिर
[2]चाणुवत्तिस्सतीति[3] ।

२ 'सवरविणिज्जराओ' इच्चाइ । एईसे गाहाए सम्बन्धो । सीसो भणइ—'सम्मदंसण
नाणचरणसवरविणिज्जरतवपयत्था पहाणा, ते सव्वे वि मोत्तु तवेगदेस पायच्छित्त वक्खा
णेउमुज्जया[4] किमत्थ तुब्भे त्ति ?' । आयरिओ[5] भणइ—'पारपरिएण चरणपयत्थस्स विसो- 5
हिकारण पायच्छित्त । चरणविसुद्धीए य कसिणकम्मपडलुव्वेल्लणाणन्तर अव्वाबाहेक्कति
यच्चतिय परमसमसुहलक्खणो मोक्खो सपाविज्जइ त्ति काउ पायच्छित्तमेव भण्णइ ।' सवरण
सवर ढक्कण पिहाण[6] ति एगट्ठा । विसेसेण निज्जरण विणिज्जरण । विणिज्जरा सोहणमिति एगट्ठ ।
सवरण नवस्स कम्मस्स अणायाण[7] । णिज्जराए पुव्वोवचियसुहासुहकम्मपोग्गलपरिसाडो[8] ।
अहवा विसेसिय भण्णइ—मिच्छादसणाविरइकसायपमायजोगनिरोहो सवरो । कह ? । 10
मिच्छत्तावरोहेण सम्मत्तपडिवत्तीए मिच्छत्तनिमित्तासवनिमित्तकम्मणो[9] सवरण कय भवइ[10] ।
एवं विरइपडिवत्तीए अविरइपच्चय कम्म पच्चक्खाय भवइ । तहा कसायविवज्जणेण तन्निमित्तयं
कम्मं वज्जिय होइ । तहा इन्दिय विगहा[11] निद्दा मज्ज पमायासव निरोहदारेण तप्पच्चयस्स कम्मणो
निरोहो कओ भवइ । धावण वग्गण-डेवण लघण फोडणाइ-असुह चेट्ठा निवित्तीए कायजोगास-
वलद्धपवेसस्स कम्मुणो निरोहो भवइ । तहा हिंस फरुसा लिय पिसुण असब्भूय डभ सढ छलाइ[12] 15
वायानिरोहेण तप्पच्चय कम्म पच्चक्खाय होइ । तहा ईसा ऽमरिस भय सोग मिच्छाभिसधाण[13]
राग-दोसाकुसल[14]-सकप्पाइनिरोहेण तन्निमित्त कम्म वज्जिय होइ । निज्जरा पुण गुत्ति समिइ सम
णधम्म भावणा मूलगुण-उत्तरगुण परीसहोवसग्गाहियासणरयस्स भवइ । गुत्ती तिविहा मणाइ ।
समिइ पचविहा इरियाइ[15] । समणधम्मो दसविहो खमाइ । भावणा दुवालसविहा अणिच्चाइ ।
मूलगुणा पचविहा पाणाइवायाइ निवित्ती[16] । उत्तरगुणा पिंडविसुद्धिमाइया[17] । परीसहा वावीस 20
छुहाइया[18] । उवसग्गा सोलस । हासा पदोसा वीमसा पुढोवेमाया दिव्वा एए । हासा पदोसा
वीमसा कुसीलपडिसेवणा एए[19] माणुसा । भया पदोसा आहारहेऊ[20] अवच्चलेण सारक्खणया
एए तेरिच्छा । घट्टणया थभणया लेसणया पवडणया एए आयसचेयणिया । सो य सवरो
दुविहो—देसे सव्वे य । निज्जरा वि दुविहा देसे सव्वे य । जोगनिरोहकाले सेलेसि पडिवन्नस्स
दुचरिमचरिमसमए सव्वसवरो सव्वनिज्जरा य । सेसकाले देससवरो देसनिज्जरा य । एव 25
'सवरविणिज्जराओ' उभयमवि 'मोक्खस्स पहो' मग्गो हेऊ मोक्खकारण मोक्खमग्गो[21] त्ति ।
'तासिं' पुण सवरविणिज्जराण 'तवो पहो' हेऊ कारण ति । तस्स य 'तवस्स पहाणमग
पच्छित्त', जेण पच्छित्ते दुवालसविहो वि तवो अणुवत्तइ । तवस्स कारण पहाण[22] पच्छित्त ।
तवो कारण सवरनिणिज्जराण । सवरविणिज्जराओ मोक्खस्स कारणमिति । 'ज च नाणस्से त्ति
उत्तरगाहाए सह सवज्झए[23] । 30

३ 'सारो चरणमिच्चाइ' गाहा । सामाइयाइयस्स विन्दुसारपज्जवसाणस्स नाणस्स 'सारो
चरण' । चरणस्स पुण णिव्वाण सारो । निव्वाणस्स अणतरकारण चरण, कारणकारण नाण ।
चरणस्स कारण नाणमणतर । नाणाओ चरण, चरणाओ निव्वाण ति । नाणविसुद्धीए चरण-

---

1 A पडिसेवणावत्ति । 2 A वाणु॰ । 3 A वत्तइस्सति । 4 B ॰ज्जुया । 5 A ॰रितो । 6 B पिहण । 7 A ॰दाण । 8 B कम्ममलपरिसाडो । 9 A ॰क्मणो । 10 B हवइ । 11 A विकहा । 12 B छलादि । 13 B सधारण । 14 B॰कुल । 15 A इयराइ । 16 A ॰त्तीओ । 17 B पिंडसुद्धिमादीया । 18 B छुहातीता । 19 A एते । 20 A हेउ । 21 B ॰क्खहेउ । 22 A नास्ति । 23 B॰ज्झइ ।

विसुद्धी, चरणविसुद्धीए निव्वाणफलावत्ती भवइ[1] । चरणविसुद्धी पुण पच्छित्ताहीणा। अओ निव्वाणचरणऽत्थिणा पच्छित्तं 'नेय' जाणियव्व अवस्स[2] भवइ[3] ।

४ 'त दस विह'मिच्चाइ । तमिति अणन्तरगाहानिद्दिट्ठ पच्छित्तं सव्वनामसद्देण सम्ब ज्झइ । 'त' पच्छित्त 'दसविहं' दसभेयं दसविकप्पं । त जहा—आलोयणारिह, पडिक्कमणारिह, 5 तदुभय-विवेगोसग्गारिहं, तवारिह, छेयारिह, मूलारिह, अणवट्ठप्पारिह, पारंचियारिह चेति।

तत्थ य आलोयणारिहं—आ मज्जायाए वट्टइ । का सा मज्जाया ?

जह वालो जपतो कज्जमकज्ज च उज्जुओ भणइ। त तह आलोएज्जा माया मय विप्पमुक्को उ॥

एसा मज्जाया। आलोयण पगासीकरण समुदायत्थो। गुरुपच्चक्खीकरण मज्जायाए। ज पाव आलोइयमेत्तेण चेव सुज्झइ, एय आलोयणारिह ।१। पडिक्कमणारिह—ज मिच्छादुक्कडमेत्तेण 10 चेव सुज्झइ न आलोइज्जइ; जहा सहसा अणुवउत्तेण खेलसिंघाणाइयं परिट्ठविय नय हिंसाइय दोसमावन्नो तत्थ मिच्छादुक्कड भणइ, एय पडिक्कमणारिह ।२। तदुभयारिह—जं पडिसेविय गुरुणो आलोइज्जइ, गुरुसदिट्ठो य पडिक्कमइ त्ति पच्छा मिच्छा[4] दुक्कड ति भणइ, एय तदुभयारिह ।३। विवेगारिहं—निगिंचमाणो विहीए तमइयार सोहेइ जत्थ, एय विवेगारिह।४। विउसग्गारिह—ज कायचेट्ठानिरोहोवओगमेत्तेण चेव सुज्झइ, जहा दुस्सुमिणाइय,[5] एय विउस 15 ग्गारिह ।५। तवारिह—जम्मि पडिसेविए निव्वीयाइओ छम्मासपज्जवसाणो तवो दिज्जइ, एयं तवारिह।६। छेयारिह—जम्मि य[6] पडिसेविए सदूसियपुव्वपरियायदेसावछेयण[7] कीरइ, नाणानिहवाहिस[8] दूसियंगोवगछेयणमिव सेससरीरावयवपरिपालणत्थ, तहेहा नि सेसपरियायरक्खणत्थ, एयं छेयारिहं ।७। मूलारिहं—जेण पडिसेविएण पुणो महव्वयारोवण निरवसेसपरियायावणयणाणन्तर कीरइ, एयं मूलारिह ।८। अणवट्ठप्पारिह—जम्मि पडिसेविए उवट्ठावणा अजोगो, कंचि 20 कालं न वएसु ठाविज्जइ, जाव पइविसिट्ठतवो न चिण्णो, पच्छा य चिण्णतवो तद्दोसोवरओ वएसु ठाविज्जइ, एय अणवट्ठप्पारिह ।९। पारंचियारिह—अञ्चु गइ-पूयणेसु,[9] पार अञ्चइ तवाईण जम्मि पडिसेविए लिंगखेत्तकालविसिट्ठाण, त पारंचियारिहं ।१०। एवं ससेवओ पिण्डत्थो दसण्ह वि पयाण भणिओ। सट्ठाणे सट्ठाणे वित्थरेण वि भासियव्वो। एएहिं चेव पएहिं विवरिएहि जीयववहारो समप्पइ। सपय जहक्कम निद्दिट्ठाण दसण्ह वि पयाण विवरण[10] भण्णइ कमेण चेव।

25 ५ तत्थ पढम पयं 'आलोयण त्ति। तस्स[11] सरूव[12] निरूवणत्थ गाहा 'करणिज्जा जे जोगा' इच्चाइ। 'करणिज्जा' नाम अवस्स कायव्वा । 'जे' इति अणिद्दिट्ठणिद्देसो । 'जोगा' इति किरियाओ सुओवइट्ठाओ सजमहेउगाओ कम्मनिज्जरणत्थ । 'तेसु' अणन्तरनिद्दिट्ठेसु 'उवउत्तस्स' पवत्तस्स। अहवा जोगा इति मण वइ कायजोगा एएहिंतो किरिया अणण्णा[13] भवती[14] ति तस्सहचरियत्ताओ[15]।

30 जोगो विरियं थामो उच्छाह परक्कमो तहा चेट्ठा। सत्ती सामत्थ ति[16] य जोगस्स हवन्ति पज्जाया॥

कायजोगो कह कायव्वो ?। कुम्मो इव [17]अल्लीणपल्लीणगुत्ते[18] सुप्पणिहियपाणिपाए। अहवा, उद्धट्टु पाय रीएज्जा, तिरिच्छ[19] वा कट्टु[20] पाय रीएज्जा, साहट्टु पाय रीएज्जा । एव कायजोगो करणिज्जो[21]। वइजोगो वि एवं करणिज्जो—

जा यऽसच्चा ण वत्तव्वा सच्चामोसा य जा मुसा। जा य बुद्धेहिं नाइण्णा न त भासेज्ज पन्नव॥

---

1 B हवति। 2 B नास्ति। 3 B होई। 4 A मिच्छामिदु०। 5 B ०सिमणा०। 6 B नास्ति। 7 B छेदण। 8 B 'स'नास्ति। 9 B पूयणासु। 10 B विवर। 11 A तत्थ। 12 A सरूय। 13 A अणता। 14 A भवन्ती। 15 B चरित्ताओ। 16 B चि। 17 B इस ली०। 18 A गत्तो। 19 A विनिरि०। 20 A नास्ति। 21 B० णीयो।

मणजोगो वि एव करणिज्जो—अकुसलमणनिरोहो कुसलमणउदीरणा य। निरइयारस्सेव सखेवेण मुहपोत्तियाइ-पडिलेहणपमज्जणाई[1] जा जा सजमसामायारीगया किरिया सा सव्वा करणिज्जजोगसद्दवच्चा होइ। अहोरत्तब्भन्तराणुट्ठेया। 'निरइयारस्स' अदुट्ठभावस्स। 'छउमत्थस्से त्ति परोक्खनाणिणो। सुओवएसाणुसारेण सेसकिरियाकलावाणुट्ठाणपरायणस्स। 'विसोही' कम्मबन्धनिवित्ती[2] निसल्लया वा। 'जइणो' जयमाणस्स अप्पमत्तस्स। 'आलोयणा भणिया' जिणिन्दगणहरेहिं[3]। सीसो भणइ-'निरइयारो नियमा जई[4] चेव होइ तो किमत्थं जइग्गहण?।' भण्णइ—'हेउ-हेउमब्भावेण वक्खाण कायव्व। निरइयारलक्खणाओ[5] चेव हेउओ सो जयमाणो जइ त्ति लब्भइ, तेण दोण्हवि गहण। अह वा जइ त्ति सामन्नाभिहाण। तं निरइयारत्तणेण विसेसिज्जइ निरइयारो जइ त्ति। पुणो वि सीसो-'ते' य जया[6] उवउत्तो निरइयारो य[7] करेइ। करणिज्जा य ते। तो तत्थ का विसोही[8] आलोइए अणालोइए वा[9]?' गुरू भणइ—'तत्थ जा चेट्ठानिमित्ता सुहुमा आसवकिरिया, सुहुमपमायनिमित्ता[10] वा अणुवलक्खिया ताओ[11] सुज्झन्ति आलोयणा मेत्तेण'। सो पुण गुरु-सदिट्ठो असदिट्ठो वा पुव्व वा आलोएज्जा, कज्जसमत्तीए वा आलोएज्जा। अहवा पुव्विं पि पच्छा वि[12] आलोएज्जा।

६ 'आहाराइ गहणे'च्चाइ। अणन्तरगाहाए [13]करणिज्जजोगनिद्देसमेत्त भणिय, सपय पुण नामग्गाह करणिज्जा जोगा भण्णति[14]। के ते करणिज्जा[15] जोगा?। इमे—आहारो आईए जेसिं गहणाण ताणि 'आहाराइ गहणाणि'। एगवयणेण[16] णिद्देसो[17] कओ। आइग्गहणेण सेज्जासथारवत्थ पायपुन्छणपडिग्गहगाइ[18] ओहिय-ओवग्गहिओ[19] य[20] सेसो[21] उवही घेप्पइ। 'तह बहियाणिग्गमेसु णेगेसु' गिलाणआयरियबालदुब्बलसेहखमग[22]असहुपाओग्गो[23]सहगहणनिमित्त णिग्गमणे। गहण तु गुरुमापुच्छिऊण—गुरुणाणुन्नाओ, सुओवएसेण उवउत्तो, विहीए गिण्हिऊण; तओ जहाविही गहियमालोएन्तो सुज्झो। सीसो भणइ-'जइ गहणे अविसुद्धी, सुद्धी य आलोइय, एव गहणमेव मा करेउ'। गुरू भणइ-'जइ गहण न करेइ तओ आयरिओवज्झायाइ-कुलगणसघसाहम्मियदसणनाणचरित्ततवसजमाईण ववच्छेओ—भगो हवइ। तेणावस्स गहण विहीए कायव्व'। अहवा एय सव्व आहाराइ-गहणेण गहिय। इमो पुणो बहियाणिग्गमोऽणेगो भण्णइ। गुरुमूलाओ सेज्जाओ वा कुलगणसघचेइयदुविहभेय[24]तद्दव्वविणासनिवारणाई[25]। अहवा पीढ[26] फलगसेज्जासथारपाडिहारियगहियप्पणत्थ[27] वा निग्गम करेज्जा। अहवा एयाइ निग्गमका[28]-रणाइ। 'उच्चारविहारावणि' त्ति उच्चारभूमि-विहारभूमीओ सण्णा-सज्झायसनियाओ[29]। चेइयवदणनिमित्त आसन्न दूर वा गच्छेज्जा। साहूण पुण अपुव्वबहुस्सुय[30]सविग्गाण वन्दण ससयवोच्छेयत्थ वा गच्छेज्जा। आइसद्देण सन्नासमायगओमन्नविहारीण वा सद्धावद्धाव णत्थ साहम्मियाण वा सजमउच्छाहणनिमित्त गच्छेज्जा।

७ 'ज च्चन्न करणिज्ज'मिच्चाइ। 'ज च न्न' ति पुव्वगाहाभणियाओ वइरित्त ति,[31] त सव्व च सद्देण समुच्चिज्जइ। त च खेत्तपडिलेहणथडिलसेहनिक्खमणायरियसलेहणाई[32] हत्थसयाओ परेण ज आयरिय, तमायरित्ता समिइगुत्तिविसुद्धि[33]निमित्त अवस्स आलोएयव्व। ज पुण

1 B ॰ज्जणाई। 2 A निवत्ती। 3 A नास्ति। 4 A जइ। 5 A ॰इयारत्तणाओ। 6 A जहा। 7 A व। 8 B का अविसोही। 9 A नास्ति। 10 B निमि॰। 11 B ताते। 12 B व। 13 A ॰णेज्ज। 14 A भणन्ति। 15 A ॰ज्जो॰। 16 B ॰यणे णि॰। 17 A णिद्देसो। 18 B ॰ग्गहादि। 19 B ॰हियअवउग्गहि॰। 20 B नास्ति। 21 A सेसा। 22 B खमग। 23 A ॰वाओगो। 24 A भेद। 25 B ॰णादी। 26 A पीढग। 27 A ॰प्पिणण॰। 28 A ॰मणका। 29 A सज्झास॰। 30 A ॰सुय। 31 B वतिरित्तए। 32 B ॰णादी। 33 A ॰त्तिसुद्धि॰।

हत्थसयब्भन्तरायरियं तत्थ किञ्चि आलोइज्जइ, किञ्चि नालोइज्जइ। जहा पासवणखेलसिंघाण जल्ल[1]निविसणुट्ठाणवियम्भणाकुञ्चण[2]पसारणोसासणीसासचेट्ठाइ किञ्चि कज्जं नालोइज्जइ। पासवणं पुण पुव्वमापुच्छिऊण वोसिरइ। 'अवियडियम्मि' अणालोइयम्मि, असुद्धो साइयारो, आलोएन्तो पुण तं कज्जं[3] आयरियस्स सुद्धो निरइयारो त्ति भणियं होइ।

5 ८ 'कारणविणिग्गय'मिच्चाइ। 'कारणविणिग्गयस्स' त्ति। दुविहो निग्गमो गच्छाओ[4]—कारणेण, अकारणेण य[5]। असिवओमरायदुट्ठगिलाणुत्तिमट्ठायरियपेसणाइ कारणिओ। चक्क थूम पडिमा-महिमा-जम्म[6]-निक्खमण-नाण निव्वाण भूमि-सज्झायग-चइग-संखडिपेहाइ निक्कारणिओ। कारणविणिग्गयस्स। 'च' सद्दो आलोयणाइपयं समुच्चिणइ। निरइयारस्स गुत्तिसमिइविसुद्धस्स कारणेण विणिग्गयस्स आलोयणमेत्ताओ चेव सुद्धी होइ। सा य आलोयणा—ओहओ

10 विभागओ य। ओहालोयणा अद्धमासब्भन्तरागयस्स हवइ। तं चागयमेत्तो चेव इरियावहिया पडिक्कन्तो [8]समुद्देसवेलाए आलोएइ। आलोइयमेत्ते चेव सुज्झइ निरइयारो। सा य ओहालोयणा इमा—

अप्पा मूलगुणेसुं विराहणा अप्प[9] उत्तरगुणेसु[10]। अप्पा पासत्थाइसु दाणग्गहसंपओगोहा॥

एवं विहालोयणेण सुद्धो होइ। अन्नम्मि वेलाए विभागेण अद्धमासपरेणागयस्स। विभागा-

15 लोयणा निरइयारस्स वि। एवं 'सगणाओ' कारणनिग्गयस्स आलोइए सुद्धी, 'परगणागयस्स वि य' त्ति। सगणो एगसंभोइया, परगणो अन्नसंभोइया। ते संविग्गा[11] वा असंविग्गा वा। संविग्गाओ आगयस्स निरइयारस्स वि अवस्समेव विभागालोयणा। आलोयणाए[12] य सुद्धो। 'उवसंपय' त्ति। सा य[13] उवसंपया[14] पंचविहा। तं जहा–सुओवसंपया, सुहदुक्खोवसंपया, खेत्तोवसंपया, मग्गोवसंपया, विणओवसंपया य त्ति। पंचविहाए वि तप्पढमयाए उवसंपज्जमाणेण

20 निरइयारेणावि आलोयणा विभागेण दायव्वा। सो य आलोयणाए चेव सुद्धो। 'विहारे' त्ति एगसंभोइया[15] फड्डगपई[16] गीयत्थायरिया एगाह पणग पक्ख चउम्मास[17]-संवच्छरिएसु जत्थ वा मिलन्ति तत्थ निरइयारा वि विहारालोयणं देन्ति। अन्नोन्नस्स विहारे वि आलोयणाए सुज्झइ[18]। सव्वत्थ 'निरइयारस्से त्ति एयं पयं सम्बज्झइ। एवमेयं[19] आलोयणारिहं भणियं॥

९ इयाणिं पडिक्कमणारिहं भण्णइ। जेसु ठाणेसु खलियस्स मिच्छादुक्कडारोवणा होइ

25 तट्ठाणसरूवं [20]निरूवणत्थं[21] गाहा भण्णइ। 'गुत्तिसमिइपमाय' इच्चाइ। गुत्ति त्ति तिन्नि गुत्तिओ मण वइ कायसन्नाओ। समिईओ इरिया भासा एसणा-आयाणनिक्खेवण[22]-उच्चारपासवणाइपरिट्ठवण-नामाओ पंच। एएसु अट्ठसु ठाणेसु पमाओ कओ होज्जा[23]। मणेण दुच्चिन्तियाइं[24]। वईए दुब्भासियाइ, काएण दुच्चेट्ठियाइ। इरियाए कहंकहेन्तो[25] गच्छेज्जा, भासाए ढड्ढरगिहत्थ भासाई, एसणाए भिक्खा[26] गहणकाले अणुवउत्तो,[27] न पमज्जइ आयाण निक्खेवेसु, अप्पडि-

30 लेहिय-थंडिले उच्चाराइ परिट्ठवेज्जा[28]। 'गुरुणो[29] आसायण' त्ति। गिणाति[30] सत्थमिति गुरू। तस्स आसायणा कया। का? अहिक्खेवो[31] परिभवो वा जच्चाइगुणहीणस्स। आयो[32] नाणाइतियं, तस्स साडणा अवणयणं विणासो आसायणा भण्णइ। आयरियाहिक्खेव द्दारेणाहिक्खे-

1 A निवस०। 2 B ०गुंचण। 3 A कय। 4 A गच्छायो। 5 B नास्ति। 6 A जम्मणणिक्ख०। 7 ०यणापयं। 8 ०क्कतो जइसमु०। 9 A अप्पा। 10 B ०णेसु। 11 A ०विग्गा अ०। 12 B आलोएइ य। 13 B नास्ति। 14 B उवस०। 15 B ०इगा। 16 A ०पई य, B ०वती। 17 A ०मास। 18 B विसु०। 19 B ०मेत। 20 A ०रूसह०। 21 A ०णत्था। 22 A निक्खमण। 23 B होई। 24 A ०याए। 25 B कहतो। 26 A ०क्खग०। 27 A उवउत्तो। 28 A ट्ठा०। 29 B ०रुआसा०। 30 B णाइ स०। 31 B अवि०। 32 A आओ।

मन्तो आय अप्पणो साडेइ[1] तुसिणीय हुंकार-जाइ कम्माइहिं। अहवा तिविहा आसायणा— मणेण पओसाइ, वायाए अन्तरभासाइ, काएण जमलिय[2] पुरोगमण-संघट्टणाइ। 'विणय-भंगे'[3] त्ति। विणओ अब्भुट्ठाणासणदाणअंजलिपग्गहवन्दणाईओ। तस्स य[4] भंगो। 'इच्छाईणम-करणे' त्ति। इच्छा मिच्छा तहक्कारो आवस्सिया य निसीहिया आपुच्छणा य पडिपुच्छा छन्दणा य निमन्तणा उवसंपयाओ[5] य गिज्झन्ति। एयासिमकरणे। लहुसग वा मुसावायं वएज्जा। जहा— 5
पयला ओल्ले मरुए पच्चक्खाणे य गमणपरियाए। समुदेससंखडीओ खुड्डग[6]परिहारिय मुहीओ॥
अवसगमणे दिसासु[7] एगकुले चेव एक-दव्वे या[8]। एए सव्वे वि पया लहुसमुसाभासणे होन्ति॥
लहुसाऽदिण्ण पुण सुहुम जत्थ जत्थ पणगावित्ती[9]। त जहा—तण-डगल[10] छार-मल्लग-लेव इत्तिरि-उग्गहण[11] चिट्ठणासु[12] लेव इत्तिरि उग्गहणट्ठाणेसु सुत्तारसेण मासलहु। तहावि इह लहुस गादिण्ण चेव भण्णइ। लहुसमुच्छा पुण ईसीसि[13] ममत्त जत्थ सुहुम, जहा—कागाइ साण-गोण 10
कप्पट्ठग[14]-सारक्खण ममत्ताईसु दव्वे लहुसमुच्छा। खेत्ते ओवास[15]-संथार-कुल-वसहि-गाम-नग रज्जाईसु। काले पुण मासकप्पोवरि निवासाइ। भावेण[16] राग-दोसाइ। एत्थ जे मासलहु-यट्ठाणा ते सव्वे घेप्पन्ति[17]।

१० 'अविहीइ-कास जंभिय' इच्चाइ। अविहीए हत्थमदाऊण कासइ मुहपोत्तिय[18] वा। एवं जभाईय-छीईएसु वि। 'वाय'[19] त्ति एय कम्म-सद्देण सम्मज्झइ। त दुविह-उड्ड उड्डोयाई,[20] अहो 15
कुच्छिय सद्दो। उड्डोए हत्थो दायव्वो मुहपोत्तिया वा[21]। कुच्छिय-सद्द निग्गमे पुण[22] पुयावकड्डण[23]-लम्बणेण। एस विही, एयव्वइरित्तो[24] अविही। 'असंकिलिट्ठकम्म' पुण[25] छेयण भेयण-संघसण पीलण अभिघाय सिंचण-कायसाराइ असुसिर सुसिराणन्तर परपरभेयभिन्न। 'कन्दप्पो' वाइओ काइओ वा। 'हास' पसिद्धमेव। 'विगहा'[26] इत्थि भत्त-चोर-जणवयाइया। 'कसाया' कोहाई।
'विसयाणुसंगो' सद्द-फरिस रस-रूव गन्धासेवणमिति। 20

११ 'खलियस्स य' इच्चाइ। 'खलियस्स' अइयारावन्नस्स। सो य अइयारो सहसक्कारकओ[27] अणाभोगकओ[28] य। 'च' सद्दो पडिक्कमणारोवण समुच्चिणइ। 'सव्वत्थ वि' त्ति सव्वपएसु। दसण-नाणचरित्ततवसमिइगुत्तिन्दियाइसु खलियस्स। 'हिंसमणावज्जओ'[29] त्ति अकरेन्तस्स जयणा जुत्तस्स[30]। सहसक्काराणाभोगलक्खण चेय—

पुव्वं अपासिऊण छूढे पाए[31] कुलिंगज पासे। न य तरइ नियत्तेउ जोग सहसाकरणमेय॥ 25
अन्नयर पमाएण असंपउत्तस्स णोवजुत्तस्स। इरियाइसु भूयत्थेसु वट्टओ हो अणाभोगो॥

एव सहसक्काराणाभोगेहिं[32] हिंसमणावज्जमाणो जयणोवउत्तो अइयारमावन्नो वि मिच्छादुक्कड परिणओ सुद्धो।

१२ 'आभोगेण वि' च्चाइ। 'आभोगेणे' त्ति परिफुडबुद्धीए वि। 'तणुएसु' थोवेसु, 'नेहा-इसु' त्ति सम्बन्धो। नेहो कप्पट्ठग सन्नि-सन्नायगाइसु। भय इहलोग परलोग-आयाण-अकम्हा 30
आजीव असिलोग मरण-सन्निय। सोगो सच्चित्ताचित्तमीसदव्वाण सजोगेण विओगेण य कओ होज्जा। 'वाउसत्त' सरीरसुस्सूसापरायणत्तं हत्थपायाइधोवणदारेण। 'आइ' सद्देण कुसील

---

1 B साडेति। 2 A जाम०। 3 B भगो। 4 B वा। 5 A ० तणोवस०। 6 A सं-खडी खुड्डएय। 7 A ०सासु। 8 A एगदव्वे य। 9 B ०वत्ती। 10 A ०डगल्ग०। 11 A उग्गहचि०। 12 B चिट्ठाणाले०। 13 B इसिसि। 14 B कप्पट्ठर०। 15 A ०वास। 16 A भवे०। 17 B धिप्प०। 18 B मुहवोत्ति०। 19 B वायन्ति। 20 B उड्डयाई। 21 B उड्डोए हत्थो मुहपोत्तिय वा दिज्जइ। 22 नास्ति। 23 B पुयतावकड्डण। 24 B एतव्वतिरित्तो। 25 A छेयणपील्णभेयणघसण। 26 B विकहा। 27 B सहस्स०। 28 B० भोगओ। 29 A हिंसप्पमाणा०। 30 A उत्तस्स। 31 A णए। 32 B०सावकरणा०।

पासत्थो-सन्न-ससत्ता घेप्पन्ति। 'कन्दप्पहासविगहा' पुव्ववक्खाणिया। 'आइ' सद्देण कसायविसयाणुसंगा गहिया। सव्वेसु वि एएसु तणुएसु 'नेयव्व' जाणियव्वं। 'पडिक्कमण' पायच्छित्तं ति भणियं होइ। एयं[1] पडिक्कमणारिहं भणियं ॥ २॥

१३. इयाणिं तदुभयारिहं। 'संभमभय'-इच्चाइ। 'संभमो' हत्थी-उदग-अगणिमाइओ। 5 'भय' दस्सु मिलक्खु बोहिय मालवाइ-सगासाओ। 'आउरो' दिगिंछा पिवासाईहिं। 'आवई' चउव्विहा-दव्वखेत्तकालभावावई। दव्वावई दव्व दुलहं। खेत्तावई वोच्छिन्नमडम्बाई[3]। कालावई ओमाई[4]। भावावई गुरुगिलाणाई। 'सहसाणाभोगा' पुव्वुत्ता। एएसु हिंसाइदोसमावन्नओ वि जयन्तस्स 'अणप्पवसओ' सव्वेहिं[5] कारणेहिं, 'सव्ववयाइयार' करेज्जा। पलायमाणो पुढविजलजलणपवणाइवणस्सइदुरुहण वा करेज्जा। वि तिय-चउ पञ्चिन्दिय वा विराहेज्जा। 10 मुसावायादिन्नादाणमेहुणपरिग्गहराइभोयणअद्धाणकप्पलेवाडाइय[6] वा आवज्जेज्जा। एव उत्तरगुणेसु वि। एवमाइ अइयारावन्नस्सावि। 'तदुभय' आलोयणा गुरूणं। पच्छा गुरुसंदिट्ठो मिच्छादुक्कडं ति भणमाणो सुद्धो। 'आसकिए चेव' त्ति कयमकयं वा जत्थ परिच्छेयं काउं न तरइ तमासकिय। तत्थ य सव्वएसु वि तदुभयपायच्छित्तकारी सुज्झइ।

१४ 'दुच्चिन्तिय' इच्चाइ। 'दु'सद्दो कुच्छाभिहाणे। संजमनिराहणाजायं कुच्छियं चिन्तियं 15 दुच्चिन्तियं। एव 'दुब्भासियं दुच्चिट्ठिय'। 'आइ' गहणेण दुप्पडिलेहिय दुपमज्जियगहणं। 'बहुसो' अणेगसो 'उवउत्तो वि न याणइ' त्ति सम्बज्झइ। उवओगरूवपरिणओ[7] वि साहू न संभरइ पुव्वकालकयमइयारट्ठाण। आलोयणाकाले 'देवसियाइ अइयार'[8], आइग्गहणेण राइय पक्खिय-चाउम्मासिय संवच्छरियाइयारा घेप्पन्ति।

१५ 'सव्वेसु य' इच्चाइ। 'सव्व'ग्गहणेण सव्वाववायट्ठाणा सूइया। पढमं उस्सग्गपयं 20 बिइय अववायपय। अवराहेसु अइयारेसु 'दसणणाणचरणावराहेसु'। 'आउत्तस्से'त्ति कारणे जयणाए गीयत्थो आसेवओ आउत्तो भण्णइ। तस्सेवमसेसाववाय[10]-कालाणुट्ठाणपरस्स आउत्तस्स 'तदुभय' पायच्छित्त[11] होइ। तहिं चेवाववायकाले 'सहसक्कारेण' ज कय, तं आइसद्दसंगहियाणाभोगेण य तदुभयमिति। एय च[12] तदुभयारिहं ॥ ३॥

१६ इयाणिं विवेगारिहं भण्णइ। 'पिंडोवहिसेज्जा'इच्चाइ। 'पिंडो' सघाओ असण पाण खा- 25 इम साइम भेयभिन्नो। 'उवही' ओहिय-उवग्गहिय भेओ। 'सेज्जा' उवस्सओ। आइसद्देण डगलगछार मल्लग ओसहाणि घेप्पन्ति। 'कडजोगी' गीयत्थो भण्णइ। पिंडेसणा-वत्थ पाएसणा[13]-छेय-सुयाईणि[14] सुत्तत्थओ अहीयाणि जेण सो गीयत्थो। तेणोवउत्तेण गहिय सुओवएसाणुसारेव, ओगपरिणामपरिणएण ति भणिय होइ। 'पच्छा नायमसुद्ध'। केण दोसेण असुद्ध[15] नाय भण्णइ। उग्गमउप्पायणेसणाहिं सकियमसकिय वा दोसवत्तेण 'सुद्धो' 'निरइयारो। विहाणेण' विहिणा 30 सुओवइट्ठेण 'विगिंचमाणो' परिट्ठवेन्तो सुद्धो हवइ।

१७ 'कालद्धाणाइच्छिय' इच्चाइ। 'कालाइच्छिय' पढमपोरिसीगहिय[16] चउत्थपोरिसिं जाव जं धरिज्जइ। अद्धजोयणाइरेगाओ आणीय नीयं वा। असढयाए सढयाए य। निगहा किड्डा इन्दियमाईहिं सढो, गिलाण सागारिय थडिल्ल-भयाइक्कमणेण य[17] असढो। विहीए विगिञ्चन्तो सुद्धो। अणुग्गए सूरे अत्थमिए वा ज गहियमसणाइ असढेण गिरिराहुमेहमहियारयावरिए

1 A एव। 2 B असणि०। 3 A० मडम्ब०। 4 B० मावी। 5 B०हिति। 6 B ०वाडाइ। 7 B ०णतो। 8 B० सियाइयारे। 9 A उयस०। 10 B० वाद। 11 B पच्छित्तं। 12 A एव च। 13 B० पाएसणा सेज्जाछेय०। 14 A सुयाइय। 15 A० ण सुद्ध। 16 B पोरसी०। 17 B नास्ति।

सन्नियरि उग्गयबुद्धीए अणत्थमियबुद्धीए वा गहिय होज्जा, पच्छा य अणुग्गए[1] अत्थमिए वा[2] नाय तओ[3] विहीए विगिञ्चन्तो सुद्धो। 'कारणे' वा गहिय गिलाणायरियबाल[4]पाहुणयदुल्लहस- हस्सदाणाइ-कारणे नाणाविहे ज गहिय विहिभोयणे य कए जइ त उव्वरिय तओ विहीए अणा घायमसलोगाइयाए विगिञ्चन्तो। 'भत्ताइ' भत्तगहणेण असण, आइग्गहणेण पाण-खाइम-साइ- माणि वि घेप्पन्ति। सो य[5] एव करेन्तो सुद्धो हवइ त्ति[6] विवेगारिह भणिय ॥ ४ ॥ 5

१८ इयाणि काउस्सग्गारिह भण्णइ—'गमणागमण'—इच्चाइ। उवस्सयाओ गुरुमूलाओ वा 'गमण, आगमण' बाहिराओ आयरियसमीव। 'विहारो' सज्झायनिमित्त ज अन्नत्थगमण। एत्थ सव्वहिं चेव इरियावहिया काउस्सग्गो पायच्छित्त कीरइ। 'सुयम्मि' उद्देससमुद्देसाणुन्ना- पट्ठवणपडिक्कमणसुयक्खधगपरियट्टणाइएसु सुए काउस्सग्गो कीरइ। 'सावज्जसुमिणे'[7] पाणा- इवायाइ। आइसद्देण अणवज्जसुमिणे'[8]वि। कम्हंति। 'च'सद्देण दुन्निमित्त दुस्सउण पडिहणण 10 निमित्त अट्ठुस्सासुस्सग्गकरण। 'नावा' चउव्विहा—समुद्दनावा, उज्जाणी, ओयाणी, तिरिच्छ गामिणी। आइमा समुद्दे। पच्छिल्ला तिन्नि नईए[9]। उज्जाणी पडिसोत्तगामिणी। ओयाणी पुण अणुसोयगामिणी। तिरिच्छगामिणी णर्दि[10] छिन्दन्ती गच्छइ। 'णईसतारो'[11] चउव्विहो। सो पुण पाएहिं सघट्ट-लेव-उवरिलेवेहिं तिविहो होइ, बाहा-उडुवाईहिं य। सव्वत्थ 'पायच्छित्त' जयणोवउत्तस्स[12] विहीए 'काउस्सग्गो' पायच्छित्त होइ। 15

१९ 'भत्ते पाणे' इच्चाइ। 'भत्तपाणाइ' पसिद्ध चेव। 'सयण' जत्थ सुप्पइ। 'आसण' जत्थ निविसिज्जइ। 'अरहन्तसेज्जा' चेइयघर। 'समणसेज्जा' पडिस्सओ। सव्वेसु एएसु[13] भत्ताइस- मणसेज्जापज्जवसाणेसु हत्थसयाओ परेण गमणे आगमणे वा कए पायच्छित्त[14] काउस्सग्गो। सो पणुवीसुस्सासो[15] कायव्वो। उच्चारिज्जइ त्ति 'उच्चारो'। पस्सवतीति 'पस्सवण'[16]। दोसु वि परिट्ठविएसु हत्थसयब्भन्तरे परेण वा हत्थमेत्ते वि काउस्सग्गो पणुवीसुस्सासो कज्जइ। 20

२० 'हत्थ सय' इच्चाइ। अणन्तरगाहा-जुयलेण काउस्सग्ग पच्छित्तमुत्त, त पुण काउ स्सग्ग किं परिमाण करेन्ति[17]। अओ ऊसास परिमाण निरूवणत्थाओ तिन्नि गाहाओ भण्णन्ति। गाहाए पढमद्ध पढियसिद्ध। 'पाणवहाइसुमिणए' त्ति करणकारावणाणुमईहिं सुमिणे[18] पाणा इवाओ कओ ओज्जा। तत्थ ऊसाससयपरिमाण[19] तुल्ल। 'चउत्थ'मिति मेहुण[20]सुमिणयदसणे अट्ठसयऊसासपरिमाण काउस्सग्ग[21] करेज्जा। 25

२१ 'देसियराइय' इच्चाइ। जहासखेण ऊसासपरिमाणकहणमेय। दिवसावसाण पडिक्क मणे पच्छिमकाउस्सग्गतिए पढमे दो उज्जोया चिन्तिज्जन्ति। पच्छिमेसु दोसु एक्केक्को। एवमेए चत्तारि उज्जोया। एसो य उज्जोयदण्डगो पणुवीसूसासपरिमाणेण छिज्जइ। तओ पणुवीसा चउहिं उज्जोएहिं गुणिया ऊसाससय भवति। रयणिपहाय पडिक्कमणे पुण पन्नास ऊसासा सयस्स अद्धेण होन्ति। तत्थ दोहि उज्जोएहि पणुवीसा गुणिज्जइ। पक्खपडिक्कमणे बारस 30 उज्जोया। तेहिं पणुवीसा गुणिया होन्ति ऊसासाण तिन्नि य सयाओ। चाउम्मास पडिक्कमणे वीसाए उज्जोएहि पणुवीसा गुणिज्जइ, पचसया होन्ति। वारिसिय पडिक्कमणे चत्तालीसाए उज्जोएहिं पणुवीसा गुणिया सहस्समुस्सासाण होइ। अन्ने अट्ठ ऊसासा नमोक्कारे कज्जन्ति। तओ अट्ठुत्तर सहस्स होइ। सो य नमोक्कारो सवच्छरिए बहुओ कालो निव्विग्घेण गओ त्ति चिन्तिज्जइ मगलत्थ पज्जन्ते। 35

1 B॰ ग्गओ। 2 A॰ मिओ। 3 B ततो। 4 B 'बाल'नास्ति। 5 B च। 6 B नास्ति। 7–8 A ॰मिणो। 9 B नदीए। 10 A नदी। 11 A नदि स॰। 12 B जइणो॰। 13 B एतेसु। 14 A पयच्छित्त। 15 A पुण॰। 16 A पस॰। 17 B करेउ त्ति। 18 A सुमिणोत्ति। 19 A ऊसासयप॰। 20 A मिहुण॰। 21 B उस्स॰।

२२. 'उद्देस' इच्चाइ। सुत्ते उद्देस-समुद्देस-अणुन्नासु सत्तावीस ऊसासा उस्सग्गो कीरइ। सुयक्खन्धङ्गपरियट्टणुत्तरकाले य सत्तावीसुस्सासपरिमाणुस्सग्गकरणं। पट्ठवणपडिक्कमणे अट्ठूसासगपरिमाणुस्सग्गकरणं। आइसद्देण दुन्निमित्तावसउणपडिघायनिमित्त अट्ठूसासमुस्सग्ग करेइ। एयं काउस्सग्गारिहं भणिय॥ ५॥

5 २३ 'उद्देसज्झयणे' इच्चाइ। उस्सग्गाभिहाणाणन्तर तवारिहं भण्णइ। तत्थ नाणायारा इयारो दुविहो—ओहओ, विभागओ य। तत्थ विभागेण उद्देसग-अज्झयण-सुयक्खन्ध अङ्गाणं कमसो य परिवाडीए कमेण, पमाइस्स कालाइक्कमणाइसु त्ति सम्बज्झइ। पमाइगहण, काल विणय-बहुमाण-उवहाण-अनिण्हवण विवज्जया अइयारो होइ। वञ्जणमेय-अत्थमेय-तदुभयमेया वा कया अइयारो होइ नाणस्स। एएसिं अट्ठण्हपयाणमन्नयरट्ठाणट्ठिओ नाणाइयारे वट्टइ।
10 अकाले सज्झायकरणं असज्झाइए वा करण, एस कालाइयारो। विणयं न पउञ्जइ, जच्चाइएहिं वा मयावलेवलित्तो विणयभंगं करेइ, हीलइ वा, एवमाइ विणयाइआरो। सुए गुरुम्मि य बहुमाण भत्तीओ न करेइ। भत्ती उवयारमेत्तं। बहुमाणो ओरसो सिणेहसम्बन्धो आयरियाणं उवरि सो वा न कओ। उवहाण तवच्चरणं आयंबिलाइय न करेइ। निण्हवणं अवलवणं। जस्स सगासे अहीयं तदुद्देसेण भणइ 'नाहं तस्स सगासे अहिज्जिओ'। जुगप्पहाणं वा सूरिं समुद्दिसइ,
15 सयमेव वाहिज्जिय भणइ। एसा निण्हवणा। वञ्जयइ जेण अत्थो तं वञ्जणं। सुत्तस्स सन्ना। तं च सुत्तं मत्ताऽक्खरबिन्दूहिं ऊणमइरित्तं वा करेइ, सक्कय वा करेइ, अन्नाभिहाणेण वा भणइ। एस वञ्जणमेओ। एवमत्थमेय तदुभयमेया वि नेया।

२४ 'निव्विगइय'—इच्चाइ। उद्देसगाइयारे निव्विगइयं[1]। अज्झयणाइयारे पुरिमड्ढं। सुयक्खन्धाइयारे एगासणय[3]। अंगाइयारे आयंबिल। अणागाढे एय। आगाढे पुण एएसु चेव ठाणेसु[4]
20 पुरिमड्ढाइ-अब्भत्तट्ठ पज्जवसाण। अत्थसुण्णे वि पुरिमड्ढाइ खमण पज्जन्तमेएसु चेव ठाणेसु। एयं विभागपच्छित्तं भणियं। इयाणिं ओहेण[5] भन्नइ। —

२५ 'सामन्नं पुण' इच्चाइ। सव्वम्मि चेव सुत्ते ओहेण अविसेसिए आयाम। अत्थे य अविसेसिए अब्भत्तट्ठो। कमेण अहिज्जन्तो न ताव पावइ तं सुत्तं अत्थ वा परियाओ वा न पूरइ सो अपत्तो (१), अवरो अपत्तो अजोगो। तिंतिणिचवलचित्त[6]गाणगणियाइ णेगदोस-
25 संजुत्तो (२), अन्नोवि अपत्तो[7] वयसा सुएण वा (३) एएसिं सव्वेसिं चेव जो वायण देइ उद्देस समुद्देसणुन्ना वा करेइ तस्स वि खमण। 'च' सद्देण जइ पत्तं न वाएइ सुएण, पत्त वा जोग न वाएइ, वत्तं वा वयसुएहिं। एएसिं च उद्देसणादि जो न करेइ वा तस्स अब्भत्तट्ठो।

२६ 'कालाविसज्जण'—इच्चाइ। कालाविसज्जण कालस्स अपडिक्कमण। 'आइ'सद्देण अणुओगस्स[8] अविसज्जण। 'मंडलि वसुहा' मंडलि भूमी सा तिविहा[9] सुत्ते अत्थे भोयणे।
30 एएसिं तिण्हवि अप्पमज्जणे निव्वीयं। सुत्ते अत्थे वा निसेज्ज न करेइ। अक्खे वा न रएति तो खमण, 'च' सद्दा वदण-काउसग्गे ण करेति तहावि खमण चेव।

२७ 'आगाढाणागाढम्मि' इच्चाइ। जोगो दुविहो—आगाढो अणागाढो य। आगाढे सव्वभंगो देसभंगो य। अणागाढे वि सव्वभगो देसभगो य। सव्वभगो नाम आयंबिल न करेइ, विगईओ सेवइ। देसभंगो नाम विगई भुञ्जेऊण पच्छा काउस्सग्ग करेइ। सयमेव वा काउ-
35 स्सग्ग काऊण भुञ्जइ, विगई वा एगट्ठं गेण्हइ[10]। अभणिओ[11] वा ... रेसि

1 B ॰व्वीइयं। 2 A ॰यम॰। 3 ... 4 B ट्ठाणे॰ ... 6 B तितिणियचलचि॰। 7 A अव्वत्तो। 8 A ... A तिहा। ... 11 A

भणइ। आगाढसव्वभंगे छट्ठ, देसभंगे चउत्थ। अणागाढसव्वभंगे चउत्थ, देसभंगे आयंबिल। एस नाणाइयारो भणिओ।

इयाणिं दंसणाइयारो भन्नइ—

२८ 'संकाइयासु देसे' इच्चाइ। संका आइ जेसिं पयाणं ताइं इमाइं संकाइयाइं। तेसु संकाइएसु अट्ठसु पएसु। काणि पुण ताणि? इमाणि भन्नन्ति। [१] संका, [२] कंखा, [३] 5 वितिगिञ्छा[1], [४] मूढदिट्ठी, [५] अणुववूहा,[2] [६] अथिरीकरणं, [७] अवच्छल्ल, [८] अप्प भावणया[3]। संसयकारण संका–देसे य[4] सव्वे य। तत्थ देसम्मि जह—तुल्ले जीवत्ते किह भविया अभविया[5], अन्ने एवमाइ संकादेसे। सव्वे—पागय[6]भासवद्धत्ता मा होज्जाऽकुसल परिकप्पिय। दिट्ठन्तो पेज्जकप्पट्ठो। एत्तो कंखा दुविहा—देसे, सव्वे य योभव्वा। देसे कुति-त्थियमयं कंखइ। एत्थवि अहिंसा मोक्खो य दिट्ठो त्ति। सव्वे पुण कंखइ सव्वे कुतित्थिमए[7]। 10 दिट्ठंतो रायामच्चा आसावहिया पसत्थमपसत्था। वितिगिञ्छा[8] देसे सव्वे य। जहा भइमो[9] परिसो परिकेसो अम्हाण केसलोयाइ कीरए होज्जा न[10] वा मोक्खो। विदुगुञ्छा वा-विदुशाने विद[11] साधव। ते दुगुञ्छइ मण्डलि मोय-जल्लाइएहिं। मूढदिट्ठी परतित्थियपूयाओ[12] अइसयम-याणि वा सोऊण मइवामोहो होज्जा। उववूहा दुविहा—पसत्था अप्पसत्था य। पसत्था साहूसु नाणदंसणतवसंजमखमणवेयावच्चाइसु अब्भुज्जयस्स उच्छाहवड्ढण उववूहण। अप्पसत्था 15 मिच्छत्ताइसु[13]। थिरीकरण पसत्थमप्पसत्थ च[14]। विसीयमाणस्स चरित्ताइसु थिरीकरणं पसत्थ। असंजमे थिरीकरणं अप्पसत्थ। वच्छल्लमवि एवमेव दुविह—आयरिय गिलाण-पाहु-ण-असहु[15]-बाल वुड्ढाईण[16] आहारोवहिमाइणा समाहिकरण पसत्थ। ओसन्नाइ[17] गिहत्थाण अप्पसत्थ। पभावणा वि एवमेव[18]। तित्थयर पवयण निव्वाण मग्गपभावणा पसत्था। मिच्छत्त अण्णाणाईण[19] अप्पसत्था। एव अट्ठ वि वित्थरओ परूवेऊण। तत्थ संका देसे सव्वे य। एव कंखा 20 वि। एव वितिगिञ्छा[20] दुगुञ्छा वि। एव मइ[वा]मोहो वि। अप्पसत्थुववूहा देसे सव्वे य। एव वच्छल पि देसे सव्वे य। अप्पसत्थप्पभावणा वि देसे सव्वे य। तत्थ चउसु वि संकाइएसु देसे खमण। मिच्छोववूहणाइसु य देसे[21] खमण। च सद्देण थिरीकरण-वच्छल्ल-प्पभावणे मिच्छ त्ताईण देसे खमण। एव ओहओ। विभागओ[22] पुण संकाइसु अट्ठसु वि देसे भिक्खुस्स पुरिमड्ढ। वसभस्स एक्कासणग[23]। उवज्झायस्स आयंबिल। आयरियस्स अब्भत्तट्ठो। 25

२९ 'एवचिय' इच्चाइ। एव[24] चेवाणन्तरुद्दिट्ठ पुरिसविभागेण पच्छित्त पिह पिहं। जइणं साहूण[25] उववूहण न करेइ। आइसद्देण[26] थिरीकरण वच्छल्ल पभावण वा पवयणजइ[27]माइयाण ण करेइ। भिक्खुस्स पुरिमड्ढं। वसभस्स[28] एक्कासणय[29]। उवज्झायस्सायंबिल। गुरुस्स अभत्तट्ठो। एय पढमद्धवक्खाण। पच्छद्ध पुण उवरिमगाहाए सम्बज्झइ[30]। सा य एसा गाहा— 'आइ'- 30

३० 'परिवाराइ' इच्चाइ। 'परिवारनिमित्त'ति सहायनिमित्त ति ज भणिय होइ। 'आइ'-सद्देण आहारोवहि निमित्त वा। तप्पसाएण आहारोवहि-सेज्जाओ वा लभिस्सन्ति त्ति काउ सावग-सन्नायगाण वा सव्वेसिं पासत्थोसन्नकुसीलसंसत्ताहाछन्दणियाण[31] उवरि ममत्त करेइ।

1 B विगिंछा। 2 A अण०। 3 B अप०। 4 B 'य' नास्ति। 5 B० विए। 6 B पागइय। 7 B ०तिरय०। 8 B विइगिंञ्छा। 9 A इइमो। 10 B ण। 11 B विदव। 12 A पूयाअइ०। 13 A मिच्छाइसु। 14 B वा। 15 B ०णग सहु असहु। 16 B ०दीण। 17 A ०ण्णइ। 18 A एमेव। 19 B ०त्तऽन्ना०। 20 B विगिंछा। 21 B ०वूहणा देसे। 22 A विभागाओ। 23 B एगास०। 24 B एय। 25 A जइ साहू। 26 B आदि०। 27 A जति०। 28 B वसहस्स। 29 B एगास०। 30 B ०ज्झति। 31 B ०च्छंदनीइयाण।

वा परिपालण सम्भोग-संवास सुत्तत्थदाणाणि। जइ करेइ चच्छल्ल तो भिक्खुणो णिव्वीय[1]। घसभोवज्झायगुरूणं[2] पुरिमेगासणायामाइ जहासंखं। अह पुण इममालम्बण करेइ। 'साहम्मि ओ'त्ति एसो सजम वा करेसइ[3]। 'वा'सद्देण कुलगणसंघगिलाणकज्जाइएसु पडितप्पिस्सइ त्ति[4]। एवं विहाए बुद्धीए सव्वहि सुद्धो। एव दसणायारपच्छित्त भणियं॥

5 इयाणि चरित्तायारपच्छित्तं भन्नइ—

३१ 'एगिंदियाण' इच्चाइ। एगिन्दिया पुढवि आउ तेउ वाउ पत्तेयवणस्सई। एएसिं पंचण्ह वि पिहु पिहु सघट्टणे निव्वीइय[5]। आउकायस्स सघट्टणे[6] घड गोलंकय-वारगाइ ठियस्स, पायटत्थाइचालियस्स ईसिं परियावो, पुण गाढतरचालियस्स उद्दवण। पिहु परितावणद्दणणपा णाईसु। एएसिं च परितावणा दुविहा अणागाढा आगाढा य। तत्थ अणागाढाए पुरिमड्ढ। 10 आगाढाए एक्कासणयं। उद्दवणे[7] पुण आयाम पंचसु वि।

३२ 'पुरिमाई' इच्चाइ। अणन्तवणस्सइ विय तिय-चउरिन्दियाण संघट्टण अणागाढ आ गाढ परिताव[8]-उद्दवणेसु पुरिमाइ-खमणन्तं[9] जहासखं। पञ्चिन्दियसघट्टणे एक्कासणयं। अणा गाढ परितावणे आयाम। आगाढपरितावणे[10] खमणं। उद्दवणे एक्ककल्लाणग। पमायसहियस्स।

३३ 'मोसाइसु' इच्चाइ। मुसावाय-अदत्त परिग्गहेसु मेहुणवज्जिएसु। दव्वाइवत्थुभिन्नेसु 15 त्ति। मुसावाओ चउव्विहो—दव्वखेत्तकालभावेहिं। दव्वओ जहण्णमज्झिमुक्कोसो। एव खेत्त कालभावेसु वि तिविहो। एव[11] जहा मुसावाओ चउव्विहो पुणो य एक्केक्को तिविहो। तहाऽदत्त परिग्गहा वि। एत्थ य दव्वाइमेयभिन्ने चउव्विहे वि[12] मुसावाए जो जहन्नमेओ तहिं सव्वत्थ एक्कासणय, मज्झिमे सव्वहिं आयामं, उक्कोसे वि चउव्विहे खमण। एव अदत्त परिग्गहेसु वि पच्छित्तं वायव्वं।

20 ३४ 'लेवाडय' इच्चाइ। लेवाडय परिवासे[13] अब्भत्तट्ठो। सुक्कसन्निहिएसु वि—सुंठिहरडइ घहेडगाइसु अब्भत्तट्ठो। इयरा गिल्लसन्निही—गुलकक्कयघयतेल्लाई तीए छट्ठं। सेस निसिभत्ते अट्ठमं। ओहसुत्ताओ[14] जमवं त सेस। किं चोहसुत्तं? पढमभगो। सेसा तिन्नि भगा सेसनिसि भत्तसद्देण भवन्ति। एवमेयं मूलगुणाइयारे मेहुणवज्जिए पच्छित्तं भणियं। मेहुणाइयारस्स पुण मूलट्ठाणे भणिहिई।

25 इयाणिं उत्तरगुणाइयारपच्छित्तं भन्नइ। ते य उत्तरगुणा पिंडविसोहीयाईया। तत्थ पिं-डविसोही तिसु ठाणेसु हवइ। उग्गमे उप्पायणाए एसणाए य। तहा सजोयणपमाणइंगाल, धूमकारणविभागेण य विसुद्धी भवइ[15]। एत्थ य उग्गमो सोलसभेओ। ते य इमे सोलस मेया आहाकम्माई[16]। एत्थ सोलससु दोसेसु जत्थ जत्थ सरिसं पच्छित्तं त तं दोस गाहाए सपिंडिय कहयइ। तहा उप्पायणाए वि सोलस। तत्थ जे सरिसपच्छित्ता ते समुच्चिणइ। एव एसणा-30 दोसेसु वि दससु सरिसट्ठाणाइं उवसंहरइ। एगट्ठी किच्चा। एए सव्वे वि पिंडनिज्जुत्तिणुसारेण भाणियव्वा। इह पुण पच्छित्तमेव केवल विहिज्जइ।

आहाकम्मे खवणं।

उद्देसियं दुविहं—ओहे विभागे य। परिमियभिक्खदाणरुवं ओहो सामन्नमेगपगार अविसेसियं तत्थ पुरिमड्ढं। विभागे तिन्नि मेया उद्देसो, कड, कम्म। एए[17] तिन्नि वि[18] पत्तेय

1 B निव्वीइय। 2 A घसभोज्झाय। 3 B करिस्सइ। 4 A ॰तप्पस्सइ। 5 A ॰व्विईय। 6 A आउकायसंघट्टण। 7 A ओदवणे। 8 B परियावण। 9 B खवण। 10 B परियावे। 11 B एव जरा। 12 A 'वि' नास्ति। 13 A ॰वासेइ। 14 B ओहसुत्ता॰। 15 B होइ। 16 B कम्माती। 17 A एएसिं। 18 A ॰ण्हवि।

चउहिं भेएहिं भिज्जन्ति[1]। त जहा—उद्देसुद्देसिय, उद्देससमुद्देसिय, उद्देसाएसिय, उद्देसस-माएसियं। एएसु विभेएसु पुरिमड्ढ। कडुद्देसं, कडसमुद्देस, कडाएस, कडसमाएस। एएसु वि चउसु विभेएसु एक्कासणय। तहा कमुद्देस, कम्मसमुद्देस, कम्माएस, कम्मसमाएस। तत्थ पढमे[2] आयंबिलं। सेसेसु तिसु भेएसु अब्भत्तट्ठो।

पूइय दुविह—सुहुम बायर च[3]। सुहुम धूमाइ। बायर उवगरणे भत्तपाणे य। तत्थ उव गरणपूइए पुरिमड्ढ। भत्तपाणपूइए एक्कासणय। 5

मीसज्जायं तिविह—जावंतियमीसज्जाय एत्थ आयंबिलं। पासंडमीसज्जाए साहुमी-सज्जाए य खमणं।

ठवणा दुविहा—इत्तिरिया तत्थ निव्वीइयं। चिरठवियाए पुरिमड्ढ।

पाहुडिया वि दुविहा—सुहुमाए निव्वीइयं। बायराए खमण। 10

पाओकरणं दुविह—पागडकरणे पुरिमड्ढ। पगासकरणे आयाम।

कीयं दुविह—दव्वे भावे य। दव्वे दुविह—आयकीय, परकीय च। एत्थ दोसु वि आ-याम। भावे वि आयकीय परकीय च। भावायकीए आयाम। भावपरकीए पुरिमड्ढ।

पामिच्च दुविह—लोइय एत्थ आयाम, लोगुत्तरिए पुण पुरिमड्ढ।

परियट्टिय दुविह—लोइए आयाम, लोगुत्तरिए पुण पुरिमड्ढ। 15

आहडं दुविह—सग्गामओ[4], परग्गामओ य। सग्गामाहडे पुरिमड्ढं। परग्गामाहडे सपच्च वाए चउत्थ। परग्गामाहडे निप्पच्चवाए आयाम।

उब्भिण्ण दुविह—दद्दरउब्भिन्ने पुरिमड्ढ, पिहिओब्भिन्नकवाडे आयाम।

मालोहड दुविह—जहन्ने पुरिमड्ढं, उक्कोसे आयाम।

अच्छेज्जं तिविह—पहुअच्छेज्जं, सामिअच्छेज्ज, तेण अच्छेज्ज[5]। तिसु वि आयाम। 20

अणिसट्ठ तिविह—साहारणाणिसट्ठं,[6] चोल्लगाणिसट्ठ, जड्डाणिसट्ठं। तिसु वि आयाम।

अज्झोयरो तिविहो—जावतिय पासंडियमीसो, साहुमीसो। एत्थ जावतिए पुरि-मड्ढ, इयरेसु दोसु वि एक्कासणय। एव उग्गमदोसेसु पायच्छित्त भणिय।

इयाणिं उप्पायणाए[7] पायच्छित्त भन्नइ—धाई[8] पचविहा, सव्वत्थ आयाम। दूई दुविहा—सग्गाम परग्गामा, दोसु वि आयाम। निमित्त तिविह—तीए आयाम, वट्टमाणे[9] अणागए य खमण। आजीवे जाइकुलाइभिन्ने, सव्वत्थ आयाम। वणीमए[10] वि सव्वत्थ आयाम। तिगिच्छा दुविहा—सुहुमाए पुरिमड्ढ, बायराए[11] आयाम। कोहे माणे आयाम, मायाए एक्का सण,[12] लोभे खमण। सथवो दुविहो—पुव्विं सथवो, पच्छासथवो वा। वयण-सथवे पुरिमड्ढं, सम्बन्धि संथवे आयाम। विज्जाए आयाम। मन्ते आयाम। चुण्णे आयाम। जोगे आयाम। मूलकम्मे मूल। 25 30

इयाणिं एसणादोसेसु पच्छित्त भण्णइ—ते य इमे दस सकियमाईया[13]। तत्थ सकिए चउभंगो-सकियगाही सकियभोई[14]। चरिमो निस्सकिओ[15] दोसविसुद्धो, बीओ[16] वि विसुद्धो चेव। पढमतइए[17] सकियभोई। ज दोस सकइ तस्स चेव पच्छित्तमावज्जइ। सचित्तमक्खियं तिविह—पुढवि-आउ-वणस्सइ। तत्थ पुढविससरक्खसमक्खियहत्थेण निक्खिगइय[18]। मीसकद्दमेण पुरिमड्ढ। निम्मीसकद्दमे आयाम। मट्टिया ओस-हरियाल हिंगुलुय मणोसिला अजण लोण 35

1 A भिज्जइ। 2 B पढमए। 3 B 'च' नास्ति। 4 B ०माओ। 5 B अच्छिज्ज। 6 A साधारण अणिसट्ठ। 7 A ०यणेए। 8 B धाती। 9 A वट्टमा०। 10 B वणीमगे। 11 A पाय०। 12 B एगासणग। 13 B ०मादीया। 14 B भोती। 15 A नीसं०। 16 A बि-इओ विसु०। 17 A ततिए। 18 B निव्वीयय।

गोरुय-धन्निय-सेडिय-सोरट्ठिय मक्खिए करमत्ते सघत्थ पुरिमड्ढं। एयं पुढविमक्खियं। इयाणिं आउमक्खियं भन्नइ—ससिणिद्धे निव्विगइयं। उदउल्ले पुरिमड्ढ। पुरकम्म पच्छकम्मे आयामं। एयं आउमक्खियं भणियं। इयाणिं वणस्सइमक्खियं भन्नइ—सो य वणस्सई दुविहो-परित्तो, अणन्तो य। परित्ते तिन्नि भेया—पिट्ठ, रोट्ट[1], कुक्कुसा। उक्कुट्ठं चिंचाइ। एएहिं मक्खिएहिं तिहिं वि
5 पुरिमड्ढ। अणन्ते वि[2] एएहिं चेव तिन्नि भेया। एत्थ एक्कासणयं[3]। एयं सच्चित्तमक्खियं भणियं। इयाणिं अचित्तमक्खियं भन्नइ—तं दुविहं—गरहिय-मज्जायमक्खिए आयामं। अगरहिय-ससत्त मक्खिए आयामं[4]। एयं मक्खियं भणियं। इयाणिं णिक्खित्तं भन्नइ—एत्थ चउभंगो सचित्ते सचित्तं निक्खित्तं। एत्थ तइए[5] पच्छित्तं। तं च सच्चित्त छक्काया—पुढवी-आऊ-तेऊ वाऊ परित्तवणस्सइकाऊ तसाण च। सच्चित्ताणमणन्तर-निक्खित्ते आयामं। एएसिं चेव सच्चित्ताण
10 परंपरनिक्खित्ते पुरिमड्ढ। एएसिं चेव मीसाणमणन्तर[6]निक्खित्ते पुरिमड्ढ। एएसिं चेव मीसाण परंपरनिक्खित्ते निव्वीय। अणन्तवणस्सइ-सच्चित्ताणन्तरे खमणं। एयस्स चेव परंपरेण[7] एक्कासणयं[8]। अणन्तवणस्सइ मीसाणन्तरणिक्खित्ते एक्कासणयं। एयस्स चेव परंपरनिक्खित्ते निव्वीयं। पिहिए चउभंगो। तत्थ तइए[9] पच्छित्तं। अचित्तेण गुरुणा पिहियस्स, सचित्तेण पुढवी आऊ-तेऊ-वाऊ परित्तवण तस सचित्तेहिं अणन्तर[10]पिहिए आयामं। एएहिं, चेव
15 परंपरपिहिए पुरिमड्ढं। एएहिं चेव मीसेहिं अणन्तर पिहिए पुरिमड्ढं। एएहिं चेव परंपरे निव्वीय। अणन्तवण-सचित्ताणन्तरपिहिए खमण। तेण चेव परंपरपिहिए एक्कासणय। अणन्तवणस्सइ मीसाणन्तरपिहिए एक्कासणय। एएण चेव परंपरपिहिए निव्वीय। गुरु अचित्तपिहिए खमणं। इयाणिं साहरियं भन्नइ। एत्थ वि चउभंगो। तत्थ पुढवि आऊ तेऊ वाऊ परित्तवणस्सइ तससचित्ताणन्तरसाहरणे आयामं। एएहिं परंपरसाहरणे पुरिमड्ढ। एएहिं चेव मीसाण अणन्तर
20 साहरणे पुरिमड्ढं। एएहिं चेव मीसाण परंपरसाहरणे निव्विइय[11]। अणन्तवणस्सइसचित्ताणन्तर-साहरणे खमणं। एएहिं चेव[12] अणन्तवणस्सइपरंपरसाहरणे एक्कासणयं। अणन्तवणस्सइमीसाण न्तरसाहरणे एक्कासणय। एयस्स चेव मीसपरंपरसाहरणे निव्विइय। बीयसाहरिए निव्विगइयं। अचित्ते अचित्तं साहरिए पुरिमड्ढं। अह गुरुसाहरिए तो खमणं। इयाणिं दायारो त्ति[13] भन्नइ—बाले वुड्ढे मत्ते उम्मत्ते चेव णेजरिए अन्धे एएसु दिन्तेसु गहणे आयामं। पगलन्तकुट्ठे खमण।
25 पाउयारूढे वि खमणं। हत्थे[14] दुइए नियलबद्धे य हत्थच्छिन्ने य पायच्छिन्ने य नपुंसके[15] गुव्विणी बालवच्छाए भुञ्जन्तीए विरोलन्तीए भज्जन्तीए कंडन्तीए पीसन्तीए एयासु सव्वासु आयामं। पिंज न्तीए[16] रुन्तीए कत्तन्तीए पमद्दमाणीए पुरिमड्ढ। छक्कायवग्गहत्था समणट्ठा णिक्खिविचु ते चेव[17]। गाहन्ती[18] घट्टन्ती[19] संघट्टन्ती आरभन्ती[20]। एयासु सट्ठाणे नी० पु० ए० आ० अभ० कल्लाणग। एय सट्ठाणं। ससत्तेण दव्वेण लित्तहत्था य लित्तमत्ता य आयामं, सेसेसु पुरिमड्ढ। ओयत्तन्तीए[21]
30 साहारण च देन्तीए चोरियग देन्तीए पाहुडिय[22] ठवेन्तीए सपच्चवायाए परं च उद्दिस्स आयामं॥ इयाणिं उम्मीसं भन्नइ—परित्तवणस्सइ सचित्तउम्मीसे आयामं। एएण चेव परित्तेण मीसेण उम्मीसे निव्विइयं। अणन्तसचित्तउम्मीसे खमणं। एएण चेव अणन्तमीसे निव्विइय। बीउम्मीसे[23] निव्विइय। अह पुढवाईहिंतो जहा णिक्खित्ते। इयाणिं अपरिणयं भन्नइ—तं दुविहं-दव्वे भावे य। दव्वे अपरिणय-पुढवि आउ तेउ-वाउ परित्तवणस्सइ अपरिणए आयामं। अण

---

1 B नास्ति। 2 A अणतेहिं। 3 B एगासणग। 4 A इदं वाक्यं पतितम्। 5 A ततिए। 6 A मीसाणतर०। 7 A परंपरे। 8 B एगासणग। 9 A ततिए। 10 A अणतरे०। 11 B निव्वीय। 12 A एतद्वाक्यं नास्ति। 13 B दायगेत्ति। 14 B हत्थ। 15 A ०सये। 16 B रुचनीए। 17 A चेव। 18 A ०ट्टिंती। 19 A नास्ति। 20 A संघट्टमारभंतीए। 21 A ओयततीए। 22 ०डियग। 23 A पिउ०।

खवणस्सइ अपरिणए खमणं। एत्थ य चउभंगो—दव्वे अपरिणयं, भावे वि अपरिणय। भावा परिणय दोण्हं पि[1] भुञ्जमाणाणं, एत्थ वि पुरिमड्ढ। इयाणिं लित्त भण्णइ—संसत्तेण हत्थेण वा मत्तेण वा[2] आयामं। इयाणिं छड्डियं भण्णइ—पुढवि आउ तेउ वाउ परित्तवणेसु आयाम। अणन्तवणेसु खमण। एए एसणा दोसा।

सजोयणा दुविहा—बाहिं भायणे, अन्तो वयणे। दोण्ह वि खमणं। परिमाणाइरित्ते 5 आयाम। सइगाले खमणं। धूमे आयाम। अकारणे भुञ्जइ[3] आयाम। कारणे अभुञ्जमाणस्स आयाम। घासेसणा दोसा एए।

एयम्मि पच्छित्तपत्थारे—

३५ 'उद्देसियचरिमतिए' इच्चाइ गाहा।
३६ 'अइरं अणन्त' इच्चाइ गाहा।
} एयाओ दोवि गाहाओ जेसु जेसु ठाणेसु अब्भत्तट्ठ तेसु तेसु ओयारिज्जन्ति। 10

३७ 'कम्मुद्देसिय' इच्चाइ गाहा।
३८ 'अइर परित्त०' इच्चाइ गाहा।
} एयाओ दोवि जेसु जेसु ठाणेसु आयाम तेसु तेसु ओयारिज्जन्ति।

३९ 'अज्झोयर' गाहा। एगासणयट्ठाणेसु ओयारिज्जइ।

४० 'ओह विभागा' इच्चाइ गाहा।
४१ 'सगामाहड' इच्चाइ गाहा।
४२ 'पत्तेय'मिच्चाइ गाहा।
} एयाओ तिण्णि गाहाओ जेसु जेसु ठाणेसु पुरिमड्ढ तेसु तेसु ओयारिज्जन्ति। 15

४३ 'इत्तरठविय' इच्चाइ गाहा। एसा निव्विईय जेसु जेसु ठाणेसु तेसु तेसु ओयारिज्जइ।

४४ 'सहसाणाभोगे' इच्चाइ। सहसाणाभोगा पुव्वुत्ता। तेसु सहसाणाभोगेसु वट्टमाणस्स जेसु जेसु कारणेसु पडिक्कमणं भणिय तेसु तेसु चेव कारणेसु आभोएण जाणमाणो ज करेइ, अइबहुसो पुणो पुणो अइप्पमाणेण वा करेइ, सव्वत्थ निव्विगइय।

४५ 'धावणडेवण' इच्चाइ। धावण गइभेदो[4]। डेवण उल्लडण[5]। संघरिसेण गमण—20 को सिग्घगइ त्ति, जमलिओ वा गच्छइ। किड्डा अट्ठावय-चउरंग जूयाइ। कुहावण[6] इन्दजाल वट्टखेड्डाइ। आइसद्देण समास पहेलिया-कुहेडगा घेप्पंति। उक्कुट्ठी[7] पुक्कारिय कलकलो। गीयं गीयमेव। छेलिय सेंटिय[8]। जीवरूय—मयूर तित्तिर-सुग-सारसादिलविय सद्देसेतेसु अब्भत्तट्ठो। आइसद्देण अजीवरूये वि—अरहट्ट गड्डिया पाउया-सद्देसु वि।

४६ 'तिविहोवहिणो विच्चुय' इच्चाइ। तिविहोवहिणो—जहन्नो मज्झिमो उक्कोसो। मुहपोत्तिय पायकेसरिया गोच्छगो पत्तठवण च एस चउव्विहो जहन्नो। मज्झिमो छव्विहो—पडलाइ रत्ताण पत्ताबंधो चोलपट्टो मत्तओ रयहरण च। उक्कोसो चउव्विहो-पडिग्गहो, तिन्नि पच्छाया[9]। एए ओहियस्स थेरकप्पे[10] चोद्दसभेया भणिया। इयाणिं उवग्गहिओ थेरकप्पो[11] तिविहो भण्णइ—जहन्नो मज्झिमो उक्कोसो। पीढग निसिज्ज डंडगा पमज्जणी घट्टगा डगलगा पिप्पलग सूई नहरणी दंत कण्ण-सोहणग दुग, एसो जहन्नो। वासत्ताणाइओ मज्झिमगो। वासत्ताणा पंच 30 इमे—वालो सुत्तो सुगो[12] कुडसीसग छत्तए चेव॥

> तेहिं य दोन्निओ ओहोवहिम्मि[13] वाले य सोत्तिए चेव।
> सेसतियवासताणे पणयं तह चिलिमिलीण इमं॥

1 A हु। 2 A हत्थे मत्ते वा। 3 A 'भुञ्जइ' नास्ति। 4 B गति०। 5 B उड्डण। 6 A कुहा०। 7 A उक्कुट्ठिय। 8 B सिंटिय। 9 B पच्छागा। 10 B कप्पो। 11 B कप्पे। 12 A वाले सुत्ते सूई। 13 B ओहोविरि०।

घालमई[1] सुत्तमई घागमई तहय डंडकडगमई। संथारगदुगमझुसिरं झुसिरं पिय[2] डडपणग च॥
डंढ विडंडग-लट्ठि विलट्ठी तह नालिया य पंचमिया। अवलेहणि मत्त तिगं पासवणुच्चारखेले य॥
चम्मतियऽत्थुर पाउर तलिग अहवावि चम्मतिविहमिमं। कत्तीतलियावब्भा पट्टगदुग चेव होइमं॥
संथारुत्तरपट्टो[3] अहवा सन्नाहपट्टपल्लत्थी। मज्झो अज्झाणं पुण अइरित्तो धारगो होइ॥
5 अक्खा संथारो वा दुविहो एगंगिओ य इयरो वा। बिइयपय[4]पोत्थपणगं फलग तह होइ उक्कोसो॥
एस अज्झाण साहूणं चोग्गहिओ भणिओ। इयाणि अज्झाणं ओहिओ भण्णइ। जो थिर
थेरकप्पियाण ओहोवही चोद्दसविहो सो चेव अज्झाणं पि। नवर—
अज्झाणं एस च्चिय चोलट्ठाणम्मि[6] कमढगं नवरं। अन्नो य देहलग्गो इमोवही होइ तासिं पि॥
ओग्गहणन्तगपट्टो अट्ठोरुगचलणिया य बोधव्वा। अब्भिन्तरबाहि नियंसणीय तह कंचुए चेव॥
10 उक्कच्छिय वेकच्छिय संघाडी चेव खधकरणी य। ओहोवहिम्मि एए अज्झाण पन्नवीसाओ॥
एत्थ अज्झाणं जहन्नो जो चेव साहूण ओहिओ चउव्विहो। उक्कोसो अट्ठविहो—चउरो
चेव पुव्वुदिट्ठा जे साहूणं। अन्ने य इमे चउरो—अब्भिन्तरबाहि-नियंसणीय संघाडी खंधकरणी
एसो उक्कोसओ उ अज्झाणं। तेरसविहो उ मज्झो इणमो उ समासओ होइ॥
पत्ता बधाईया चउरो ते चेव पुव्वनिद्दिट्ठा। मत्तो य कमढगं वा तह ओग्गहणन्तगं चेव॥
15 पट्टो अट्ठोरुविय चलणिय तह कंचुगे य उक्कच्छी। वेकच्छी तेरसमा अज्झाणं होइ णायव्वा॥
जहन्नोवहिम्मि 'विस्सुए' पडिए पुण लद्धे निव्विईयं। मज्झिमे पुरिमड्ढं। उक्कोसए एक्कासणय
'विस्सरिया पेहिए'त्ति—पडिलेहिउ विस्सरिउ त्ति भणियं होइ। जहन्ने अप्पडिलेहिए निव्विईयं
मज्झिमे पुरिमड्ढ। उक्कोसे एक्कासणयं। 'विस्सारियानिवेयणे'त्ति निवेइउ[7] विस्सरिय
आयरियाईणं तिविहो[8] वि। तो एव चेव पच्छित्त। अह पुण सव्वोवही विस्सु
20 पुणरवि लद्धो। पडिलेहिउ वा विस्सरिओ। निवेइउं[9] वा विस्सरिओ सव्वो चेव, तो आयामं
४७ 'हारिय धो'इच्चाइ। हारिए जहन्नोवहिम्मि एक्कासणयं। मज्झिमे आयामं। उक्को
चउत्थ।त्थोए वि एवं चेव पच्छित्त तिविह। उग्गमेउं न निवेइए। जाणन्तो वि जहा न घ
परिग्गहिउ आयरियस्स अणिवेइओ उवही। तस्सानिवेइयस्स तिविह एय चेव पच्छित्त
अदिन्नं वा आयरियाईहिं जहभाइ मेय उवहिं परिभुञ्जइ एयं चेव तिविहं पच्छित्तं
25 दिन्नं वा उवहिं जहभाइ मेयं आयरियाईहिं अणणुन्नाओ अन्नेसिं देइ। एत्थ वि एव चे
पच्छित्त तिविहं। अह पुण सव्वोवहिं हारेज्जा। सव्वोवहिं वा उदुबद्धे धोवेज्जा। सव्वोवहिं
उग्गमेउ न निवेएइ। सव्वोवहिं वा अदिन्न परिभुञ्जइ। सव्वोवहिमणापुच्छाए अणणुन्नाउ
वा अन्नेसिं देइ। एव सव्वहारवणाइएसु[10] एएसु जीएण छट्ठ।
४८ 'मुहणन्तय' इच्चाइ। मुहणन्तए फिडिए ओग्गहाओ निव्विईय। रयहरणे अब्भत्तट्ठो
30 एव ताव अणट्ठे। अह पुण नासियं हारवियं वा पमाएण मुहणन्तय तो से चउत्थं। रयहरणे छट्ठं
४९ 'कालद्धाणाईए' इच्चाइ। विगहाइपमाएण[11] कालाईय करिन्ति भत्ताइ निव्विइयं
अह पुण परिभुञ्जन्ते चउत्थं। एवं अद्धाणाइक्कमे वि अपरिभुञ्जन्तस्स निव्विईय, परिभुञ्जन्तस्स
अब्भत्तट्ठो। पारिट्ठावणिय सव्वमेवाविहीए विगिञ्चिन्तस्स भत्ताइ पुरिमड्ढं।
५० 'पाणस्सासवरणे' इच्चाइ। पाणाहारासवरणे। भूमि
35 कालभूमि। एगतर-अपडिलेहणाए वि[12] निव्विईयं। चउव्विहाहारासं
पोरिसियाइयं पच्चक्खाणं ण गेण्हइ, गहियं वा पच्चक्खाणं भंजइ

1 B पुस्तके 'मई' स्थाने सर्वत्र 'मती' पाठ। 2 ... 3 B
5 B चेचो०। 6 B चोलगट्ठाणमि। 7 A निवेए ... विहे।
वणाइसु। 11 A पमाएण। 12 A 'वि' नास्ति।

५१ 'एय चिय' इच्चाइ। एय चिय पुरिमड्ढ। सामन्न अविसेसिय त्ति भणिय[1] होइ। तवो बारसविहो। पडिमाओ बारस—मासिया, दोमासिया, तिमासिया, चाउमासिया, पञ्चमासिया, छम्मासिया, सत्तमासिया, पढम सत्तराइन्दिया, दोच्च-सत्तराइन्दिया, तइय-सत्तराइन्दिया, अहोराइया, एगराइया। अभिग्गहा दव्वखेत्तकालभावभेयभिन्ना। एएसिं अगेण्हणे भगे वा पुरिमड्ढ। गाहा पच्छद्धस्स विभासा[2] इमा। पक्खिए अब्भत्तट्ठमायविलं वा। ज वा दिवस पच्चक्खाण। ताओ जहासत्तीए तवं न करेइ अइरित्ति, तो खुड्डगस्स निव्वीईय, थेरगस्स पुरिमड्ढं, भिक्खुस्स एक्कासणय, उवज्झायस्सायंबिलं, आयरियस्स अब्भत्तट्ठो। चाउम्मासे खुड्डगाइ-आयरियावसाणाण पचण्ह वि जहासख पुरिमड्ढेगासणायामचउत्थछट्ठाइ दिज्जन्ति। सवच्छरिए एक्कासणायामचउत्थछट्ठट्ठमाइ दिज्जन्ति जहासंख पचण्ह वि।

५२ 'फिडिए' इच्चाइ। फिडिओ निद्दापमाएणं एगस्सुस्सगस्स निव्विईयं। दोसु पुरिमड्ढ। तिहि वि एगासणय। काउस्सग्गाणं चेव फिडिओ पच्छाहुन्तओ करेइ ताहे आयाम। सय वा उस्सारेइ एगाइ काउस्सग्गे तो निव्वीइयपुरिमड्ढेगासणाइ जहासंख। सव्वे चेव सयमुस्सारेइ आयाम। भग्गे वा एगाइउस्सग्गे अपुण्णे चेव अन्तराले तहा वि निव्विईय पुरिमड्ढेगासणाइं। सव्वेसु भग्गेसु आयाम। एव वन्दणएसु वि एस चेव गमो[3]।

५३ 'अकएसु' इच्चाइ। अहवा उस्सग्गमेव न करेइ। एगाइ ताहे पुरिमेगासणायामाइं[4]। सव्वावस्सय न करेइ चउत्थं। जहा काउस्सग्गे एव वन्दणाइएसु पि गाहा पच्छद्धेण सह चउत्थ सम्बज्झइ। दिया अपडिलेहिए थंडिले राओ[5] वोसिरइ, दिया वा सुवइ चउत्थ।

५४ 'कोहे बहु' इच्चाइ। सगिमुप्पन्न कोहं पक्खाओ उवरिं चाउम्मासाओ वा उवरिं धरेइ तो चउत्थ। आसवो पियइ तमाइयते[6] चउत्थ। कक्कोलग लवग पूगफल-जाइफल-त-बोलाइसु सव्वत्थ चउत्थ। पुव्वगाहाओ अणुयट्टाविज्जइ। लसुणे अचित्ते पुरिमड्ढ। आइसद्देण पलड्डु घेप्पइ। तणणगमयूरतित्तिराइ वधमुयणे पुरिमड्ढ।

५५ 'अझुसिर' इच्चाइ। अझुसिरतण कुसाइ तेसिं अकारणपरिभोगे निव्विईय,[7] सेसपणएसु पुरिमड्ढ। सेसा पच पणगा—तणपणग, दूसपणग[8], पोत्थयपणग, चम्मपणग। एत्थ य दूस पणग दुविह तेण पंचपणगा। तत्थ सालीवीहीकोद्दवरालगआरण्णतण[9] चेति तणपणग। दूसपणग दुविह-दुप्पडिलेहिय-दूसपणग अप्पडिलेहिय-दूसपणग च। कोयवि पावारग[10] पूरी दाढियाली विराली, एय दुप्पडिलेहिय-दूसपणग। तूली आलिंगणी अगोवहाण[11] गडोवहाण[12] मसूरगो य[13] एय अप्पडिलेहिय-दूसपणग। गडीपोत्थओ[14], कच्छवीपोत्थओ, मुट्ठीपोत्थओ, छिवाडी[15], संपुडग, एयं पोत्थयपणग। गो माहिस-अय एला मिय-चम्मपणग। एत्थ य तणपणए दुप्प डिलेहिय दूसपणए चम्मपणए य पुरिमड्ढ। अप्पडिलेहिय दूसपणए एक्कासणय। पोत्थयप णगग्गहणे आयाम। बेइन्दियाइ तसवहे ज च आवज्जइ त च दिज्जइ। विइय-चुन्निकारमएण पो त्थयपणगे वि पुरिमड्ढं।

५६ 'ठवणमणापुच्छाए' इच्चाइ। दाणसड्ढअहाभद्दसन्निमाईणि ठवणकुलाणि। ताणि आयरियमणापुच्छिय भत्ताइ पविसिऊण गेण्हइ जइ तो से एक्कासणय। तेसु य कुलेसु एगो चेव संघाडगो णिविसइ सेसा न पविसन्ति। विरिय परक्कमो त निगूहन्तस्स एक्कासणय। जीयववहारे एय। सुयववहाराइसु अन्नहा। एक्कासणयं च माया[16]निप्फन्न। सेसमायाओ अन्न

1 A पुस्तके 'ति भणिय' पतित। 2 A विहासा। 3 A कमसो। 4 B॰ गासण आया॰। 5 B 'राओ' नास्ति। 6 A तमापियते। 7 B पुस्तके 'अज्झुसिरतणेसु निव्वीय' एतावन्मात्रपाठ। 8 B पोत्थय पणग, दूसपणग। 9 B अरण्णतिण। 10 B कोयव पावार-। 11 A मडगोवहाण। 12 A गडोवहाणी। 13 B वा। 14 A ॰पोत्थगो। 15 B छेवाडी। 16 A माय॰।

पालमई[1] सुत्तमई यागमई तहय खंडफडगमई। संथारगदुगमझुसिरं झुसिरं पिय[2] खंडपणगं च॥
खंड विखंडग-लट्ठि विलट्ठी तह नालिया य पंचमिया। अचलेहणि मत्त तिग पासवणुच्चारखेले य॥
चम्मतिय[3] खुर पाउर तलिग अहवावि चम्मतिविहमिम। कत्तीतलियावज्झा पट्टगदुगं चेव होइ इम।
सयारुत्तरपट्टो[4] अहवा सणाहपट्टपल्हत्थी। मज्झो अज्जाण पुण अइरित्तो धारगो होइ॥
5 अन्नया संथारो वा दुविहो एगंगिओ य इयरो वा। पिइयपय[5]पोत्थपणगं फलगं तह होइ उक्कोसो॥

एस अज्जाण साहूणं चोग्गहिओ भणिओ। इयाणिं अज्जाण ओहिओ भन्नइ। जो च्चिय थेरकप्पियाण ओहोवही चोद्दसविहो सो चेव अज्जाणं पि। नवर—

अज्जाणं एस चिय चोलट्ठाणम्मि[6] कमढग नवरं। अन्नो य वेहलग्गो इमोवही होइ तासिं पि॥
ओग्गहणन्तगपट्टो अट्टोरुगचलणिया य बोधव्वा। अब्भिन्तरबाहि नियंसणीय तह कंचुए चेव॥
10 उक्कच्छिय वेकच्छिय संघाडी चेव खंधकरणी य। ओहोवहिम्मि एए अज्जाण पन्नवीसाओ॥

एत्थ अज्जाण जहन्नो जो चेव साहूण ओहिओ चउव्विहो। उक्कोसो अट्ठविहो—चउरो ते चेव पुव्वुद्दिट्ठा जे साहूणं। अन्ने य इमे चउरो—अब्भिन्तरबाहि नियसणीय संघाडी खंधकरणी एसो उक्कोसओ उ अज्जाणं। तेरसविहो उ मज्झो इणमो उ समासओ होइ॥

पत्ता बधाईया चउरो ते चेव पुव्वनिद्दिट्ठा। मत्तो य कमढग वा तह ओग्गहणन्तगं चेव॥
15 पट्टो अट्टोरुविय चलणिय तह कंचुगे य उक्कच्छी। वेकच्छी तेरसमा अज्जाणं होइ णायव्वा॥

जहन्नोवहिम्मि 'विच्चुए' पडिए पुण लद्धे निव्विईय। मज्झिमे पुरिमड्ढं। उक्कोसए एक्कासणय। 'विस्सरिया पेहिए'त्ति—पडिलेहिउं विस्सरिउ त्ति भणिय होइ। जहन्ने अप्पडिलेहिए निव्विईय। मज्झिमे पुरिमड्ढं। उक्कोसे एक्कासणय। 'विस्सारियानिवेयणे'त्ति निवेइउं[7] विस्सरिय ति, आयरियाईण तिविहो[8] वि। तो एव चेव पच्छित्तं। अह पुण सव्वोवही विच्चुओ
20 पुणरवि लद्धो। पडिलेहिउं वा विस्सरिओ। निवेइउ[9] वा विस्सरिओ सव्वो चेव, तो आयाम।

४७ 'हारिय धो'इच्चाइ। हारिए जहन्नोवहिम्मि एक्कासणय। मज्झिमे आयाम। उक्कोसे चउत्थं। धोए वि एवं चेव पच्छित्त तिविह। उग्गमेउ न निवेइए। जाणन्तो वि जहा न वट्टइ परिग्गहिउं आयरियस्स अणिवेइओ उवही। तस्सानिवेइयस्स तिविहं एयं चेव पच्छित्तं। अदिन्नं वा आयरियाईहिं जहन्नाइ मेयं उवहिं परिभुञ्जइ एय चेव तिविह पच्छित्त।
25 दिन्नं वा उवहिं जहन्नाइ मेयं आयरियाईहिं अणणुन्नाओ अन्नेसिं देइ। एत्थ वि एवं चेव पच्छित्तं तिविहं। अह पुण सव्वोवहिं हारेज्जा। सव्वोवहिं वा उदुवद्धे धोवेज्जा। सव्वोवहिं वा उग्गमेउ न निवेएइ। सव्वोवहिं वा अदिन्न परिभुञ्जइ। सव्वोवहिमणापुच्छाए अणणुन्नाओ वा अन्नेसिं देइ। एवं सव्वहारवणाइएसु[10] एएसु जीएण छट्ठं।

४८ 'मुहणन्तय' इच्चाइ। मुहणन्तए फिडिए ओग्गहाओ निव्विईयं। रयहरणे अब्भत्तट्ठो।
30 एव ताव अणट्ठे। अह पुण नासिय हारवियं वा पमाएण मुहणन्तयं तो से चउत्थं। रयहरणे छट्ठं।

४९ 'कालद्धाणाईए' इच्चाइ। विगहाइपमाएण[11] कालाईयं करिन्ति भत्ताइ निव्विइयं, अह पुण परिभुञ्जन्ते चउत्थं। एव अद्धाणाइक्कमे वि अपरिभुञ्जन्तस्स निव्विईयं, परिभुञ्जन्तस्स अब्भत्तट्ठो। पारिट्ठावणिय सव्वमेयाविहीए विगिञ्चिन्तस्स भत्ताइ पुरिमड्ढ।

५० 'पाणस्सासंवरणे' इच्चाइ। पाणाहारासंवरणे। भूमितिगं ति—उच्चार-पासवण-
35 कालभूमि। एगतर-अपडिलेहणाए वि[12] निव्विईयं। चउव्विहाहारासंवरणे, अहवा नमोक्कार-पोरिसियाइयं पच्चक्खाणं ण गेण्हइ, गहियं वा पच्चक्खाणं भञ्जइ सव्वत्थ पुरिमड्ढं।

1 B पुस्तके 'मई' स्थाने सर्वत्र 'मती' पाठ। 2 A चिय। 3 B थोतरि०। 4 A पिइय। 5 B चेवो०। 6 B चोलगट्ठाणमि। 7 A निवेएउ। 8 A तिविहे। 9 A निवेउ। 10 A वणाइछ। 11 A पमाएण। 12 A 'वि' नास्ति।

६३ 'एय पुण सव'मिच्चाइ। एय ति जहुद्दिट्ठ। पुण सद्दो विसेसणे। सव्व पायच्छित्त-दाणं। पाएण बाहुल्लेण। सामन्नमविसेसिय। विसेसेण निद्दिट्ठं विणिद्दिट्ठं। देयं विभागेण। दव्वाइ—आइसद्देण—खेत्तकालभावपुरिसपडिसेवणाओ य। अविक्खिऊण विसेसियं। ऊणा इरित्त तस्स भवा(?) देज्ज त्ति।

६४. 'दव्वं खेत्त'मिच्चाइ। पउमं आहारं कप्पइ। नाउम्मि त चिय—जाणिऊण दव्वाइ विभागम्मि त चेव परिमाणपरिच्छिन्नं देज्जा। अहवा, नाउमिय चिय—इदमिति पच्चक्खी-भावे। इदमेव जीयववहारभणिय देज्जा। तम्मत्तं[1] भणियसम। दव्वखेत्तकालभावपुरिसपडिसेव णादीसु हीणेसु हीण देज्जा। अहिएसु[2] अहियं देज्जा। साहारणेसु साहारणं देज्जा।

६५ 'आहाराई दव'मिच्चाइ। आहारो आई जेसिं दव्वाण ताइ दव्वाइ आहाराईणि। जम्मि देसे ताइ बलियाइ। जहा अणूवएसे[3] सालिकूरो बलिओ। सहावेणं चेव सुलहो[4] य। एयं नाऊण ज जीयभणिय दाणं तस्सब्भहियमवि देज्जा। जत्थ पुण चणक निप्फाव-कंजियाइ लुक्खाहारो, दुलहो वा; तत्थ जीयदाणं हीणमवि देज्जा।

६६ 'लुक्ख'मिच्चाइ। लुक्ख नाम नेहरहिय। खेत वाय[5]-पित्तल वा। सीयल पुण सिणिद्ध[6] भन्नइ; अणूवखेत्त वा। निद्धलुक्खं साहारण भन्नइ। इह य जीयदाणे णिद्धखेत्ते अहिय देज्जा। साहारणे जहा भणियं समं देज्जा। लुक्खखेत्ते हीण देज्जा। एव काले वि तिविहे[7] तिविह देज्जा।

६७ 'गिम्हसिसिर'इच्चाइ। गिम्हो लुक्खो कालो। साहारणो हेमन्तो। वासारत्तो निद्धो। गिम्हे तिविहो तवो—जहन्नो मज्झो उक्कोसो। जहन्नो चउत्थ, मज्झिमो छट्ठं, उक्कोसो अट्ठम। हेमन्ते तिविहो—जहन्नमज्झिमुक्कोसो छट्ठट्ठमदसमभेओ। वासारत्ते वि जहन्नमज्झिमुक्कोसो अट्ठमदसमबारसमेयभिन्नो। एम नवविहो ववहारो। एयं सुट्ठु जाणिऊण सुयववहारेण वा नवविहविगप्पेण सुट्ठु जाणिऊण तिविह-काले तिविह विगप्पिय तव देज्जा। सो य इमो—अहागुरुआइ। एत्थ य मूलिया नवभेया नवभेयपत्थारे दट्ठव्वा। विभज्जमाणा सत्तावीस। आवत्ति-दाण-तवसा कालेण य निओएयव्वा। एस नवविहो ववहारो भणिओ त्ति। सो य नव विहो ववहारो इमो—

गुरुओ गुरुयतराओ[8] अहागुरू चेव होइ ववहारो।
लहुओ लहुयतराओ[9] अहालहू होइ[10] ववहारो॥
लहुसो लहुसतराओ अह लहुसो चेव होइ ववहारो।
एएसिं पच्छित्त वोच्छामि अणाणुपुव्वीए—(सुत्ताणुसारेण)॥
गुरुगो य होइ मासो गुरुयतराओ[11] य होइ चउमासो।
अह गुरुगो छम्मासो[12] गुरुपक्खे होइ पडिवत्ती॥
तीसा य पणवीसा वीसा[13] विय होइ लहुयपक्खम्मि।
पनरस[14] दस पचे व य लहुसय[15] पक्खम्मि पडिवत्ती॥
गुरुग च अट्ठम खलु गुरुयतराग[16] च होइ दसम तु।
अह गुरुग बारसमं गुरुपक्खे होइ पडिवत्ती॥

---

1 B ०मित्त। 2 [illegible] अण्णव। 4 B सुलभो। 5 B वात्त। 6 B निद्द। 7 A तिहे। 8 [illegible] लहुगत०। 10 B लहू चेव होइ। 11 B गुरुगयरागो। 12 A [illegible] 'वीसा' पतितम्। 14 B पण्णरस। 15 B लहुसप०।

मायाओ,[1] ता य इमा—जहा-भद्दग भोच्चा विवन्नं विरसमाहरे आयरियसगासे। जसत्थी, जहा—'एस महा तवस्सी निरसाहारो रसपरिच्चाग करेइ' त्ति। एवमाइयासु मायासु समण।

५७. 'दप्पेण' इच्चाइ। दप्पो वग्गण धावण-डेवणाइओ[2]। दप्पे वट्टमाणेण पञ्चिन्दिओ वहिओ होज्जा। संकिलिट्ठकम्मं—अगाढाण-परिमद्दण-सुक्कपोग्गल निग्घायणाइ[3], दीहद्धाण पडिवन्नो[4] य। आहाकम्म-ण्हाणकप्पाइयं वा बहु अइयारं करेज्जा। दीहगिलाणकप्पस्स वा अवसाणे आहाकम्मसन्निहिसेवणं वा कय होज्जा। एएसु कारणेसु पंचकल्लाणगं पच्छित्त।

५८ 'सव्वोवहि' इच्चाइ। पाउसे जयणाए वि सव्वोवहि कप्पे कए पुरिमत्ताए वा चरिमाए पमाएणं। अप्पडिलेहिए चाउम्मासवरिसेसु य विसोहीए पउत्ताए निरइयारस्स वि पचकल्लाणगं दिज्जइ। किं कारणं। जम्हा सुहुमाइयारे कए वि न याणइ न वा संभरइ। जहा पाउसहरत्थेरत्तपाभाओगकालग्गहणे सुत्तत्थपोरिसि-अकरणे अप्पडिलेहियमाई। एएण कारणेण सव्वेसु वि दिज्जइ त्ति।

५९ 'छेया' इच्चाइ। जो छेयं न सद्दहइ, किं वा छिज्जइ न छिज्जइ त्ति एवं भणइ। मिउणो त्ति-जो छिज्जमाणे वि परियाए न संतप्पइ जहा 'मे परियाओ छिन्नो' त्ति। अहवा अन्नेसिं ओमराइणिओ[5] जाओ त्ति परियायगव्विओ जो दीहपरियाओ[6] सो परियाए छिन्ने[7] तहावि अन्नेहिंतो अब्भहियपरियाओ न ओमराइणिओ होइ। नवा दीहेइ परियायछेयस्स। एएसिं जहुद्दिट्ठाण छेयमावन्नाण वि तवो दिज्जइ। आइसद्देण मूलाणवट्ठपारञ्चियपयावन्नाण वि। जीयववहारमएण[8] गणाहिवइणो य। गणाहिवई आयरिओ तस्स छेयाइमावन्नस्सावि तवारिहं दिज्जइ। मा पुण सेहकुसुठाईण अपरिणामगाणं हीलणिज्जो भविस्सइ त्ति। चसद्देण कुलगणसंघाहिवा घेप्पन्ति।

६०. 'जं जं' मिच्चाइ। इह जीयववहारे जं ज पच्छित्त न भणियं अवराहमुद्दिसिऊण तस्सावि आवत्तिविसेसेण दाणसंखेव भणामि। आवत्ती पायच्छित्तट्ठाणसंपत्ती। सा य निसीहकप्पववहाराभिहिया[9]। सुत्तओ अत्थओ य। आणा अणवत्थमिच्छत्तविराहणा सवित्थरा। तवसो य—सो य तवो पणगादी छम्मासपज्जवसाणो अणेगावत्तिदाणविरयणा लक्खणो तेसु सव्वेसु[10] गथेसु। इह पुण जीयववहारे संखेवेणं आवत्तीदाणं निरूविज्जइ।

६१ 'भिन्नो अविसिट्ठ' इच्चाइ। भिन्न इति सत्तमयसन्ना, पंचवीसं दिवसा भिन्नसद्देण घेप्पन्ति। सो य अविसिट्ठो एक्को चेव। अविसिट्ठगहणाओ य सव्वपणगाई भेया घेप्पन्ति। पणगं—लहुग, गुरुगं च; दसगं—लहुगं, गुरुगं च;[11] पन्नरसगं—लहुग, गुरुग च, वीसग—लहुगं, गुरुग च पचवीसग—लहुगं, गुरुग च। एस भिन्नमासो बहुभेओ वि एक्को चेव घेप्पइ। एसो य सुयववहारो जेसु जेसु अवराहेसु भणिओ तेसु चेव अवराहेसु[12] जीएण सव्वत्थ निव्विगई। भिन्नो अविसिट्ठो च्चिय एवं वक्खाणियं। इयाणिं मासो त्ति। सो य लहुमासो गुरुमासो य। एत्थ य लहुमासे पुरिमड्ढ। गुरुमासे एक्कासणयं। चउरो य छच्च मासा सम्बज्झन्ति। तत्थ लहुचउमासे आयाम। चउगुरुमासे चउत्थं। छल्लहुमासे छट्ठं। छगुरुमासे अट्ठम। एवं सुत्तनिद्दिट्ठावत्ति जहावराह जाणिऊण जीएण निव्विइयाइ अट्ठमभत्तन्त सव्वं देज्जा।

६२ 'इयसव्वावत्तीओ' इच्चाइ। इय एवं एएण पगारेण। सव्वावत्तीओ सव्वतवट्ठाणाइं। जहक्कमं पायच्छित्ताणुलोमेण। समए सिद्धते। जीएण देज्जा। निव्विइयाइयं दाण जह जह भणिय तहा तहा देज्ज त्ति भणिय होइ।

1 A ०मायातो। 2 A ०णाईओ। 3 A निग्घाइयणाइ। 4 A पडिपन्नो। 5 B ०राइणितो। 6 B परियागो। 7 A विच्छिन्ने। 8 ०णएण। 9 B ०हारादि अभिहिया। 10 B 'सव्वेसु' नास्ति। 11 A पुस्तके द्वितीय वाक्यं नोपलभ्यते। 12 अत्र B पुस्तके 'जेसु अवराहेसु भणि अवराहेसु' एतादृश खण्डित पाठ।

छट्ठचउत्थायविल लहुपक्खे होइ[1] पडिवत्ती।
पगासण पुरिमड्ढं निव्वीयं[2] लहुसगुद्धो वा॥
ओहेण एस भणिओ[3], एत्तो वोच्छ पुणो विभागेण—।
तिगनवसत्तावीसा एकासीतीय[4] भेएहिं॥
5 नवविह ववहारेसो संखेवेणं तिहा मुणेयव्वो।
उक्कोसो मज्झो वा जहन्नगो चेव तिविहो सो॥
उक्कोसो गुरुपक्खो लहुपक्खो मज्झिमो मुणेयव्वो।
लहुसगपक्खो जहन्नो तिविगप्पो एस णायव्वो॥
गुरुपक्खो उक्कोसो मज्झ[5] जहन्नो य एस[6] लहुगे वि।
10 एमेवय लहुसेवी एवेसो नवविहो होइ॥
गुरुपक्खे छम्मासो पणमासो चेव होइ उक्कोसो।
मज्झो चउ त्ति मासो दुमासगुरुमासग[7] जहन्नो॥
लहुमासभिन्नमासा[8] वीसा विय तिविहमेव लहुपक्खे[9]।
पन्नरस दसग पणग[10] लहुगुक्कोसाइ तिविहेसो॥
15 आवत्ति तवो एसो नवभेओ वन्निओ समासेण।
अहुणाउ सत्तवीसो दाणतवो तस्सिमो होइ॥
गुरु लहु लहुसगपक्खे एकेक्के नवविहो मुणेयव्वो।
उक्कोसुक्कोसो वा उक्कोसो मज्झिम जहन्नो॥
मज्झुक्कोसो मज्झिम मज्झो तह होइ मज्झिम जहन्नो।
20 इय णेया जहन्ने वी उक्कोसो मज्झिम मज्झिम जहन्नो॥
गुरुपक्खे नव एए नव चेव य होन्ति लहुय पक्खे वि।
नव चेव लहुसपक्खे सत्तावीस हवन्तेए॥
बारसमदसमअट्ठम छप्पणमासेसु तिविह दाणेय।
चउत्तिमासे दस अट्ठ[11] छट्ठ उक्कोसगा[12] तिविहा॥
25 एमेवुक्कोसाई[13] दुमासगुरुमासिए तिहा दाणं।
अट्ठम छट्ठ चउत्थ नवविहमेय तु गुरुपक्खे॥
दसमं अट्ठम छट्ठ लहुमासुक्कोसगाइ तिह दाण।
अट्ठम छट्ठ चउत्थ उक्कोसादेत[14] तिह भिन्न[15]॥
छट्ठ चउत्थायामं उक्कोसादेय[16] दाणवीसाए।
30 लहुपक्खम्मि नवविहो एसो वीओ[17] भवे नवगो॥
अट्ठम छट्ठ चउत्थ एसुक्कोसाइ[13] दाणपन्नरसा[19]।
छट्ठ चउत्थायाम दससू तिविहे य दाणभवे॥
समणायामेक्कासण तिविहुक्कोसाइ दाण[20]पणगेयं।
लहुसेस तइयनवगो[21] सत्तावीसेस वासासु॥

---

1 B होंति। 2 A निव्वीइय। 3 B भणितो। 4 B एकासी इय। 5 A मज्झिम। 6 A एय। 7 A मासिग। 8 B मासो। 9 A पुस्तके 'वीस लहुधोसमज्झिमजहन्ना' एतादृशो द्वितीय पाद। 10 A दसग। 11 A अट्ठम। 12 B ०सगादिति०। 13 B ०सावी। 14 A एय। 15 A भिन्ने। 16 A एय। 17 B नितिओ। 18 B ०सादि। 19 B ०रसे। 20 B ०धाइमाण। 21 A ततिय।

सिसिरे दसमाईण[1] चारणमेएण सत्तवीसेण।
ठायइ[2] पुरिमड्ढम्मी अड्ढोकन्तीय तह चेव॥
अट्ठममाई गिम्हे चारणमेएण सत्तवीसेण।
तह चेव य ढोकन्ती[3] ठवइ निव्वीयए[4] नवर॥
एएहिं ठाणेहिं आवत्तीओ सया सया नियमा। 5
थोवथ्वा सघाओ असड्ढस्सेक्केकहासणया॥
जाव ठिय एक्केक त पीहासेज्ज असढुणो ताव।
ताउ सट्ठाण[5] तव परट्ठाण देज्ज एमेव॥
एव ठाणे ठाणे हेट्ठाउत्तो[6] कमेण हासतो।
नेयव्वं जावठियं नियमा निव्वीइय[7] एक्क॥ 10

एस नवविहो ववहारो।

६८ 'हट्ठगिलाणा'इच्चाइ। भाव पडुच्चसममहियमूणं वा देज्जा। हट्ठस्स नीरोगस्स बलिय-सरीरस्स समहिय वा देज्जा। गिलाणस्स ऊण, नवा वि देज्जा। जावइय वा वि सक्केइ तावइयं वा वि से देज्जा। काल वा सहेज्जा, जाव पउणीहोइ। हट्ठो सन्तो करेस्सइ त्ति।

६९ 'पुरिसा गीयागीया' इच्चाइ। पुरिस पडुच्च सममहिय ऊणं वा देज्जा। पुरिसा केइ 15 गीयत्था, केइ अगीयत्था। धिइसंघयणसपन्नत्ताओ केइ सहा, तव्विरहियत्ताओ केइ असहा। सढा मायाविणो, असढा उज्जुभूयप्पाणो। उस्सग्गे उस्सग्ग। अववाए अववाय। जहा भणियं सद्दहन्ता आयरन्ता य परिणामगा भण्णन्ति, अपरिणामगा पुण जे उस्सग्गमेव सद्दहन्ति आय रन्ति य, अववाय पुण न सद्दहन्ति नायरन्ति य। अइपरिणामगा जे अववायमेवायरन्ति तम्मि चेव[8] सज्जन्ति, न उस्सग्गे। 20

७० 'तह धिइ'इच्चाइ। तहेत्ति आणन्तरिए। धिइ-सघयणे चउभगो। धिइए सघयणेण य पढमो सपन्नो। इह य पढमपच्छिमा भगा दुवे सगहिया सुत्तेण, मज्झमिल्ला दुवे भाणियव्वा। अहवा वितियचुण्णिकारा[9]भिप्पाएण चत्तारि वि सुत्तेणेव गहिया। कह?–धिइसपन्ना, ण सघयणेण १। संघयणेण वा सपन्ना, ण धिईए २। उभयसपन्ना ३। उभयहीणा य ४। अहवा इमे पच विगप्पा। आयतरे णामेगे नो परतरए १। परतरए नामेगे, नो आयतरए २। एगे आयतरए वि 25 परतरए वि ३। एगे नो आयतरए नो परतरए ४। एए[10] चत्तारि भंगा ठाणक्कमेण। तहा पचमो अन्नतरतरगो नाम विगप्पो। आयतरगो नाम जो उपवासेहिं दढो। परतरगो नाम जो वेया वच्चकरो गच्छोवग्गहकरो य त्ति। अन्नतरतरगो[11] नाम जो एक्कं सक्केइ काउ, तव वेयावच्च वा। न पुण दो वि सक्केइ।

७१ 'कप्पट्ठिय' इच्चाइ। कप्पट्ठिया आईए[12] जेसिं ते कप्पट्ठियादओ। आइसद्देण— 30 परिणया[13], कडजोगी, तरमाण त्ति एए[14] चत्तारि घेप्पन्ति। [15]एएसिं चेव पडिवक्खभूया जणे वि चत्तारि जणा घेप्पन्ति[15]। अकप्पट्ठिया अपरिणया अकडजोगी अतरमाणगा। तत्थ कप्पट्ठिया जे आचेलुक्कुद्देसियाइ दसविहे कप्पे ठिया। कयरे ते?—इमे वक्खमाणा—

आचेलुक्कुद्देसिय सेज्जायररायपिंडकिइकम्मे।
वयजेट्ठ पडिक्कमणे मास पज्जोसवणकप्पे॥ 35

1 B ॰मादीण। 2 B ठायति। 3 B चेव अड्ढो॰। 4 A निव्वीईए। 5 A ॰ट्ठाणे। 6 B हेट्ठाहुन्तो। 7 A ॰व्वीइयग। 8 A तस्सिन्नेव। 9 B बिइयचुण्णिगारा॰। 10 A एते। 11 A पुस्तके 'अन्नतरगो' अपपाठ। 12 A अइया। 13 A ॰णता। 14 एते। 15 'एएसिं' आरभ्य 'घेप्पति' यावत् पाठ A पुस्तके पतित।

जे पुण मज्झिमजिणसन्तगा महाविदेहगा य ते अकप्पट्ठिया। कप्पट्ठिया दुविहा-सावेक्खा,
निरवेक्खा य[1]। सावेक्खा गच्छवासी, निरवेक्खा जिणकप्पियादयो। एवमकप्पट्ठिया वि
सावेक्खा निरवेक्खा य। परिणया गीयत्था, अपरिणया अगीयत्था। कडजोगिणो चउत्थ
छट्ठट्ठमाईहिं विविहतवोवहाणेहिं[2] जोगवियसरीरा। अकडजोगिणो अपरिकम्मवियसरीरा।
5 तरमाणगा धिइसंघयण संपन्ना। अतरमाणगा एएहिं विउत्ता[3]।

७२ 'जो जह' इच्चाइ। एएसिं कप्पट्ठियाइयाण सावेक्ख निरवेक्खभेयाणं जो जह सक्को
तवं काउ। बहुतरगुणो नाम धिइसंघयणसंपन्नो[4] परिणयकडजोगी आयपरतरो[5] वा होज्जा
तस्साहियं पि दिज्जइ। कओहिंतो अहिय?—जीयववहारभणियाओ[6]। जो पुण हीणो धिइसं
घयणाईहिं तस्स थोवतरयं पि[7] जीयभणियाओ देज्जा। जो पुण सव्वहीणो तस्स[8] सव्वं झो
10 सेज्जा[9], न किंचि दिज्जइ त्ति जं भणियं होइ।

७३ 'एत्थ पुण' इच्चाइ। एत्थ एयम्मि जीयववहारे बहुतरया भिक्खुणो त्ति। ते य अकय
करणा अजोगविया अणभिगया अगीयत्था। च सद्देण अथिरा विय त्ति। जं तेण कारणेण
जीयववहारे अट्ठमभत्तं अन्तो निव्वीइयमाईए। एयं मज्झं गहियं जन्तविहीए। एयस्सेव फुडी
करणत्थं[10] जन्तविहाण भणामि। तिरियाए तेरसघरए काउ हेट्ठाहुत्तो य जाव नव घराइं पुण्णा
15 ताव ठावेयव्वं। पच्छा एएसिं णवण्हं हेट्ठा जाइं दाहिणेण अन्तेठियाणि दोन्नि घरयाइं ताइं मोत्तूण
अहो एगं घरयं वड्ढाविज्जइ। ताहे तिरियायया[11] एक्कारस घरया होन्ति। पुणो एएसिं एक्कारसण्ह
सव्वदाहिणा दुवे मोत्तूणं अहो एगं घर वड्ढाविज्जइ। ताहे ते आयता णव घरा होन्ति। एव दुवे दु
छड्डन्तेण घरयाइं हेट्ठिल्लदाहिणिल्लाइं ता नेयव्वं, अहो एक्केक्क घरयवड्ढीए जाव एक्कमेव घर
सव्वाऽहोजायं। एवमेयस्स घरजन्तयस्स सव्वुवरिं[12] तिरियायया[13] सेढी। तीसे सेढीए उवरिं
20 सव्वाईए[14] निरवेक्खं ठावेज्जा। निरवेक्खस्स य[15] दाहिणेण विइय तइयघर[16]मज्झनिग्गयरेहो
वरिं आयरिय कयकरणं अकयकरण च ठावेज्जा। चउत्थपंचमघरयमज्झविणिग्गयरेहोवरिं
कयकरणं उवज्झायं अकयकरण च ठावेज्जा[17]। छट्ठसत्तमअट्ठमनवमघरयमज्झविणिग्गयरेहो
वरिं गीयभिक्खु[18] ठावेज्जा, थिर अथिर च। तत्थ जो सो थिरो सो कयकरणो अकयकरणो
य। अथिरो वि कयकरणो अकयकरणो य। तओ[19] पुण दसमएक्कारसबारसतेरसघरयमज्झ
25 विणिग्गयरेहोवरिं अगीयभिक्खु ठावेज्जा, थिरमथिर च। थिर कयकरण अकयकरणं च। अथि
र कयकरण अकयकरणं च ठावेज्जा। एवं ठावेऊण णिरवेक्खहेट्ठिमघरए सुन्न ठावेयव्वं। जम्हा
तहिं पारंचिय पयं होइ। सो य निरवेक्खो सहावेण[20] चेव पारंचिओ तम्हा तहिं सुन्न ठावेयव्व
एयस्स दाहिणेण कयकरणायरियहेट्ठा पारंचिय। एव[21] तहिं चेव अवराहे—जहिं कयकरणायरि
यस्स पारंचियं अकयकरणस्सायरियस्स तम्मि चेवावराहे अणवट्ठप्प। एत्थ चेवावराहे—
30 कयकरणोवज्झायस्स अणवट्ठं(ट्ठप्प)। एत्थ चेवावराहे अकयकरणोवज्झायस्स मूलं। एत्थ चे
वावराहे गीयभिक्खु थिरकयकरणस्स मूलं। एत्थ चेवावराहे गीयभिक्खु थिरअकयकरणस्स
छेओ। एत्थ चेवावराहे गीयभिक्खु-अथिरकयकरणस्स छेओ। एत्थ चेवावराहे गीयभिक्खु
अथिर अकयकरणस्स छग्गुरू। एत्थ चेवावराहे अगीयभिक्खु थिरकयकरणस्स छग्गुरू। एत्थ
चेवावराहे अगीयभिक्खु थिरअकयकरणस्स छलहू। एत्थ चेवावराहे अगीयभिक्खु अथिर

1 A वा। 2 A विहाणेहिं। 3 B ०णगा दोहि विजुया। 4 A पन्ना। 5 A आयतरगो।
6 B ०यातो। 7 A 'पि' नास्ति। 8 A सस्स। 9 A सोसेज्जा। 10 B फुडीकरणत्थ।
11 B ०यायता। 12 B सव्वुप्परिं। 13 B ०यायता। 14 B सव्वातीए। 15 A 'य'
नास्ति। 16 A तनिय। 17 'कय' आरभ्य 'ठावेज्जा' यावत् पङ्क्ति पतिता A आदर्शे। 18 B गीयभि०।
19 B ततो। 20 A सभावेण। 21 B एव। 22 अत्र द्विना पङ्क्य पतिता। A आदर्शे।

कयकरणस्स छलहू । एत्थ चेवावराहे अगीयभिक्खु अथिर अकयकरणस्स चउगुरू । एव एयाए[1] पन्तिए पायच्छित्तट्ठाणरयणा एवं कायब्वा । सुन्न । पारञ्चियं । अणवट्ठप्प । अणवट्ठप्प । मूल । मूल । छेय । छेय । छग्गुरु । छग्गुरु । छलहु । छलहु । अन्ते चउ गुरू । एयाए हेट्ठा सुण्णं । अणवट्ठप्पो । मूल २ । छेदो २ । छग्गुरू २ । छलहु २ । चउ गुरू २ । अन्ते सव्वदाहिणे चउ लहु । एयाए हेट्ठा मूल २ । छेदो २ । छग्गुरू २ । छलहु २ । चउ गुरू चउ लहु २ । सव्वदाहिणे मासगुरू । 5
एयाए हेट्ठा छेदो २ । छग्गुरू २ । छलहु २ । चउगुरू २ । चउलहु २ । मासगुरू २ । सव्वदाहिणे मासलहु । एयाए हेट्ठा छग्गुरू २ । छलहु २ । चउगुरू २ । चउलहु २ । मासगुरू २ । मासलहु २ । सव्वदाहिणे भिन्नमासो । एयाए हेट्ठा छलहु २ । चउगुरू २ । चउलहु २ । मासगुरू २ । मासलहु २ । भिन्नमासो २ । सव्वदाहिणे वीसा । एयाए हेट्ठा चउगुरू २ । चउ लहु २ । मासगुरू २ । मासलहु २ । भिन्नमासो २ । वीसा २ । सव्वदाहिणे पन्नरस । एयाए चेव हेट्ठा चउलहु २ । 10
मासगुरू २ । मासलहु २ । भिन्नमासो २ । वीसा २ । पन्नरस २ । सव्वदाहिणे दस । एयाए हेट्ठा मासगुरू २ । मासलहु २ । भिन्नमासो २ । वीसा २ । पन्नरस २ । दस २ । सव्वदाहिणे पणग । एयाए हेट्ठा मासलहु २ । भिन्नमासो २ । वीसा २ । पन्नरस २ । दस २ । सव्वादाहिणे च । एयाए हेट्ठा भिन्नमासो २ । वीसा २ । पण्णरस २ । दस २ । सव्वदाहिणे पणग । एयाए हेट्ठा वीसा २ । पन्नरस २ । दस २ । सव्वदाहिणे पणगं । एयाए हेट्ठा पन्नरस २ । दस २ । सव्वदा 15
हिणे पणग । एयाए हेट्ठा दस २ । सव्वदाहिणे पणगं । एयाए हेट्ठा पंच । एयासिं च तिरियायाण घरयाण आईए ज पय जहिं अवराहे ठाविय तहिं चेवावराहे ताए पन्तीए पुरिसावेक्खाए वि पच्छित्तपया चारेयव्वा । एव विरईए पुरिसविभागेण पणगादी छम्मासावसाणे निव्वीयाइ अट्ठमभत्ततं पुव्व भणियमेव ।

अहुणा पडिसेवणा भन्नइ— 20

७४ 'आउट्टिय' गाहा । आउट्टिया नाम जं उवेच्च पाणाइवाय करेइ । दप्पो नाम धावण वणवग्गणादओ, कन्दप्पो वा दप्पो । पमाओ नाम ज राओ दिया वा अप्पडिलेहन्तो[2] अपमज्जन्तो[3] य पाणाइवायाइयमावज्जइ । कप्पपडिसेवणा नाम कारणे गीयत्थो कडजोगी उवउत्तो जयणाए पडिसेवेज्जा । एसा पडिसेवणा । पडिसेवओ पडिसेवियव्व च दोन्नि वि पडिसेवणाए इयाइ । तत्थ पडिसेवओ पुरिसो पडिसेवियव्व पुण दव्वाइ । दव्वमाहाराइ । खित्त छिन्नमड 25
म्बर वा । कालो ओम दुब्भिक्खाइ । भावे हट्ठ गिलाणाइ । एव एय पडिसेवियव्व ।

७५ ['ज जीयदाण' गाहा ।] ज जीयववहारेण मए पच्छित्तं भणिय तमणन्तर सव्व एयं चउण्हपडिसेवणाण आउट्टियाइयाण कयराए पडिसेवणाए पडिसेविए दिज्जइ ? । सन्देह सम्भवे भन्नइ—तइयाए पमायपडिसेवणाए त्ति । दव्वाइए पडिसेविए सेसपडिसेवणासु पुण कहं भन्नइ । एत्तो च्चिय ठाणन्तर वड्ढेज्जा । एक्क । एत्तो त्ति जहाभणिय पमाय-ट्ठाण पायच्छित्ताओ 30
सट्ठाणवुड्ढी कायव्वा । पमाए निव्वीयाइ अट्ठमभत्त त, दप्पेण पुण पुरिमाइ-दसमन्त होइ ।

७६ 'आउट्टिया' इच्चाइ । आउट्टि आसेवमाणस्स[4] एक्कासणाई दुवालसन्त दिज्जइ । अहवा ट्ठाण । पाणाइवाए मूल । सट्ठाण जं जम्मि वा अवराहे सव्वलहुय तस्स दिज्जइ त चेव सट्ठाणं इ । कप्पपडिसेवणाए पडिसेविए पडिक्कमण, मिच्छादुक्कडमिति च भणिय होइ । अहवा 35
उभय आलोयणमिच्छादुक्कड च ।

७७ 'आलोयण' इच्चाइ । आलोयणकाले वि जया गूहइ पलिउञ्चइ वा तया[5] सो संकिलिट्ठपरिणामो तस्स अहिय पुण्णं वा दिज्जइ । जो पुण आलोयणाकाले संवेगमुवगओ निन्दगरहणाइणा विसुज्झपरिणामो तस्स ऊणमवि देज्जा । जो पुण मज्झपरिणामो तस्स तम्मेव देज्जा ।

1 एयाए य पतीए । 2 B •लेहेन्तो । 3 B •मज्जिनो । 4 A आउट्टिगाए सेव• । 5 B तरा ।

जे पुण मज्झिमजिणसन्तगा महाविदेहगा य ते अकप्पट्ठिया। कप्पट्ठिया दुविहा–सावेक्खा, निरवेक्खा य[1]। सावेक्खा गच्छवासी, निरवेक्खा जिणकप्पियादयो। एवमकप्पट्ठिया वि सावेक्खा निरवेक्खा य। परिणया गीयत्था, अपरिणया अगीयत्था। कडजोगिणो चउत्थ छट्ठट्ठमाईहिं विविहतवोवहाणेहिं[2] जोगवियसरीरा। अकडजोगिणो अपरिकम्मवियसरीरा। 5 तरमाणगा धिइसंघयणसंपन्ना। अतरमाणगा एएहिं विउत्ता[3]।

७२ 'जो जह' इच्चाइ। एएसिं कप्पट्ठियाइयाण सावेक्ख-निरवेक्खभेयाणं जो जह सक्को तवं काउं। बहुतरगुणो नाम धिइसंघयणसंपन्नो[4] परिणयकडजोगी आयपरतरो[5] वा होज्जा। तस्साहियं पि दिज्जइ। कओहिंतो अहिय?—जीयववहारभणियाओ[6]। जो पुण हीणो धिइस घयणाईहिं तस्स थोवतरयं पि[7] जीयभणियाओ देज्जा। जो पुण सव्वहीणो तस्स[8] सव्व झो 10 सेज्जा[9], न किंचि दिज्जइ त्ति जं भणियं होइ।

७३ 'एत्थ पुण' इच्चाइ। एत्थ एयम्मि जीयववहारे बहुतरया भिक्खुणो त्ति। ते य अकय करणा अजोगविया अणभिगया अगीयत्था। च सद्देण अथिरा विय त्ति। जं तेण कारणेण जीयववहारे अट्ठमभत्तं अन्तो निव्वीइयमाईए। एयं मज्झं गहियं जन्तविहीए। एयस्सेव फुडी करणत्थ[10] जन्तविहाणं भणामि। तिरियाए तेरसघरए काउ हेट्ठाहुत्तो य जाव नव घराइ पुण्णा 15 ताव ठावेयव्व। पच्छा एएसिं णवण्हं हेट्ठा जाइं दाहिणेण अन्तेठियाणि दोन्नि घरयाइ ताइं मोत्तूण अहो एगं घरयं वड्ढाविज्जइ। ताहे तिरियायया[11] एक्कारस घरया होन्ति। पुणो एएसिं एक्कारसण्ह सव्वदाहिणा दुवे मोत्तूणं अहो एगं घर वड्ढाविज्जइ। ताहे ते आयता णव घरा होन्ति। एव दुवे दुवे छड्डन्तेणं घरयाइ हेट्ठिल्लदाहिणिल्लाइं ता नेयव्व, अहो एक्केक्क घरयवड्ढीए जाव एक्कमेव घरय सव्वाऽहोजायं। एवमेयस्स घरजन्तयस्स सव्वुवरिं[12] तिरियायया[13] सेढी। तीसे सेढीए उवरिं 20 सव्वाईए[14] निरवेक्खं ठावेज्जा। निरवेक्खस्स य[15] दाहिणेण बिइय तइयघर[16]मज्झनिग्गयरेहोवरिं आयरियं कयकरणं अकयकरण च ठावेज्जा। चउत्थपंचमघरयमज्झविणिग्गयरेहोवरिं कयकरणं उवज्झायं अकयकरणं च ठावेज्जा[17]। छट्ठसत्तमअट्ठमनवमघरयमज्झविणिग्गयरेहोवरिं गीयभिक्खुं[18] ठावेज्जा, थिर अथिर च। तत्थ जो सो थिरो सो कयकरणो अकयकरणो य। अथिरो वि कयकरणो अकयकरणो य। तओ[19] पुण दसमएक्कारसबारसतेरसघरयमज्झ 25 विणिग्गयरेहोवरिं अगीयभिक्खु ठावेज्जा, थिरमथिर च। थिर कयकरणं अकयकरण च। अथिर कयकरणं अकयकरणं च ठावेज्जा। एवं ठावेऊण निरवेक्खहेट्ठिमघरए सुन्नं ठावेयव्व। जम्हा तहिं पारंचिय पय होइ। सो य निरवेक्खो सहावेण[20] चेव पारंचिओ तम्हा तहिं सुन्नं ठावेयव्व एयस्स दाहिणेण कयकरणायरियहेट्ठा पारंचिय। एव[21] तहिं चेव अवराहे—जहिं कयकरणायरियस्स पारंचियं अकयकरणस्सायरियस्स तम्मि चेवावराहे अणवट्ठप्प। एत्थ चेवावराहे— 30 कयकरणोवज्झायस्स अणवट्ठ(ट्ठप्प)। एत्थ चेवावराहे अकयकरणोवज्झायस्स मूल। एत्थ चे[22] वावराहे गीयभिक्खु थिरकयकरणस्स मूलं। एत्थ चेवावराहे गीयभिक्खु थिरअकयकरणस्स छेओ। एत्थ चेवावराहे गीयभिक्खु-अथिरकयकरणस्स छेओ। एत्थ चेवावराहे गीयभिक्खु अथिर अकयकरणस्स छग्गुरू। एत्थ चेवावराहे अगीयभिक्खु थिरकयकरणस्स छग्गुरू। एत्थ चेवावराहे अगीयभिक्खु थिरअकयकरणस्स छलहू। एत्थ चेवावराहे अगीयभिक्खु अथिर

1 A वा। 2 A विहाणेहिं। 3 B ०णगा दोहि विजुया। 4 A पन्ना। 5 A आयतरगो। 6 B ०यातो। 7 A 'पि' नास्ति। 8 A सव्व। 9 A सोसेज्जा। 10 B फुडीकरणत्थ। 11 B ०यायता। 12 B सव्वुप्परिं। 13 B ०यायता। 14 B सव्वातीए। 15 A 'य' नास्ति। 16 A ततिय। 17 'कय' आरभ्य 'ठावेज्जा' यावत् पङ्क्तिः पतिता A आदर्शे। 18 B गीयभि०। 19 B ततो। 20 A सभावेण। 21 B एव। 22 अत्र छिन्ना पङ्क्तय पतिता A आदर्शे।

कयकरणस्स छलहू । एत्थ चेवावराहे अगीयभिक्खु अथिर अकयकरणस्स चउगुरू । एवं कयकरणस्स छलहू । एत्थ चेवावराहे अगीयभिक्खु अथिर अकयकरणस्स चउगुरू । एवं एयाए पन्तिए पायच्छित्तट्ठाणरयणा एव कायव्वा । सुन्न । पारञ्चिय । अणवट्ठप्प । अणवट्ठप्प । मूल । मूल । छेय । छेय । छग्गुरु । छग्गुरु । छलहु । छलहु । अन्ते चउ गुरु । एयाए हेट्ठा सुण्ण । अणवट्ठप्पो । मूलं २ । छेदो २ । छग्गुरू २ । छलहु २ । चउ गुरु २ । अन्ते सव्वदाहिणे चउ लहु । एयाए हेट्ठा मूलं २ । छेदो २ । छग्गुरू २ । छलहु २ । चउ गुरू चउ लहु २ । सव्वदाहिणे मासगुरू । एयाए हेट्ठा छेदो २ । छग्गुरू २ । छलहु २ । चउगुरू २ । चउलहु २ । मासगुरू २ । सव्वदाहिणे मासलहु । एयाए हेट्ठा छग्गुरू २ । छलहु २ । चउगुरू २ । चउलहु २ । मासगुरू २ । मासलहु २ । सव्वदाहिणे भिन्नमासो । एयाए हेट्ठा छलहु २ । चउगुरू २ । चउलहु २ । मासगुरू २ । मासलहु २ । भिन्नमासो २ । सव्वदाहिणे वीसा । एयाए हेट्ठा चउगुरू २ । चउ लहु २ । मासगुरू २ । मासलहु २ । भिन्नमासो २ । वीसा २ । सव्वदाहिणे पन्नरस । एयाए चेव हेट्ठा चउलहु २ । मासगुरू २ । मासलहु २ । भिन्नमासो २ । वीसा २ । पन्नरस २ । सव्वदाहिणे दस । एयाए हेट्ठा मासगुरू २ । मासलहु २ । भिन्नमासो २ । वीसा २ । पन्नरस २ । दस २ । सव्वदाहिणे पणगं । एयाए हेट्ठा मासलहु २ । भिन्नमासो २ । वीसा २ । पन्नरस २ । दस २ । सव्वदाहिणे पन्न । एयाए हेट्ठा भिन्नमासो २ । वीसा २ । पण्णरस २ । दस २ । सव्वदाहिणे पणग । एयाए हेट्ठा वीसा २ । पन्नरस २ । दस २ । सव्वदाहिणे पणग । एयाए हेट्ठा पन्नरस २ । दस २ । सव्वदाहिणे पणग । एयाए हेट्ठा दस २ । सव्वदाहिणे पणग । एयाए हेट्ठा पन्न । एयासिं च तिरिया एयाए पयाण आईए ज पय जहिं अवराहे ठाविय तहिं चेवावराहे ताए पन्तीए पुरिसाविक्खाए सव्वं पच्छित्तपया चारेयव्वा । एव विरईए पुरिसविभागेण पणगादी छम्मासावसाणे निद्दीयाइ कप्पनमरस पुव्व भणियमेव ।

अहुणा पडिसेवणा भन्नइ—

७४ 'आउट्टिय' गाहा । आउट्टिया नाम ज उवेच्च पाणाइवायं करेइ । दप्पो नाम धावण-डेवणवग्गणाइओ, कन्दप्पो वा दप्पो । पमाओ नाम ज राओ दिया वा अप्पडिलेहन्तो[2] अपमज्जन्तो[3] य पाणाइवायाइयमावज्जइ । कप्पपडिसेवणा नाम कारणे गीयत्थो कडजोगी उवउत्तो जयणाए पडिसेवेज्जा । एसा पडिसेवणा । पडिसेवओ पडिसेवियव्व च दोन्नि वि पडिसेवणाए घडन्ताइ । तत्थ पडिसेवओ पुरिसो पडिसेवियव्वं पुण दव्वाइ । दव्वमाहाराइ । खित्त ठिन्नमडंबाइ वा । काले ओम दुब्भिक्खाइ । भावे हट्ठ गिलाणाइ । एवं एय पडिसेवियव्व ।

७५. ['ज जीयदाण' गाहा ।] ज जीयववहारेण मए पच्छित्त भणिय तमणन्तर सव्व एयाए चउव्विहाए पडिसेवणाए आउट्टियाइयाण कयराए पडिसेवणाए पडिसेविए दिज्जइ? । सन्देह सम्भवे भन्नइ—तइयाए पमायपडिसेवणाए त्ति । दव्वाइए पडिसेविए सेसपडिसेवणासु पुण कह दायव्व? । एत्तो चिय ठाणन्तर घडेज्जा । एक्क । एत्तो त्ति जहाभणिय पमाय ट्ठाण पायच्छित्ताओ आउट्टियाए दुइ कायव्वा । पमाए निव्वीयाइ अट्ठमभत्तन्त, दप्पेण पुण पुरिमाइ-दसमन्त होइ ।

७६ 'आउट्टिया' इच्चाइ । आउट्टि आसेवमाणस्स[4] एकासणाई दुवालसन्त दिज्जइ । अहवा सट्ठाण । पाणाइवाए मूल । सट्ठाण ज जम्मि वा अवराहे सव्वबहुय तस्स दिज्जइ त चेव सट्ठाणं होइ । कप्पपडिसेवणाए पडिसेविए पडिक्कमण, मिच्छादुक्कडमिति च भणिय होइ । अहवा तदुभय आलोयणमिच्छादुक्कड च ।

७७ 'आलोयण' इच्चाइ । आलोयणकाले वि जया गूहइ पलिउञ्चइ वा तया[5] सो संकिलिट्ठपरिणामो तम्म अहिय पुणा वा दिज्जइ । जो पुण आलोयणाकाले संवेगमुवगओ निन्दणगरहणाइ विसुद्धपरिणामो तम्म ऊणमवि देज्जा । जो पुण मज्झपरिणामो तस्स तम्मत्तं देज्जा ।

1 [illegible] 2 B ०हेन्तो । 3 B ०मज्जिन्तो । 4 A आउट्टियाए सेव० । 5 B तदा ।
[illegible]

७८ 'इति दवाइ'इच्चाइ। इति एवं दवखेत्तकालभावेसु चउसु वि बहुगुणेसु,[1] गुरुसेव पहाणसेवा भण्णइ। एएसु बहुतरं देज्जा। 'हीणतरे हीणतर' ति। दवखेत्तकालभावा जहा जह हीणा तहा तहा हीणतरं पच्छित्तं देज्जा। सवहीणस्स झोसो वा कज्जइ।

७९ 'झोसिज्जइ' इच्चाइ। झोसिज्जइ त्ति मुच्चइ। सुयबहुगमवि जाव अन्नं तवं वहइ ताव ज
5 अन्नमावज्जइ तो तं झोसिज्जइ। जहा[2] छम्मासपट्ठविए पञ्चहिं दिवसेहिं गएहिं अन्नमावन्न गो होज्जा। पढमगं वहन्तस्स पच्छिमं से झोसिज्जइ[3]। वेयावच्चकरस्स वा थोवतरं दिज्जइ जावइयं वहन्तो वेयावच्चं काउं सक्केइ तावइयं से दिज्जइ। एवं[4] तवारिहं भणियं॥

अहुणा छेयारिहं भन्नइ—

८० 'तवगविय' इच्चाइ। तवगविओ छम्मासखमओ। अन्नो वा जो विगिट्ठ-तवकरण[5]
10 समत्थो—किं मम तवेण किज्जइ[6] त्ति। तवअसमत्थो पुण गिलाणो असहू बालवुड्ढो[7] वा। तव वा जो न सद्दहइ। '[8]पुणो पुणो वा तवेण दिज्जमाणेण वि ण दम्मइ। अइपरिणामगो अइपसंग वा। पुणो पुणो सेवेइ[9], सुबहुं वा। एएसु जहुद्दिट्ठेसु तवारिहावत्तीए वि छेओ चेव दिज्जइ त्ति पुवपरियायस्स देसच्छेओ कज्जइ।

८१ 'सुयबहुत्तर' इच्चाइ। सुयबहुगा उत्तरगुणा पिण्डविसोहिमाईया। ते जो भंसेइ विणा
15 सेइ, पुणो पुणो छेयावत्तीओ करेइ। जो य पासत्थो। आइसद्देण ओसण्ण कुसील-संसत्त-नीओ वा। जईण साहूण संविग्गाणं। पडितप्पइ वेयावच्चं करेइ। बहुसो य अणेगसो। उत्तरगाहाए अत्थपरिसमत्ती होही[10]।

८२ 'उक्कोस'मिच्चाइ। उक्कोसा तव भूमी। आइजिणिन्दतित्थे संवच्छरं। मज्झिमजिणाणं अट्ठमासा। वीरवरस्स छम्मासा। एय उक्कोस तवभूमी समईओ। जो तस्स छेओ सावसेस च
20 से चरणं, तस्स छेओ पणगाईओ[11]। आइसद्देण दस पन्नरस वीसाई जाव छम्मासा। जावं वा धरइ परियाओ। छेयारिह भणियं॥

अहुणा मूलारिहं भन्नइ—

८३ 'आउट्टिया' इच्चाइ। आउट्टियाए पञ्चिन्दिय वहेज्जा। मेहुणं दप्पेण सेवेज्जा। सेसा मुसावाय-अदिन्नादाण परिग्गहा ते उक्कोसेण[12] पडिसेवेइ। आउट्टियाए पुणो पुणो य त्ति।
25 एघ जहुद्दिट्ठट्ठाणेसु मूलं।

८४. 'तवगविय' इच्चाइ। तवगविओ। आइसद्देण तवअसमत्थो। तव असद्दहन्तो तवेण य जो न दम्मइ। मूलगुणे बहुविहे बहुसो य दूसेइ भञ्जइ वा। एव उत्तरगुणे वि एस वइयरो। दसणं वा वमइ। दसणे वन्ते नियमा चरित्तं वन्तं। चरित्तम्मि दसणे भयणा। दंसणे वा चरित्ते वा वन्ते चियत्तकिच्चो। किच्चाइ दंसणाईणि। तप्परिच्चाएण चियत्तकिच्चो। सेहेय त्ति
30 सेहो जो अभिणवो सिक्ख गाहिज्जइ। अणुवट्ठविओ[13]। एएसिं जहुद्दिट्ठाण मूल।

८५ 'अच्चन्तोसन्न' मिच्चाइ। अच्चन्तोसन्नो नाम ओसन्न पव्वाविओ। संविग्गेहिं वा पव्वा-वियमेत्तो चेव ओसन्नयाए विहरिओ जो, सो अच्चन्तोसन्नो। परलिंग दुग—घरत्थलिंगं, अन्न-तित्थियलिंग च। त जो आउट्टियाए दप्पेण वा करेइ। मूलकम्म—इत्थीगब्भादाणसाडणं जो करेइ। भिक्खुम्मि य विहियतवे। विहिओ तवो जस्स सो विहियतवो। छेयमूले वि अइक्कमिउ।
35 अणवट्ठतव वा पारञ्चियतव वा। अइयारसेवणाए पत्ते एएसिं जहुद्दिट्ठाणं मूल सवेसिं पि।

---

1 B पुस्तके 'चउ णेसु' एतद्वाक्य नास्ति। 2–3 'जहा' आरभ्य 'झोसिज्जइ' यावत् पाठ A पुस्तके पतित। 4 B एव। 5 B करणस्स०। 6 A कज्जइ। 7 A गिलाणअसहुबालवुड्ढा। 8–9'पुणो॰' आरभ्य 'सेवेइ' पर्यन्त पाठ A आदर्शे पतित। 10 B होइ। 11 B पणगादीतो। 12 B उक्कोसगे। 13 B अणुट्ठविओ।

८६ 'छेपण' इच्चाइ। छिज्जमाणे छिज्जमाणे जया परियाओ निरवसेसो छिन्नो, तदा से मूल। अणवट्ठप्पतवावसाणे पारञ्चियतवावसाणे[1] य मूल दिज्जइ। मूलावत्तीओ वा—पुणो पुणो आवज्जमाणस्स मूल। एव जहुद्दिट्ठकारणेसु सव्वत्थमूल। मूलारिह भणिय॥

अहुणा अणवट्ठप्पारिह[2] भन्नइ—

८७ 'उक्कोस'मिच्चाइ। तदो (ओ) अणवट्ठप्पा पन्नत्ता, त जहा—साहम्मियाणं तेण करेमाणो १। अन्नधम्मियाणं तेण करेमाणो २। हत्थादाण दलयमाणो ३। उक्कोस सचित्ताइय। तेणेइ—पुणो पुणो तेणेइ। अईच पउट्ठचित्तो सकिलिट्ठचित्तो त्ति कोहलो होइ। पउट्ठचित्तो तेणेइ। सा य तेणिया दुविहा—साहम्मियतेणिया, परधम्मियतेणिया य। दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ य। सचित्त-अचित्त-मीसया दव्वे। अन्नसंजओगहियखेत्ते अणणुन्नविए अवत्थाण खेत्ते। काले जहिं करेइ। भावओ रत्तदुट्ठो। अन्नधम्मिया दुविहा—लिंगपविट्ठा, गिहत्था य। तिविह तेणमेतेसिं आहारो उवही सचित्त वाऽवहरइ त्ति। हत्थादालो गहिओ, सो य तिविहो—अत्थादाणो, हत्थालम्बो, हत्थातालो। तत्थ अत्थादाणो नेमित्तिओसन्नागारिया[3] भन्नगपडिभग्गवणियपेसणरुयगसउणी। धीइओ[4] उवणओ नउलगमेगो[5] घयगुलमतो वसतणकट्ठाघाहिं अन्नो य सउणिगणिमित्त। हत्थालम्बो असिवपुररोहउवसमणत्थमभिचारगाइ[6] करेइ। हत्थातालो जट्ठिमुट्ठिलउड्डोपलपहाराईहिं मरणभयणिरवेक्खो अप्पणो परस्स य पहरइ। सपक्खे व सद्देण परपक्खे य। घोरपरिणामो निरणुक्कोसो त्ति।

८८ 'अभिसेओ' इच्चाइ। अभिसेओ उवज्झाओ। जेसु जेसु अवराहेसु पारञ्चियमावज्जइ। बहुसो अणेगसो। आवन्नो वि अणवट्ठप्पो कीरइ। किं कारण। जेण अणवट्ठप्पपारञ्चियमावन्नस्सावि मूलमेव दिज्जइ भिक्खुणो। जेण तस्स पर मूलट्ठाण भवति[7]। तहा उवज्झायस्सावि पर अणवट्ठप्पपय, अणवट्ठप्पावत्तीओ य। जया बहुसो आवज्जइ तया य अणवट्ठप्प दिज्जइ।

८९ 'कीरइ' इच्चाइ। वएसु लिंगेसु वा[8] जम्हा न ठाविज्जइ तम्हा अणवट्ठप्पो। सो य अणवट्ठप्पो चउव्विहो—लिंगओ, खेत्तओ, कालओ, तवओ[9]। लिंग दुविह—दव्वे भावे य। दव्वलिंगं रओहरणाइ[10]। भावलिंग महव्वयाइ। एत्थ चउभगो। अणन्तरगाहासम्बद्धा इमा गाहा—

९० 'अप्पडिविरय' इच्चाइ। सपक्खपरपक्खपदुट्ठो तेणगाइदोसेहि। अप्पडिविरओ सपक्ख परपक्ख[11]पहरणुज्जुओ। निरवेक्खो अणुवसन्तवेरो जो। सो दव्वभावलिंगेहिं दोहिं वि अणवट्ठपो। हत्थालम्बो, अत्थादाणो[12], ओसण्णाइया य तद्दोसाणुवसन्ता न भावलिंगारिहा। दव्वलिंगमत्थि तेसिं, भावलिंगेणाऽणवट्ठप्पा। खेत्तओ अणवट्ठप्पो जो जम्मि खेत्ते दोसमावन्नो सो तम्मि खेत्ते अणवट्ठप्पो। जहा अत्थादाणिओ[13] तम्मि चेव खेत्ते देसे वा न उवट्ठाविज्जइ। कि कारण पुवब्भासा लोगो पुच्छेज्जा[14]। सो वा त इड्ढिगारवमसमत्थो धारेउं। तेण अन्नत्थ उवट्ठाविज्जइ। उचिमट्ठपडिवन्नस्स वा तत्थेव भावलिंग दिज्जइ।

९१ 'जत्तिय'मिच्चाइ। कालतो[15] अणवट्ठप्पो जो जेत्तिय काल अणुवरतदोसो[16] सो तत्तियं काल अणवट्ठप्पो। तव-अणवट्ठप्पो दुविहो—आसायणा-अणवट्ठप्पो, पडिसेवणा-अणवट्ठप्पो य। तत्थासायणामिमेसिं करेज्जा। तित्थयर पवयण सुय आयरिय गणहराण महिड्ढियाणं। जहा सव्वोवायकुसलेहिं अइकक्खडदेसणा कया। जाणन्ता य किं घरवासे वसन्ति, भोगे य भुजन्ति। तहा इत्थीतित्थं। सघमहिक्खिवइ [17]पडिणीयताए वा वट्टइ। अहवा भणइ अन्ने वा सघा अत्थि

1 पतितमेतद्वाक्य A आदर्शे। 2 A अणइप्पारिह। 3 B निमित्तिदोसण्णगायरिया। 4 B धीइदो। 5 A नउलमेगो। 6 A चारुगाइ। 7 B हवइ। 8 B लिंगे वा। 9 A भावओ। 10 B रयहर०। 11 B पडिपक्ख। 12 B हत्थादा०। 13 B ०दाणितो। 14 B पुच्छिज्जा। 15 B कीलओ। 16 A अणवरयदोसो। 17 A 'पडिणी०' आरभ्य ०'खिवइ' पर्यन्त पाठो नोपलभ्यते A आदर्शे।

७८ 'इति दव्वाइ'इच्चाइ। इति एव दव्वखेत्तकालभावेसु चउसु वि बहुगुणेसु,[1] गुरुसेवा पहाणसेवा भण्णइ। एएसु बहुतर देज्जा। 'हीणतरे हीणतर' ति। दव्वखेत्तकालभावा जहा जहा हीणा तहा तहा हीणतर पच्छित्तं देज्जा। सव्वहीणस्स झोसो वा कज्जइ।

७९ 'झोसिज्जइ' इच्चाइ। झोसिज्जइ त्ति मुच्चइ। सुयबहुगमवि जाव अन्नं तव वहइ ताव जइ 5 अन्नमावज्जइ तो त झोसिज्जइ। जहा[2] छम्मासपट्ठविए पञ्चहिं दिवसेहि गएहिं अन्नमावन्न गो होज्जा। पढमग वहन्तस्स पच्छिम से झोसिज्जइ[3]। वेयावच्चकरस्स वा थोवतर दिज्जइ। जावइय वहन्तो वेयावच्च काउ सक्केइ तावइयं से दिज्जइ। एय[4] तवारिह भणियं॥

अहुणा छेयारिहं भन्नइ—

८० 'तवगव्विय' इच्चाइ। तवगव्विओ छम्मासखमओ। अन्नो वा जो विगिट्ठ-तवकरण[5]- 10 समत्थो—किं मम तवेण किज्जइ[6] त्ति। तवअसमत्थो पुण गिलाणो असहू बालवुड्ढो[7] वा। तवं वा जो न सद्दहइ। [8]पुणो पुणो वा तवेण दिज्जमाणेण वि ण दम्मइ। अइपरिणामगो अइपसंगी वा। पुणो पुणो सेवेइ[9], सुयहुं वा। एएसु जहुद्दिट्ठेसु तवारिहावत्तीए वि छेओ चेव दिज्जइ त्ति। पुव्वपरियायस्स देसच्छेओ कज्जइ।

८१ 'सुयबहुत्तर' इच्चाइ। सुयबहुगा उत्तरगुणा पिण्डविसोहिमाईया। ते जो भसेइ विणा 15 सेइ, पुणो पुणो छेयावत्तीओ करेइ। जो य पासत्थो। आइसद्देण ओसण्ण कुसील-ससत्त-नीओ वा। जईण साहूण सविग्गाणं। पडितप्पइ वेयावच्च करेइ। बहुसो य अणेगसो। उत्तरगाहाए अत्थपरिसमत्ती होही[10]।

८२ 'उक्कोस'मिच्चाइ। उक्कोसा तव भूमी। आइजिणिन्दतित्थे संवच्छरं। मज्झिमजिणाणं अट्ठमासा। वीरवरस्स छम्मासा। एय उक्कोस तवभूमीं समईओ। जो तस्स छेओ सावसेस च 20 से चरण, तस्स छेओ पणगाईओ[11]। आइसद्देण दस पन्नरस वीसाई जाव छम्मासा। जाव वा धरइ परियाओ। छेयारिह भणिय॥

अहुणा मूलारिह भन्नइ—

८३ 'आउट्टिया' इच्चाइ। आउट्टियाए पञ्चिन्दिय वहेज्जा। मेहुण दप्पेण सेवेज्जा। सेसा मुसावाय अदिन्नादाण परिग्गहा ते उक्कोसेण[12] पडिसेवेइ। आउट्टियाए पुणो पुणो य त्ति। 25 एवं जहुद्दिट्ठट्ठाणेसु मूलं।

८४. 'तवगव्विय' इच्चाइ। तवगव्विओ। आइसद्देण तवअसमत्थो। तव असद्दहन्तो तवेण य जो न दम्मइ। मूलगुणे बहुविहे बहुसो य दूसेइ भञ्जइ वा। एव उत्तरगुणे वि एस वइयरो। दसण वा वमइ। दंसणे वन्ते नियमा चरित्त वन्त। चरित्तम्मि दसणे भयणा। दसणे वा चरित्ते वा वन्ते चियत्तकिच्चो। किच्चाइ दंसणाईणि। तप्परिच्चाएण चियत्तकिच्चो। सेहेय त्ति 30 सेहो जो अभिणवो सिक्ख गाहिज्जइ। अणुवट्ठविओ[13]। एएसिं जहुद्दिट्ठाण मूल।

८५ 'अच्चन्तोसन्न' मिच्चाइ। अच्चन्तोसन्नो नाम ओसन्न पव्वाविओ। संविग्गेहिं वा पव्वा-वियमेत्तो चेव ओसन्नयाए विहरिओ जो, सो अच्चन्तोसन्नो। परलिंग दुग—घरत्थलिंगं, अन्न-तित्थियलिंग च। त जो आउट्टियाए दप्पेण वा करेइ। मूलकम्मं—इत्थीगब्भादाणसाडणं जो करेइ। भिक्खुम्मि य विहियतवे। विहिओ तवो जस्स सो विहियतवो। छेयमूले वि अइक्कमिउ। 35 अणवट्ठतव वा पारञ्चियतव वा। अइयारसेवणाए पत्ते एएसिं जहुद्दिट्ठाण मूल सव्वेसिं पि।

---

1 B पुस्तके 'चउ णेसु' एतद्वाक्य नास्ति। 2–3 'जहा' आरभ्य 'झोसिज्जइ' यावत् पाठ A पुस्तके पतित। 4 B एव। 5 B करणस्स०। 6 A वज्जइ। 7 A गिलाणअसहुबाल्वुड्ढा। 8–9 'पुणो०' आरभ्य 'सेवेइ' पर्यन्त पाठ A आदर्शे पतित। 10 B होइ। 11 B पणगादीतो। 12 B उक्कोसगे। 13 B अणुट्ठविओ।

८६ 'छेपण' इच्चाइ। छिज्जमाणे छिज्जमाणे जया परियाओ निरवसेसो छिन्नो, तदा से मूल। अणवट्ठप्पतवावसाणे पारञ्चियतवावसाणे[1] य मूल दिज्जइ। मूलावत्तीओ वा—पुणो पुणो आवज्जमाणस्स मूल। एवं जहुद्दिट्ठकारणेसु सव्वत्थमूल। मूलारिह भणिय॥

अहुणा अणवट्ठप्पारिह[2] भन्नइ—

८७ 'उक्कोस'मिच्चाइ। तदो (ओ) अणवट्ठप्पा पन्नत्ता; त जहा—साहम्मियाण तेण करे 5 माणो १। अन्नधम्मियाण तेण करेमाणो २। हत्थादाण दलयमाणो ३। उक्कोस सचित्ताइय। तेणेइ—पुणो पुणो तेणेइ। अईव पउट्ठचित्तो सकिलिट्ठचित्तो त्ति कोदलो होइ। पउट्ठचित्तो तेणेइ। सा य तेणिया दुविहा—साहम्मियतेणिया, परधम्मियतेणिया य। दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ य। सचित्त-अचित्त-मीसया दव्वे। अन्नसजओगहियरोत्ते अणणुन्नविए अव स्थाण खेत्ते। काले जहिं करेइ। भावओ रत्तदुट्ठो। अन्नधम्मिया दुविहा—लिंगपविट्ठा, गिहत्था 10 य। तिविहं तेणमेतेसिं आहारो उवही सचित्त वाऽवहरइ त्ति। हत्थादालो गहिओ, सो य ति विहो—अत्थादाणो, हत्थालम्बो, हत्थातालो। तत्थ अत्थादाणो नेमित्तिओसन्नागारिया[3] भग्गगप-डिभग्गचणियपेसणरुयगसउणी। वीइओ[4] उवणओ नउलगमेगो[5] घयगुलमतो वसतणकट्ठा-वाहिं अन्नो य सउणिगणिमित्त। हत्थालम्बो असिवपुररोहउवसमणत्थमभिचारगाइ[6] करेइ। हत्थातालो जट्ठिमुट्ठिलउडोपलपहाराईहिं मरणभयणिरवेक्खो अप्पणो परस्स य पहरइ। सपक्खे 15 च सद्देण परपक्खे य। घोरपरिणामो निरणुक्कोसो त्ति।

८८ 'अभिसेओ' इच्चाइ। अभिसेओ उवज्झाओ। जेसु जेसु अवराहेसु पारञ्चियमावज्जइ। बहुसो अणेगसो। आवन्नो वि अणवट्ठप्पो कीरइ। किं कारण। जेण अणवट्ठप्पपारञ्चियमावन्न स्सानि मूलमेव दिज्जइ भिक्खुणो। जेण तस्स पर मूलट्ठाण भवति[7]। तहा उवज्झायस्साविं पर अणवट्ठप्पपयं, अणवट्ठप्पावत्तीओ य। जया बहुसो आवज्जइ तया य अणवट्ठप्प दिज्जइ। 20

८९ 'कीरइ' इच्चाइ। एएसु लिंगेसु वा[8] जम्हा न ठाविज्जइ तम्हा अणवट्ठप्पो। सो य अण वट्ठप्पो चउव्विहो—लिंगओ, खेत्तओ, कालओ, तवओ[9]। लिंग दुविह—दव्वे भावे य। दव्वलिंगं रओहरणाइ[10]। भावलिंग महव्वयाइ। एत्थ चउभगो। अणन्तरगाहासम्बद्धा इमा गाहा—

९०. 'अप्पडिविरय' इच्चाइ। सपक्खपरपक्खपदुट्ठो तेणगाइदोसेहिं। अप्पडिविरओ सपक्ख परपक्ख[11]पहरणुज्जुओ। निरवेक्खो अणुवसन्तवेरो जो। सो दव्वभावलिंगेहि दोहिं वि 25 अणवट्ठपो। हत्थालम्बो, अत्थादाणो[12], ओसण्णाइया य तद्दोसाणुवसन्ता न भावलिंगारिहा। दव्वलिंगमत्थि तेसिं, भावलिंगेणाऽणवट्ठप्पा। खेत्तओ अणवट्ठप्पो जो जम्मि खेत्ते दोसमावन्नो सो तम्मि खेत्ते अणवट्ठप्पो। जहा अत्थादाणिओ[13] तम्मि चेव खेत्ते देसे वा न उवट्ठाविज्जइ। किं कारणं पुव्वब्भासा लोगो पुच्छेज्जा[14]। सो वा त इङ्गियागारवमसमत्थो धारेउ। तेण अन्नत्थ उवट्ठाविज्जइ। उत्तिमट्ठपडिवन्नस्स वा तत्थेव भावलिंग दिज्जइ। 30

९१ 'जत्तिय'मिच्चाइ। कालतो[15] अणवट्ठप्पो जो जेत्तिय काल अणुवरतदोसो[16] सो त-त्तिय कालं अणवट्ठप्पो। तव-अणवट्ठप्पो दुविहो—आसायणा-अणवट्ठप्पो, पडिसेवणा-अणवट्ठप्पो य। तत्थासायणामिमेसिं करेज्जा। तित्थयर पवयण सुय आयरिय गणहराण महिड्ढियाण। जहा सव्वोवायकुसलेहिं अइकक्खडदेसणा कया। जाणन्ता य किं घरवासे वसन्ति, भोगे य भुञ्जन्ति। तहा इत्थीतित्थं। सघमहिक्खिवइ [17]पडिणीयताए वा वट्टइ। अहवा भणइ अन्ने वा सघा अत्थि 35

1 पतितमेतद्वाक्य A आदर्शे। 2 A अणऽप्पारिह। 3 B निमित्तिदोसण्णगारिया। 4 B वीइदो। 5 A नउलमेगो। 6 A नारगाइ। 7 B हवइ। 8 B लिंगे वा। 9 A भावओ। 10 B रयहर॰। 11 B पडिपक्ख। 12 B हत्थादा॰। 13 B ॰दाणितो। 14 B पुच्छिज्जा। 15 B कीलओ। 16 A अणवरयदोसो। 17 A 'पडिणी॰' आरभ्य ॰'खिवइ' पर्यन्त पाठो नोपलभ्यते A आदर्शे।

सियालसुणगाणं विगाण ति। एव सुयं अहिक्खिवइ—पायय ति। थाणे थाणे वा काया, पुणो पुणो वा वयाणि, पमाय अप्पमाया वा। मोक्खदेसणाए जोइस जोणिपाहुड गणित्तेण वा किं पओयणं। तहा आयरियं जच्चाईहिं अहिक्खिवइ। तहा गणहर महिड्ढियं। महिड्ढियगहणेण मूलगणहरा गहिया। जो वा जम्मि जुगे पहाणो तमहिक्खिवइ। इड्ढिरससायगरुया, सुहसाया, 5 परोवएसु[1]ज्जुया भसा इव, गिहिचच्छलगा न जईणं ति[2] एवमाईहिं आसाएन्तो[3] अणवट्ठप्पं पावेइ। एस आसायणा अणवट्ठप्पो। पडिसेवणा-अणवट्ठप्पो इमेहिं कारणेहिं—साहम्मिय-अन्न-धम्मिय तेणियाए हत्थादालणादीहि य आवज्जइ। तत्थ आसायणा-तवअणवट्ठप्पो जहन्नेण छम्मासा, उक्कोसेणं संवच्छर। पडिसेवणा अणवट्ठप्पो जहन्नेण बारसमासा उक्कोसेणं बारस सवच्छराणि, इमाए गाहाए भिन्नइ[4]—

10 ९२ 'वास बारस' इच्चाइ। सो य जइ इमेहिं गुणेहिं जुत्तो तो अणवट्ठप्पतवं पडिवज्जइ।

सघयणनिरियआगमसुत्तत्थविहीए जो समग्गो उ।
तवसी निग्गहजुत्तो पवयणसारे अहिगयत्थो ॥
तिलतुसतिभागमेत्तो वि जस्स असुहो[5] ण विज्जई भावो।
निज्जूहणारिहो सो सेसे निज्जूहणा णत्थि ॥
15 एय गुणसपउत्तो पावइ अणवट्ठमुत्तमगुणोहो।
एय गुण विप्पहूणे तारिसगम्मी भवे मूल ॥

एय ता उस्सग्गेण। अववाएण[6] पुण कुलगणसंघकज्जाइं तेणाधीणाइं[7] सिंहणाइय[8]कज्जं वा पसाहियन्ति, तो थोव थोवतर वा से देज्जा[9]। सव्वोवा से सव्व[10]मेव मुञ्चेज्जा[11]। तस्स पुण अणवट्ठप्पतव पडिवज्जमाणस्स को विही ? किं वा तवं करेइ त्ति। एत्थ गाहा।—

20 ९३ 'वन्दइ' इच्चाइ। गणनिक्खेवमित्तिरिय काउ परगण पडिवज्जइ। पसत्थदव्वखेत्त काल भावेसु। पसत्थदव्वे, उच्छु-वणसड पउमसर-चेइयघराइसु खेत्ते, काले सुहदिवसे, भावओ सज्झागय रविगयाइय मोत्तुं आलोयण पउञ्जइ। काउस्सग्गो कीरइ निरुवसग्गनिमित्त सेसाण[12] भयजणणणिमित्त च। गच्छेण सहवासो एगखेत्ते, एगउवस्सए, एगपासे, अपरिभोए अच्छइ। सेहमाइए वि वन्दइ। ते पुण त ण वन्दन्ति। परिहारतवो गिम्ह सिसिर वासासु जह-25 न्नमज्झिमुक्कोसो। गिम्हे चउत्थ छट्ठ-ट्ठमाइ। सिसिरे छट्ठ ट्ठमन्दसमाइ। वासासु अट्ठम-दसम बारसन्ताइं। पारणए अलेवकड। सखेवओ अणवट्ठप्पारिहं भणिय ॥

अहुणा पारञ्चियारिहं भन्नइ—

९४ 'तित्थगर' इच्चाइ। तित्थगराई जहा अणवट्ठप्पे तहा इहं पि भाणियव्वो। गणहरो तित्थगराणन्तरसीसो, सो महिड्ढियगहणेण गहिओ जो। जहिं जुगप्पहाणो। आयो लाभो संपत्ती 30 य एगट्ठा। तस्स साडणा आसायणा। जहा जहा अभिनिवेसेण हीलेई तहा तहा आयस्स साडण करिन्तो पारञ्चिय पावइ।

९५ 'जो य सलिंगे' इच्चाइ। तओ पारञ्चिया पन्नत्ता त-जहा—दुट्ठे पारञ्चिए, मूढे पारञ्चिए, अन्नमन्न करेमाणे पारञ्चिए। दुट्ठो दुविहो-कसायदुट्ठो, विसयदुट्ठो य। सपक्ख-परपक्खे चउभंगो। सपक्खो समण समणी। परपक्खो गिहत्था। तत्थ कसायदुट्ठे उदाहरण[13]-सासवनाले 35 मुहणन्तए य सिहिरिणि उलुगच्छिओ त्ति। विसयदुट्ठे वि चउभगो। तत्थ दुविह दुट्ठो वि पढमविईयभंगे वट्टमाणो लिंगओ पारञ्ची। तईए अइसई देज्जा। अणइसई न देइ लिंग। रायवहओ

1 B ०वदेसु०। 2 A तु। 3 B एवमातीहिं आसादितो। 4 A भिन्नति। 5 A असुभो। 6 A० वाए पुण। 7 B तेणहीणाइ 8 A सिंगणा०। 9 A दिज्जेज्जा। 10 A सघोना सव्व०। 11 A मुचेज्जा। 12 'सेसा . मित्त च' एतद्वाक्य A आदर्शे नास्ति। 13 A उयाह०।

जहा उदाइमारओ अन्नो वा। राइणो वा अग्गमहिसिं पडिसेवेइ। अग्गमहिसिग्गहणेण अन्नावि जा इट्ठा। च सद्देण जुवराय सेणावइमाईण वा अग्गमहिसीओ। बहुसो पुणो पुणो य, लोगपगासो य जो स पारञ्चिय पावइ। इयरासु महिलासु पुण किं न पारञ्चिओ? भन्नइ—बहु अवाया रायग्गमहिसीए। कुल-गण-संघ आयरिय पत्थारनिव्विसयाईया दोसा जओ पढवन्ति त्ति[1]। इयरमहिलासु पुण वयभंगदोसो, एगस्स य अवाओ होज्जा तेण मूलं। 5

९६ 'थीणद्धि'इच्चाइ। थीणद्धी दरिसणावरण-कम्मभेओ निद्दा पणगस्स। अइसंकिलिट्ठपरिणामा थीणद्धी। पदुट्ठपुव्वाभिलसिओवरि सुत्तो वावारए केसवबलद्ध च जायए। उदाहरणाइ—

पोग्गलमोयगदन्ते फरुसगवडसालभंजणे चेव।

एवमाई उदाहरणा। अन्नोन्नासेवण—अन्नोन्नाहिट्ठाणासेवणन्ति भणियं होइ। तत्थ पारञ्चिय। बहुसो पुणो पुणो य तेसु पारञ्चियावराहेसु एगरिसेण सज्जए पसज्जए जो। 10

९७ 'सो कीरइ' [इच्चाइ]। सो य पारञ्चिओ चउव्विहो—लिंगओ, खेत्तओ, कालओ, तवओ[2]। तत्थ दव्व भावलिंगे चउभंगो। थीणद्धिमहादोसो। अन्नोन्नासेवणा पसत्तो। रायवहओ अग्गमहिसीपडिसेवणाइएसु अवराहेसु उभयलिंगेणावि पारञ्ची।

९८-९९ 'वसहि' इच्चाइ। 'जत्थुप्पन्नो' इच्चाइ। खेत्तपारञ्चिओ जो जम्मि खेत्ते दूसिओ अच्छमाणो वा दोस पावेज्जा। वसहीए एव निवेसण पाडग-साही निओग-पुर देस रज्जाओ य जत्थ जत्थ दोसमावन्नो आवज्जिस्सइ वा ताओ ताओ[3] खेत्तपारञ्चिओ कीरइ। 15

१०० 'जत्तियमेत्त' मिच्चाइ। जो जावईय काल अणुवसन्तदोसो, दूसइ वा जावईय काल सो कालपारञ्चिओ। तवसा पारञ्चिओ दुविहो—आसायणापारञ्चिओ, पडिसेवणापारञ्चिओ य। आसायणापारञ्चिओ तित्थगराइ ट्ठाणेसु। विभासा पुव्वभणिया। पडिसेवणापारञ्चिओ तिविहो—दुट्ठे पारञ्चिए, पमत्ते पारञ्चिए, अन्नमन्न करेमाणे पारञ्चिए। दुट्ठो दुविहो—कसायविसएहि पुव्वभणिओ। पमत्तो पञ्चविहो—'कसाय-विगहा-वियड-इन्दिय-निद्द-प्पमाय' इति। एए भाणियव्वा वित्थरओ[4]। अन्नमन्न करेमाणो पुव्वभणिओ। आसायणापारञ्चिओ जहन्नेण छम्मासा, उक्कोसेण संवच्छर। पडिसेवणा पारञ्चिओ जहन्नेण बारसमासे उक्कोसेण बारसवासा। संघयणाइया गुणा जहा अणवट्ठप्पे; तवो वि तह चेव। 20 25

१०१ 'एगागी' इच्चाइ। जिणकप्पियपडिरूविओ खेत्तबाहिं ठाइ अद्धजोयणबाहिरओ। जओ विहरइ आयरिओ तओ तओ सो वि विहरइ। खेत्तओ बाहिरओ ठियस्स आयरिओ पइदिवस अवलोयण करेइ। सुत्तत्थपोरिसीओ दोन्नि वि दाउ गच्छइ तस्स समीवं। अहवा अत्थपोरिसिं अदाउ गच्छइ। अहवा दोन्निवि अदाऊण गच्छइ। अहवा दुब्बलो, असमत्थो तद्दूर गतु, कुलाइकज्जेहिं वा वावडो, ताहे गीयत्थ सीसमन्न वा पेसेइ। भत्तपाण चायरियस्स आयरियपेसवियस्स वा जत्थ गओ अन्तराले वा से उवणेन्ति। पारञ्चिओ वि भत्तपाणाईय पडिलेहणुव्वत्तणाइ वा अगिलाणो सयमेव करेइ। अह गिलाणो तो आयरिओ अन्नो वा से भत्ताइ आहारइ उव्वत्तणाइय पि से कुणइ। सुत्तत्थेसु आयरिओ अन्नो वा से पडिपुच्छग देइ। एवमेय संखेवपारञ्चियारिह भणियं। 30

१०२ 'अणवट्ठप्प' इच्चाइ। तवअणवट्ठप्पो तवपारञ्चिओ य भद्दबाहुसामिम्मि चरिमचउद्दसपुव्वधरे दो वि वोच्छिन्ना। लिंग खेत्त कालाणवट्ठप्प पारञ्चिया ताव अणुसज्जिज्जन्ति जाव तित्थ। 35

1 B जओ य हवन्ति। 2 A भावओ। 3 B ताओ ताओ। 4 B वित्थरेण।

सियालसुणगाणं विगाणं ति। एवं सुयं अहिक्खिवइ—पाययं ति। थाणे थाणे वा काया, पुणो पुणो वा वयाणि, पमाय अप्पमाया वा। मोक्खदेसणाए जोइस जोणिपाहुड गणितेण वा किं पओयणं। तहा आयरिय जच्चाईहिं अहिक्खिवइ। तहा गणहर महिड्ढिय। महिड्ढियगहणेण मूलगणहरा गहिया। जो वा जम्मि जुगे पहाणो तमहिक्खिवइ। इड्ढिरससायगरुया, सुहसाया,
5 परोवएसु[1]ज्जुया मखा इव, गिहिवच्छलगा न जईणं ति[2] एवमाईहि आसाएन्तो[3] अणवट्ठप्प पावेइ। एस आसायणा अणवट्ठप्पो। पडिसेवणा-अणवट्ठप्पो इमेहिं कारणेहिं—साहम्मिय-अन्न-धम्मिय-तेणियाए हत्थादालणादीहि य आवज्जइ। तत्थ आसायणा-तवअणवट्ठप्पो जहन्नेण छम्मासा, उक्कोसेण सवच्छर। पडिसेवणा अणवट्ठप्पो जहन्नेण बारसमासा उक्कोसेणं बारस सवच्छराणि, इमाए गाहाए भिन्नइ[4]—

10 ९२ 'बारसं बारस' इच्चाइ। सो य जइ इमेहिं गुणेहि जुत्तो तो अणवट्ठप्पतव पडिवज्जइ।

सघयणविरियआगमसुत्तत्थविहीए जो समग्गो उ।
तवसी निग्गहजुत्तो पवयणसारे अहिगयत्थो॥
तिलतुसतिभागमेत्तो वि जस्स असुहो[5] ण विज्जई भावो।
निज्जूहणारिहो सो सेसे निज्जूहणा णत्थि॥
15 एय गुणसपउत्तो पावइ अणवट्ठमुत्तमगुणोहो।
एय गुण विप्पहूणे तारिसगम्मी भवे मूल॥

एयं ता उस्सग्गेण। अववाएण[6] पुण कुलगणसघकज्जाइं तेणाधीणाइं[7] सिंहणाइय[8]कज्जं वा पसाहियन्ति, तो थोव थोवतर वा से देज्जा[9]। सव्वोवा से सव्व[10]मेव मुञ्चेज्जा[11]। तस्स पुण अणवट्ठप्पतव पडिवज्जमाणस्स को विही? किं वा तव करेइ त्ति। एत्थ गाहा।—

20 ९३ 'वन्दइ' इच्चाइ। गणनिक्खेवमित्तिरिय काउ परगण पडिवज्जइ। पसत्थदव्वखेत्त काल भावेसु। पसत्थदव्वे, उच्छु वणसड पउमसर-चेइयघराइसु खेत्ते, काले सुहदिवसे, भावओ सज्झागय रविगयाइय मोत्तुं आलोयण पउजइ। काउस्सग्गो कीरइ निरुवसग्गनिमित्तं सेसाण[12] भयजणणणिमित्त च। गच्छेण सहवासो एगखेत्ते, एगउवस्सए, एगपासे, अपरिभोए अच्छइ। सेहमाइए वि वन्दइ। ते पुण त ण वन्दन्ति। परिहारतवो गिम्ह सिसिर वासासु जह-
25 न्नमज्झिमुक्कोसो। गिम्हे चउत्थ-छट्ठ-ट्ठमाइ। सिसिरे छट्ठ ट्ठम-दसमाइ। वासासु अट्ठम-दसम-बारसन्ताइ। पारणए अलेवकड। सखेवओ अणवट्ठप्पारिह भणिय॥

अहुणा पारञ्चियारिह भन्नइ—

९४. 'तित्थगर' इच्चाइ। तित्थगराई जहा अणवट्ठप्पे तहा इहं पि भाणियव्वो। गणहरो तित्थगराणन्तरसीसो, सो महिड्ढियगहणेण गहिओ जो। जहिं जुगप्पहाणो। आयो लाभो सपत्ती
30 य एगट्ठा। तस्स साडणा आसायणा। जहा जहा अभिनिवेसेण हीलेई तहा तहा आयस्स साडण करिन्तो पारञ्चियं पावइ।

९५ 'जो य सलिंगे' इच्चाइ। तओ पारञ्चिया पन्नत्ता त-जहा—दुट्ठे पारञ्चिए, मूढे पारञ्चिए, अन्नमन्नं करेमाणे पारञ्चिए। दुट्ठो दुविहो-कसायदुट्ठो, विसयदुट्ठो य। सपक्ख-परपक्खे चउभगो। सपक्खो समण समणी। परपक्खो गिहत्था। तत्थ कसायदुट्ठे उदाहरण[13]-सासवनाले
35 मुहणन्तए य सिहिरिणि उलुगच्छिओ त्ति। विसयदुट्ठे वि चउभगो। तत्थ दुविह दुट्ठो वि पढम बिईयभगे वट्टमाणो लिंगओ पारञ्ची। तईए अइसई देज्जा। अणइसई न देइ लिंग। रायवहओ

1 B ०वदेसु०। 2 A तु। 3 B एवमातीहिं आसादिंतो। 4 A भिन्नति। 5 A असुभो। 6 A० वाए पुण। 7 B तेणदीणाइ 8 A सिंगणा०। 9 A दिज्जेज्जा। 10 A सघोवा सव्व०। 11 A मुंचेज्जा। 12 'सेसा ..मित्त च' एतद्वाक्य A आदर्शे नास्ति। 13 A उयाह०।

श्रीचन्द्रसूरिसंरचिता

जीतकल्पबृहच्चूर्णिविषमपदव्याख्या

नत्वा श्रीमन्महावीरं स्वपरोपकृतिहेतवे ।

जीतकल्पबृहच्चूर्णेर्व्याख्या काचित् प्रकाश्यते ॥

अत्रादौ शास्त्रारम्भे विघ्नोपशमनायेष्टदेवता गणधर स्थविर प्रवचनानां यथाक्रम वर्णनाय रूपकचतुष्टयमाह—

१ 'सिद्धत्थे'त्यादि । सिद्धा निष्पन्ना अर्था प्रयोजनानि यस्य ज्ञानावाप्तौ सत्यां स सिद्धार्थ , समाप्तकर्तव्य इत्यर्थ । सिद्ध प्रसिद्ध शासन संघो यस्य स तथा । सिद्धा अनादिप्रवाहतया नित्या प्रसिद्धा अर्था जीवादयो यत्र श्रुते तत् सिद्धार्थं तच्छ्रुत यस्य । तत पदत्रयस्य कर्मधारय । सिद्धार्थस्य राज्ञ सुत चापत्यम् । कम्?—वीरेभ्योऽतिक्रान्तेभ्यो वर श्रेष्ठ , उपसर्गादिसहनप्रत्यलत्वाद्वीरवरस्तम् । वरा श्रेष्ठा वरा ईप्सितार्थलाभरूपास्तान् ददाति यस्तम् । वरा देवादयो यतयश्च तेभ्यो वरका प्रधाना शक्रादयो गणधराश्च तैर्महित पूजितम् । नमत प्रणमत हे जना ! जीवेभ्यो हितो मोक्षमार्गप्रदर्शकत्वेन स तथा, तम् ॥

२ एकादशापि गणधरान् दुर्धरगुणधारकान्, धराधिपो मेरुस्तद्वत्सारा अचलत्वात्, तान्, चस्य गम्यमानत्वात् जम्बुप्रभवादींश्च समस्तसूत्रधरान् सूरीन् प्रणमत ॥

३ दशपूर्वधरान् नवपूर्वधरांश्च, अतिशयिन अवधिमन पर्यायज्ञानिन , अवशेषज्ञानिनश्च मतिश्रुतज्ञानिन , यत्नेन सर्वानपि यतिगुणप्रवरान्, सर्वकाल त्रिकरणशुद्धेन भावेन नमत ॥

४ इत स्थविरनमस्काराद्दूर्ध्वं प्रवचन नमत । निर्वाणाङ्गमित्येतदेव व्याख्यानयति । निर्वाणस्याङ्ग कारणं जीवानां तद्गमकत्वात्—तत्प्रापकत्वादित्यर्थ । निर्वाण मोक्ष गमयति प्रापयति जन्तून् निर्वाणगमिति प्राप्ते—अनुस्वारोऽलाक्षणिको निर्वाणङ्गमिति । प्रवचनमित्यस्यार्थमाह—प्रकर्षेण गत स्थित जीवादिवस्तुवाचकतयेति प्रगतम्, आगामिफलजननसमर्थं यत्तत् । प्रशस्त वर्णादिगुणोपेत कष्टप्राप्य च यत्तत् । प्रधान—तथा च दधिदूर्वादय प्रशस्ता उच्यन्ते न तु प्रधानानि, प्रधान पटादिरपि भवति न तु प्रशस्त इति व्यवह्रियते, इत्यनयोर्विशेष । तत प्रशस्तानि ससारोत्तारीणि वचनानि यत्र तत्प्रशस्तवचनम् । प्रधानानि द्रव्याणि वचनानि यत्र तत्प्रधानवचनम् । इत्यर्थत्रयोपेत प्रवचन नमत ॥

५ अधुना जीतकल्पसूत्रकर्तुर्जिनभद्रगणेर्वर्णनाय श्लोकषट्कमय कुलकमाह—**नमह**इत्यादि—त **जिनभद्रक्षमाश्रमणं** च नमतेति योग । शेषाणि तद्विशेषणानि । युगप्रधानमिति—तत्कालीना आगमार्थवेदिन पुरुषा युगमभिप्रेत तेषु प्रधानस्तम् । प्रधानज्ञानिना बहुमतम् । सर्वश्रुतिशास्त्राणि शब्दशास्त्रप्रभृतीनि तेषु कुशल तद्वेदिनम् । दर्शनज्ञानयोर्योऽसावुपयोगमार्गस्तत्र स्थित तत्परम् ॥

६ जस्सेत्यादि—यस्य पादपद्म भ्रमरा इव मुनिवरा-यतयो रात्रौ च दिवा च सेवन्ते सदा नित्य त नमतेति योग । अनन्यसाधारणविशेषणसामर्थ्यादनुक्तमपि विशेष्य लभ्यते । कीदृशा भ्रमरा ?—मकरन्द किञ्जल्कस्तत्र तृषितास्तत्पिपासव । यतय कीदृशा ?—ज्ञानमेवाज्ञानज्ञादिभेदभिन्न मकरन्दस्तत्तृषितास्तद्ग्रहीतुमिच्छव । पुन कीदृशा भ्रमरा ?—अमृतमयवशगन्धाभिवासिता —अमृत जल तेन निर्वृत्तममृतमय पद्मम्, तस्य वशोऽधीनो यो गन्धस्तेनाभिसामस्त्येन वासिता आहूता शब्दिता इति यावत् । वासृशब्दे—इत्यस्य स्व(?)रूपम् । यतय कीदृशा ?—मुखमेव निर्झरोऽपां प्रसवस्थानम्, तत्रामृतमिव यन्मत जिनागमस्तस्य वशोऽधीनो यो गन्ध परिमल माहात्म्यरूपस्तेनाभिवासिता —तदाकृष्टमानसा इत्यर्थ ॥

७ समयशब्द आचारार्थोऽत्र, तत स्वाचार-पराचारयो प्रतिपादको य आगम शास्त्रनिवहस्तस्य च । लिपयश्चाष्टादशभेदा । गणित पाटीगणितादि । छन्दांसि च पिङ्गलादीनि । शब्दशास्त्रम् [व्याकरण] । तैर्निर्मितो भणितो यश पटहो दशस्वपि दिक्ष्वनुयोगविषयेऽनुपमो यस्य भ्राम्यति त नमत ॥

१०३ 'इतिएस' इच्चाइ। इतिकरणो परिसमत्तिवयणो। एस इति अणन्तरुद्दिट्ठो जीय कप्पो जीयववहारो कप्पो। वण्णणा परुवण त्ति एगट्ठा। समासओ संखेवओ। सोहणं विहिय जेसिं नाणाइय ते सुविहिया साहू। तेसिमणुकपानिमित्त। कहिओ अक्खाओ। देओ दायव्वो अय पुण। कहिं? पत्ते। किंविसिट्ठे? संविग्गवज्जभीरू, परिणामगकडजोगी, आयरियवन्नवादी, संगहसीलो, 5 अपरितन्तबहुसुयमेहावी, एवमाइगुणसंपन्ने पत्ते। पुण सद्दोऽवधारणे। पत्ते चेव दायव्वो, नापत्ते। सुट्ठु परिच्छिया गुणा जस्स। एए चेव सविग्गाई भणिया गुणा। आइमज्झावसाणेसु तावच्छेय निवसेसु य जच्चसुवन्नमिव अविगारि ज, तं सुपरिच्छियगुणं, तम्मि सुपरिच्छिय गुणे सुत्तत्थयओ देओयमिति।

इति जेण जीयदाणं साहूणऽइयारपंकपरिसुद्धिकर।
10 गाहाहिं फुडं रइयं महुरपयत्थाहि पावणं परमहियं॥
जिणभद्दखमासमणं निच्छियसुत्तत्थदायगामलचरण।
तमहं वंदे पयओ परमं परमोवगारकारिणमहग्घं॥

॥ जीतकल्पचूर्णिः समाप्ता। सिद्धसेनकृतिरेषा॥

श्रीचन्द्रसूरिसंरचिता

जीतकल्पबृहच्चूर्णिविषमपदव्याख्या

नत्वा श्रीमन्महावीरं स्वपरोपकृतिहेतये।
जीतकल्पबृहच्चूर्णेर्व्याख्या काचित् प्रकाश्यते ॥

अत्रादौ शास्त्रारम्भे विघ्नोपशमनायेष्टदेवता-गणधर-स्थविर-प्रवचनानां यथाक्रम वर्णनाय रूपकचतुष्टयमाह—

१ 'सिद्धत्थे'त्यादि। सिद्धा निष्पन्ना अर्था प्रयोजनानि यस्य ज्ञानावाप्तौ सत्यां स सिद्धार्थ, समाप्तकर्तव्य इत्यर्थ। सिद्ध प्रसिद्ध शासन सघो यस्य स तथा। सिद्धा अनादिप्रवाहतया नित्या प्रसिद्धा अर्था जीवादयो यत्र श्रुते तत् सिद्धार्थं तच्छ्रुत यस्य। तत पदत्रयस्य कर्मधारय। सिद्धार्थस्य राज्ञ पुत्र चापत्यम्। कम्?—वीरेभ्योऽतिक्रान्तेभ्यो वर श्रेष्ठ, उपसर्गादिसहनप्रत्यलत्वाद्वीरवरस्तम्। वरा श्रेष्ठा वरा ईप्सितार्थलाभरूपास्तान् ददाति यस्तम्। वरा देवादयो यतयश्च तेभ्यो वरका प्रधाना शक्रादयो गणधराश्च तैर्महित पूजितम्। नमत प्रणमत हे जना! जीवेभ्यो हितो मोक्षमार्गप्रदर्शकत्वेन स तथा, तम् ॥

२ एकादशापि गणधरान् दुर्धरगुणधारकान्, धराधिपो मेरुस्तद्वत्सारा अचलत्वात्, तान्; चस्य गम्यमानत्वात् जम्बुप्रभवादींश्च समस्तसूत्रधरान् सूरीन् प्रणमत ॥

३ दशपूर्वधरान् नवपूर्वधरांश्च, अतिशयिन अवधिमन पर्यायज्ञानिन; अवशेषज्ञानिनश्च मतिश्रुतज्ञानिन; यत्नेन सर्वानपि यतिगुणप्रवरान्, सर्वकाल त्रिकरणशुद्धेन भावेन नमत ॥

४ इत स्थविरनमस्कारादूर्ध्वं प्रवचन नमत। निर्वाणाङ्गमित्येतदेव व्याख्यानयति। निर्वाणस्याङ्ग कारणं जीवाना तद्गमकत्वात्—तत्प्रापकत्वादित्यर्थ। निर्वाण मोक्ष गमयति प्रापयति जन्तून् निर्वाणगमिति प्राप्ते—अनुस्वारोऽलाक्षणिको निर्वाणङ्गमिति। प्रवचनमित्यस्यार्थमाह—प्रकर्षेण गत स्थित जीवादिवस्तुवाचकतयेति प्रगतम्, [illegible]जननसमर्थं यत्तत्। प्रशस्त वर्णादिगुणोपेत कष्टप्राप्य च यत्तत्। प्रधान—तथा च दधिदूर्वादय प्रशस्ता उच्यन्ते न तु प्रधानानि, प्रधान पटादिरपि भवति न तु प्रशस्त इति व्यवह्रियते, इत्यनयोर्विशेष। तत प्रशस्तानि ससारोत्तारीणि वचनानि यत्र तत्प्रशस्तवचनम्। प्रधानानि द्रव्याणि वचनानि यत्र तत्प्रधानवचनम्। इत्यर्थत्रयोपेत प्रवचन नमत ॥

५ अधुना जीतकल्पसूत्रकर्तुर्जिनभद्रगणेर्वर्णनाय श्लोकपट्कमय कुलकमाह—नमहेत्यादि—त जिनभद्रक्षमाश्रमणं च नमतेति योग। शेषाणि तद्विशेषणानि। युगप्रधानमिति—तत्कालीना आगमार्थवेदिन पुरुषा युगमभिप्रेत तेषु प्रधानस्तम्। प्रधानज्ञानिना बहुमतम्। सर्वश्रुतिशास्त्राणि शब्दशास्त्रप्रभृतीनि तेषु कुशल तद्वेदिनम्। दर्शनज्ञानयोर्योऽसावुपयोगमार्गस्तत्र स्थित तत्परम् ॥

६ जस्सेत्यादि—यस्य पादपद्म भ्रमरा इव मुनिवरा-यतयो रात्रौ च दिवा च सेवन्ते सदा नित्यं त नमतेति योग। अनन्यसाधारणविशेषणसामर्थ्यादनुक्तमपि विशेष्य लभ्यते। कीदृशा भ्रमरा?—मकरन्द किञ्जल्कस्तत्र तृषितास्तत्पिपासव। यतय कीदृशा?—ज्ञानमेवाज्ञानज्ञादिभेदभिन्न मकरन्दस्तत्तृषितास्तद्गृहीतुमिच्छव। पुन कीदृशा भ्रमरा?—अमृतमयवशगन्धाभिवासिता—अमृत जल तेन निर्वृत्तममृतमय पद्मम्, तस्य वशोऽधीनो यो गन्धस्तेनाभिवासमस्त्येन वासिता आहूता शब्दिता इति यावत्। वासशब्दे—इत्यस्य रू(?)रूपम्। यतय कीदृशा?—मुखमेव निर्झरोऽपां प्रस्रवस्थानम्, तत्रामृतमिव यन्मत जिनागमस्तस्य वशोऽधीनो यो गन्ध परिमल माहात्म्यरूपस्तेनाभिवासिता—तदाकृष्टमानसा इत्यर्थ ॥

७ समयशब्द आचारार्थोऽत्र, तत स्वाचार-पराचारयो प्रतिपादको य आगम शास्त्रनिवहस्स च। लिपयश्चाष्टादशभेदा। गणित पाटीगणितादि। छन्दासि च पिङ्गलादीनि। शब्दशास्त्रम् [व्याकरण]। तैर्निर्मितो भणितो यथा पटहो दशास्वपि दिक्ष्वनुयोगविषयेऽनुपमो यस्य भ्राम्यति त नमत ॥

८. तथा, येनानुपममतिनाऽऽवश्यके ज्ञानाना मत्यादीना विशेषा विशेषिता कथिता अविशेषत सामस्त्येन। ज्ञानिनां च विशेषा. प्रमाणानां विशेषा विशेषितास्तथा गणधराणां च पृच्छा येन विशेषितास्त नमत ॥

९ येन छेदसूत्रस्था प्रायश्चित्तानामापत्तिर्या सविधिर्निर्यूढ । आचार्योपाध्यायादिक पुरुषविशेषमाश्रित्य स्फुट प्रकट । केन कृत्वा दानस्य विरचना तया यहास्तेन । क जीतेन दान तस्य कल्पस्तत्र । अन्ये तु येन छेदश्रुतार्थान्, कथभूतान्–आपत्तिदानयोर्विरचनं यत्र, तस्मात् जीतदानकल्पविषययोर्विधि पुरुषविशेषमाश्रित्य स्फुटो यत्नेन निर्यूढ उद्धृतस्त नमतेति, व्याचक्षते ॥

१०–११ भूयोपि परसमयवेदित्व विशेषतस्तस्याह—परेत्यादि—सुसमिता ये सुश्रमणास्तेषां य समाधिमार्गे प्रतिदिनाचरणीयमनुष्ठान तेन क्षमाप्रधाना ये श्रमणास्तेषां निधानमिवैक्म्, अनेनानेकसुशिष्यसपत्समन्वितत्वं तस्याह। त नत्वा। मदमथनम्। मानारिहति मानारिहस्तम्। शेष सुगमम्। स्कन्धक छन्द सर्वरूपकेषु, आर्यागीतिरित्यपरनामकम्।

पृ० प० (पृ०=पृष्ठम्, प०=पक्ति)

१—26 कोवीत्यादि—आचारचूलात्वानिशीथस्याचारपदात् परत उपादानम्।

,,—27 ववहारमाइयन्ति—आदिग्रहणाद् भगवत्यादिपरिग्रह ।

,,—31. [नाणाइयारेसु]—नानातिचारेषु का आपत्ति । 'आवत्ती पायच्छित्तगणसम्पत्ति' प्रायश्चित्तयोग्यता इत्यर्थ । **कम्मिवत्ति**—कस्यामापत्तौ अपरिमूढ सन्।

२—2 कप्पियाइपदिन्ति—पिण्डैषणा-वस्त्रैषणादिकल्पा येनार्थत सूत्रतश्चाभ्यस्ता स कल्पादिगुणोपेत उच्यते। **[अपत्तापत्त]**—अपात्रमयोग्य, अप्राप्त श्रुतेन वयसा च। येन नाधीत श्रुत सोऽप्राप्तश्रुत । **[अवत्त]**—अव्यक्तो वयसा षोडशवर्षाणि यावत्, तदूर्ध्वं व्यक्त पक्षकूचश्च य । **[तिन्तिणिय]**—तिन्तिणिको झिगिझिगिणस (स्व) भाव । **[चलचित्त]**—सम्यक्त्वादिषु योऽस्थिर स चलचित्त । तथा चायोग्य उक्तो यथा—

तिन्तिणिए चलचित्ते गाणगणिए य दुब्बलचरित्ते। आयरिय पारिभासी वामावट्टे य पिसुणे य ॥

,,—6 [कयपवयण]—प्रोच्यन्ते तेनेति प्रवचनम्। वक्तीति प्रवदतीति वा प्रवचनम्–। प्रतिष्ठावचन वा प्रवचनम्। प्रवचने योगानन्यत्वात् सङ्घस्य सर्वपक्षेष्वपि सङ्घ एव प्रवचनशब्दवाच्य । यत —प्रवचन श्रुतमुच्यते। तच्च भावश्रुतमुपयोगरूपम्। श्रुतोपयोगश्च न निराश्रय इति प्रवचनाश्रयत्वात्सङ्घ प्रवचनमभिधीयते। अत एवाह **जेण त सुयमित्यादि** तद्–सङ्घोपयोगात्।

,,—14. वत्तणुवत्तेत्यादि—वृत्त पात्रबन्धग्रन्थिदानादिक । एकदा नवो जात । ततोऽनुवृत्त· एकपुरुष यावत्। तत प्रवृत्त पुरुषप्रवाहेण। अत एव बहुश आसेवितो महाजनेन। भाष्यकृता उक्तम्—

वत्तो नाम एककसिं अणुवत्तो जो पुणो बिइयवारे। तईयवारपवत्तो, परिग्गहीओ महाणेणति ॥ १ ॥

,,—18 सोहणन्ति—शोधकम्। **मरुयाई**—धिग्जातय । **कत्थइ त्ति**—द्विजातिवधे।

,,—21 [पलास-खारोदगाइ]—पलासक्षारं च उदक च । आदिग्रहणादरिष्टादिग्रह, तद् यथा वस्त्रमल शोधयति।

,,—25 विसेसणं च सइसंभवे—यथा विद्यावान् धनवान् गोमानय वर इत्यादिषु प्रशस्तातिप्रचुराऽनन्यसाधारणविद्याधनगवादिवस्तुसद्भावेन यथाविशेष्य विशिष्यते विद्यादिभिस्तदा तत्तत्र सम्भवि विशेषण ज्ञेयम्। व्यभिचारे नीलोत्पलमित्यत्र नीलविशेषण रक्तोत्पलादेरपि सम्भवाद् द्रव्यव्यवच्छेदाय नीलपदम्। एवमिहापि शेषागमादिव्यवहारसम्भवात्तदवच्छेदाय जीतपदम्।

,,—29 [केवल-मण ओहिणाणीति]—केवल मण ओहिणाणीत्यत्र अवधिर्द्विधा—भवप्रत्यय· क्षायोपशमिकश्च। तत्राद्यो देवनारकाणाम्। तत्राय विशेष —

उप्पज्जमत्तेण उ खलु भवपचईओ हि जत्तिओ विसओ। सव्व त ओभासइ न य वुड्ढी नव य हाणी [हि] ॥१॥

गुणपच्चइओ ओही गब्भजतिरिमणुयसपमोत्तूण। कम्माण खओवसमे तदवरणिज्जाण उप्पज्जे ॥ २ ॥

सद्ययातायुष्कगर्भजतिर्यङ्मनुष्यान् मुक्त्वा न शेषाणां क्षायोपशमिकावधिसम्भवो युगलधर्मिणाम् । अवधिर्मूर्तिमद्रव्यविषयः । अत्र यदा केवली प्राप्यते तदा तदग्रतो दीयते । तदभावे मनःपर्यायज्ञानिनः समीपे । तत्साप्यभावे अवधिज्ञानिन इत्यादि यथाक्रमं वाच्यम् ।

२—30 अवसेस-पुव्वीत्ति—अवशेषपूर्विणः —अष्ट-सप्ताद्येक-तदर्धान्तं यावत् ।

२—31 निशीथ-कल्प-व्यवहार-दशाश्रुतस्कन्ध पञ्चकल्प प्रभृतिक शेष श्रुत सर्वमपि श्रुतव्यवहारः । तदुक्तम्—'आयारपकप्पाई सेसं सव्व सुयं विणिद्दिट्ठं' मिति । चतुर्दशादिपूर्वाणां श्रुतत्वाविशेषेऽप्यतीन्द्रियार्थेषु विशिष्टज्ञानहेतुत्वेन सातिशयत्वात् केवलादिवदागमत्वेनैव तानि व्यपदिष्टानि । यत आगम्यन्ते परिच्छिद्यन्ते अतीन्द्रिया पदार्थां अनेनेत्यागम उच्यते ।

२—32 तथा आज्ञायत आदिश्यत इत्याज्ञा । तद्रूपव्यवहारस्तु केनापि शिष्येण निजातिचारालोचकेन आलोचनाचार्यः सन्निहितोऽप्राप्तः, दूरे स्वसौ तिष्ठति । ततः केनचित्कारणेन स्वयं तावत्तत्र गन्तुं न शक्नोति । अगीतार्थस्तु कश्चित्तत्र गन्ता विद्यते । तस्य हस्ते आगमभाषया गूढानि अपराधपदानि लिखित्वा यदा शिष्यः प्रस्थापयति, गुरुरपि तथैव गूढपदो(दै)प्रायश्चित्तं लिखित्वा प्रेषयति तदासौ आज्ञालक्षणस्तृतीयो व्यवहारः । तद् युक्त 'देसन्तरट्ठियाण गूढपयालोयणा आणा ।' गूढपदानि च दर्शयिष्यति चूर्णिकृत् । जहा—पढमस्स य कज्जस्सेत्यादिना ॥ आसेवियसत्यत्थ त्ति—अभ्यस्तशास्त्रार्थौ ।

२—33 दूरदेशान्तरनिवासिनौ । मइधारणा-कुसल त्ति—सन्दिष्टवस्तुनयनसमर्थम् ।

२—34 गूढार्थवाक्यैः । दर्पासेवनापदमेकम्, अपरं च कल्पासेवनरूपम् । ततः कल्पासेवनद्वितीयपदापेक्षया दर्पासेवनलक्षणं प्रथमं पदम् । तत्रापि दर्पासेवने दशपदानि दर्पाकल्पनिरालम्बनादीनि । तेषु मध्ये प्रथमपदेन दर्पलक्षणेन षट्कानि च त्रीणि । ततः प्रथमषट्कं व्रतषट्कलक्षणम् । अभ्यन्तरत्वन्मध्यवर्ति तत्र पठितमित्यर्थः । तत्रापि च प्राणातिपातादीनि षड् स्थानानि । तेषु मध्ये प्रथमं स्थानं प्राणातिपातरूपम्, आपन्नमित्येवं गूढपदेन प्राणातिपातातिचारं निर्दिष्टवान् । प्रथमषट्के द्वितीयादिस्थानेष्वतिदिशन्नाह—

२—35 पढमेत्यादि । सेसेसु वि त्ति—द्वितीयादिषु मृषावादादिषु स्थानेषु इत्थं वाच्यम् । द्वितीयं षट्कं कायषट्कलक्षणम् । तत्र प्रथमं च स्थानं पृथिवीकायविषयम्, शेषाणि च पदानि अप्कायादीनि । तेषु तृतीयं षट्कं अकल्पगृहभाजनादि शोभावर्जनपर्यन्तलक्षणम् । तत्र पिण्ड-उपाश्रय वस्त्र पात्ररूपं चतुष्टयं यदनेषणीयं तदकल्प्यम् । करोटककशपात्र्यादिकं च गृहभाजनम् । आसंदकमचिकादि पल्यङ्करूपम् । भिक्षा गतेन संयतेन गृहे नोपवेष्टव्यमित्येव निषद्यावर्जनमुच्यते । स्नानवर्जनं पञ्चमम् । शोभावर्जनं षष्ठमिति । स्वस्थाने न्यक्षेण व्याख्यास्यते गाथेयम् । तत्र प्रथमस्थानमकल्पलक्षणम् ।

२—36 सेसेसु वि पएसु त्ति—शेषाणि पदानि गृहभाजनादीनि तेषु । इदानीमतिदेशमाह-प्रथमपदं दर्पलक्षणममुञ्चता तत्रैव यानि अकल्पनिरालम्बनादीनि द्वितीयतृतीयादीनि पदानि नि शङ्कपर्यन्तानि तेषु वाच्यम् । यथा पढमस्स य कज्जस्सा विइएण पएण सेविय ज च । शेषं पूर्ववत् । ततः तइएण पएण सेवियं ज चेत्यादि । यावद् दसमेण पएण सेविय ज च त्ति । इत्येवं प्रथमषट्कमाश्रित्य चारणीयम् । भूयोऽपि द्वितीयषट्कमाश्रित्य तृतीयषट्कं चाश्रित्यैवमेव चारणीयं यावद्दशमपदमिति । अत एवाह—

३—5 पुढविकायाइसु त्ति । अपिशब्दोऽत्र द्रष्टव्यस्तत पृथिवीकायादिष्वपीति द्रष्टव्यम् । द्वितीयं च कार्यं कल्पासेवनरूपम् । तत्र चतुर्विंशति पदानि भवन्ति । तेषु मध्ये प्रथमं पदं दर्शनलक्षणं तदर्थमासेवितमित्यर्थः ॥ प्रथमादिपदव्याख्यामाह—पढम ठाणमिच्चाइ—दप्प-कप्पासेवनेऽधिकृत्य प्रथमं स्थानं दर्पः, दर्पकल्पासेवनाश्रयणेन एतत्साध्यत्वादाकुट्टेतयोरेवान्तर्भावः । प्रमादस्य दर्प एवेति न तयोः पृथक् प्रायश्चित्तनिरूपणम् ।

३—9 परिग्गहो चेव त्ति —च शब्दाद्रात्रिभोजनग्रहः । इत्येवं प्रथमषट्कविषयः ।

३—10 पढमकप्पाईसु वि त्ति—नवसु पदेषु ।

३—11. द्वितीय कार्यं कल्प, कल्पप्रतिसेवनामाश्रित्य ।

३—12 तत्र ज्ञानादीनि त्रयोविंशति पदानि तेषु मध्ये एकैकस्मिन् पदे, एवमष्टादशसु चतुर्विंशत्या गुणितेषु कल्पासेवनायामेतावन्तो भेदा —४३२ । उभयाश्रेनत्रयोर्भेदमीलने ६१२ गाथाना भवन्ति ।

३—14 दुविहा पडिसेवणा-दप्पिया कप्पियेत्यादि—दप्पाईणि दसपयाणि वक्खाणेइ—

३—17 तत्थ दप्पो—धावणडेवणाई—इत्यादि । धमीपामयमर्थ —धावण त्ति नि कारणेण खड्डयप्पयाण धावण । डेवण गत्तवरंडाइफडण । आदिशब्दात् मल्लवत् बाहुयुद्धकरण, लगुडिभमाडण ॥ १ ॥

अकप्पो नाम पुढवाइकायाण अपरिणयाण गहण करेइ । अहवा उदउल्ल ससणिद्ध ससरक्खाइएहिं हत्थमत्तेहिं गिण्हइ । ज वा अगीयत्थेण आहारोवहि उप्पाइय त परिभुंजतस्स अकप्पो । पचकादिप्रायश्चित्तशुद्धियोग्यमपवाद सेवनविधिं त्यक्त्वा गुरुतरदोषसेवा वा अकप्पो ॥ २ ॥

निरालम्बो ज्ञानाद्यालम्बन विना नाणाइणि अवलम्बिउ अकप्पिय पडिसेवइ सालम्बा, नाणाइ अवलम्बनं त्यक्त्वा अकारणेण पडिसेवइ ज सा निरालम्बा ॥ ३ ॥

३—18 चियत्त त्ति—त्यक्त कृत्य करणीय येन स त्यक्तकृत्य, त्यक्तचारित्र । अयमर्थ —जं अववायेण निसेविय गिलाणाइकारणे असथरे वा, पुणो ते चेय हट्ठसमत्थो वि होउ (उ) निसेवतो चियत्तकिच्चो भवइ ॥ ४ ॥

अप्पसत्थे त्ति—बलवर्णाद्यर्थं प्रासुकमोऽप्यपि ज पडिसेवइ सा अप्रशस्तपडिसेवणा, किं पुण अविसुद्ध आहाकम्माइ ॥ ५ ॥

३—19 वीसत्थे त्ति—अकिच्च पाणाइवायाइ सेवतो लोय-लोउत्तरविरुद्ध सपक्ख परपक्खाउ अलज्जिरो वीसत्थो । सपक्खो सावगाइ, परपक्खो मिथ्यादृष्टय ॥ ६ ॥

अपरिच्छिय त्ति—आयव्ययमपरीक्ष्य य प्रवर्ततेऽपवादे । आयो लाभो, व्ययो लब्धस्य प्रणाश, एसा अपरिच्छियपडिसेवणा ॥ ७ ॥

३—20 अकडजोगि त्ति । जोगमकाऊण त्ति—ग्लानादौ कार्ये गृहेषु वारत्रयपर्यटनमकृत्वा सेवते । यद्वा सथाराइसु तिनि वारा एसणीय अन्निसिउ जया तइयवाराए वि न लब्भइ तया चउत्थपरिवाडीए अणेसणीय घेत्तव्व । एव तिगुण व्यापारमक्ष(कृ)त्वैव जा वियवाराए चेव अणेसणीय गिण्हइ सोऽकडजोगी ॥ ८ ॥

निरणुतावि त्ति—जो साहू अववाएणावि पुढवाईण सघट्टण परियावण उद्दवण वा काउ पच्छा नाणुतप्पइ—'हा दुट्ठु कय' सो अणणुतावी होइ—अपश्चात्तापीत्यर्थं । जो दप्पेण पडिसेवेन्तो नानुतप्येतस्य विशेष ॥ ९ ॥

३—21 णिस्संको त्ति—निरपेक्ष । अकार्यं कुर्वन् कस्याप्याचार्यादेर्न शङ्कते, नेहलोकस्यापि बिभेति ॥१०॥

३—23 दसणाईणि चउवीसपयाणि, एएसिं इम वक्खाण—दसण त्ति—दसणपभावगाणि सत्थाणि सिद्धि विणिच्छय-सम्मत्यादि गिण्हन्तोऽसथरमाणो ज अकप्पिय पडिसेवइ जयणाए तत्थ, सो सुद्धोऽप्रायश्चित्त इत्यर्थ ॥

नाण त्ति—नाणनिमित्त सुत्त अत्थ वा गेण्हमाणो तत्थ वि असथरे अकप्पिय पडिसेवतो सुद्धो ॥

चरित्ते त्ति—जत्थ खेत्ते एसणदोसो, ताओ खेत्ताओ चारित्रार्थिना निर्गन्तव्यम् । तओ निग्गच्छमाणो ज अकप्पिय सेवइ तत्थ सुद्धो ॥

तव त्ति—तव काहामि त्ति धयाइ नेदऽतिपिवेज्जा, कए वा विगिट्ठतवे पारणे लायातरणाई पियेज्जा । लाया नाम वीहिया भुज्जिया भट्ठे ताण तदुलेसु पेया कज्जइ त लायातरण भनइ त, विगिट्ठतवपारणए अहवा आहाकम्म पिबेज्जा । मा अन्नेण दोसीणाइणा रोगो हवेज्जा । पारणगे आमलगसर्करादयो वा दीयन्ते । जयणाए सुद्धो । अतोऽग्रे सजमेति पद दृश्यते चूर्णिपुस्तकेषु परं तदशुद्धम् । तस्य स्थाने पवयण त्ति पद पठनीयम् । निशीथे एतदीय-भाष्ये च इत्थमेव पठितत्वात्, चारित्रपदेनैव सयमाधस्योक्तत्वाच । अत पवयण त्ति व्याख्यायते—पवयणट्ठयाए किंचि पडिसेवतो सुद्धो । जहा कोई रायाइ भणेज्जा 'मम विसयाओ नीह [र]' । एत्थ पवयणट्ठया सेवतो सुद्धो । जह विण्हुअणगारो । तेण रुसिएण लक्खजोयणपमाण रूव विउव्विय लवणो चलणेणालोडिओ त्ति ॥

समिय त्ति—इरिय न सोहेइस्सामि त्ति चक्षुर्निमित्त वैद्योपदेशादौषधपान कुर्यात् । इरियासमिइनिमित्त ।

खेत्तविणासओ होउ मा नाणादविणासणिओ होति त्ति तप्पसमणट्ठया ओसहपाणं कुर्यात् । तदभावे सनिहिए अणेसणिय पि कराइ गिण्हेज्जा । एगाणीणिग्गओ वा एगागी ससाहएसु गिण्हेज्जा । अद्धाणपडिवन्नो वा अद्धाणकप्प पडिसेवेज्जा । आगाढरोगेण पडिसेविए पच्छा तो दाउ पत्तगाउत्ता गहिओ सो असणो पगपइ अण्णाओ निव्वेय करेइ, तप्पसमणट्ठया वा ओसहं करेज्जा । पाडिणीयविणासणिहिए पाउभूईए वा तिति सिराहेज्जा ।

मणोगुत्तीए विसए कारणओ पडिसेविय तप्पडिमा नाणाइगुत्तो कारणगुत्तो खेत्तनिसाइ हवेज्जा ।

'साहम्मियवच्छल्लाइ गरुयुदपज्जवसाणाण' गाहाइ पदाण व्याख्या । साहम्मियवच्छल्ल पडुच्च किंचि अकप्पं पडिसेवेज्ज । जहा अज्जवयरेहिं वडियगुट्ठो नित्थरिओ । तत्थ किं अवप्प ? भण्णइ—

तहे वा संजय धीरो आतगहिं करेहिं वा । गय चिट्ठ पयाहि त्ति नेव भासिज्ज पन्नव—इति ॥

गिलाणो कण्णं । कुलगणसंघकज्जेसु समुप्पन्नेसु पडीरस्स उच्चाटण-होमाइ रायाइयमुद्दिस्स पउंजेयव्व । निमित्तजुय जोगा वादन्ना । आयरियस्स असहिगिणागस्स वारणुट्ठाण य अंगमाहीसु कायव्वं । को य असह ? तत्थ राया जुवराया सेट्ठि-अमच्च पुरोहिया य एए असहू पुरिसा भवंति । एए अन्तपन्ताइएहिं अभाविया । वाउत्ता न कारणे निसिरिया होज्जा,-जहा वयरसामी, अज्जरक्खियपिया य । एएसिं पणगाइयाए जयणाए पेज्जु समाहिहेउ कायव्व । जयणाए अलब्भमाणे पच्छा जाव आहाकम्मेणावि समाहाण कायव्व ।

३—25 इयाणि उदयाद-वसणपज्जवसाणाण अट्ठण्ह पयाण व्याख्या उच्यते । तत्थ **उदय त्ति**— वाही पानीयपूर इत्यर्थः । **अग्गि त्ति**—दवाग्निरागच्छति । [**चोर त्ति**—]चोरा दुविहा उवगरणसरीराण । **सावय त्ति**—सय सप्प सीह-वग्घाइ । **भय त्ति**—एयरसभासा-जो भय । एएसि असयरकारणे उप्पन्ने अणणिविज्ज गतेऊण पमेज्जा । विज्जमाणे पलायइ । पलाइउ असमत्था थत्तो वा सचित्तस्स दुरुहेज्जा, न दोसो । [**कंता-र त्ति**—]कंतारमध्यात तत्थ भत्तपाण न लब्भइ तत्थ जयणाए कयलगाइ फल वा उदगाई वा फासुय गिण्हेज्जा । आवई ४, दव्व खेत्त काल-भावावई चउहा । दव्वओ फासुय दव्वं न लब्भइ । खेत्तओ अद्धाणपडिवन्नयाण आवई । कालओ दुभिक्खाइसु । भावओ गिलाणस्स आवई । तत्थ किंचि अकप्पिय पडिसेवेज्जा । तत्थ विसुद्धो । गीयाइ-अब्भासो व[स]ंग । कोइ धारणाइरित्तगो नमणत्तो गीओयारं करेज्ज । पुव्वभाविओ पयताम्बूलपत्ताइ मुहे पक्खिवेज्ज । एसा दसणाइया कप्पिया । एत्थ पडिसेवओ साहू, कप्पिया कप्पियाइ पडिसेवणा, पडिसेवियव्व च चयछक्काइणि अट्ठारसट्ठाणाणि । तत्थ य—

३—28 **वयछक्क-कायछक्क॰** गाहा । व्याख्या —व्रतषट्क प्राणातिपातादिवषष्ठरात्रीभोजनविरतिषट्कम् । पृथिव्यादयः षड्जीवनिकायाः । षड्द्वयेन मूलगुणा उक्ताः । अथेनदृत्तिकल्पा अकल्प्यादयः षडुत्तरगुणा अभि-धीयन्ते । तत्राकल्पो द्विविधः —शिक्षकस्थापनाकल्पः, अकल्प्यस्थापनाकल्पश्च । तत्राद्यः –अनधीतपिण्डनिर्युक्त्यादि शास्त्रसाधुना आनीतमाहारादि साधुभ्यो न कल्पते । उक्तं च—

अणहीया खलु जेण, पिंडेसण १ सेज्ज २ वत्थ ३ पाएसा ४ । तेणाणिआणि जइणो कप्पंति न पिंडमाईणि ॥१॥
उउबद्धम्मि न अनला, वासावासे उ दोवि नो सेहा । दिक्खिज्जंती सेहट्ठवणा कप्पो इमो नवरं ॥ २ ॥

'दोवि त्ति'–नपुंसकाऽनपुंसकास्य द्वय वर्षासु न दीक्ष्यते । शीतोष्णायशेषमासाष्टके अनला नपुंसका न दीक्षार्हा इति । [**अकप्पो**—] शिक्षकस्थापनाकल्पोऽकल्प्यः । अन्यश्च पिण्डशय्यावस्त्रपात्रानेषणीयचतुष्टयगोच-रोऽकल्प्यः । उद्गमोत्पादनादिदोषरहितं च चतुष्कं कल्प्यम् । [**गिहिभायण**—] गृहभाजन गृहस्थसम्बन्धि कांस्यकरोटकतलिकामृन्मयकुण्डिकादिकमकल्प्यम् । **पलियंक त्ति**—आसन्दकशय्यामञ्चकादिके उपवेशनशय-नीयरूपे सुषिरदोषान्न कल्पते उपवेष्टुं स्वप्तुं वा । **निसेज्ज त्ति**—भिक्षार्थं गृहे प्रविष्टस्य साधोस्तत्र निषदनं कर्तुं न कल्पते उत्सर्गत, अपवादतस्तु साधुत्रयमध्ये अन्यतरस्य कल्पते जराभिभूतस्य व्याधिमतो विकृष्टक्षपकस्य च तपस्विन इति । एते च भिक्षाटन न कार्यन्त एव । परमात्मलब्धिकायपेक्षया सुने त्रयस्योपवेशन योज्यम् । [**सिणाण त्ति**—] स्नानमङ्गप्रक्षालनं देशसर्वभेदभिन्नम् । [**सोभवज्जण**—]शोभावर्जन विभूषापरित्यागः । इत्यष्टादश-स्थानगण प्रतिषेवयितव्य आलोचनागोचरः ।

३—30 **सोऊण॰** गाहा । तस्य गुरो प्रतिसेवकस्य । स शिष्यः, गूढपदावधारकः ।

सोऊण त्ति—श्रुत्वा, प्रतिसेवनां आलोचना च श्रुत्वा, क्रमविधिं च श्रुत्वा मूलोत्तरगुणविषयाम्। आगम ज्ञात्वा, पुरुषजात च आचार्यादि द्वारा। तदीय पर्याय मतवयोविषयम्, बल च शरीरसामर्थ्यम्, क्षेत्र च कर्कश साधारणादिरूप ज्ञात्वा। यस्मादागतस्तत्रैव गत। अमुमेवार्थं प्रकटयति अवधारेउमित्यादिना।

३—31 सो तउ त्ति—स तक गूढपदालोचनाकथक। **सो०** गाहा। स आलोचना दाता स्वय गन्तुम समर्थं स्वशिष्य प्रेषयति, तदभावे आगतशिष्यस्यैव कथयतीति तात्पर्यम्।

३—32 अणुमन्निय त्ति—निरूप्य विशोध्येत्यर्थं। **त ति**—गूढपदालोचितमतिचारम्। तस्स गुरो। **पच्छित्त ति**—तपोदानरूप ददाति, गूढपदैरेवा कथयति। तान्येव दर्शयति **पढमस्स येत्यादिना**—

३—33 प्रथमस्येति दर्पासेवनारूपस्य। **[दसविहमालोयण ति—]** दशविधालोचना दर्प-अकल्पादि दशपदात्मिका, ता विमृश्य, गूढपदो प्रायश्चित्त पाठयति। **नक्खत्तेमे पील त्ति**—अस्यार्थ -गे भवता पीडा विराधना, नक्षत्रे कोऽर्थ -चन्द्रादित्यग्रहनक्षत्रतारकभेदत पञ्चविधज्योतिष्कमध्ये नक्षत्रभेदश्चतुर्थस्थानी। अतस्तेन चतुर्थव्रतगोचरा पीडा सूच्यते—इत्येके व्याचक्षते। अत्रैव—नक्खत्तमेगे मूल भणति, अने हत्थ निद्दिसति, अवरे मूलुत्तरगुणविराहण ति। तत्थ चउत्थ (०त्थत b) इयरवयविराहणाइयारे हत्थ ति हत्थकम्म क्य। हत्थेण अदिन्न वा गहिय। यद्वा व्रतपञ्चकादय सप्तविंशतिसंख्या अनगारगुणा मूलोत्तरगुणरूपा नक्षत्रशब्देनात्राभिप्रेता, नक्षत्राणामप्येतत्संख्याव्यवहारात्। तथा च अनगारगुणानाश्रित्य पठ्यते—'सत्तावीसाए अनगारगुणेहिं ति'। तत्र—

वयछक्कमिंदियाण च निग्गहो भावकरणसच्च च। खमया विरागया वि य मणमाईण निरोहो य॥

कायाण छक्कजोगम्मि जुत्तया वेयणाहियासणया। तह मारणतियाहियासणा एए अणगारगुणा॥

इह व्रतपञ्च मूलगुणा। कायपञ्च चेति द्वादश शेषा (?)। तत्र मूलगुणे चतुर्थव्रतविषये पढमे छक्के चउत्थ भवेट्ठाणमिति गाथापाठो द्रष्टव्य। उत्तरगुणविराधनामाश्रित्य **सुक्के मासे तव कुणह त्ति** भणित, चउमास छमास च तव कुणह सुक्क इत्यप्यव्रतो भणितम्। परं शुक्रमासादिदानपक्षे उत्तरगुणानाश्रित्य द्रष्टव्यम्। कृष्णमासादि दानपक्षे मूलगुणविराधनामाश्रित्येति। नवरं उग्घाओ सुक्कमासो सड्ढसत्तावीस दिवसनिप्फन्नो। अणुग्घाओ पडिपुन्नो तीसअहोरत्तनिप्फन्नो॥

४—2 एव ता उग्घाए[इ]त्यादि—तत्र उद्घातो भागपातस्तेन निर्वृत्त उद्घातिम लघ्वित्यर्थ। एतन्निषेधा दनुद्घातिम गुर्वित्यथ। तत्र प्रथम पञ्चक, दशक, पञ्चदशक, विंशतिम, पञ्चविंशतिम, इत्येतत्सर्वं भिन्नमासशब्द वाच्य ज्ञेयम्। मासलघु, मासगुरु, चउलघु, चउगुरु, छलहु, छगुरु। अन्यच्च द्विमासगुरु, त्रिमासगुरु, चउमासगुरु, पञ्चमासगुरु, छमासगुरु—एते सम्पूर्णं निजनिजपरिमाणा कृष्णमासशब्दवाच्या, अनुद्घाताश्चोच्यन्ते। तत्र लघुगुरुदानेऽय क्रम —

अद्धेण च्छिन्नसेस पुव्वद्धेण तु सजुय काउ। देज्जाहि लहुयदाण, गुरुदाण तत्तिय चेव॥

यथा-मासस्यार्द्धच्छिन्नस्य शेषदिन १५। एतन् मासापेक्षया पूर्वस्य पञ्चविंशतिकस्यार्द्धे सार्धद्वादशकेन संयुत कृत मासार्द्धं सार्धसप्तविंशतिभवति। इत्येव दिनसंख्यानिष्पन्न शुक्रमास, उत्तरगुणविराधनामाश्रित्य वाच्य। शुक्लचतु र्मास प्राचीनप्रक्रियया कृत। एतावान् ११० भवति। शुक्रषण्मासिक तप १६५।

अणुग्घाए ताणि त्ति—तानि मासिकादीनि षण्मासान्तानि तपासि अणुग्घाए त्ति सम्पूर्णानि कृष्णशब्द-वाच्यादीनि द्रष्टव्यानि। तत्र गुरुमासिक गुरुद्विमासत्रिमासचातुर्मासिक पञ्चमासिक षण्मासिकम्।

गु० मा० ३०	गु० द्विमा० ६०	गु० त्रि० ००	गु० चा० ०००	गु० प० ००००	गु० ष० ०००००
ल० मा० २७॥	ल० ,, ४५	ल० ,, ७५	ल० ,, १०५	ल० ,, १३५	ल० ,, १६५

अन्यच्चोच्यते किंचित्–अट्ठमाइणा तवेण ज वुज्झइ त तवगुरुय, निव्वीयाइणा छट्ठतेण वुज्झमाण तवलहुग, कालओ ज गिम्हे वुज्झइ त काललहुय। अन्यच्च—

ज तु निरंतरदाण जस्स व तस्स व तवस्स त गुरुय। ज पुण सतरदाण गरुय पि हु त लहु होइ॥

तवकाले आसन्न व गुरु वि होइ लहू लहू गुरुओ। कालो गिम्हो गुरु अट्ठाइतवो लहू सेसो॥

इह तीर्थे उत्कृष्टतोऽपि षण्मासान्तमेवातिचारशुद्ध्यर्थं तपो भवति । अत उक्तं—मास चउमास छमासियाणि । इत ऊर्ध्वं च षण्मासिकेनाप्यशुद्धौ छेदमूलानवस्थाप्यपाराञ्चिकानि तत्तत्कालापेक्षया सूरिभिर्दीयन्ते । अतश्चूर्णिकृदाज्ञाव्यवहारे कृते गूढपदैरेव तानि वक्तुकाम इदमाह—**छेअ अओ वोछ ति । अओ त्ति**—षण्मासीए तपस ऊर्ध्वं छेदादिप्रायश्चित्त गूढपदैराज्ञाव्यवहारत्वाद्वक्ष्ये । अन्यत्राप्युक्तम्—

'उस्सग्गेण वि सुज्झइ अइयारो कोइ, कोइ उ तवेण । तेण उ असुज्झमाणे छेयविसेसा विसोहिंति त्ति' ॥ तत्र—

४—3 छिंद तु तय भाणं ति० गाहा । अस्यायमर्थः—तय तु तक्त, भाण ति पूर्वव्रतपर्यायरूप भाजनम्, छिन्दन्तु अपनयन्तु उत्सारयन्तु । पर्यायच्छेद तु अतिचारानाश्रित्य 'छब्भागगुलपणए' इत्यादिना वक्ष्यति । पूर्वपर्यायच्छेदेनाशुद्ध्यमाने साधवो मतस्य पर्यायस्य मूल व्रजन्तु । अष्टमप्रायश्चित्तभाजो भवन्तु । तस्याप्ययोग्यतायां 'अव्वावडावगच्छे'—व्रजेयुरव्यापृता, अव्यापारा संतिष्ठन्तु, अनवस्थाप्यार्हा भवन्तु । तेनाप्यशुद्धौ तदयोग्यतायां 'अव्विइया वावि' विहरन्तु । अद्वितीया एकाकिन सन्तो वक्ष्यमाणपाराञ्चिकप्रायश्चित्तासेविनो भवन्तु । प्रागुपात्त छेद दर्शयति—

४—4 छब्भागगुलेत्यादिना । छेदो हि पञ्चकदशकादिरूपतया तत्तदतिचारापेक्षया तपोभूमिमपकान्तस्य यावत्पर्यायधरण तावद्भवति । यदाह—

'उक्कोस तवभूमिं समईओ सावसेस चरणो य । छेय पणगाईय पावइ जा धरइ परियाओ ॥'

गाथाद्वयस्यार्थः कथ्यते-**छब्भागगुलपणगेत्ति**—सो आलोयणायरिओ, तस्स सीसस्स एयाए समागूढ छेयपायच्छित्त देइ । त जहा–मास दुमास तिमास चउम्मास पचमास छम्मासाण पत्तेय पत्तेय अगुलववएसं करेइ । तहा कए य जस्स मासमेत्तो परियाओ तस्स, पचगे त्ति पचसु दिवसेसु छिंदियव्वेसु, अगुल त्ति मासस्स छब्भागो छिंदियव्वो त्ति भणिय होइ । **दसभाए ति भाग त्ति**—तस्सेव य अगुलसनियस्स मासस्स दससु दिणेसु छिंदियव्वेसु अगुलस्स तिभागो छिंदियव्वो त्ति भणइ । मासपज्जायस्स दसदिवसा छिंदियव्व त्ति भणिय होइ । **अद्ध पन्नरसे त्ति**—तस्सेवागुलसनियस्स मासस्स पन्नरसे त्ति पन्नरससु दिवसेसु छिंदियव्वेसु अद्धमगुलस्स छिंदियव्व ति निद्दिसइ । पन्नरस दिवसाणि छिंदियव्वाणि त्ति सब्भावो । **वीसाए तिभागूण ति**—तस्सेव मासस्स वीसाए दिवसाण छिंदियव्वाए तमेवगुल ति भागूण ति तइयभागेण ऊण छिंदियव्व ति भण्णइ । मासस्स दोन्नि भागा अवरा य त्ति भणिय होइ । **छब्भागूण तु पणवीसे त्ति**—तस्सेव मासस्स पचवीसाए दिवसाण छिंदियव्वाए छब्भागूण ति तमेवागुल छब्भागेण ऊण छिंदियव्व ति भणइ । मासस्स पचवीस दिवसा छिंदियव्व ति । मासे छिंदियव्वे अगुल छिंदियव्व ति भणइ ॥ १ ॥ विहिं मासेहि छिंदियव्वेहि अगुलदुग छिंदियव्व ति भणइ ॥ २ ॥ ति मासे छिंदियव्वे अगुलतिग छिंदियव्व ति भणइ ॥३॥ चउमासे छिंदियव्वे चउरो अगुलाइ छिंदियव्वाइ भणइ ॥ ४ ॥ पचहिं मासेहिं छिंदियव्वेहिं अगुलपचग छिंदियव्व ति सन्दिसइ ॥ ५ ॥ छम्मासपरियाए छिन्दियव्वे छअगुलाइ ववइसइ ॥ ६ ॥

४—5 एए छेयविभाग त्ति—एए त्ति पुव्वनिद्दिट्ठा, छेय त्ति छेय सत्तमपायच्छित्त तस्स विभागा विसेसा नायव्वा—जाणियव्वा । **अहक्कमेण तु** त्ति जे जहा निद्दिट्ठा ।

आज्ञाव्यवहारे दर्पिकीमासेवामभिधायाधुना कल्पिकीमाह—

४—6 विइअस्स कज्जस्सेत्यादिना । द्वितीयस्य कल्पासेवनारूपस्य ज्ञानदर्शनादिचतुर्विंशतिपदरूपस्य तन्नोचरामासेवना श्रुत्वा शिष्येण कथ्यमाना सूरिर्ब्रूते—**आउत्तनमोक्कार त्ति** । आयुक्ता सयमोद्यमविधायिन पञ्चपरमेष्ठिस्मरणपरा भवतु सूरयोऽप्रायश्चित्तिन इति भाव । नवरं—कारणपडिसेवा वि हु सावज्जा निच्छये अकरणिज्जा, किं सर्वथा नेत्याह—बहुसो वियाइत्ता । कर्तव्यमिति शेष । अधारणिज्जेसु—अत्यागाढकारणेष्वित्यर्थ । ''जइ वि य समणुन्नाया—सावद्यप्रतिषेवेति प्रक्रम —तहवि य दोसो न वज्जणे दिट्ठो । दढधम्मया हु एव नाभिक्खनिसेव निद्दयया ॥''

४—8 एव सो इत्यादि । द्रव्यादिक ज्ञात्वा परिभाव्य चेति शेष । परिपृच्छ्य स्वकीयगण स्वयमात्मगमन विधत्ते, शोधिदाता सूरि गीतार्थशिष्य वा प्रेषयति । **अनिज्जमाणे च त्ति** निजगमन स्वशिष्याभावे । **तस्सेव त्ति** आलोचनातिचारकथकप्रेषितशिष्यस्यैव हस्ते गूढपदैरक्षतै(रे?)र्लिखित्वा वा विशोधि प्रेषयति ।

४—10 धारणाव्यवहारस्तु—

सोऊण त्ति—श्रुत्वा, प्रतिसेवना आलोचना च श्रुत्वा, क्रमविधिं च श्रुत्वा मूलोत्तरगुणविषयाम्। आगमं ज्ञात्वा, पुरुषजात च आचार्यादि ज्ञात्वा। तदीय पर्याय व्रतवयोविषयम्, बल च शरीरसामर्थ्यम्, क्षेत्र च कर्कश साधारणादिरूप ज्ञात्वा। यस्मादागतस्तत्रैव गत । अमुमेवार्थं प्रकटयति अववारेऊमित्यादिना।

३—31. **सो तउ त्ति**—स तक गूढपदालोचनाकथक । **सो०** गाहा। स आलोचना दाता स्वयं गन्तुम समर्थं स्वशिष्य प्रेषयति, तदभावे आगतशिष्यस्यैव कथयतीति तात्पर्यम्।

३—32 **अणुमज्जिय त्ति**—निरूप्य विशोध्येत्यर्थं । **त ति**—गूढपदालोचितमतिचारम्। तस्स गुरो। **पच्छित्तं ति**—तपोदानरूप ददाति, गूढपदैरेषा कथयति। तान्येव दर्शयति **पढमस्स येत्यादिना**—

३—33 प्रथमस्येति दर्पासेवनारूपस्य। **[दसविहमालोयण त्ति—]** दशविधालोचना दर्प–अकल्पादि दशपदात्मिका, ता विमृश्य, गूढपदो प्रायश्चित्त पाठयति। **नक्खत्तेमे पील त्ति**—अस्यार्थ -भे भवता पीडा विराधना, नक्षत्रे कोऽर्थ –चन्द्रादित्यग्रहनक्षत्रतारकभेदत पञ्चविधज्योतिश्चक्रमध्ये नक्षत्रभेदश्चतुर्थस्थानी। अतस्तेन चतुर्थव्रतगोचरा पीडा सूच्यते—इत्येके व्याचक्षते। अत्रैव—नक्खत्तमेगे मूल भणति, अने हत्थ निद्दिसति, अवरे मूलुत्तरगुणविराहण त्ति। तत्थ चउत्थ (०त्थत b) इयव्वयविराहणाइयारे हत्थ ति हत्थकम्म कय। हत्थेण अदिन वा गहिय। यद्वा व्रतपञ्चादय सप्तविंशतिसख्या अनगारगुणा मूलोत्तरगुणरूपा नक्षत्रशब्देनाभिप्रेता, नक्षत्राणामप्येतत्सख्याव्यवहारात्। तथा च अनगारगुणानाश्रित्य पठ्यते—'सत्तावीसाए अनगारगुणेहिं ति'। तत्र—

वयछक्कमिंदियाण च निग्गहो भावकरणसच्च च। खमया विरागया वि य मणसाईण निरोहो य॥
कायाण छक्कजोगम्मि जुत्तया वेयणाहियासणया। तह मारणतियाहियासणा एए अणगारगुणा॥

इह व्रतपञ्च मूलगुणा । कायपञ्च चेति द्वादश शेषा (?)। तत्र मूलगुणे चतुर्थव्रतविषये पढमे छक्के चउत्थ भवेट्ठाणमिति गाथापाठो द्रष्टव्य । उत्तरगुणविराधनामाश्रित्य **सुक्के मासे तव कुणह त्ति** भणित, चउमास छमास च तत्र कुणह सुक्क इत्यप्यतो भणितम्। परं शुक्लमासादिदानपक्षे उत्तरगुणानाश्रित्य द्रष्टव्यम्। कृष्णमासादि दानपक्षे मूलगुणविराधनामाश्रित्येति। नवर उग्घाओ सुक्कमासो सड्ढसत्तावीस दिवसनिष्पन्नो। अणुग्घाओ पडिपुन्नो तीसअहोरत्तनिष्पन्नो॥

४—2 **पच ता उग्घाए[इ]**त्यादि—तत्र उद्घातो भागपातस्तेन निर्वृत्त उद्घातिम लघ्वित्यर्थं । एतन्निषेधादनुद्घातिम गुर्वित्यर्थं । तत्र प्रथम पञ्चक, दशक, पञ्चदशक, विंशतिम, पञ्चविंशतिम, इत्येतत्सर्वं भिन्नमासशब्द वाच्य ज्ञेयम्। मासलघु, मासगुरु, चउल्घु, चउगुरु, छल्हु, छगुरु। अन्यच्च द्विमासगुरु, त्रिमासगुरु, चतुर्मासगुरु, पञ्चमासगुरु, छमासगुरु—एते सम्पूर्ण निजनिजपरिमाणा कृष्णमासशब्दवाच्या, अनुद्घाताश्चोच्यन्ते। तत्र लघुगुरुदानेऽय क्रम —

अद्धेण छिन्नसेस पुव्वद्धेण तु सजुय काउ। देज्जाहि लहुयदाण, गुरुदाणं तत्तिय चेव॥

यथा–मासस्यार्द्धच्छिन्नस्य शेषदिन १५। एतत् मासापेक्षया पूर्वस्य पञ्चविंशतिकस्यार्द्धे सार्धद्वादशकेन सयुत कृत मासार्द्धं साधसप्तविंशतिर्भवति। इत्येव दिनसख्यानिष्पन्न शुक्लमास, उत्तरगुणविराधनामाश्रित्य वाच्य । शुक्लचतु र्मास प्राचीनप्रक्रियया कृत । एतावान् ११० भवति। शुक्लपण्मासिक तप १६५।

अणुग्घाए ताणि त्ति—तानि मासिकादीनि पण्मासान्तानि तपासि अणुग्घाए त्ति सम्पूर्णानि कृष्णशब्द वाच्यादीनि द्रष्टव्यानि। तत्र गुरुमासिक गुरुद्विमासत्रिमासचातुर्मासिक पञ्चमासिक पण्मासिकम्।

गु० मा० ३०	गु० द्विमा० ६०	गु० त्रि० ००	गु० चा० ०००	गु० प० ००००	गु० प० ०००००
ल० मा० २७॥	ल० ,, ४५	ल० ,, ७५	ल० ,, १०५	ल० ,, १३५	ल० ,, १६५

अन्यच्चोच्यते किंचित्–अट्ठमाइणा तवेण ज वुज्झइ त तवगुरुय, निव्वीयाइणा छट्ठतेण वुज्झमाण तवलहुग, कालओ ज गिम्हे वुज्झइ त काललहुय। अन्यच्च—

ज गु निरंतरदाण जस्स व तस्स व ताइस त गुरुय। ज पुण सतरदाण गरुय पि हु त लहु होइ॥
तवकाले आसन्न य गुरू वि होइ लहू लहू गुरुओ। कालो गिम्हो गुरु अट्ठाइतवो लहू सेसो॥

इह वीर्यं कश्चनोऽपि पञ्चानां निरतिचारतुल्यं तपो भवति । तत यथा—मास चउमास छमासियानि । इत ऊर्ध्वं च दशाविधेनाप्यशुद्धौ छेदाद्यानवस्थाप्यपाराञ्चितानि तदाचारापेक्षया सूरिभिर्दीयन्ते । अतएवाति- इत्यादिव्यवहारे इष्टे गूढपदेन तानि मलपुलाक इत्यादि—छेअ अओ परेण त्ति । अओ त्ति—पञ्चासीए तपस ऊर्ध्वं छेदादिप्रायश्चित्त गुरवः सागारिकवदाराधयन्ते । तदुक्तम्—

'तवगेण वि सुज्झइ जइत्ता होइ, होइ य तवेण । जेण उ अणुग्गहतो छेयविसेसा विसोहिति त्ति' ॥ तत्र—

४—3 छिंद तु तयं भाणं ति० गाहा । अस्यायमर्थः—त । तु तकत्, भाग ति पूर्वमतपर्यायस्य भाजनं, छिन्द्यु अपापद्यु तत्तारदन्तु । पञ्चकच्छेद तु अनिवासाभिन 'छम्मागगुरुपणए' इत्यादिना वक्ष्यति । पूर्वपर्यायच्छेदेनाधुनाति पापको मत्स्य पदानस्य मूलं मजन्तु । शठमप्रायश्चित्तभाजो भवन्तु । तस्याप्ययोग्यतायां 'अणवट्टप्पो'—मजेगुरवस्तारता, अन्यापारा सीदन्तु, धन्यवस्थाप्याहां भवन्तु । तेनाप्यशुद्धौ तदयोग्यतायां 'पारंचिए यावि' निरन्तु । अद्वितीया एतानि पञ्चो गदयमानापाराञ्चिकप्रायश्चित्ताईवित्तौ भवन्तु । प्रागुपात्त छेद दर्शयति—

४—4 छम्भागगुलेत्यादिना । छेदो हि पञ्चकदशकादिक्रमतया तत्तदतिचारापेक्षया तपोभूमिपक्षात्तस्य यावत्पर्यायधरण तावद्भवति । यदाह—

'छत्तेसं तवभूमि समइओ सावसेस चरणे य । छेयं पणगाईयं पावइ जा धरइ परियाओ ॥'

गाथाद्वयसार्थ कथ्यते-छम्भागगुलपणगेत्ति—जो आलोयणायरिओ, तस्स सीसस्स एयाए सभा- गुरु छेयपायच्छित्त देइ । त जहा-मास दुमास तिमास चउम्मास पचमास छम्मासाण पत्तेय पत्तेय अगुलव्ववएसं करेइ । तहा कए य जस्स मासगेत्तो परियाओ तस्स, पणगे त्ति पचसु दिवसेसु छिंदियव्वेसु, अगुल त्ति मासस्स छब्भागो छिंदियव्वो त्ति भणिय होइ । छम्भाए त्ति भाग त्ति—तस्सेव य अंगुलसमियस्स मासस्स दससु दिणेसु छिंदियव्वेसु अगुलस्स तिभागो छिंदियव्वो त्ति भणइ । मासपज्जायस्स दसदिवसा छिंदियव्व त्ति भणिय होइ । अद्ध पन्नरसे त्ति—तस्सेवागुलगमियस्स मासस्स पनरसे त्ति पनरससु दिवसेसु छिंदियव्वेसु अद्धमगुलस्स छिंदियव्व ति निद्दिसइ । पन्नरस दिवसाणि छिंदियव्वाणि त्ति सब्भावो । वीसाए तिभागूण त्ति—तस्सेव मासस्स वीसाए दिवसाण छिंदियव्वाए तमेवगुल ति भागूण ति तइयभागेण ऊण छिंदियव्व ति भण्णइ । मासस्स दोन्नि भागा अवरा य त्ति भणिय होइ । छम्भागूण तु पणवीसे त्ति—तस्सेव मासस्स पचवीसाए दिवसाण छिंदियव्वाए छम्भागूण ति तमेवांगुल छब्भागेण ऊण छिंदियव्व ति भणइ । मासस्स पणवीस दिवसा छिंदियव्व ति । मासे छिंदियव्वे अगुल छिंदियव्व ति भणइ ॥ १ ॥ विहिं मासेहिं छिंदियव्वेहिं अगुलदुग छिंदियव्व ति भणइ ॥ २ ॥ ति मासे छिंदियव्वे अगुलतिग छिंदियव्व ति भणइ ॥३॥ चउमासे छिंदियव्वे चउरो अगुलाइ छिंदियव्वाइ भणइ ॥ ४ ॥ पचहिं मासेहिं छिंदियव्वेहिं अगुलपचग छिंदियव्व ति सन्दिसइ ॥ ५ ॥ छम्मासपरियाए छिंदियव्वे छअगुलाइ ववइसइ ॥ ६ ॥

४—5 एए छेयविभाग त्ति—एए त्ति पुव्वनिद्दिट्ठा, छेय त्ति छेय सत्तमपायच्छित्त तस्स विभागा विसेसा नायव्वा—जाणियव्वा । अहक्कमेण तु त्ति जे जहा निद्दिट्ठा ।

आज्ञाव्यवहारे दर्पिकीमासेवाममिधायाधुना कल्पिकीमाह—

४—6 बिइअस्स कज्जस्सेत्यादिना । द्वितीयस्य कल्पासेवनारूपस्य ज्ञानदर्शनादिचतुर्विंशतिपदरूपस्य तद्गो- चरामासेवना श्रुत्वा शिष्येण कथ्यमानां सूरिर्ब्रूते—आउत्तनमोक्कार त्ति । आयुक्ता सयमोद्यमविधायिन पञ्चपर मेष्ठिस्मरणपरा भवतु सूरयोऽप्रायश्चित्तिन इति भाव । नवरं—कारणपडिसेवा वि हु सावज्जा निच्छये अकरणिज्जा, किं सर्वथा नेत्याह—बहुसो वियारइत्ता । कर्तव्यमिति शेष । अधारणिज्जेसु—अत्यागाढकारणेष्वित्यर्थ । "जइ वि य समणुन्नाया—सावद्यप्रतिषेधेति प्रक्रम —तहवि य दोसो न वज्जणे दिट्ठो । दढधम्मया हु एव नाभिक्खनिसेव निद्दयया ॥"

४—8 एव सो इत्यादि । द्रव्यादिक ज्ञात्वा परिभाव्य चेति शेष । परिपृच्छ्य स्वकीयगण स्वयमात्मगमन विघत्ते, शोधिदाता सूरि गीतार्थशिष्य वा प्रेषयति । अनिज्जमाणे य त्ति निजगमन स्वशिष्याभावे । तस्सेव त्ति आलोचनातिचारव्यक्तप्रेषितशिष्यस्यैव हस्ते गूढपदैरक्षर(रै?)र्लिखित्वा वा विशोधिं प्रेषयति ।

४—10 धारणाव्यवहारस्तु—

सोऊण त्ति—श्रुत्वा, प्रतिसेवनां आलोचनां च श्रुत्वा, क्रमविधिं च श्रुत्वा मूलोत्तरगुणविषयाम्। आगम ज्ञात्वा, पुरुषजातं च आचार्यादि ज्ञात्वा। तदीय पर्याय व्रतवयोविषयम्, बलं च शरीरसामर्थ्यम्, क्षेत्रं च कर्कश साधारणादिरूपं ज्ञात्वा। यस्मादागतस्तत्रैव गतं। अमुमेवार्थं प्रकटयति अवधारेउमित्यादिना।

३—31. **सो तउ त्ति**—स तक गूढपदालोचनाकथकः। **सो०** गाहा। स आलोचना दाता स्वयं गन्तुम समर्थं स्वशिष्यं प्रेषयति, तदभावे आगतशिष्यस्यैव कथयतीति तात्पर्यम्।

३—32 **अणुमन्निय त्ति**—निरूप्य विशोध्येत्यर्थः। **त ति**—गूढपदालोचितमतिचारम्। तस्य गुरो **पच्छित्त ति**—तपोदानरूपं ददाति, गूढपदैरेषां कथयति। तान्येव दर्शयति **पढमस्स** **येत्यादिना**—

३—33 प्रथमस्येति दर्पासेवनारूपस्य। [**दसविहमालोयण ति**—] दशविधालोचना दर्प–अकल्पादि दशपदात्मिका, ता विमृश्य, गूढपदौ प्रायश्चित्तं पाठयति। **नक्खत्तेमे पील त्ति**—अस्यार्थः –मे भवता पीड विराधना, नक्षत्रे कोऽर्थः –चन्द्रादित्यग्रहनक्षत्रतारकभेदतः पञ्चविधज्योतिश्चक्रमध्ये नक्षत्रभेदश्चतुर्थस्थानी। अतस्तेन चतुर्थव्रतगोचरा पीडा सूच्यते—इत्येके व्याचक्षते। अत्रैव—नक्खत्तमेगे मूलं भणंति, अन्ने हत्थं निद्दिसंति, अव मूलुत्तरगुणविराहण ति। तत्थ चउत्थ (०त्थत b) इयअयविराहणाइयारे हत्थ ति हत्थकम्म कयं। हत्थेण अदिन वा गहियं। यद्वा व्रतपञ्चादयः सप्तविंशतिसंख्या अनगारगुणा मूलोत्तरगुणरूपा नक्षत्रशब्देनात्राभिप्रेता नक्षत्राणामप्येतत्संख्याव्यवहारात्। तथा च अनगारगुणानाश्रित्य पठ्यते—'सत्तावीसाए अनगारगुणेहिं ति'। तत्र—

वयछक्कमिंदियाण च निग्गहो भावकरणसच्च च। खमया विरागया वि य मणमाईण निरोहो य॥

कायाण छक्कजोगम्मि जुत्तया वेयणाहियासणया। तह मारणंतियाहियासणा एए अणगारगुणा॥

इह व्रतपञ्च मूलगुणा। कायपञ्च चेति द्वादश शेषा (?)। ता मूलगुणे चतुर्थव्रतविषये पडमे छक्के चउत्थ भवेट्ठाणमिति गाथापाठो द्रष्टव्यः। उत्तरगुणविराधनामाश्रित्य **सुक्के मासे तव कुणह त्ति** भणितं, चउमास छमास च तत्र कुणह सुक्क इत्यप्यग्रतो भणितम्। परं शुक्लमासादिदानपक्षे उत्तरगुणानाश्रित्य द्रष्टव्यम्। कृष्णमासादि दानपक्षे मूलगुणविराधनामाश्रित्येति। नवरं उग्घाओ शुक्लमासो सड्ढसत्तावीस दिवसनिप्पन्नो। अणुग्घाओ पडिपुन्न तीसअहोरत्तनिप्पन्नो॥

४—2 **एवं ता उग्घाए[इ]**त्यादि—तत्र उद्घातो भागपातस्तेन निर्वृत्तं उद्घातिमं लघ्वित्यर्थः। एतन्निषेधा दनुद्घातिमं गुर्वित्यर्थः। तत्र प्रथमं पञ्चकं, दशकं, पञ्चदशकं, विंशतिमं, पञ्चविंशतिमं, इत्येतत्सर्वं भिन्नमासशब्द वाच्यं ज्ञेयम्। मासलघु, मासगुरु, चउलघु, चउगुरु, छलहु, छगुरु। अन्यच्च द्विमासगुरु, त्रिमासगुरु, चउमासगुरु पञ्चमासगुरु, छमासगुरु—एते सम्पूर्णं निजनिजपरिमाणा कृष्णमासशब्दवाच्या, अनुद्घाताश्चोच्यन्ते। तत्र लघुगुरुदानेऽयं क्रमः—

अद्धेण छिन्नसेसं पुव्वद्धेण तु संजुयं काउं। देज्जाहि लहुयदाणं, गुरुदाणं तत्तियं चेव॥

यथा–मासस्यार्द्धच्छिन्नस्य शेषदिन १५। एतत् मासापेक्षया पूर्वस्य पञ्चविंशतिकस्यार्द्धे सार्धद्वादशकेन संयुतं कृतं मासार्द्धे सार्धसप्तविंशतिर्भवति। इत्येव दिनसंख्यानिष्पन्नं शुक्लमासं, उत्तरगुणविराधनामाश्रित्य वाच्यं। शुक्लचतु मास प्राचीनप्रक्रियया कृतं। एतावान् ११० भवति। शुक्लषण्मासिकं तत्र १६५।

अणुघाए ताणि त्ति—तानि मासिकादीनि षण्मासान्तानि तपांसि अणुग्घाए त्ति सम्पूर्णानि कृष्णशब्द वाच्यादीनि द्रष्टव्यानि। तत्र गुरुमासिकं गुरुद्विमासत्रिमासचातुर्मासिकं पञ्चमासिकं षण्मासिकम्।

गु० मा० ३०	गु० द्विमा० ६०	गु० त्रि० ००	गु० चा० ०००	गु० प० ००००	गु० प० ०००००
ल० मा० २७॥	ल० ,, ४५	ल० ,, ७५	ल० ,, १०५	ल० ,, १३५	ल० ,, १६५

अन्यच्चोच्यते किंचित्–अट्ठमाइणा तवेण जं वुज्झइ तं तवगुरुयं, निव्वीयाइणा छट्ठतेण वुज्झमाणं तवलहुयं कालओ जं गिम्हे वुज्झइ तं काललहुयं। अन्यच्च—

जं तु निरंतरदाणं जस्स व तस्स व तवस्स तं गुरुयं। जं पुण संतरदाणं गरुयं पि हु तं लहुं होइ॥

तवकाले आसन्न व गुरू वि होइ लहू लहू गुरूओ। कालो गिम्हो गुरु अट्ठाइतवो लहू सेसो॥

इह तीर्थे उत्कृष्टतोऽपि षण्मासान्तमेवातिचारशुद्ध्यर्थं तपो भवति । अत ऊर्ध्वं [illegible] । इत ऊर्ध्वं च षाण्मासिकेनाप्यशुद्धौ छेदमूलानवस्थाप्यपाराञ्चिकानि तत्तत्स्थानदेशना [illegible] । [illegible] श्रुताज्ञाव्यवहारे कृते गूढपदैरेव तानि वक्तुकाम इदमाह—छेअ अओ परं ति । अओ त्ति—[illegible] तपस ऊर्ध्वं छेदादिप्रायश्चित्तं गूढपदैराज्ञाव्यवहारत्वादस्य । [illegible]—

'उस्सग्गेण वि सुज्झइ अइयारो कोइ, कोइ उ तवेण । तेण वि असुज्झमाणे छेयविसेसा [illegible] ॥ [illegible]—

४—3 छिंद तु तयं भाग ति० गाहा । अस्यायमर्थः—[illegible], [illegible] भाजनम्, छिन्दन्तु अपनयन्तु उत्सारयन्तु । पर्यायच्छेदं तु [illegible] 'छम्मासा [illegible]' । पूर्वपर्यायच्छेदेनाशुद्ध्यमाने साधवो मतास्य पर्यायस्य मूलं भजन्तु । अष्टमप्रायश्चित्तभाजो भवन्तु । [illegible] 'अव्वावडा[illegible]गच्छे'—गच्छेऽप्यव्यापृता, अव्यापारा सन्तिष्ठन्तु, अनवस्थाप्यभाजो भवन्तु । [illegible] 'अव्विइया वा वि' विहरन्तु । अद्वितीया एकाकिनः सन्तो वक्ष्यमाणपाराञ्चिकतपोऽनुष्ठायिनो भवन्तु । [illegible] छेदं दर्शयति—

४—4 छब्भागगुलेत्यादिना । छेदो हि पञ्चकदशकादिरूपतया तावद्भवति यावत्तपोभूमिकाद[illegible] यावत्पर्यायधरणं तावद्भवति । यदाह—

'उक्कोस तवभूमिं समईओ सावसेस चरणो य । छेयं पणगाईयं पावइ जा धरइ परियाओ ॥'

गाथाद्वयस्यार्थं कथ्यते—छब्भागगुलपणगे त्ति—जो आलोयणापरिणओ, तस्स [illegible] गूढं छेयपायच्छित्तं देइ । तं जहा—मास दुमास तिमास चउम्मास पंचमास छम्मासाणं पणगं पणगं [illegible] करेइ । तहा कए य जस्स माससेत्तो परियाओ तस्स, पणगे त्ति पंचसु दिवसेसु छिंदियव्वेसु, [illegible] छब्भागो छिंदियव्वो त्ति भणियं होइ । दसभाए ति भाग त्ति—तस्सेव य [illegible] दससु दिवसेसु छिंदियव्वेसु अंगुलस्स तिभागो छिंदियव्वो त्ति भणइ । [illegible] दसदिवसा छिंदियव्व त्ति भणियं होइ । अद्ध पन्नरसे त्ति—तस्सेवांगुलमवियस्स मासस्स पनरसे त्ति पनरससु दिवसेसु छिंदियव्वेसु अद्धमंगुलस्स छिंदियव्वं ति निद्दिसइ । पन्नरस दिवसाणि छिंदियव्वाणि त्ति सब्भावो । वीसाए तिभागूणं ति—तस्सेव मासस्स वीसाए दिवसाण छिंदियव्वाए तमेवांगुलं तिभागूणं ति तइयभागेण ऊणं छिंदियव्वं ति भणइ । मासस्स [illegible] य त्ति भणियं होइ । छब्भागूणं तु पणवीसे त्ति—तस्सेव मासस्स पणवीसाए दिवसाणं छिंदियव्वाए छब्भागूणं ति तमेवांगुलं छब्भागेण ऊणं छिंदियव्वं ति भणइ । मासस्स पणवीसं दिवसा छिंदियव्वं ति । मासे छिंदियव्वे अंगुलं छिंदियव्वं ति भणइ ॥ १ ॥ विहि मासेहि छिंदियव्वेहि अंगुलदुगं छिंदियव्वं ति भणइ ॥ २ ॥ तिमासे छिंदियव्वे अंगुलतिगं छिंदियव्वं ति भणइ ॥३॥ चउमासे छिंदियव्वे चउरो अंगुलाइं छिंदियव्वाइं भणइ ॥ ४ ॥ पंचहिं मासेहिं छिंदियव्वेहिं अंगुलपणगं छिंदियव्वं ति सन्दिसइ ॥ ५ ॥ छम्मासपरियाए छिन्दियव्वे छअंगुलाइं [illegible] ॥ ६ ॥

४—5 एए छेयविभाग त्ति—एए त्ति पुव्वनिद्दिट्ठा, छेय त्ति छेय [illegible] तस्स विभागा विसेसा नायव्वा—जाणियव्वा । अहक्कमेण तु त्ति जे जहा निद्दिट्ठा ।

आज्ञाव्यवहारे दर्पिकीमासेवामभिधायाधुना कल्पिकीमाह—

४—6 बिइज्जस्स य कज्जस्सेत्यादिना । द्वितीयस्य कल्पाभिधानस्य ज्ञानदर्शनादिचतुर्विंशतिपदरूपस्य [illegible] आसेवना श्रुत्वा शिष्येण कथ्यमाना सूरिर्ब्रूते—आउत्तनमोक्कार त्ति । आयुक्ता [illegible] भवन्तु सूर्योऽप्रायश्चित्ता इति भावः । नवरं—कारणपडिसेवा वि हु सावज्जा निच्छये [illegible], किं सर्वथा नेत्याह—बहुसो वियारइत्ता । कर्तव्यमिति शेषः । अधारणिज्जेसु—अत्यागाढकारणेष्वित्यर्थः । "जइ वि य समणुन्नाया—[illegible] —तह वि य दोसो न वज्जणे दिट्ठो । दढधम्मया हु एवं नाभिक्खनिसेवनिद्दयया ॥"

४—8 एव सो इत्यादि । इत्यादिकं ज्ञात्वा परिभाव्य चेति शेषः । परिशुद्धये [illegible] स्वयमात्मगमन [illegible], शोधिदाता सूरिः गीतार्थशिष्यं वा प्रेषयति । अभिक्खमाणे य त्ति निर्गमन-[illegible] । तस्सेव त्ति आलोचनातिचारकथकप्रेषितशिष्यस्यैव इक्षे गूढपदैरन्यैः(२१) [illegible] वा विशोधिं प्रेषयति ।

४—10 धारणाव्यवहारस्तु—

'गीयत्थेण दिण्ण सुद्धिं अवधारिऊण तह चेव । दिंतस्स धारणा सा उद्धियए य धरणइवा जा ॥' सुगमा ।

४—13 **बहुसो पडितप्पियस्स त्ति**—अनेकश कृतकार्यस्य । **अवसेस त्ति**—किञ्चिच्छेषाकर्णितागमस्य। अयमर्थ –वैयावृत्त्यकरणादिना गच्छोपकारी यथितसाधुरथाप्यशेषच्छेदश्रुतयोग्यो न भवति ततस्तस्यानुग्रह कृत्वा यदा गुरुरुद्धृतान्येव कानिचित् प्रायश्चित्तपदानि कथयति तदा तस्य तेषा पदाना धरण धारणा अभिधीयते ।

४—15 जीतव्यवहारस्तु येष्वपराधेषु पूर्वमहर्षयो बहुना तप प्रकारेण शुद्धिं कृतवन्तस्तेष्वपराधेषु साम्प्रत द्रव्यक्षेत्रकालभावान् विचिन्त्य सहननादीना च हानिमासाद्य समुचितेन केनचित्तप प्रकारेण या गीतार्था शुद्धिं निर्दिशन्ति तत्समयपरिभाषया जीतमित्युच्यते । अथवा यत्र गच्छे सूत्रातिरिक्त कारणत प्रायश्चित्त वर्तितमन्यैश्च बहुभिरनुवर्तित तत्तत्र रूढ जीतमुच्यते ।

४—19 **वत्तणु॰** गाहा ।—

वत्तो नाम एकसि अणुवत्तो जो पुणो बिइयवारे । तइयवारं पवत्तो सुपरिग्गहिओ महाणेण ॥

बहुसो बहुस्सुएहिं जो वत्तो न य निवारिओ होइ । वत्तणुवत्तपमाण जीएण कय हवइ एय ॥

तथा च—सो जह काईएण अपडिक्कतस्स निव्विगइय तु । मुहणतफिडियपाणग असवरे ए[व]माईसु ॥

एग दिण च बज्झे घट्टणतावेण गाढगाढे य । णिव्विगईमाईय जा आयामतमोद्दवणे ॥

विगलिदणतघट्टणपरियावणगाढगाढउद्दवणे । पुरिमड्ढाइ कमेण उ नेयव्व जाव खमण तु ॥

पचिंदि घट्टतावण अणगाढगाढ तहेव उद्दवणे । एगासणमायाम खमण तह पचकल्लाण ॥

एमाईओ एसो नायव्वो होइ जीयववहारो । अणवज्जविसोहीकरो सविग्गणगारविन्नो त्ति ॥

४—25 आगमव्यवहार(रा) न श्रुतमनुवर्तयन्ति । **जे पुणोत्यादि**—

'आकारैरिङ्गितैर्गत्या चेष्टया भाषितेन च । नेत्रवक्त्रविकारैश्च गृह्यतेऽन्तर्गत मन ॥' इत्यन्यत्रापि पठ्यते । नवरम्—इङ्गित निपुणमतिगम्य प्रवृत्तिनिवृत्तिसूचकमीषद्भ्रूशिर कम्पादि । आकार स्थूलधीसवेद्य प्रस्थानादिभाव सूचको दिगवलोकनादि ।

४—26 **वत्ति त्ति**—वक्त्रम् । [**णेत्त**]—नेत्र लोचनम् । **वयण त्ति**—वचनम् । एतदीयविकारादिभि । **तिक्खुत्तो त्ति** त्रिकृत्वो वेलात्रय सवादार्थम् । पलिउचिय समाय, अपलिउचिय अमाय ।

४—28 **सुयाभावे त्ति**—श्रुतवत्सनिधानाभावे ।

४—29 **सुयववहाराणुसरिसो त्ति**—यत श्रुतोक्तप्रायश्चित्तमेवात्रापि दीयते ।

४—31 **विसेसिउ त्ति**—आज्ञाव्यवहार श्रुतोपदेशोचितप्रदानम् ।

४—32 **सव्वत्थय त्ति**—त्रिषु कालेषु, जीतस्य चिरानुवर्तन यावत्तीर्थं तावत् ।

५—4 **तवेगदेस त्ति**—द्वादशभेदस्य तपस प्रायश्चित्त तदेकदेश एव ।

५—5 **पारपरिएण**—परम्परया । **उव्वेल्लणाए-परमसमसुह॰**—सम्यक्सुखलक्षण ।

५—9 अनादान अग्रहण नूतनकर्मण ।

५—10 **अहव त्ति**—यद्वा सवरनिर्जरे एते सप्रभेदे कथ्येते—विशिष्ट लक्षणमेतयोर्गण्यत इति भाव । मिथ्यात्वाविरतिकषायप्रमादयोगाना निरोध [सवर] ।

५—11 अवरोधेन अपगमेन ।

५—13 इन्द्रियाणि पञ्च, तेषा विषया शब्दरूपरसस्पर्शगन्धाख्यास्तेषु इष्टानिष्टेषु रागद्वेषाकरणम् । विकथा स्त्रीकथाद्याश्चतस्र । निद्रा पञ्चविधा । मद्य विकटम् । प्रमादोऽज्ञानसशयादिक । योगा मन प्रभृतय ।

५—14 धावनादिक प्राग् व्याख्यातम् । स्फोटन वाहावास्फोटन पटादिभेदन वा ।

५—15 **असब्भूय त्ति**—असद्भूतोद्भावनम्—अगुष्ठपर्वमात्रादिर्जीव , नावकम्बलो देवदत्त इत्यादिक ।

५—16 **ईसामरिस त्ति**—परसम्पदामसहनमार्ष्या, अमर्ष क्रोध , एते मनोव्यापारा ।

५—20 [**उत्तरगुण**]—

पिंडस्स जा विसोही, समिईओ भावणा तवो दुविहो । पडिमा अभिग्गहा वि य, उत्तरगुणमो वियाणाहि ॥

५—20 [**परीसह**]—

खुहा पिवासा सीउण्ह, दसाचेलारइत्थिउ । चरिया निसीहिया सिज्जा, अक्कोसवहजायणा ॥

अलाभरोगतणफासा, मलसक्कार परीसहा । पन्नानाण समत्त इइ बावीस परीसहा ॥

५—21 [उवसग्ग—] उपसर्गा १६—

दिव्वा ४ माणुसगा चउ ४, वियाहिया तिरिच्छा य ४ । आयसंवेयणीया य ४ उवसग्गा चउव्विहा ॥

तत्र [पुढोवेमाया] पृथग् विमात्रा हास्येन प्रारब्धा प्रद्वेषेण निष्ठागता इति ।

५—22 कुसीलपडिसेवण त्ति—चतुर्थमतलेपनम् । विपर्यासेष्वक्षिणा ज्याదिना । [घट्टणया] घट्ट रजसवशु स्पस्य । [थंभणया] स्तम्भनता पादायतस्य । [लूसणया] क्षेपनताऽज्ञाना वातादिना । [पवडणया] प्रपतन भूमौ देहस्य ।

*चरणसोहणत्थ चेत्ति—चकारात् ज्ञानदर्शनशुद्ध्यर्थं च प्रायश्चित्त ज्ञेयम्, त्रयस्यापि मोक्षकारणत्वात् । चरणशुद्धिधारिनश्रेष्ठता ।

६—13 निगिंचमाणो विहीयइ त्ति—यद् द्रव्यमतिक्रमकल्प्य वा गृहीत तद्विगिघयन् त्यजन् विधिना तमविचारं शोधयति ।

६—20 जाव० तवो चिण्णो त्ति—ततो महाव्रतेषु नावस्थाप्यते नाधिनियते इत्यनवस्थाप्य ।

६—21 पारं तीरं तपसा अपराधस्य अश्नुते गच्छति ततो दीक्ष्यते य स पारांची, स एव पाराञ्चिकस्तस्य यदनुष्ठानम् । तच्च पाराञ्चिक लिङ्गक्षेत्रकालतपोभिर्बहिष्करणम् । लिङ्गाईहिं पारंचिओ रहित क्रियते इत्यर्थः ॥ दस पायच्छित्त पयाणि । तत्थ साहवो पुलाग-बउस-कुसील-नियंठा-सिणाय-भेया पच । एएसिं ज जस्स भवति तमियाणि भण्णइ—

आलोयण पडिक्कमणे मीसविवेगे तहा विउस्सग्गे । ततो तवे य च्छट्ठे पच्छित्तपुलाके छप्पेए ॥

बउस-पडिसेवगाण पायच्छित्ता भवंति सव्वेवि । थेराण भवे कप्पे जिणकप्पे अट्ठहा होइ ॥

आलोयणा विवेगो वा नियंठस्स उ दुवे भवे । विवेगो य सिणायस्स एमेया पडिवत्तिओ ॥

समायिक साध्वादीना च पञ्चानां यद्यस्य तत्कथ्यते—

सामाइसजयाण पच्छित्ता छेयमूलरहियट्ठ । थेराण जिणाण पुण तवमत छव्विह होइ ॥

छेओवट्ठावणिए पायच्छित्ता हवंति सव्वे वि । थेराण जिणाण पुण मूल त अट्ठहा होइ ॥

परिहारविसुद्धीए मूल ता अट्ठ हुति पच्छित्ता । थेराण जिणाण पुण छव्विहमेय वि य तवत ॥

आलोयणा विवेगो य तइय तु न विज्जइ । सुहुमम्मि सपरागे अहक्खाए तहेव य ॥

अन्यच्च—

जा सजमया जीवेसु ताव मूला य उत्तरगुणा य । इत्तिरियच्छेयसजमनियंठबउसा य पडिसेवी ॥

जा तित्थ ताव एए नेया । कृत प्रसङ्गेन । प्रकृतमुच्यते—तत्र 'करणिज्जा जे जोगा' गाथाया (गाथाङ्क ५) योगा प्रत्युपेक्षणादिका क्रियारूपा ।

६—31 आलीण—आ ईषल्लीन । बहुतरं लीन पलीन । भाष्ये तु—"आलीणा णाणाइसु पइलीणा, कोहाइया पलय जेसिं गया ते पलीणा उ" इत्युक्तम् ।

६—32 पादमुक्कुल अघयन्— रीयेत-गच्छेत् । तिरिच्छ त्ति तिर्यक्कृत्वा कीटिकाद्याकुले देशे । साहट्टु-सहत्य सकोच्य अभेतनफणादिना ।

६—34 जा य सच्चेत्यादि—पदार्थतत्त्वमङ्गीकृत्य या भाषा सत्या, परमवक्तव्या सावद्यत्वेन, असूनस्थिता पलीति कौशिकभाषावत् ॥ १ ॥ तथा सत्यामृषा न वक्तव्या । यथास्मिन्नगरे दश दारका जाता इत्यादि तन्न्यूनाधिकभावे, व्यवहारतोऽस्या सत्यमृषात्वात् ॥ २ ॥ या च मृषा, यथा-क्रोधाभिभूतो जनक पुत्रमाह-न त्व मम पुत्र । मानाध्मातोऽल्पधनोऽपि पृष्ट आह-महाधनोऽहमित्यादि ॥ ३ ॥ या च बुधैरनादिभिरनाचीर्णा असत्यामृषा आम न्त्रणि-प्रज्ञापनादिलक्षणा अविधिपूर्वक खरादिप्रकारेण । न ता भाषेत् प्रज्ञावान्-बुद्धिमान्-साधुरिति गाथार्थ ॥ ४ ॥

७—1 एव—वक्ष्यमाणन्यायेन शिष्यो भणतीति शेष ।

७—9 तेय त्ति—तान् योगान् ।

* इद पद चूर्णौ नोपलभ्यते ।

७—10 **का अविसोही**—किन्तु विशुद्धिरेव तत्र विद्यते।

७—11. **सुहुमपमाय**—यथोक्तविधिहासोऽल्पश्चो य गुरुसदिष्टो यथा आलोचयति।

७—12 **पुव्वं व त्ति**—कार्यकरणकालात्।

७—14 **गहणे त्ति**—प्राकृतत्वात् ग्रहणानीति दृश्यम्।

७—16 **सेज्ज त्ति**—वसति। **पायपुछणं**—रजोहरण उपवेशनरूप च।

७—17 **ओहिय इति**—'ओघेण जस्स गहण भोगो पुण कारणा स ओहोही'। ओघोपधि स। 'जस्स य दुग पि नियमा कारणाओ सो उवग्गहिओ॥'

७—18 **गहणं तु त्ति**—गहण कथनमित्यर्थ।

७—21. **कुलगणे त्ति**—कुल नागेन्द्रादि, गण कोटिकादि।

७—23 **वहियाणिग्गमो त्ति**—किमपेक्ष्य वहिरित्याह।—**गुरुमूलाओ** त्ति। किमर्थं यातीत्याह—**कुलेत्यादि**।

७—24 **चेइय दुविहमेयतद्दव्वेत्यादि**—चैत्य पञ्चधा—साधर्मिकचैत्य, यथा वा रक्तकसाध्वादीना प्रतिकृतिरूपम् १। मङ्गलचैत्य गृहद्वारदेशादिनिकुट्टितप्रतिमारूपम् २। शाश्वतचैत्य नन्दीश्वरादिव्यवस्थितम् ३। भक्तिचैत्य भक्त्या क्रियमाण जिनायतनम्, तच्च द्विधा-साधुनिश्रया क्रियमाण निश्राकृतम् ४। तदनिश्रया तु विधीय मानमनिश्राकृतम् ५। तस्स सामान्येन जिनायतनाद्यचैत्यस्य द्रव्य हिरण्यसुवर्णादिरूपम्, तस्य विनाशे जायमाने, तथा तद्द्रव्यविनाशने तस्य चैत्यस्य द्रव्य उपकारक दारुपरेष्टकादिवस्तु तस्य विनाशने सम्पद्यमाने द्विविधभेदे, स(?)व नलभोत्पादितभेदतो द्विप्रकारभेदे—मूलोत्तरभेदाद्वा द्विविधभेदे। तत्र मूल स्तम्भकुम्भकादि, उत्तर तु छादनादि। स्वपक्षपरपक्षजनितविनाशाद्वैविध्याद्विविधभेदे। इह चैत्यतद्द्रव्यविनाशमुपेक्षमाण साधुरनन्तसासारिको भवती त्युक्तम्। द्रम्मादिद्रव्य काष्ठादिदल चेत्यादिना द्विविधभेद यत्तद्द्रव्य चैत्यद्रव्य तस्य विनाशस्य निवारणादीनि कर्तुं निर्गतो भवतीति चूर्ण्यक्षरार्थ।

७—25 **पाडिहारिय**—याचितकम्। **अप्पणत्थं**—समर्पणाय।

७—28 **सज्झायग त्ति**—स्वजना।

८—1 **पासवण त्ति**—मूत्र भूमौ व्युत्सृष्ट वोसिरइ ति मात्रके।

८—6 असिव व्यन्तरादिकृतोपद्रवम्। **ओम त्ति** दुर्भिक्षम्। राजदुष्ट प्रत्यनीकपति। ग्लानो मन्द। उत्तमार्थ पर्यन्तक्रियाराधनविषय।

८—7 **चक्कथूभ त्ति**—ऋषभजिनपदस्थाने बाहुबलिविनिर्मित तक्षशिलानगर्यां रत्नमयधर्मचक्र तद्दर्शनाय व्रजति। स्तूपो मथुरायाम्। प्रतिमा जीवन्तस्वामिसम्बन्धिनी पुरिकायाम्। यत्र सौरिकपुरादौ अर्हतो जन्म, निष्क्र मणभुव उज्जयन्तादि द्रष्टुम्, ज्ञान तत्रैवोत्पन्नम्। निर्वाणभूमि दर्शनार्थं च प्रयाति। [वइग] व्रजिक-गोकुलम्। सङ्खडिप्रेक्षा विवाहादिप्रेक्षणम्, आदिशब्दात् शोभनाहार शोभनोपधिर्यत्र लभ्यते। रम्यदेशदर्शनार्थं च व्रजतीति गृह्यते।

८—13 **अप्पा० गाहा**। अल्पशब्दोऽभाववाची सर्वपदेषु। तेन मूलगुणविषया विराधना अल्पा न का चित्। पार्श्वस्थाऽवसन्नादिषु दाने ग्रहणे च न काचित्। सम्प्रयोग सम्पर्क। स पार्श्वस्थादिभि सह न आसीत्। **ओह त्ति**—इयमोघत सक्षेपत आलोचना।

८—14 **अन्नम्मि वेलाए त्ति**—अर्धमासाभ्यन्तरेऽपि, अन्यस्मिन् सातिचारे, मध्युद्देशवेलायां अन्यस्या वेलाया विभागतो विशेषत आलोचनीयम्।

८—16 **संविग्ग त्ति**—संविग्ना प्रियदृढधर्माण ।

८—18 श्रुतग्रहणायान्याचार्यमुपसम्पद्यमानस्य श्रुतोपसम्पत् । सुख वा दु'खं वा सम सोढव्यमिति सुखदु खो-पसम्पत् । यथा क्षेत्रे वसत मार्गे व्रजतश्च मम भवदीया निश्रेति सा तथाविधोपसम्पद् । विनयकरणार्थमुपसम्पद्यते यत्र गच्छान्तरे सा तथेति । तदुक्त भाष्यकृता—

उवसपय पचविह सुयसुहदुक्खे य खेत्तमग्गे य । विणयोवसंपया वि य पचविहा होइ नायव्वा ॥

८—20 **विभागेण**—विशेषेण ।

८—25 **तट्ठाण त्ति**—तेषां मिथ्यादुष्कृतकरणस्थानानां स्वरूपनिरूपणाय ।

८—32 **अहिक्खेवो त्ति**—किं भवान् जानाति, जात्यादुद्घट्टनादि वा । तथा च वक्ति—

हट्टो अकुलीणो त्ति य दुम्मेहो दमगमदबुद्धि त्ति । अवि अप्पलाभबु(ल)द्धी सिस्सो परिभवइ आयरिय ॥

९—1 **जाइक्कम्माईहिं ति**—अहो सन्तापिता वयमनेन रे बालिकेनेति ।

९—2 **जमलिय त्ति**—समश्रेण्या गच्छति । पुरोऽग्रत स्थितो व्रजति । गुरु प्रतीत्याभ्युत्थानकरणादिको यो विनय कायिकस्तस्य भङ्गोऽकरणम् ।

९—4 इच्छा० गाहा । उवसपया० गाहा—व्याख्या—इच्छया बलाभियोगमन्तरेण करण इच्छाकार—इच्छाक्रिया । तथा चेच्छाकारेण ममेदं कुरु । इच्छाक्रियया न बलाभियोगपूर्विकयेति भाव ॥ १ ॥ तथा मिथ्या-वितथानृतमिति पर्याय । मिथ्याकरण मिथ्याकार मिथ्याक्रियेत्यर्थ । तथा च सयमयोगवितथाचरणे विदितजिनवच-नसारा साधवस्तत्क्रियाया वैतथ्यप्रदर्शनाय मिथ्याकारं कुर्वते मिथ्याक्रियेयमिति हृदयम् ॥ २ ॥ तथाकरण तथाकार, स च सूत्रप्रश्नगोचरो यथा भवद्भिरुक्त तथेदमित्येवरूप ॥ ३ ॥ अवश्यकर्तव्यैर्योगैर्निष्पन्ना आवशि(श्य)की वसतेर्निग-च्छद्भिर्या क्रियते ॥ ४ ॥ निषेधेन निवृत्ता नैषेधिकी, वसतौ प्रविशद्भिर्या विधीयते ॥ ५ ॥ आपृच्छनमापृच्छा, सा विहारभूमिगमनादिषु प्रयोजनेषु गुरो कार्या ॥ ६ ॥ तथा प्रतिपृच्छा, सा च प्राग्नियुक्तेनापि कार्यकरणकाले कार्या, निषिद्धेन वा प्रयोजनत कर्तुकामेनेति ॥ ७ ॥ तथा छन्दना च, प्राग् गृहीतेनाशनादिना कार्या, भवन्तो गृह्णन्तु ॥ ८ ॥ तथा निमन्त्रणा, अगृहीतेनैवाशनादिना अह भवदर्थमशनाद्यानयामीत्येवभूता ॥ ९ ॥ तथा चाभिहितम्—

आपुच्छणा उ कज्जे, पुव्वनिसिद्धेन होइ पडिपुच्छा । पुव्वगहिएण छदण-निमतणा होइ अगहिएण ॥

९—5 [उवसपयाओ]—ज्ञानदर्शनचारित्रार्थमुपसम्पच्च विधेया ॥ १० ॥ इत्यादि शब्देन गृह्यते । लहु-सग-सूक्ष्मम्, तत्स्वरूप गाथाद्वयेन दर्शयति—पयलेत्यादिना । व्याख्या—**पयल त्ति**—दिवा कोइ साहू पय लतोऽन्येण साहुणा भणइ—'किं दिवा पयलायसि ?' । तेण भणिय—'न पयलामि' । एवमबलवन्तस्स मासलहुयोगो लहु मुसावाओ । एव जत्थ जत्थ मासलहु तत्थ तत्थ सुहुमो य मुसावाओ ॥ १ ॥ **ओल्ले त्ति**—ओल, वासं । कोइ साहू वासे पडमाणे अमयरपओयणे पडि(ट्ठि)ओ । अन्नेण साहुणा भणइ—'अज्जो किं वचसि ? वासते । पडि(ट्ठि)य साहुणा तओ भणइ—'वासते ह न गच्छे ।' एव भणिऊण वासंते चेव पडि(ट्ठि)ओ । तेण साहुणा भणिय—'ननु अन्निय ।' इयरो पचाह—न । कथ ? । उच्यते—ननु वासबिंदवो एए । वास पाणिय तस्स एए बिंदवो थिबुगा । वृष्टिरिह आर्द्रत्वेचद्व (?) सा नेय ॥ २ ॥ **मरय त्ति**—कोइ साहू कारणतिणि[गग]चो उवस्सयमागतूण भणइ—'निग्गह, मरुया द्विजा भुञ्जते, अम्हे वि तत्थ गच्छामो ।' ते साहू जाव सपट्ठिया—कहिं ते भुञ्जन्ति ? तेण भणइ—ननु सव्वगेहेसु—आत्मीयगृहेष्विति ॥ ३ ॥ **पच्चक्खाणे त्ति**—कोइ साहू भिक्षाटने न दृष्टा । तेण भणइ—ननु सव्वगेहेसु—आत्मीयगृहेष्विति—'एहि भुञ्जसु' । तेण भणिय—'भुजह तुब्भे, पच्चक्खाय केणइ साहुणा उदग्गभोयणमण्डलिवेलाकाले भणिओ—'एहि भुञ्जसु' । तेण भणिय—'भुजह तुब्भे, पच्चक्खाय ममेति ।' एव भणिऊण म[ड]लीए तक्खणा चेव भुजिओ । तेण साहुणा वुत्तो—'अज्जो तुम भणसि मम पच्चक्खाय ?' । सो भणइ—'कह न, ननु पाणाइवायाइया अविरइ ता मए पच्चक्खाया ।' अथवा प्रत्या-ख्यातमिति भाव ॥ ४ ॥ **गमणे त्ति**—केणइ साहुणा चेइयवदणाइपओयणे वयमाणेण अन्नो साहू भणिओ —'वयसि ?' । सो भणइ—'नाह वये, वय तुम ।' सो साहू पयाओ । इयरो वि तस्स मग्गओ तक्खणादेव पयाओ । तओ साहुणा पुच्छिओ—'कह न वयामि त्ति भणिऊण वयसि ?' सो भणइ—'सिद्धन्त न जाणसि' ।

कह ? । उच्यते—'नणु गम्मइ गम्ममाण, न अगम्ममाण । जम्मि समएऽह तुमे पुट्ठो, तम्मि समए गच्छो ॥ ५ ॥ **परियाए त्ति**—कोइ साहू केणइ साहुणा वदिउ कामेण पुच्छिओ—'कइ वरिसाणि याओ ?।' सो एव पुच्छिओ भणइ—'एयस्स साहुस्स मज्झ य दसवरिसाणि परियाओ ।' छलवा ब्रवीति । सो पुच्छतगसाहू भणइ—'मम नववरिसाणि परियाओ ।' एयस्स य वे पचगा दसओ, पादपतन कुरु ॥ ६ ॥ **समुद्देस त्ति**—कोइ साहू कारणनिग्गओ रविं परिवेसपरिवियंत दट्ठूण वे साह अरयमाणे तुरिय भणइ—'भोजनवेला वर्तते, उट्ठेह ।' साहू गहियभायणा उट्ठिया भिक्षाटनाय । पु 'कत्थ समुद्देस ?' छलवादी प्राह—नणु एस गमणमग्गम्मि । आदिच्चे गहण राहुणा क्रियमाण दर्शयति **संखडे त्ति**—कोइ साहू पडमालिय पाणगाइ विणिग्गओ पच्चायाओ भणइ—'इह अज्ज निवेसे पउरा डीओ ।' ते य साहवो भिक्षाटने गन्तुकामा इच्छति [अत्र कियान् पाठ खण्डित॰ प्रति **खुड्ग त्ति**—] 'कोइ साहू उवस्सयसमीवे मय सुणहीं दट्ठूण खुड्ग भणइ—'क्षुल्लक ! तव माता ताहे सो खुड्डओ पदण्णो । त रुयत दट्ठूण साहू भणइ—'मा रुय, जियइ त्ति' । एव भणिए खुड्डो अने भणति—'किं तुम भणासि जहा मया ?' । सो मुसावायसाहू भणइ—'एसा साणी जा मया, सा तुज भवति' । 'कह माया भवइ ?' अतीयकाले भविंसु । जओ भगवओ भणइ—एगमेगस्स ण जीवस्स स माइत्ताए भज्जपुत्तधूयत्ताए भूयपुव्वा । तेण साणी [माया] भवति ॥९॥ **परिहारिय त्ति**—कोइ साहू उ ओसनाइ दट्ठु आगतूण भणइ—'मए दिट्ठा परिहारिया' । सो छलेण कहइ, इयरे साहवो जाणति— हारतवावन्ना अणेण दिट्ठा उज्जतविहारिण ।' तदनु तद्दर्शनाय गमनादौ कृते यावद् दृष्टा पार्श्वस्था । तद नादी उत्तरयति—'नन्वेतेऽपि परिहारिका अभक्षादिपरिहरणात् । परिहरन्तीति परिहारिका इति कृत्वा' । **मुहीओ त्ति**—एगो साहू विहा(या b)रभूमिं गओ—'उज्जाणदेसे इत्थी घोडमुही दिट्ठ'त्ति साहूण कहेइ । खी इत्यर्थ । जनगमने घोटिकां कथयति ॥११॥ **अवसगमणं ति**—कोइ साहू केणइ साहुणा पुच्छिओ— गच्छसि भिक्खायरियाए ?' सो भणइ—'अवस्स गच्छामि ।' तेण साहुणा पगिहियभायणोवगरणेण भणइ वयामो' । सो पच्चाह—'अवस्सगतव्वे न ताव गच्छामि' । 'किं न जासि ?' पुच्छिओ भणइ—'वेला न ता परलोगगमणवेला मोक्खगमणवेला वा न ताव जायइ । तो न ताव गच्छामि । परं अवस्स परलोग मो गमिष्यामीत्यर्थ ॥ १२ ॥ **दिस त्ति**—एगो साहू एगेण साहुणा पुच्छिओ—'अज्जो कयरं दिस भिक्खा गमिस्ससि ?' । सो भणइ—'पुव्व ।' सो पुच्छतगसाहू अग्गाहेऊण गओ अवरदिस । इयरो वि पुव्वदिसग अवर गओ । 'अज्जो ! तुमे भणिय "अह पुव्व गमिस्सामि ।" कीस अवरदिसमागओ ?' एव पुट्ठो भणइ— अव[र]गामस्स इमा पुव्वा किं न भवइ ?। भनइ चेव ॥ १३ ॥ **एगकुले त्ति**—कुल गृह भिक्खनिमि साहुणा भनइ—'अज्जो ! एहि वयामो भिक्खाए' । सो भणइ—'अहमेगकुल गच्छ, एगकुले एव मया अ वच्चह तुब्भे' । गया साहवो । सो वि य पच्छा बहुकुलाय पविसइ । तेहिं साहूहि भणिओ—'अज्ज ! तुमे भणिय कुले पविस्सिस ।' बहुकुलपवेसे पुट्ठो भणइ—'कह एगसरीरेण दोसि कुले पविसिस्सस । एग चेव कुल पविसे **एगदव्वे त्ति**—साहुणा एगेण एगो साहू भन्नइ—'वयामो भिक्खाए ।' सो भणइ—'वच्चह तुब्भे । मया द्रव्य ग्रहीतव्य' । तओ ओयणदोव्वगाइ बहुदव्वे गिण्हतो तेसिं (हिं) साहूहि दिट्ठो भणिओ य—'अज्जो भणिय—एग दव्व घेच्छ, कह अणेगाणि गिण्हसि ?' । अत्थो—धम्मत्थिकायाईणि दव्वाणि छ तेसिं धम्म मज्झे गहणलक्खणो पुग्गलत्थिकाओ एगो चेव । अन्नेसिं गहणलक्खण नत्थि । तम्हा अह एग दव्व गि बहुग्गहणेऽपि सति समस्तान्यपि द्रव्यमेकमेव ॥ १५ ॥

९—8 **लहुसादिण्ण पुणेत्यादि**—सूक्ष्मादत्त उपलादिग्रहणविषयम् ।

९—9 **इत्तिरिय**—अल्पकाम वृक्षादिच्छायावग्रहादौ विश्रमणाय ।

९—10 लहुसमुच्छा द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदाच्चतुर्धा तां क्रमेणाह—**लहुसमुच्छा** इत्यादि । **कागा णे त्ति** शय्यातरगृहादौ काकादिपात निवारयति, बलीवर्दकल्पद्दक लघुपुत्रादि रक्षति ॥ १ ॥

९—11 **दोसे ओवास त्ति**—अवकाश प्रतिक्रमणादिस्थानप्रवेश ।

९—12 **रागदोसाइ** मारामध्येपि ॥ **एत्थ त्ति**—छावादौ । **ठाणा**—आपत्तिस्थान, **घेप्पन्ति**—प्रतिक्रमणादमध्ये ।

९—17 **असंकिलिट्ठकम्म त्ति**—पुष्पादौ शरीरक्रियायाम् । छेदन दुष्पाक्षस । पीलन रुधिरादिकर्मण । भेदन पक्षादिगडस्य । संघपण दक्षादे । अभिघातश्चेचन लगुडादिप्रहारस्योष्णनरादिना । कायगाराइ प्रसूत्रादिषु । अशुषिरं पुतादि, सुषिरं उदरादि । अणन्तरं अव्यवहितम् । परम्परं वस्त्रादिना व्यवहितमङ्गम्, इत्यादिक असंक्लिष्टकर्म । कन्दर्प -वाचिको नर्मादिभाषणम्, कायिकश्च धावनादिक ।

९—22. **सव्वपदाणि**—दसणाइणि २४ ।

९—25 **छूढे**—उक्षिप्ते । **पमादो** अशा[ना]दिकस्तेन । **असंपउत्तस्स**—असंयुक्तस्य पञ्चविधप्रमादरहितस्य । **णोवउत्तस्स**—विस्मृतिरहितस्तस्य ।

९—30 **सन्नि त्ति**—सज्ञान सज्ञा—देवगुरुधर्मपरिज्ञान, तदस्यास्ति स सज्ञी श्रावक । **सन्नायगा**—सज्ञातका स्वजना मातापित्रादिका । **भयं**—सप्तप्रकार प्रसिद्ध । **सोगो**—गनिष्टाना द्रव्याणा संयोगेन शोक । इष्टाना वियोगेन ।

९—32 **चाउसत्त**—वस्तुशत्व वदमलचारित्रत्वम् ।

वउस सबल वच्चुरमेगट्ठ तमिह जस्स चारित्त । अइयारपकभावा सो वउसो होइ नायव्वो ॥

१०—4 **सभमो**—सभ्रम सक्षोभ । **भय**—दस्युविषय । दसवश्चौरा । **मिलक्खु**—म्लेच्छा । **बोहिय त्ति**—बन्दिका । **मालवा**—उज्जयनीतस्करा । **आतुर**—पीडित । **दिगिंछा**—बुभुक्षा तृष्णादिभि ।

१०—6 **[वोच्छिन्नमडंबाइ]**—वोच्छिन्ना जस्स सव्वासु वि दिसासु नत्थि कोइ अन्नो गामो नगरं वा त, पार्श्वग्रामादिरहित मडम्ब । तथा च—मडम्ब सव्वओ च्छिन्नमिति पठ्यते ।

१०—8 **अणप्पवसओ**—हस्त्यादिपरवशस्य । **कारणेहि**—सभ्रमादिभि प्रदर्शितै । पवणाय विराधयेदिति शेष ।

१०—10 मृषावाद कूटसाक्षित्वेन । मैथुन अतिक्रमादिना । रात्रिभोजन दियागहियाइभेदत । दीर्घमार्गं व्रजता घृतमिश्रकेलकादिरूपोऽध्वानकल्प । **लेवाडइय त्ति**—क्षीरान्नादि उत्सर्गतो न ग्राह्यम् तदप्यपवेत ।

१०—15 **दुच्चिन्तिय**—दुष्कणार्यकवत् वनदवदानचिन्तनादि । दुर्भाषित अभूतोद्भावनादि । दुश्चेष्टित धावनादि ।

१०—25 **उवहि त्ति**—ओहेण जस्स गहण, भोगो पुण कारणा स ओहोही ।

जस्स दुग पि नियमा, कारणओ सो उवग्गहिओ ॥

१०—29 अशङ्कित निर्णीत दोषवदेवेदमिति, दोषवत्त्वेन । **निहिण त्ति**—अणावायमसलोए इत्यादिकया ।

१०—31 **[कालाइक्कंतिय—]** प्रथमप्रहरगृहीत तृतीयप्रहरान्त यावद् ध्रियते अशनपानादि तत्कालातिक्रान्तम् । **[अद्धाणाइक्कंतिय—]** यद्द्व्यूतद्वयात्परेणानीत नीत वा परिभुज्यते तदध्वानातिक्रान्तम् ।

१०—32 **इदियमाईहिं त्ति**—इन्द्रियमाया-इन्द्रजालादिभि । चक्षुरादि-इन्द्रियाणा विक्रिया आषाढभूतिवत् । **गिलाणेत्यादि**—ग्लानादिव्यापृतत्वेन । सागारिका वा परिष्ठाप्यस्थाने सन्ति । स्थण्डिलस्य वाऽभाव । चोरादि भय वा तन्नेत्यशनादि परिष्ठाप्यातिक्रमेऽपि विधिना परिष्ठापयन् शुद्ध । दुर्लभद्रव्यप्राप्तौ सहसाव लाभो वा जात ।

११—7 **गमण**—अपत्य हत्थसयबाहिं ।

११—9 **पट्ठवण त्ति**—अनुयोगप्रारम्भादिविषया । **पडिक्कमण** न्ति अनुयोगस्य । **परियट्टणा** गुणनम् । अपशकुनादे प्रतिघातार्थम् । अष्टोच्छ्वा

११—10 **अणवज्जसुमिण** दुःस्वप्न । दुर्निमित्त अपशकुनिगोचरम् । दुःशकुनादे प्रतिघातार्थम् । अष्टोच्छ्वा सोत्सर्गकृतिरिति युक्तम् । तत्र वक्ष्यमाणगाथोक्तादिशब्दसूचितोऽयमर्थ ।

११—12 **उज्जाणी**—परकुयउ । **णईसंतारो**—नद्युत्तरणम् ।

११—14 **संघट्ट**—१ संघट २ लेव ३ उपरिलेवैसिरपो नदीसन्तारस्तत्र जङ्घार्ध संघट्ट । १ । नाभिं यावत् लेप । २ । परेण लेवुवरि—नाभेरुपरि । ३ । बाहु उडुपसुप्पाकादिभिस्तुर्य । ४ ।

११—16. सयणासणाण जायणत्थ गओ । ते य दाया घरे अत्थि । वाउलो वा । तओ इरिय पडिक्कमित्त किंचि काल सज्झाय करेइ ।

११—20 हत्थमेत्ते वि त्ति—रेखए जाते इति शेष ।

११—28 छिज्जइ त्ति—विभज्यते । पडिक्कमण च अनुयोगस्स ज्ञेयम् ।

१२—1 आदिशब्दात् कालप्रतिक्रमणे चेति च ग्राह्यम्, कालादिविपर्ययात् । ज्ञानाचारातिचारो भ व्यञ्जनादिभेदाद्वाकृतात् ।

१२—5 हीलयत्ति—वा यो गुरुम् ।

१२—12 ओरसो त्ति—आन्तर ।

१२—15 वजयत्ति—व्यज्यते । सन्न त्ति—सज्ञाभिधानम् ।

१२—16 अन्नाभिहाणेण वा भणइ त्ति—यथा 'धम्मो मगल'मित्यादिपरित्यागेन 'पुन्न कल्लाण दयासवरनिज्जरा' इत्यादि नामान्तरेण । अर्थभेदस्तैरेव व्यञ्जनैर्यन्न विकल्प्यते, यथा आचारसूत्रे आवन्तध्यय 'आवती के आवन्ती लोगसि विप्परामसन्ती ति—अन्योऽर्थ कल्प्यते—'आवन्ति होइ देसो तत्थ उ अरहट्ट केया । सा पडिया हेट्ठे क त लोगो विप्परामसइ ।' यत्र सूत्रार्थौ द्वावपि विनश्येते स तदुभयातिचार । यथा-

घम्मो मगलमुक्कट्ठो अहिंसा पव्वयमत्थए । देवावि तस्स नस्सति जस्स धम्मे सया मसी ॥

अहागडेसु रंधति कट्ठेसु रहकारिओ । रण्णो भत्तसि णो जत्थ गद्दभो जत्थ दीसइ ॥

अत्र सूत्र अर्थश्च द्वावपि विनश्येते । उभयविनाशे चरणनाशस्तदभावे मोक्षाभावस्तदभावाद्दीक्षानैरर्थक्यम्

१२—19 अणागाढे सुए—दसवैकालिकादिके उद्देशकस्यातिचारेऽकालातिपाठे निर्वि० । आगाढे उत्त चनभगवत्यादिके श्रुते उद्देशकादिस्थानेषु पुरिमार्धादि क्षमणान्तम् । अर्थेऽप्येवम् ।

१२—22 ओहेण—आगाढाणागाढादिभेदतोऽविशेषे ।

१२—23 कमेण अहिज्जंतो त्ति—क्रमश्चाय—

ति वरिसपरियागस्स उ आयारपकप्पनाममज्झयण । चउवरिसस्स सम्म सूयगड नाम अग ति ॥ १ ॥

दसकप्पव्ववहारा सवत्सरपणगदिक्खियस्सेव । ठाण समवाओ विय अगेए अट्ठवासस्स ॥ २ ॥

दसवासस्स वियाहा एक्कारस वासयस्स इमे उ । खुड्डियविमाणमाई अज्झयणा पच नायव्वा ॥ ३ ॥

बारसवासस्स तहा अरुणुववायाइ पच अज्झयणा । तेरसवासस्स तहा उट्ठाणसुयाइया चउरो ॥ ४ ॥

एगूणवीसगस्स ओ दिट्ठीवाओ दुवालसममग । सपुन्नवीसवरिसो अणुवाई सव्वसुत्तस्स ॥ ५ ॥

ज केवलिणा भणिय केवलनाणेण तत्तओ नाउ । तस्सन्नहा विहाणे आणाभगो महापावो ॥ ६ ॥

१२—24 [अपत्तो]—तत्सूत्रमर्थं वा विवक्षितशास्त्रसत्क क्रमेणाधीयानो न प्राप्नोति, पठनविषये प्र पर्यायो वा यस्य न पूयते सोऽप्राप्त । अन्यथायोग्यो य सो अपत्तो त्ति—अपात्र । स च तिन्तिणिकादि तिंतिणिओ स्तोकोकेऽपि यत्किंचनभाषी । चलचित्त —अस्थिरचित्त । गणाद्गणान्तरं सक्रमणशीलो याऽपा अन्यथाव्यक्त —अपात्रम् । अव्यक्तता च वयसाऽतिलघु । वयश्च प्राणिना कालकृता शारीरावस्था । श्रुतेन र त्वश्रुतोऽव्यक्त । एतेषा सर्वेषामप्राप्तादीना वाचना-श्रुतपाठनम् ।

१२—26 जइ पत्त प्राप्त । सुएण श्रुतक्रमेण । पत्त वा पात्र-योग्यम् ।

१२—30 निसेज्ज त्ति—आचार्ययोग्याम् । च शब्दात् वन्दनकायोत्सर्गौ अनुयोगप्रारम्भे उत आयविलम् ।

१२—34 विगई भुजेऊण त्ति—जोगसमत्तीए तां भुक्त्वा पश्चात्कायोत्सर्गं विधत्ते । पगट्ठ ति विकृतिमाचाम्लप्रायोग्य च गृह्णाति ।

१३—5 सक्कादयोऽष्ट ८ ।

१३—11 [भद्दमो]—भजाम सेवयाम कुर्मे इत्यर्थं ।

१३—13 मडलि त्ति—तस्यां सर्वे यथष्टभोज[जि]न । मोय त्ति—योग । जह्न त्ति-सर्वे मडगस पूजा राजादिभि क्रियमाणा कुतीर्थिनाम् । अतिशयाद्वा मन्त्रादिका, मतानि वा तदागमान् श्रुत्वा ।

१३—16 मिच्छत्ताइसु—मिथ्यात्वनिरवादीनाम्। उवबूहा—उपबृंहा प्रशंसा।

१३—19 एवं दर्शनादीन् प्रकल्प्य प्रायश्चित्त चिन्तनम्—मिच्छत्ताईण ति। मिथ्यात्वगर्भितनामादिशब्दा दृष्टांतानम्।

१३—23 च शब्देन देशे स्थानमिति योग।

१३—24. ओहओ त्ति—पुरुषापेक्षया। अट्ठसु पि त्ति मिथ्यात्वविषयेषु च सर्वतोऽष्टासु देशभ्यासु भिक्षुप्रभवपाठ्यायावार्यो चतुर्णां यथासंख्य पुरिमड्ढादि यथोपदिष्टम्। तच देसे भिक्खुस्सेत्यादिना दर्शितम्। मिथ्यात्वविषयेषु च सर्वतोऽष्टासपि मूलमिति वक्ष्यति।

१३—26. प्रशस्तेपूपबृंहणादिषु मलादिविषयेषु इदमाह—एवं चिय इत्यादि। यतिविषयाणां उपबृंहादीनाम-विधाने। अणन्तपरिट्ठ ति—पुरिमाई गमणतमित्येतद्।

१३—31 तप्पसाएण त्ति—पार्श्वस्थादिप्रसादतस्तद्वशात्। पार्श्वस्थादीनां परिपालनादिकं वात्सल्यं कुर्वतो भिक्षुप्रभृतीनां यथोपदिष्टं प्रायश्चित्तम्।

१४—6. ननु पृथिव्यादीनां चतुर्णां भवतु संघट्टनं अप्काय प्रति कथं संघट्टनादि संभवति, द्रवरूपत्वेन स्पर्शेऽपि मरणं सम्भवतीत्याह—आउयाएत्यादि।

१४—7 ढसि मगाए। घटादिस्थस्य चाल्ने पादादिना सघट्ट। परितापो गाढतरचालना। उद्दवणं च वह्निना परितापनं। हननं दण्डादिना। पानीय चरणादिक्षालनादिना च उद्दवणं अप्कायस्य।

१४—9 अणागाढा अभिधेयम्। पचेन्द्रियसंघट्ट—तद्दृष्टजातमूषिकादिगोलिकादिसर्वविषयो द्रव्य।

१४—13 पमाय०—प्रमादतोऽपद्रापणे। एककल्लाणग। नि०। पु०। ए०। आ०। उ०। इत्येककल्या णकादिविषय।

१४—15 तत्र मृषावादो धर्मास्तिकायादिसर्वद्रव्यविषय। अदत्तादान ग्रहणधारणीयवस्तुविषयम्। परिग्रहस्तु सचित्ताचित्तमिश्रसर्वद्रव्यविषय। क्षेत्रतो लोकालोकविषयौ मृषावादपरिग्रहौ। अदत्तादान च ग्रामाद्याश्रयम्। कालतश्च दिवारात्रौ वा। भावतो रागतो देसतो वा। त्रितयमपि जघन्यादिवस्तुविषय मृषावादायपि जघन्याद्युच्यते।

१४—20 लेपाद्यपरिवासे पात्रतुम्बकपात्राद्य पसरण्टितपर्युषितत्वे अभत्तट्ठो। सुक्खादी च।

१४—22 पढमभंगो त्ति—दिवा गृहीतं दिवा भुक्तं परं राज्युषितं द्रव्यमित्याद्यो भङ्ग।१। दिवा गृहीतं रजन्यां भुक्तमिति द्वितीय।२। रजन्यां गृहीतं दिवा भुक्तमिति तृतीय।३। रजन्यां गृहीतं तस्यामेव भुक्तमिति चतुर्थं।४। द्वित्रिचतुर्थेष्वष्टमम्।

१४—33 ओहुद्देसिय जमप्पणोट्ठाए रद्ध तम्मज्झाओ भिक्खाओ कइ विकप्पइ, दानार्थं य एव्यनि तस्सै दत्ते १। उद्देसकडे कम्मे एक्केक्के चउव्विहो भेओ—जावंतियमुद्देस, पासंडीण भवे समुद्देस, समणाण आएस, निग्गथाण समाएसमिति चत्तारो भेदा। तत्राद्ये जाव इइ उक्कोइएयस्सइ पासंडीण दायव्व न गिहत्थाण २। निग्गथाण समाएसमिति चत्तारो भेदा। तत्राद्ये जाव इइ उक्कोइएयस्सइ पासंडीण दायव्व न गिहत्थाण २। निग्गन्थाण साहूणमेव नऽन्नेसिं ४। तत्थ सखडिभुत्तुव्वरिय निम्न्यशाक्यादिभेदत पञ्चधा श्रमणास्तेषाम् ३। निग्गन्थाण साहूणमेव नऽन्नेसिं ४। तत्थ सखडिभुत्तुव्वरिय चउन्हमुद्दिसइ ज तमुद्दिट्ठ। वजणमीसाइकड करंबादिक। तमग्गितवियाइ पुण कम्मं गुल विग्घारेऊण मोयए बधिज्जा—इति कर्मोद्देसिक।

१५—7. यावदर्थिकमिश्रपासडमिश्र[साधुमिश्र]भेदतस्त्रिधा मिश्रम्। यत्र स्वगृहयोग्यजलकणादीनां मध्ये अधिकतरजलकणादीन् मिश्रितान् कृत्वा यदशनादि प्रथमतोऽभिज्वाल्नाद्ग्रहणदानादिप्रस्ताव एव राद्धुमारभते। यावदर्थिकार्थं तत्रिधा।

१५—9 संघाडगस्स एगो भिक्खग्गाही। बीओ दिसुवओग देइ। तइए गिहे निप्फेडिया। इत्तरट्ठविय। तओ परेण सव्वेमेव चिरट्ठविय।

१५—10 सुहुमा—कप्पट्ठगस्स भत्त न देइ, भणइ साहुस्स अट्ठाए उट्ठिया तुज्झ वि दाह ति। बायरा—कप्पट्ठिए विवाह काउकामो रहमईड साहुसमागम जाणिऊण ओसक्कण करेज्जा।

१५—11 आहारसेज्जाइय साहुणो भुंजिस्संति, रंधिउ असो सव्वमेवाहारं बहिं नीणेइ साहुअट्ठाए। एय पागडकरण। रयणप्पईवजोईवायायणकुड्डछेड्डाइएहिं उज्जोयकरणं साहुअट्ठाए [एयं पगा-] सकरण।

१५—16 **आहड त्ति**—सग्गामाहडे निप्पच्चवायाए ।४। आहड चिय आइ्रमणाइ्र च, तिघरंतरमाइम।

१५—18 दर्दरक जतुमय्यादिरूप । पिहित च छगणादिना ओलित्त ।

१५—19 माल सीककप्रासादोपरितलादिकमभिप्रेतम् । तस्मादाहृत करमाग्र यदनादि दात्री ददाति तन्मा ल्यपहृतम् । नवरं त्रिधा एतज्जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदतः । जघन्योत्कृष्टयोरन्तरे मध्यमो गम्यत एवेति नोक्तम् । पाण्उ(ण्र्णु)-पाटनमानस्रोकक्रियागृहीतत्वाज्जघन्य ल्घु । मञ्चकादधो दत्वा यद्ददाति शिक्कादेस्तन्मध्यम माला पहृतम् । यदा च उच्चतरशिक्कादेर्लड्डुकादिग्रहणाय मूडकनिश्रेण्याद्युदूखल वा अधो दत्वा तस्मात् ददाति तदोत्कृष्ट भवति । अत्राप्यायामम् ।

१५—20 **अच्छेज्जं त्ति**—प्रभुगृहादिनायक , अन्येषा दरिद्रकौटुम्बिकानां बलाद्दातुमनीप्सितामपि यद्देय ददाति तत्प्रभुआच्छेद्यम् । स्वामी ग्रामादिनायक , स यदा साधून् दृष्ट्वा कलहेनेतरथा वा कौटुम्बिकेभ्योऽश नाद्युद्दाल्य ददाति तदा स्वाम्याच्छेद्यम् । स्तेनाश्चौरास्ते सार्थकेभ्यो बलादाच्छेद्य यत्पाथेयादि साधुभ्यो दद्युस्तत् स्तेनविषयाच्छेद्यम् ।

१५—21. **अणिसट्टं त्ति**—बहुभि साधारण बहुजनसाहिक यदशनादि सखड्यादौ स्वाम्यमनुज्ञात यदेको दद्यात्तत्साधारणानिसृष्टम् । चोल्लको भोजनम् । यथा किल कश्चित्कौटुम्बिको भक्ताहारकहस्तेन गृहात् क्षेत्रे हालिकाना भोजनाय चोल्लक प्रस्थापयति । तत्र कौटुम्बिकेन साधूना दानाय मुत्कलितचोल्लकमध्यात् यदि हालिक किंचि त्साधवे ददाति तदा चोल्लकानिसृष्टम् । तथा जड्डस्य हस्तिन सम्बन्धि पिण्डरूप वस्तु राज्ञा गजेन वाननुज्ञात त्वादनिसृष्ट जड्डानिसृष्टम् ।

१५—22 यावदर्थिका समस्तार्थिन । पाषण्डिनश्चरकादय । साधवश्च निर्ग्रन्था । अत्र गृहिण स्वार्थमग्नि ज्वालनायाद्ग्रहणदानान्ते आरंभे कृते सति पश्चात्स्वार्थकल्पित तन्दुलमध्ये कर्पटिकार्थं तन्दुलादीनां माणक सकल्पित प्रक्षिप्य राध्नोति यदा, तदध्यवपूरक । स च त्रिधा—स्वगृहयावदर्थिकमिश्र , स्वगृहपाषण्डमिश्र , स्वगृहसाधुमिश्र इति । इह आहाकम्म उद्देसियचरिमतिय, भत्तपाणपूइय, पासडसाहुमीस, बायरपाहुडिया दुविहा, अज्झोयर चरिमदुग एए छउग्गम दोसा अविसोही कोडी, विसोहिकोडीए अचयवेणाविच्छिक सव्वमभोज्ज विष्टादि(ति?) दुषेणेव भक्त । विसोहिकोडीए पुण सथरणे परिट्ठवेइ । अलभे अन्नस्स असथरंतो वा तम्मत्तगेव परिट्ठवेइ । जइवि य असयवा तहा विसुद्धो ।

१५—24 **धाई** पचहा-खीरधाई मज्जण-मडण कीलावण-अकधाई बाल्पालिका स्त्री धात्रीत्वकरणमिति तत्त्वम् । एव यथासभवमन्यत्रापि । दूती परस्परसन्दिष्टार्थकथिका स्त्री—दूतीत्वकरणमित्यर्थं । तत्कथयति—स्वग्रामे परग्रामे वा । स्वनिवासग्रामस्यैव सत्केऽन्यस्मिन् पाटकादौ, परग्रामे वा सदेशक नीत्वाय पिण्ड लभते स दूतीपिण्ड ।

१५—25 अतीताद्यर्थसूचक निमित्त जातिकुलगणकर्मशिल्पाना कथनादिना आजीवनम् ।

१५—26 वनीपक-व पिंडट्ठा समणा तिहि माहण किविण सुणगाइ भत्ताण अप्पाण तब्भत्त दसइ जो सो वणीवमो त्ति । उउ(?)वर्णयति पिण्डार्थमात्मान दायकाभिमतेषु श्रमणादिषु समक्ष दर्शयतीति भक्तवशाद्वनीपक । यद्वा वनीं लब्धार्थरूपां पाति पाल्यतीति वनीप , स एव वनीपक ।

१५—27 चिकित्सा रोगप्रतीकार । तत्र नाह वैद्यो, अप्पणो वा अमुगो वाही अमुगदव्वेण फिट्टोत्ति, एसा सुहुमतिगिच्छा । बायरा वाय सिंभ सन्निवाय समुत्थाण रोगाण ओसहमाइय साहइ । सयमे[व]से किरिय करेइ । माहिवियारं किरिय वा से साहेइ ॥—क्रोधादय प्रतीता ।

१५—28 **थयण-संथवो**—पुव्विं गुणथुइ काऊण पच्छा मग्गइ । **पच्छासंथवो**—नाम दिन्ने पच्छा सथव करेइ 'अमुगत्र २ मूय दृष्टा ' इत्यादि च ।

१५—29 **सम्बन्धि-संथवो**—नानक्योजनम् । मायापियाइओ पुव्वसबन्धि सथवो, सासूससुराइओ पच्छासम्बन्धि-संथवो । विज्जा ससाहणा । असाहणो मतो । इत्थी पुरिस विसेसो वा । चुण्णो अजणाइओ । पायपले माइओ जोगो । गर्भादानपरिसाडो मूलकम्म ।

१५—31 शङ्कित संभाविताधाकर्मादिदोष भक्तादि । चतूरूपो भङ्गश्चतुर्भङ्ग –ग्रहणे भोजने शङ्कित । भक्तादेग्रहणकाले भोजनकाले च यदि पुनरमुकदोषवदिदमिति शङ्कावान् ।१। ग्रहणे शङ्कितो न भोजने ।२। भोजने शङ्कितो न ग्रहणे ।३। न ग्रहणे न भोजने शङ्कित ।४। इति । एतेषां संभवो यथा–गृहस्थेन प्रचुरा भिक्षां भिक्षाचरेभ्य स्वसै वा दीयमान दृष्ट्वा चिन्तयति किं स्वगृहोपस्करतया साधुभिक्षाचरादिनिमित्तरादृतया वा चेतसि शङ्कित । ततो लज्जा सक्षोमादिना एनमर्थं गृहिण प्रश्नयितुमशक्नुवन् शङ्कितो गृह्णाति, शङ्कितस्तथैव भुङ्क्ते ।१। द्वितीयस्तथैव चेतसि शङ्कित तथैव गृहस्थ प्रश्नयितुमशक्नुवन् गृहीत्वा स्वोपाश्रये समागतस्ततो भोजनसमये त दोलायमानचेतसं दृष्ट्वा अपरसाधुस्तद्विङ्गानि शङ्कीकृतमाही तदभिप्राय ज्ञात्वा वदति यथा–साधोस्तद्गृहे प्रकरण लाहण वा समायातमिति–तद्वच श्रुत्वा शुद्धमेतदिति निश्चिन्त विगतशङ्कापरिणामस्तद्भुङ्क्ते इति द्वितीय । गुरो पुरत स्वभिक्षातुल्यभिक्षामालोचयत साधून् श्रुत्वा सञ्जातशङ्कश्चिन्तयति यथा—यत्स्वरूपा यही मया भिक्षा लब्धा अमुकगृहे, अन्यैरपि तत्र तत्स्वरूपैव यही लब्धा । ततो मा कदाचिदियमशुद्धा भविष्यतीति । तथा चासौ शङ्कितचित्तस्तां भुङ्क्ते इति तृतीय । चतुर्थस्तु संभव प्रतीत सुगम एव । अत्र द्वितीयभङ्गोऽपि ग्रहणापेक्षयैव सदोष । परमार्थतस्तु शङ्कितग्रहणदोषस्य निवर्तितत्वाच्छुद्ध एव । तृतीयो बहुतरमदोष । उभयत्रापि भोजनशङ्कितत्वेनाशुद्धत्वात् । अत प्रथमतृतीयावाश्रित्य यत्प्रायश्चित्त निरूपयति । य कश्चन दोषमाधाकर्मादिक शङ्कते, संभावयति अमुकदोषमिति तत्सत्क प्राप्नोति । समक्षितमारूपितम् । निक्षिप्त न्यस्तम् । पिहित स्थगितम् । संहृतमन्यत्र क्षिप्तम् । दायग त्ति दायकदोषदुष्टम् । उन्मिश्र पुष्पादिमिलितम् । अपरिणत अप्रासुकीभूतादि । लिप्त दुग्धादिखरंटितम् । छर्दित परिशाटितम् । एते दश शङ्कितादय एषणादोषा ।

१५—33 अधुना म्रक्षितादीनाह—सच्चित्तेत्यादि । पृथिव्यब्वनस्पतिभि सचित्तैम्रक्षितयोगात् । कस्मात्र देयमपि सचित्तम् । अचित्तयोगादचित्तम् । तेन पृथिव्यादिभि सचित्तैम्रक्षित पृथ्विकायम्रक्षितमित्यादीनि तत्त्वम् ।

१५—34 हत्थेण त्ति । मत्ते वि एव चेव । निर्मिश्रकर्दम अपरिणत सचेतनम् ।

१६—2 ससिणिद्धे—तत्र स्निग्धमीषल्लक्ष्यमाणजलकणजलम् । हस्तादिउदकार्द्रं जलतीमित तदेव ।

१६—6 गरहियमज्झायमक्खिए त्ति—मांसवशाशोणितसुरामूत्रोचारादिभि शिष्टजनस्याभक्ष्यापेये साक्षान्म्रक्षित सत् । एतैर्म्रक्षिताभ्या करमात्राभ्या दीयमान सत् यतीनामकल्प्य उड्डाहादि दोषात् । ससक्तिमद्रव्यैर्द्रव्यादिभिर्लेपकृन्मध्वादिभिश्च हस्तमात्राभ्या म्रक्षिताभ्या देय यदेतैर्दीयमान म्रक्षित तदकल्प्यमेकेन्द्रियादिवधदोषात् । मात्रादिलग्नमक्षिकाकीटिकापतङ्गादिसत्त्ववधदोषाचेति । गर्हितेऽगर्हिते च म्रक्षिते आयामम् ।

१६—7 निक्षिप्तश्चतुर्भङ्ग —सचित्त पृथिव्यादि सचित्ते पृथिव्यादौ निक्षिप्त न्यस्तम् १ सचित्त अचित्ते २ अचित्त सचित्ते ३ अचित्त अचित्ते ४ निक्षिप्तम् । अत्र प्रथमद्वितीयभङ्गयोर्ग्रहणप्रायोग्यद्रव्याभावान्न प्रायश्चित्त चिन्ता । चरमस्तु शुद्ध एव । अतस्तृतीयप्रायश्चित्त निरूपयति—एत्थेत्यादिना—पृथ्वीकायो मृत्तिकालवणोपलखरिकाखणिकादिरूप । अप्कायो जलावश्यायहिमकरकादि । तेजस्कायो मुर्मुराङ्गारादि । वायुर्गुञ्जावातादिरूपो दृतिस्थश्च । प्रत्येकवनस्पतिकायो धान्यव्रीहिकाहरिताम्रादिफलरूप । अनत साधारण सूरणगजरादिकन्दरूप । त्रसा कीटिकामत्कोटकन्थ्वादिरूपा । एते च सर्वेऽपि पृथिव्यादय सचित्ता मिश्राश्चात्र ग्राह्या । तत पृथिव्यादिषु ग्रमान्तेषु निक्षिप्त देय वस्तु यदचेतनम् । अनन्तरमव्यवधानम् । परम्परं स्थगिकादिना सव्यवधानम् । सान्तरं पृथिव्युपरि स्थगनिकादौ कृत्वा देय मुक्तम् ।

१६—12 अणन्तवणस्सइ त्ति—उत्पादिरूपो । बीयनिक्खित्त इति प्रत्येकबीजेषु अणतकायबीजेषु च अनन्तरपरम्परनिक्षिप्ते देये नि० ।

१६—13 पिहिए चउभंगो त्ति—यथा-सचित्त सचित्तेण १ सचित्त अचित्तेण २ अचित्त [सचित्तेण ३ अचित्त] अचित्तेण ४ पिहिय । अत्राप्यनन्तरपिहितपरम्परपिहितता वाच्या । तथा चतुर्भङ्गे—अत्रापि गुरुलहुपदाभ्यां चतुर्भङ्ग स्यात्, यथा-गुरुक गुरुकेण, लघुक लघुकेन, लघुक गुरुकेण, लघुक लघुकेन पिहितम् । गुरुक भारिक महद्देयभाजनम् । गुरुणा भारिकेण प्रदेङ्कादिना पिहितम्, गुरुक लघुकेनाल्पभारेण छगनकादिना, लघुक देयभाजन गुरुकेण प्रदेङ्कादिना, लघुक लघुकेन छगनकादिना पिहित ।

१६—13 सचित्तेण पुढवीत्यादिना तृतीयभङ्गस्य अचित्त सचित्तेण पिहितमित्यस्य व्याख्या मण्डकादिकं सचित्तमृदावष्टब्धमनन्तरपिहितम् । तदुक्षा मृत्तिका गर्भच्छञ्जिका । अवष्टब्ध मण्डकादिपरम्परपिहि एवमप्कायादिशेषैरपि भावना कार्या । **असद्भिरचितपिण्डविशुद्धिवृत्तौ** दर्शितत्वाच्च ।

१६—18 संहृतम्—येन मात्रकेण दात्री दास्यति साधोरशनादिक-तत्र पृथिव्यादिकं तुषादिक वा य त्तदन्यत्र सचित्ते अचित्ते वा क्षिप्त्वा तेन रिक्तीकृतेन यदि साधोर्ददाति तत्संहृतमशनाद्युच्यते । अत्र भङ्गचतु सचित्ते सचित्तं-सचित्ते पृथिव्यादौ, सचित्त पृथिव्यादि संहृतम् १ अचित्त तुषादि संहृत २. अचित्ते सचि अचित्ते अचित्त ४ संहृत । अत्राप्यनन्तरपरम्परता वाच्या । परित्तवनस्पति पत्रशाकादि । पृथिव्यादिषु त्रस सचित्तस्थानेषु संहरणे साध्वर्थं कृते मात्रकान्तेन गृहीतेऽशनादौ आ० । एकस्माद्यत्र संहृत्य भूयोऽपि तत अयोग्य संहृत्य तेन ददत परम्परसंहरणम् ।

१६—22 वीयसाहरिय तिलादिगोचरे ।

१६—23 दायग(यारो)त्ति—मत्तो मदिरापानोत्थमदविकल । उन्मत्तो महासङ्ग्रामादिजयादर्पा ग्रहगृहीतश्च ।

१६—27. पमद्दमाणी पृथिव्यादीन् । **सेसेसु त्ति** भङ्गेषु ।

१६—29 ओयत्तन्तीए—द्रव्येण द्रव्यान्तरं गृह्णन्त्या ।

१६—30 पर च उद्दिस्स त्ति—परकीयमिदमित्युक्त्वा ददाति । यद्वा यत्र दात्री परेण निर्भर्त्स्यते ।

१६—31 उम्मीसं ति—मिश्रणस्योभयाश्रितत्वात्, उत्प्रासत्वेन मिश्रित दाडिमगुलिकादिना, पुष्प वा सह यन्मिलित तदुन्मिश्र भण्यते । ते द्वे अपि वस्तुनी यत्रोन्मिश्र्य ददाति साधवे तदशनादिउन्मिश्रम् । परित्तवनस्पतिपत्रपुष्पशाकादिना सचित्तेन उन्मिश्रे आ० ।

१६—31 अपरिणत अप्रासूकीभूतादि । तच्च द्रव्यभावभेदात् द्विधा । पुनर्भावापरिणत दातृगृहीतृयोगात् धा वा । तत्र परिणतद्रव्ये सचेतने दायकेन साधोर्दीयमाने द्रव्यापरिणतम्, दातृविषयभावापरिणत तु द्वयो र्दिस्वामिनोर्मध्यात् यत्राशने साधारणे एकेन दीयमाने द्वितीयस्य यत्र भावो अपरिणतो अभवनशीलस्त तृभावापरिणतम् ।

१७—1 द्रव्यभावपदाभ्यां चतुर्भङ्गोऽत्र अनिसृष्टभावापरिणतयोश्चासमक्षकृतो विशेष । गृहितृविषयभ परिणत तु यत्र द्वयो साध्वोर्भिक्षार्थं गतयोरेकस्य मनसि तदशुद्ध परिणतम्, अन्यस्य तदेव शुद्ध मनसि परिणत सदपि भावापरिणतम् ।

१७—2 [ससत्त]—ससक्तेन दध्यादिना करमात्रकखरण्टकेनाशनादिग्रहणे लिप्तदोषा ।

१७—3. पृथिव्यादिषु दीयमाने छर्दिते परिशाटितम् ।

१७—5 सयोजणा-वाहिं भायणे त्ति । रसहेतुश्द्रव्य भिक्षाटने शाल्यादिकूरं क्षीरं वा प्राप्तवान् । त बहिरेव पृथक् भाजनेषु गृह्णातीति । वसतेर्बहिर्द्रव्यसयोजनाया चेतसा क्रियमाणायां बाह्या द्रव्यसयोजन वसतावागतेन रसहेतोर्द्रव्यसंयोजना अभ्यन्तरा । सयोजना त्रिधा–पात्रकविषया, कवलविषया, मुखविषया यद्येन सह युज्यते तत्तेन सह भक्षयतीति भाव इत्यन्तर्वेदनाश्रया । 'वत्तीसकवलमाण रागदोसाहिं धूमइगाल वेयावच्चाइया कारणमवहिंमि अइयारो ॥' कारण वेदनावैयावृत्यादिधो(?)ऽनिर्वहति । भोजनाभावे आ० ।

१७—9 सूत्रगाथा २५-२६ एतद्व्याख्या–कर्मोद्देशिकचरिमत्रिके । पापण्डि श्रमणनिर्ग्रन्थाख्ये पापण्डिकर्मोि कम्मे । आधाकम्म । पापण्डमिश्रे स्वसाधुमिश्रे च । बादरप्राभृतिका विवाहुस्सक्कण ओसक्कणरूवा । सप्रत्यपायपरभा भ्याहृतम् । यत्रात्मविराधना । लोभपिण्ड । **अइर अणत त्ति**—तिरोऽन्तर्धाने, न तिरमतिरं अन्तर्धान वि निरन्तरमित्यर्थ । अथ भावार्थ —अणन्तकाये पूयलियाई निक्खित्त साहरिय मीसिय वा । अणतकायेण वा पिहिय आदिग्रहणादनन्तापरिणितेऽनन्तछर्दिते च क्षमणम् । अनन्तकायाव्यवहितनिक्षिप्तपिहितसंहृतोन्मिश्राऽपरिणतछ तेषु क्षमणम् । रसहेतुसयोजना रागान्वितभोजने च, वर्तमानभविष्यन्निमित्ते च क्षमणम् ॥ जावतिकादप्कर्मोद्देशिक थमेद । मिश्रप्रथमभेद । धात्रीत्वम् । दूतीत्वम् । अतीतनिमित्तम् । आजीवनापिण्ड । वनीपकत्वम् । बादरचिकित्स

करणम् । क्रोधमानपिण्डौ । सम्बन्धिसंस्तवकरणम् । वियामन्त्रयोगचूर्णपिण्डा । प्रकाशकरण द्विविधम् । द्रव्यक्रीतम्, आत्मभावक्रीतम् । लौकिकप्रामित्यपरावर्तने । नि प्रत्यपायपरग्रामाभ्याहृतम् । पिहितोद्भिन्नकपाटोद्भिन्ने । उत्कृष्टमालापहृतम् । सर्वमाच्छेद्यम् । सर्वमनिसृष्टम् । पुर कर्म । पश्चात्कर्म । गर्हिते द्रव्यम्रक्षितम् । प्रत्येकाव्यवहितनिक्षिप्तपिहित संहृतोन्मिश्राऽपरिणतछर्दितानि । प्रमाणोल्लङ्घनम् । सधूममकारणभोजने चेति । अत्रेद (अथे० b) सूत्रपदम्— **कारणविवज्जिए त्ति**—कारणविवज्जओ नाम अकारणे भुञ्जे, कारणे न समुद्दिसइ । एतेषु आचाम्लं दीयते ।

१७—13 **अज्झोयर [गाहा ३९]** अध्यवपूरकान्त्यभेदद्वयम् । **कडे त्ति** कृतौद्देशिकभेदचतुष्टयम् । भक्तपानपूतिकम् । मायापिण्ड । अनन्तकायाव्यवहितनिक्षिप्तपिहितादीनि । मिश्रानन्तरकायाव्यवहितनिक्षिप्तानि चैतेषु एकभक्तम् । तथा ओघौद्देशिकमुद्दिष्टभेदचतुष्टयम् । उपकरणपूतिकम् । चिरस्थापित प्रकटकरणम् । लोकोत्त[र] परावर्तितकम् । लोकोत्तरप्रामित्य च । सखमाइ परभावक्रीतम् । नि प्रत्यपायसप्रत्यपायस्वग्रामाभ्याहृतम् । दर्दरोद्भिन्नम् । जघन्यमालापहृतम् । **उद्धरे पढमे त्ति**—यावदर्थिकाध्यवपूरक सूक्ष्मचिकित्साचिगिच्छागुणसंस्तवकरणम् । **तिगमक्खिय त्ति**—मिश्रकर्दमेन लवणसेटिकादिना च पृथिवीम्रक्षितम् । आउ उदल । उक्कुट्ठरोद्दे परित्तो— एय तिगमक्खिय । **दायगो वहए त्ति**—किंचिद्दायकदुष्टम् । यत उक्तम्—

बाले मूढे मत्ते उम्मत्ते वेविए य जरिए य । एए विसेसवज्जा एएसिं दायगो वहय ॥

१७—15 **पत्तेय० [गाहा ४२]** पत्तेयवणस्सइकाए सचित्तपरंपरट्ठविए । तेण चेव पिहीए साहरिए मीसे परपरनिक्खित्ते अणतरनिक्खित्ते—प्रत्येकपरम्परनिक्षिप्तादीनि मिश्रानन्तरनिक्षिप्तसंहृतादीनि च । सर्वेषु पुरिमार्धम् । **संकाए त्ति**—ज दोसे आसक्कइ तस्सेव दोसस्स ज पायच्छित्त त आवज्जइ ।

१७—16 **इत्तरठविए० [गाहा ४३]** करमान्तस्थ इत्वरस्थापितम् । सूक्ष्मप्राभृतिका सस्निग्धसरजस्कम्रक्षितम् । पृथ्वीअप्वनस्पतिम्रक्षितम् । पृथिव्यादिषु मिश्रेषु परम्परनिक्षिप्ते नि० । वनस्पतिमिश्रे परम्परनिक्षिप्ते नि० । प्रत्येकबीजेष्वनन्तकायबीजेषु चानन्तरपरम्परनिक्षिप्ते । एवमेतेषु स्थापितेऽपि देये नि० । **अविगई**—निर्विकृतिकम् । **ठवियगाईसु त्ति**—आदिग्रहणान्मिश्रपरम्परपिहिते नि० । एव संहृतेऽपि । परित्तवणस्सइओमीसे नि० । बीउम्मीसे नि० ।

१७—19 **अतिप्पमाणे व त्ति**—तेष्वेवातृप्यमानस्वदेवातिमान पुष्टतया कुर्वन् ।

१७—20. **सघरिसेण**—होड्डया ।

१७—21 **जमलिओ**—जमलतया स्थित ।

१७—22 **वट्टा** गोलया । **समास त्ति** समस्या ।

१७—24 अरहट्टादिसत्क आजीवे स्तेऽपि क्रियमाणे रामण ।

[गाथा ४६] अन्यत्रोच्यते—जिणकप्पिया थेरकप्पिया य दुविहा साहुणो । ओहीय–ओवग्गहीय–भेया दुहा उवही । तत्थ—

ओहेण जस्स गहण भोगो पुण कारणा स ओहोही (ओघोपधि) । जस्स य दुगपि नियमा कारणओ सो उवग्गहिओ ॥

—जिणकप्पिया उपध्यपेक्षया । अष्टविधोपधय —

एए अट्ठ विअप्पा उवहिमि उ हाति जिणकप्पे ॥

निय त्ति चउक्क पणग नव दस एक्कारसेव बारसग । एए अट्ठ विअप्पा उवहिमि उ हाति जिणकप्पे ॥

रयहरण मुहपोत्ती दुविहो कप्पेक्कजुत्त तिविहो उ । रयहरण मुहपोत्ती दुकप्प एसो चउद्धा ओ ॥

रयहरण मुहपोत्ती दुविहो कप्पेक्कजुत्त तिविहो उ । रयहरण मुहपोत्ती पाणिपडिग्गहियाण एसो उवहीओ पचविहो ॥

तिन्नेव य पच्छागा रयहरण चेव होइ मुहपोत्ती । पाणिपडिग्गहियाण एसो उवहीओ पचविहो ॥

पत्तगधारीण पुण तवाइभेया हवति नायव्वा । पुव्वुत्तोवहिजोगा जिणाण जा बारसुक्कोसो ॥

पत्त पत्ताबधो पायट्ठवण च पायकेसरिया । पडलाइ रयत्ताण च गोच्छओ पायनिज्जोगो ॥

तिन्नेव य पच्छागा रयहरण चेव होइ मुहपत्ती । एसो उ दुवालसविहो उवही जिणकप्पियाण तु ॥

एए चेव दुवालस मत्तय अइरेगचोलपट्टो य । एसो उ चउद्दसविहो उवही पुण थेरकप्पमि ॥

उक्कोसो अट्ठविहो मज्झिमओ होइ तेरसविहो य । जहन्नो चउव्विहो च्चिय अज्जाण एस तिविहुवही ॥

कप्पत्तिय पडिग्गहगो अब्भितर बाहिरा नियसणिया । संघाडी खधकरणी उक्कोसो एस अट्ठविहो ॥

मध्यमत्रयोदशविध.—

पत्तावधो पडला रयहरण मत्तकमढ रयत्ताण । उग्गहपट्टोदचलणिया ओक्कच्छि कचु वेकच्छी ॥
गोच्छगपत्तट्ठवण मुहणतगकेसरि जहन्नो । जघन्योपग्रहिकः स्थविराणा एसो ।

तत्थ **पीढग त्ति** काष्ठच्छगणमय पीठ **निसेज्ज** पाउछण । **दडगा-पमज्जणी** दडापुछणी । घ
पात्रघर्षणोपला ।वर्षावृष्टिसु त्राणाय रक्षणाय । **वाल त्ति** कम्बल । सूत्रमयम् । **सूई**—तालपत्रसूत्रादिव्रुम
क्कुडसीसग पलासपत्रमय खुम्पकम् । पत्रक वशमयम् । सेससतिग वालसौत्रिकादन्यत् । **वासत्ताणे** ति
वर्षाकालोपयोगिसस्तारो **अझुसिरो** काष्ठफलकादि । **झुसिरस्तृणादिमय** । **डडेत्यादि**—तत्थ

लट्ठी आयपमाणा, **विलट्ठी** चउरंगुलेण परिहीणा । **दण्डो** बाहुपमाणो, **विदण्डओ** कक्खमेत्तो उ ॥
सिरसो उवरि चउरङ्गुलदीहा **नालिया** । **अवलेहणी** वटादिकाष्ठमयी पादलेहणी—'वडउवरे पिलक्ख
अलाभमि चिंचिणीया ।' चर्मत्रिकम् । **अत्थुर त्ति** भूमावास्तीर्यते अम्यादिभये प्रलवादिविकरणाय च । पाउ
पद[पदि]कादिभये यत् प्रावियते । तलिगा उपानह् । यद्वा कृत्ति तलिगा यभ्रा (वध्रा b) यद्वा विहारे अ
णस्स शरीरेण सह बन्धनार्थ पट्ट । **पल्हत्थी** योगपट्ट । मध्यम औपग्रहिक । **वारगो त्ति**—ससागारिके
गनिमित्त, नित्य जनमध्य एव तासा वासात् । उत्कृष्टौपग्रहिकस्तूच्यते—

अक्खा॰ गाहा [१८-5]—सथारको द्विविध —एकाङ्गिकनिसकाष्ठपट्टरूप , तदितर कम्बि
मय । उत्सर्गपदापेक्षया द्वितीयपदमपवादसूत्रोत्कृष्टौपग्रहिक कथ्यते । पुस्तकपञ्चक—'गडी, कच्छवी, मुट्ठी
ङफलए तह छिवाडीय त्ति'—एतत्त्स्वयमग्रे कथयिष्यते । **फलग त्ति** पट्टिका, समवसरणफलक वा । अ
निजोदरमान तत् प्रतिसयतिनीनाम्, अन्यथा एकभाजनभोजने गुरुकवलोत्पादने एकया अन्यस्या अपीतिसभव

१८—9. **ओग्गहणंतगं**—तौ सदृशम् । पट्टस्तद्बन्धनम् ।

१८—11 **साहूण ओहिओ त्ति**—मुहपोत्तीयपायकेसरिमाइओ चउरो **ते चेव त्ति** । पडिग्गहो
दनत्रयम् । **अन्ने य त्ति**—अब्भितर नियसणी १, बाहिनि॰ २, सघाडी ३, खधकरणी ४, पत्तावधो,
रयत्ताण, रयहरण च ४, जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदत प्रागुक्तत्रिविधोपधिमध्याजघन्यविच्युतलब्धत्वे नि॰ । म
विच्युतलब्धत्वे पु॰ । उत्कृष्टस्य विच्युतलब्धत्वे ए॰ । जघन्याप्रत्युपेक्षितत्वे नि॰ । एव मध्यमाप्रत्यु॰
उत्कृष्टाप्रत्यु॰ ए॰ । **न पडिलेहिओ त्ति**—निवेदयितु गुरुभ्यो विस्मृतत्वे जघन्यस्य नि॰ । मज्झिमे
उत्कृष्टस्य ए॰ । प्रकारत्रयेण सर्वस्योपधे सपन्नत्वे आ॰ ।

१८—21 **हारिय॰** [**गाहा ४७**]—हारितत्वे जघन्यस्य ए॰ । मध्यमस्य हारितत्वे आ॰ । उ
हारितत्वे चमणम् । जघन्यधौतत्वे ए॰ । मध्यधौतत्वे आ॰ । उत्कृष्टस्य धौतत्वे उ॰ । उपधेर्जघन्यादिभेद
कर्तुं न निवेदयते तत्रापि ए॰ । आ॰ । च॰ । आचार्यैरदत्त परिभुङ्क्ते । त्रिविधमुपधि आचार्यानुज्ञा विना
ददाति । ए॰ । आ॰ । च॰ । **सर्वमि छट्ठ तु त्ति**—जघन्यादिभेदतस्त्रिविधस्य हारणे .. ..त्र द्वेऽपि
मलप्रक्षालनादौ षष्ठ स्यात् ।

१८—30 **मुहणंतय॰** [**गाहा ४८**] **पवं तावेत्यादि** । तिविहोवहिणो विभु(चु)येत्यादि [**गाहा**
रजोहरणमुखवस्त्रिकां विहाय अन्योपधौ द्रष्टव्यम् । अग्रप्रति अग्रया उक्त (?) । तत्र मुहपोतियाए प
ण्डाए य निव्विय । एव रयहरणे वि । यदि पुनर्द्वितयमपि पतितमथ च न लब्ध तत्राह—**अह पुणेत्या**
गवरं नासियं परचक्रादिसम्पातेन । **हारियं** आलस्यादिना प्रमादेन ।

१८—31 **काल॰** [**गाहा ४९**]

पारिट्ठावणियं अविहीए त्ति—33 स्थण्डिलाद्यशुद्धया ।

१८—34 विकालवेलायां पानकाहारस्याप्रत्याख्यातत्वे भोजनोर्ध्वमुत्सर्गतश्चतुर्विधाहारस्यापि प्रत्याख्या
नुक्तम् । तदकरणे-अत एव साधवस्त्रिविधाहारं स्वाध्यायकरणसमये तृतीयपौरुष्या समये प्रत्याख्या
विकालवेलायां च पानाहारमिति ।

१९—1 **पयं चिय॰** [**गाहा ५१**] द्वादशविधतपो यथा—

अनशनमूनोदरिता, वृत्ते संक्षेपण रसत्याग । कायक्लेशः संलीनतेति बाह्य तपः प्रोक्तम् ॥

प्रायश्चित्तव्याने वैयावृत्त्यनियमावबोधनं । स्वाध्याय इति पद पदप्रकरणादन्यत्र भवति ॥
मासाई पस वा पढमा बिइयइयाणपरिहिना । अह १ इ दुगाई, नियम पडिमाग भाग न ॥

इह प्रतिमादिनिषेधेऽवदाने विपरीतप्रकरणयो वा प्रायश्चित्तं देयम् । एतेन ततोऽन्यत्प्रायश्चित्तमूला द्रव्यादिभेदेषु च वीर्यातिचारप्रायश्चित्तमूलं देयम् । पाक्षिके गुरुतरिकाणको दातव्यम् । इत्थं पूर्व स्थविर भिक्षु उपाध्याय आचार्यभेदतः पञ्चकल्याणं प्रति पूर्णक्रमात् दातव्यम् ।

१९—10 किइय० [गाहा ५२] निद्राप्रमादवशतो गुरुभिः सह प्रतिक्रमणे क्रियमाणेऽपि न क्रियते । सय वा उस्सारेइ गुरुणा अपारिते कायोत्सर्गं स्वयमेव पारयति । अपूर्णे वा किञ्चिदपराधेऽपि पारयति ।

१९—15 अकय० [गाहा ५३] पय पडुप्पायणसु वि त्ति—पर्वदिवसेषु अष्टम्यादिषु यथाक्रमं नि० । पु० । ए० । तदकरणे आयाम । दाओ पोसिरइ त्ति निर्विकृतिकं कुरुते ।

१९—17 कोट्ठ० [गाहा ५४] सगि त्ति—शकर, एरण्ड । तसणाइ त्ति तर्कं भणइ, आदि-शब्दात् मयूरादिग्रह ।

१९—22 अज्झुसिर० [गाहा ५५] अ मञ्जुलेखितं बहुना शब्देनाक्रन्दनम् । अज्झुसिरं शीर्षा-द्युपरिलिखितम् । कोयवि—रूतपूरित पट. प्रच्छादनं यदुच्यते । पावारगो बृहत्कम्बलः प्रतिरूपकं । पूरी-पल्हवी हस्त्यास्तरणम् । दृढगाढसंघातपोति । दुगर सुखी पटी, दोमढी मावढ । विरली मृदुरोमयुक्ता भवइ । मडोवहाणी गण्डमसूरिका । पुस्तकपञ्चके गढी पुस्तकलक्षणम्—

> गाहसमुहछेदिहिं गडापोत्थो उ गुणगो दीहो । १ ।
> कच्छवि अंते तणुओ, मज्झे पिहुलो मुणेयव्वो । २ ।
> चउरंगुलदीहो वा, वट्टागी मुट्ठिपुत्थगो अहवा ।
> चउरंगुलदीहो चिय, चउरंसो होइ विन्नेओ । ३ ।
> तणुपत्तूसियरूवो होइ छिवाडी य पोत्थगा नाम ।
> दीहो बाहुल्लो (हो) वा जो पिहुलो होइ अप्पबाहुल्लो ।
> त मुणियसमयसारा छिवाडि पोत्थी भणंतीह । ४ ।
> संपुडगो दुगमाई फलगा । ५ ।

अपरमपि—चर्मपञ्चकं यथा—तलिगा खल्लग वद्धे (वद्धे) कोसग कत्ती य बीयंतु ।
तलिगा-उपानत्, वद्धं-वध्र, कोसगो-नखरक्षार्थं चर्म, कृत्ति प्रलम्बकरणाय ।

१९—32 ठवण० [गाहा ५६] सही—अविरत भाव । वीर्याचारातिचारो निर्वीर्यगूहनम् ।

१९—35 सुयवयहारादसु अवद त्ति—मायाविमुक्त सदेव वीर्यवते इति विशेषः । आलापकद्वये देवमिति भाव । अप्पमायाओ त्ति—"इहपितो महाभोगो, एस साहु निद्दिसो । स्वपाक करेइ त्ति, अंतरवेदि वाइए ॥" इत्यात्मनि व्यापयति ।

२०—3 दप्पेण० [गाहा ५७] वल्गन-उल्लनम् । शद्यपलायन धावनम् । खड्गवर्तनं फलम् । मल्लयुद्धास्फोटन च दप । न कुर्वतो कदाचित्पञ्चेन्द्रियस्य [व्य]परोपण—विघात इत स्यात् ।

२०—4 अद्दादाग-मेहन तस्य परिमर्दनेन शुक्रपुद्गलनिर्यातन-निष्कासन इत्येतस्तंक्लिष्टकर्मोच्यते । आदि-ग्रहणात्किस भेदादि[ना] मक्षणादि करोति । दीर्घाध्वनि वासेवनम् ।

आधाकर्म, अध्यवपूरकादिक वा शुष्ककदलीफलादिवत्वात । दीर्घकालेन वा यता यदाधाकर्मत्वादि-कारणात । सम्यक्विसेवन वाचरितम् । तत्रैतेषु पञ्चकल्याणकमिति वक्ष्यमाणगाथान्तेऽपि शेषं योज्यम् ।

२०—7 पुरिमचा०-भिक्षापात्र तत्काले न प्रतिलेखयति । चरिमभागोनायां पौरुष्यां प्रथमायां पादोनप्रहरे इत्यर्थ । यद्वा चरिमपौरुष्यामुपोषित कश्चित् । ततोऽसौ तस्यां पात्र न पडिलेहेइ । तत्र कल्याणक प्रायश्चित्तं ज्ञेयम् । चातुर्मासे सांवत्सरिके च शुद्धौ पञ्चकल्याणक ज्ञेयम् । यस्मात्सूक्ष्मातिचारान् इत्यान् न जानाति न च स्मरति । कथमित्याह—जहा पाउसे इत्यादि ।

मध्यमस्त्रयोदशविध.—

पत्तावधो पडला रयहरण मत्तवमड रयत्ताण । उग्गहपट्टोरुचलणिया ओकच्छि कंचु वेकच्छी ॥

गोच्छगपत्तट्ठवण मुहणतगकेसरि जहन्नो । जघन्योपग्रहिक. स्थविराणां एसो ।

तत्य पीढग ति काष्टच्छगणमय पीठं निसेज्ज पाउछण । दडगा-पमज्जणी दंडापुंछणी । घट्टगा पात्रघर्षणोपला । वर्षाशृष्टिसु त्राणाय रक्षणाय । वाल त्ति कम्बल । सूत्रमयम् । सूई—तालपत्रसूच्यादिद्विप्रकं । कुडसीसग पलासपत्रमय गुम्फकम् । पत्रक वशमयम् । सेसतिग वालसौत्रिकादन्यत् । वासत्ताणे त्ति—वर्षाकालोपयोगिसंस्तारो अज्झुसिरो काष्ठफलकादि । झुसिरस्तृणादिमय । डंडेत्यादि—तत्य

लट्ठी आयपमाणा, विलट्ठी चउरंगुलेण परिहीणा । दण्डो बाहुपमाणो, विदण्डओ कक्खमेत्तो उ ॥ सिरसो उवरि चउरङ्गुलदीहा नालिया । अवलेहणी वटादिकाष्ठमयी पादलेहणी—'वडउवरे पिलक्ख तस्स अलाभमि चिंचिणीया ।' चर्मत्रिकम् । अत्थुर त्ति भूमावास्तीर्यते अभ्यादिभये प्रलवादिविकरणाय च । पाउर त्ति पद[पदि]रादिभये यत् प्राभियते । तलिगा उपानह । यद्वा कृत्ति तलिगा थभा (थभा b) यद्वा विहारे उपकरणस्य शरीरेण सह बन्धनार्थ पट्ट । पल्लत्थी योगपट्ट । मध्यम औपग्रहिक । वारगो त्ति—ससागारिके उदगनिमित्त, नित्य जामध्य एव तासां वासात् । उत्कृष्टौपग्रहिकस्तूच्यते—

अक्खा० गाहा [१८-5]—संथारको द्विविध —एकाङ्गस्तिनिसकाष्टपट्टरूप, तदितर कम्बिकादिमय । उत्सर्गपदापेक्षया द्वितीयपदमपवादसूत्रोत्कृष्टौपग्रहिक कथ्यते । पुस्तकपचकं—'गडी, कच्छवी, मुट्ठी, सपुडफलए तहा छिवाडीय त्ति'—एतत्स्वयमग्रे कथयिष्यते । फलग ति पट्टिका, समवसरणफलक वा । कमढग निजोदरमान तत् प्रतिसयतिनीनाम्, अन्यथा एकभाजनभोजने गुरुकवलोत्पाटने एकया अन्यस्या अप्रीतिसंभवः स्यात् ।

१८—9 ओग्गहणतगं—तौ सदशम् । पट्टवद्बन्धनम् ।

१८—11 साहूण ओहिओ त्ति—मुहपोत्तीयपायकेसरियाइओ चउरो ते चेव त्ति । पडिग्गहो प्रच्छादनमयम् । अन्ने य त्ति—अब्भितर नियसणी १, बाहिरि० २, सघाडी ३, खधकरणी ४, पत्तावधो, पडला, रयत्ताण, रयहरण च ४, जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदत प्रागुक्तत्रिविधोपधिर्मध्याज्जघन्यविच्युतलब्धत्वे नि० । मध्यमस्य विच्युतलब्धत्वे पु० । उत्कृष्टस्य विच्युतलब्धत्वे ए० । जघन्याप्रत्युपेक्षितत्वे नि० । एव मध्यमाप्रत्यु० पु० । उत्कृष्टाप्रत्यु० ए० । न पडिलेहिओ त्ति—निवेदयित्तु गुरुभ्यो विस्मृतत्वे जघन्यस्य नि० । मज्झिमे पु० । उत्कृष्टस्य ए० । प्रकारत्रयेण सवस्योपधे संपमत्वे आ० ।

१८—21. हारिय० [गाहा ४७]—हारितत्वे जघन्यस्य ए० । मध्यमस्य हारितत्वे आ० । उत्कृष्टस्य हारितत्वे खमणम् । जघन्यधौतत्वे ए० । मध्यधौतत्वे आ० । उत्कृष्टस्य धौतत्वे उ० । उपधेर्जघन्यादिभेदस्योद्गम कर्तुं न निवेदयते तत्रापि ए० । आ० । च० । आचार्यैरदत्त परिभुङ्क्ते । त्रिविधमुपधि आचार्याज्ञां विनाप्यन्यस्मै ददाति । ए० । आ० । च० । सव्वंमि छट्ठं तु त्ति—जघन्यादिभेदतस्त्रिविधस्य हारणे . . . त्र द्वेऽपि काले मलप्रक्षालनादौ षष्ठ स्यात् ।

१८—30 मुहणंतय० [गाहा ४८] एवं तावेत्यादि । निविहोवहिणो निभु(भु)वेत्यादि [गाहा ४६] रजोहरणमुखवस्त्रिका विहाय अन्योपधौ द्रष्टव्यम् । अभ्रप्रति अभ्रया उक्त (?) । तत्र मुहपोत्तियाए पडियाए छट्टाए य निव्विय । एव रयहरणे वि । यदि पुनर्द्वितयमपि पतितमथ च न लब्ध तत्राह—अह पुणेत्यादि । मवरं नासिय परचक्रादिसम्पातेन । हारियं आलस्यादिना प्रमादेन ।

१८—31 फाल० [गाहा ४९]

पारिट्ठावणियं अविहीए त्ति—33 स्थन्दिलाद्यशुद्धया ।

१८—34 विकालवेलायां पानकाहारस्याप्रत्याख्यानत्वे भोजनोर्ध्वमुत्सर्गतश्चतुर्विधाहारस्यापि प्रत्याख्यानत्व युक्तम् । तदकरणे-अत एव साधवस्त्रिविधाहारं स्वाध्यायकरणसमये तृतीयपौरुष्या समये प्रत्याख्यान्ति । विकालवेलायां च पानकाहारमिति ।

१९—1 एवं चिय० [गाहा ५१] द्वादशविधतपो यथा—

अनशनमूनोदरिता, वृत्ते सक्षेपण रसत्याग । कायक्लेशः संलीनतेति बाह्य तपः प्रोक्तम् ॥

प्रायश्चित्तध्याने वैयावृत्त्यविनयावयोत्सग । स्वाध्याय इति तप षड्प्रकारमाभ्यन्तरं भवति ॥

मासाइ सत्त ता पढमा बिइतइयसत्तराइदिणा । अह राइ एगराई, भिक्खू पडिमाण बारसग ॥

इह प्रतिमादिविषयेऽश्रद्धाने विपरीतप्ररूपणाया वा प्रायश्चित्त ज्ञेयम् । एतेन तपोतिचारप्रायश्चित्तसूच द्रव्याद्यभिग्रहेषु च वीर्यातिचारप्रायश्चित्तसूत्रन ज्ञेयम् । पाक्षिके पुरुषादिविभागतो ज्ञातव्यम् । पुरुषा क्षुल्लक स्थवि भिक्षु उपाध्याय आचार्यभेदत पञ्चधास्तान् प्रति चूर्णिकृता दर्शितमेव ।

१९—10 **फिडिए०** [**गाहा ५२**] निद्राप्रमादवशतो गुरुभि सह प्रतिक्रमणे **फिडिओ** त्ति न मिलित । **सय वा उस्सारेइ** गुरुणा अपारिते कायोत्सर्गे स्वयमात्मैव पारयति । अपूर्णे वा चिन्तनीयतया तराले पारयति ।

१९—15 **अकए०** [**गाहा ५३**] **एव चंदणाइएसु पि** त्ति—एकद्विनिसर्वा अदानतो वन्दनेषु यथाक्रम नि० । पु० । ए० । सर्वाकरणे आयाम । **राओ वोसिरइ** त्ति निसिसद्योत्सर्गं कुरुते ।

१९—17 **कोहे०** [**गाहा ५४**] **सगि** त्ति—सकृत्, एकदा । **तन्नगाइ** त्ति तर्नको वत्सक, आदि-शब्दात् मयूरादिमह ।

१९—22 **अज्झुसिर०** [**गाहा ५५**] दु प्रत्युपेक्षित चक्षुषा सम्यगनवलोकनम् । अप्रत्युपेक्षित सर्वथा चक्षुषाऽनिरीक्षितम् । **कोयवि**—रूतपूरित पट पुरओट्टीति यदुच्यते । पावारगो बृहत्कम्बल परियच्छिर्वा । **पूरी**–पल्हवी हस्त्यास्तरणम् । दढगालिधौतपोति । दुसर सूत्री पटी, दोयडी यावत् । **विराली** नवओ जीणोति भणइ । गडोवहाणी गल्लमसूरिका । पुस्तक्पचके गडी पुस्तकस्वरूपम्—

बाहल्लपुहत्तेहिं गडीपोत्थो उ तुल्लगो दीहो । १ ।
कच्छवि अते तणुओ, मज्झे पिहुलो मुणेयव्वो । २ ।
चउरंगुलदीहो वा, वट्टागी मुट्ठिपुत्थगो अहवा ।
चउरंगुलदीहो चिय, चउरंसो होइ विन्नेओ । ३ ।
तणुपत्तूसियरूवो होइ छिवाडी य पोत्थगा नाम ।
दीहो वाहुस्सो (ल्लो) वा जो पिहुलो होइ अप्पबाहुल्लो ।
त मुणियसमयसारा छिवाडि पोत्थी भणतीह । ४ ।
संपुडगो दुगमाई फलगा । ५ ।

अपरमपि—चर्मपञ्चक यथा—**तलिगा खल्लग वव्मे (वद्धे) कोसग कत्ती य वीयतु ।**

तलिगा–उपानत्, वब्भ –वध्र , कोसगो–लेहोधारं चर्म, कृत्ति प्रलम्बकरणाय ।

१९—32 **ठवण०** [**गाहा ५६**] **सन्नी**—अविरत श्राद्ध । वीर्याचारातिचारो निजवीर्यगूहनम् ।

१९—35 **सुयववहाराइसु अन्नह** त्ति—मायानिष्पन्न तदेव दीयते इति विशेष । आसणद्वय देयमिति भाव । **अन्नमायाओ** त्ति—"लद्दवित्ती महाभोगो, एस साहू जिइंदिओ । रसचाग करेइ त्ति, अंतपतेहिं याढए ॥" इत्यात्मनि व्यापयति ।

२०—3 **दप्पेण०** [**गाहा ५७**] वल्गन–उल्लनम् । खडयप्पयाण धावणम् । खड्डावर्डाईण फडणम् । मल्लवद्बाहास्फोटन च दप । त कुर्वतो कदाचित्पञ्चेन्द्रियस्य [व्य]परोपण—विघात कृत स्यात् ।

२०—4 अङ्गादान–मेहन तस्य परिमर्दनेन शुक्रपुद्गलनिर्घातन–निष्काशन इत्येतत्सङ्क्लिष्टकर्मोच्यते । आदि-ग्रहणाल्लिङ्गस्य स्नेहादि[ना] म्रक्षणादि करोति । दीर्घाध्वनि यत्सेवनम् ।

आधाकर्म, अध्वानकल्पादिक वा शुष्कदलीफलादिधरणत । दीर्घग्लानेन वा सता यदाधाकर्मरसादि-कारणत । सचित्तसेवन वाचरितम् । तत्रैतेषु पञ्चकल्याणकमिति वक्ष्यमाणगाथान्तोक्त ज्ञेय योज्यम् ।

२०—7 **पुरिमत्ता०**–भिक्षापात्र तत्काले न प्रतिलेखयति । चरिमभागोनायां पौरुष्या प्रथमायां पादोनप्रहरे इत्यथ । यद्वा चरिमपौरुष्यामुपोषित कश्चित् । ततोऽसौ तस्यां पात्र न पडिलेहेइ । तत्र कल्याणक प्रायश्चित्त ज्ञेयम् । चातुर्मासे सांवत्सरिके च शुद्धौ पञ्चकल्याणक ज्ञेयम् । यस्मात्सूक्ष्मातिचारान् कृतान् न जानाति न च स्मरति । कथमित्याह–**जहा पाउसे** इत्यादि ।

२०—12 छेयाइ० [गाहा ५९] किं या छिज्जइ त्ति—भो भो जना निरीक्षत निरीक्षत। छियते न छियते चेति भवति अश्रद्धानपर। मिउणो त्ति—मृदोर्निरभिमानस्य। अभिमानाभाव दर्शयति-जो इत्यादिना। छेदाऽश्रद्धानपरस्य मृदो , पर्यायगर्वितस्य च इत्येतेषाम्।

२०—18 दुसुण्ठा –उत्कण्ठा खिन्ना। इह शिष्या अनेकविधा भवन्ति—परिणामगा, अपरिणामगा, अइपरिणामगा। तत्थ उस्सग्गे उस्सग्ग, अववाए अववाय, जहा भणिय सद्दहता आयरंता य परिणामगा भण्णन्ति। अपरिणामगा पुण जे उस्सग्गमेव सद्दहति आयरति य, अववाय पुण न सद्दहति नायरंति य। अइपरिणामगा जे अववायमेवा यरंति, तम्मि चेव सज्जति न उस्सग्गे। अतो अपरिणामकानां उत्सर्गदृष्टीना मा निन्द्यो भविष्यति। चशब्दसूचित कुलगणसङ्घाधिपानामपि छेयापन्नाना जीवेन तप एव दीयते न छेदादय।

२०—19 जं जं० [गाहा ६०] अत्थपय त्ति—अर्थ सूत्रव्याख्यान भाष्यचूर्णिनिर्युक्त्यादिकम्। आज्ञाभङ्गादिदोषत प्रायश्चित्तापत्ति सविस्तरा तपस उक्ता।

२१—5 दव्व खित्तं० [गाहा ६४]

आहाराई दव्व खेत्त लुक्खाइ काल गिम्हाई। हट्ठाई भाव त्ती पुरिस गीयाइ जाणित्ता ॥

आउट्टि-पमाय-दप्प-कप्पहवा चउव्विहा पडिसेवणा नायव्वा। साहारणेषु द्रव्यादिषु साधारण भणिय सम देज्जा।

२१—13 लुक्खं० [गाहा ६६] वायं त्ति—वातलम्। अनूपक्षेत्र सजलक्षेत्रम्। एवं कालेवि तिविहे त्ति—वर्षाहेमन्तग्रीष्मरूप काल सामान्येन स्निग्धरूक्षश्च भवति। तत्र स्निग्ध –शीत , रूक्ष –उष्ण। अथ स्निग्धोऽप्युत्कृष्टमध्यमजघन्यभेदात्रिधा, रूक्षोऽपि च त्रिधा। तत्र उत्कृष्टस्निग्धोऽतिशीत , मध्यमस्निग्धो नातिशीत , जघन्यशीत स्तोकशीत। जघन्यरूक्ष किंचिदुष्ण , [मध्यमरूक्षो नात्युष्ण ,] उत्कृष्टरूक्षोऽत्युष्ण। एव च—

गिम्हासु चउत्थ देज्जा छट्ठ च हिमागमे। वासासु अट्ठम देज्जा तवो एस जहन्नओ ॥
गिम्हासु छट्ठ देज्जा अट्ठम च हिमागमे। वासासु दसम देज्जा एस मज्झिमओ तवो ॥
गिम्हासु अट्ठम देज्जा दसम च हिमागमे। वासासु दुवालसम एस उक्कोसओ तवो ॥

एस नवविहो ववहारो।

२१—21 सो य इमो त्ति सुयववहारो। आपत्ति प्रायश्चित्तयोग्यता विषया। तपसा द्वादशादिना, कालेन वर्षादिना। अहागुरू—गुरुतम इत्यर्थ। अहालहू—लघुतम।

२१—28 अहाणुपुव्वीए—इत्यस्य व्याख्येयम्—सुत्ताणुसारेणेति।

२१—29 चउमासगहणेण लहु चउमासो वि दट्ठव्वो। 30 छम्मासो—छम्मासग्रहणात् लघुषण्मासोऽपि ज्ञेय। प्रतिपत्ति आपत्ति। 31 तीसा य त्ति—स्थूलतया उक्तम्, अन्यथा सार्धसप्तविंशतिर्वक्तुमुचिता। 33 प्रागुद्दिष्टानि गुरुकादीनि व्याचष्टे गुरुग चेत्यादिना।

२२—2 एतदशक्त मिथ्यादुष्कृतेन शुध्यति। अत एवोक्तम्—सुद्धोव त्ति।

२२—4 सामान्य एव श्रुतव्यवहार उक्तो विस्तरेणाधुना प्राह—तिगनवेत्यादिना।

२२—9 गुरुपक्खे उक्कोसो त्ति—यथा गुरुपदादिवाच्य गुरु[ ]गुरुतरो गुरुतम। एव(स)लहुगे वि—उत्कृष्टादिभेदत्रयम्—उक्कोस-उक्कोसे, उक्कोस-मज्झिमो, उक्कोस-जहण्णो[त्ति] उत्कृष्टे भेदत्रयम्। मध्यमेऽपि भेदत्रयम्—उक्कोसो, मज्झिम जहण्णो त्ति। जहण्णुक्कोसे, जहन्न मज्झ, जहन्न जहन्न इति जघन्ये भेदत्रयम्।

२२—25 एमेवुक्कोसाइ त्ति—लघुतरमध्यमपञ्चविंशतौ नवविधआपत्तिदानयन्त्रगृहनिवेशितायां अट्ठम-छट्ठ चउत्थ-उक्कोसा देय तिह भिन। मध्यमे उत्कृष्टम्, मध्यममध्यमम्, मध्यमजघन्यमिति योज्यम्। तृतीय नयस्लघुस सप्तकसप्तमगृहनिवेशितपञ्चदशा गोचरपङ्क्तौ अट्ठम छट्ठ-चउत्थ-योज्यम्। लघुसतरमध्यमदशके अष्टमगृहनिवेशिते। २। आ०। यथा लघुसजघन्यपञ्चकसप्तके नवगृहे। उ० १, आ० १, ए०। सगणायामेक्काणि सि 33 गाथोक्त योज्यम्। सप्तविंशतिभेदेषु वर्षासु दानमुक्तम्।

२३—1. अधुना शीतकालाश्रित दानमाह—सिसिर इत्यादिना। दसम उववासचतुष्टयम्। आदौ धृत्वा।

२३—2 अट्ठोक्कतीय तह चेव त्ति—तपार्थसागमप्रविभागरूपस्य एकदेशस्य वा एकादिपदात्मकस्य–अप-गमणमवस्थाम्। शेपस्य पुष्पादिपदयज्ञातरूपस्यैकदेशस्योर्ध्वं गमः यस्यां रचनायां सा समयपरिभाषयापक्रान्तिरुच्यते। यथा शिशिरे जघन्यतः षष्ठम्, मध्यमतोऽष्टमम्, उत्कृष्टतो दशमम्। २। ३। ४। एषां मध्यादेकदेशः षष्ठलक्षणोऽपक्रामति अपतिष्ठते। अष्टम-दशमे ऊर्ध्वं यथासु गच्छतः। तृतीय तु अप्रेतः[द्वाद]श मील्यते। ततश्च जघन्यतोऽष्टमम्, मध्यमस्तु दशमम्, उत्कृष्टस्तु द्वादशं तपो यथासु कुर्वन्ति।

२३—3 अट्ठममाइ गिम्हे इत्यादि—अष्टम उपवासत्रयमादौ कृत्वा निर्व्वीय पर्यन्ते यथा–लघुस पञ्चकपरके नवमपदे। सयासय त्ति—स्वकीया सदा ज्ञेया आपत्तय। असहोरेकैकहासासावस्कार्य यावत् स्थितमेकैकम्। उ०। आ०। ए०। नि०।

२३—8 परट्ठाण देज्ज त्ति—आधाकर्मादासेवाप्राप्तम्। इह नवविधश्रुतव्यवहारे वर्षा–शिशिर–ग्रीष्मरूप-कालतया सप्तविंशतिभेदेषु आपत्तिदान दर्शितम्। अर्थापत्त्यान्तरपि तथा वाच्या।

२३—14 कालं वा सहेज्ज त्ति—प्रतीक्षेत।

२३—16 अणहीयगीसीहो अग्गीयत्थो। इतरो गीतार्थः।

२३—21 धिइ धृतिधैर्यतोऽवष्टम्भ। संहनन वज्रऋषभनाराचादि। धीइए संघयणेण य सपन्नो पढमो, न धिईए न संघयणेण य अन्त्य, मध्यवर्ति द्वयम्—धृत्या न संहननेन, नद्यो(न धृत्या)संहननेन सम्पन्न इति द्वयगतो वाच्यम्।

२३—25 विकल्पपयकमपि व्याचष्टे आयतरगो इत्यादिना—जो ज तवोकम्म आढवेइ तमित्थरइ स आयतरग। इदोऽपि वैयावृत्त्ये तप एव करोति न वैयावृत्त्यम् इत्यायतरग। परतरस्तपस्यपि शक्त परं न करोति, किन्तु वैयावृत्त्यमेव विधत्त। पञ्चमभङ्गव्याख्यामाह—अन्नतरतरग(27)इत्यादिना।

२३—30 कल्पस्थितादय सर्वेऽष्टौ ८। कल्पोऽवस्थितसमाचार। तत्र स्थितास्तत्परिपालनोद्यता।

२३—33 कयरे ते दशभेदा[?]—इमे वक्ष्यमाणा—(१)अविद्यमान चेल वस्त्र यस्यासावचेलकस्तद्भाव आचेलक्यम्। सचेलत्वेऽप्यचेलव्यपदेश। दृश्यते च विवक्षितवस्त्राभावे सचेलत्वेप्यचेलव्यवहार। यदाह—

'जल(ह)जलमवगाहंतो बहुचेलो वि सिरिवेढियकडिल्लो। भण्णइ नरो अचेलो तह मुणओ संतचेलावि॥
तह थोवजुण्णकुच्छियचेलेहिं वि भन्नए अचेलो त्ति। जह तर सालिय लहु देयो त्ति नग्गि यामो त्ति॥'

(२)उद्देसेन साधुसकल्पेन निवृत्तमौद्देशिक आधाकर्म। (३ ४) सय्यया वसत्या तरति ससारसागरमिति शय्यातर। स च राजा नृपश्चक्रवर्त्यादिस्तयो पिण्ड समुदानमिति शय्यातरराजपिण्ड। (५) कृतिकर्म वन्दनकम्। (६) तथा व्रतानि महाव्रतानि। (७) ज्येष्ठो रत्नाधिक। (८) प्रतिक्रमण आवश्यककरणम्। (९) मास मासकल्प। (१०) परि–सर्वथा वसनमेकत्रनिवास स निरुक्तविधिना पर्युषणम्। इति दशविध कल्पो भेद। तम्मि ठिया पकप्पट्ठिया—दशविधकल्पे स्थिता इत्यर्थं। अत्र च प्रथमचरमजिनसाधवो दशस्वपि स्थिता एव। द्वाविंशतिमध्यमजिनसाधवो विदेहजाश्च दशकमध्यात् शय्यातरपिण्डचातुर्यामपुरुषज्येष्ठवन्दनकरणाख्यचतुर्षु स्थिता, षट्सु चास्थिता। यथा आचेलक्यौद्देशिकप्रतिक्रमणराजपिण्डमासपर्युषणाकल्पे च वर्षाकालसमाचारा मध्यमजिना २२ विदेहजाश्चास्थिता, सततसेवनीयतया। दशानां मध्यात् कानिचित् स्थानानि कदाचिदेव पालयन्तीत्य-नियतव्यवस्थास्वभा[वा]न्ने, अतो मध्यमजिनसाधवो महाविदेहजाश्चाकल्पस्थिता। यतोऽनवस्थितसमाचारोऽकल्पोऽभिधीयते।

२४—4 जोगवियसरीर त्ति—परिकर्मितदेहा।

२४—11 बहुतरया भिक्खुणो त्ति—बहव बहुभेदा इति भाव। अत्र आचार्यकृतकरणादि पुरुष-विभागेन श्रुतव्यवहारतो जीतकल्पयन्त्र विरचयम्। 'एय मज्झ गहिय'त्ति अनया गाथया यन्त्रकमध्यवर्ति पंचम-पंक्तिगतोगृहीतपञ्चमपंक्तावेवास्या गाथाया अर्थो निपततीत्यर्थ।

२४—14 तिरियायए—तिर्यग्दीर्घाणि त्रयोदशगृहाणि कृत्वा अहो एग घरय च—वामपार्श्वे एक पंक्तिमित्यर्थ। अहो एकेकघरयवुड्ढीए वामपार्श्वत सव्वाइए निरवेक्ख जिनकल्पिक विन्यसेत्। द्वितीयपंक्तेरुपरि

आचार्य कृतकरण । तृतीयपक्तेरुपरि आचार्योऽकृतकरण । चतुर्थ्या उपाध्याय कृतकरण । पञ्चम्या उपाध्यायो ऽकृतकरण [षष्ठ्या गीतार्थस्थिरकृतकरण] भिक्षु । सप्तम्या गीतार्थस्थिराकृतकरणभिक्षु । अष्टम्या गीतार्थास्थिरकृतकरणभिक्षु [नवम्या गीतार्थास्थिराकृतकरणभिक्षु । दशम्या अगीतार्थस्थिरकृतकरणभिक्षु । एकादश्या अगीतार्थस्थिराकृतकरणभिक्षु । द्वादश्या अगीतार्थास्थिरकृतकरणभिक्षु] त्रयोदश्या अगीतार्थास्थिराकृतकरण भिक्षु । एव स्थापितदाहिणट्ठियपणुवीसइ सत्त्व भिन्नमास निव्वीयसनियाओ, वामपार्श्ववर्ति अट्ठमभत्त तत्थ छग्गुरु सन्निय जीतदाण नेय । पचमपतीए ।

२५—11. तहिं चेव अवराहे त्ति कोऽर्थ ? तदेवापराधमाश्रित्येत्यर्थ । पुरुषा —आचार्योपाध्यायवृष भभिक्षुक्षुल्लकभेदत पञ्चविधास्तानाश्रित्येति भाव ।

२५—25 खित्तं छिन्नमडंबं त्ति—अर्द्धतृतीयजोयणभ्यन्तरे जत्थ वसिम अन्न नत्थि त छिन्नमडम्ब । सर्वतोऽर्धग्रामसन्निवेशान्तरं मडम्बमित्यन्ये । ओमं परिपूर्ण यत्र भक्तादि न लभ्यते । दुर्भिक्षं यत्र सर्वथा न लभ्यते ।

२५—27 तमणंतर त्ति निकटवर्ति ।

२५—36 आलोचनाकाले जया गूहइ त्ति—सर्वथैव न प्रकाशयति । पलिउंचइ व त्ति—अर्धकथित करोति ।

२६—1 बहुगुणेसु त्ति—समर्थेषु । गुरुसेवा—अशुभ प्रति प्रधानसेवा ।

२६—8 छेदार्ह प्रोच्यते—तवगव्विउ० गाहा । [८०]

२६—11 अइपरिणामगो—अपवादरुचि ।

२६—12 उत्कृष्टां तपोभूमिं समईओ त्ति—अधिकतपोदानयोग्यो जात । सवि (साव०) शेष च यस्य चरण तस्यातिचारदूषितमतपर्यायस्य च्छेद क्रियते ।

२६—23 आकुट्टिरुपेत्यकरणम्, तया पञ्चेन्द्रियवध कृत । दर्पेण मैथुनसेवन च । सतीवादमस्या नाशयामीति बुद्धया स्त्रीसेवनायाम् । मृषावादे कूटसाक्षित्वादिदानत । अदत्ते निधानाद्यपहरति । सचित्ताचित्तगोचरं परिग्रह च गृह्णाति ।

२६—27 मूलगुणान् द्विनादिभेदेन बहुविधान बहुशो अनेकश शोधयति । सर्वशकादीन् करोति । इति दर्शनवमक ।

२६—32 गृहस्थलिंग—कच्छाबन्धन तल्लकट्टशिरसि विधानादि कौतुकेन कुरुते । अन्यतीर्थिका —शाक्यतापसादयस्तेषां लिङ्ग तद्वेषकरण जटादिवेषकरणत । स्त्रीणां गर्भसाधान शाटनं च औषधादिकरणतो मूलकरण तोऽमी (?)।

२६—34 विहियतवे त्ति—विहित दत्त गुरुणा तपो यस्य सविहिततपास्तदूर्ध्वं छेदमूलानवस्थाप्य पाराञ्चिकानि प्राप्तस्यापि भिक्षोर्मूलमेवेत्यर्थ । तथा आचार्योपाध्याययो पाराञ्चिकप्राप्तावप्यनवस्थाप्यमेव भवति । यदुक्त भाष्ये—

'इत्थ य जइ नवदसमे आवन्नस्सावि भिक्खुणो मूल । दिज्जइ तहाभिसेगे परं पय होइ नवमं तु ॥'

२७—5 अनवस्थाप्याख्य । अनवस्थाप्ये उक्कोसं० गाहा । [८७]

आसेवितातिचारसनविशेष । सच्च अनाचरिततपोविशेषस्तद्वोपोपरतोऽपि महाव्रतेषु नावस्थाप्यते नाधिक्रियत इत्यनवस्थाप्य । तदतिचारजात तच्छुद्धिरपि वा अनवस्थाप्यमुच्यते । नवम प्रायश्चित्तम् । तत्र स्तैन्यकरणे किं सूत्रेऽनवस्थाप्यमुक्तम् ? उक्तमेवेत्यादि ।

तत्थोत्यादि—गाथापूर्वार्द्धेन साधर्मिकस्तैन्ये प्रायश्चित्तमुक्तम् । तत्र सूत्रपदस्यायमर्थ —साधर्मिका साधवस्तेषां सत्कस्योत्कृष्टोपधे शिष्यादेर्वा । बहुशो वा प्रद्विष्टचित्तो वा । तेन्न त्ति—स्तेय-चौर्यं कुर्वन् अनवस्थाप्य ।

अन्यधार्मिका —शाक्यादयो गृहस्था वा । तेषां सत्कस्योपध्यादे स्तेय कुर्वन् । अयमर्थोऽन्यधार्मिकयो लिंगिगृहस्थरूपयो सत्क स्तेयमाहारोपधिशिष्यादिगोचरं त्रिधातत्कुर्वन् । अथोत्तरार्धेन—हत्थायालो गहिओ-स च त्रिधा—अत्थायाण दलमाणे, हत्थालव दलमाणे, हत्थायाल दलमाणे त्ति । क्रमेण व्याख्या—

अत्थायाणं—अर्थादान द्रव्योपादानकरण अष्टाङ्गनिमित्त तद्दत्प्रयुञ्जान इत्यर्थ । अत्र कथानकमात्रम्—

उज्जेणी उस्सन्न दो घणिया पुच्छिऊण आयरियं । ववहारं ववहरंती ताहे सो वेति साहेह ॥ १ ॥
तस्स य भगिणीपुत्तो भोगभिलासीओ मुचए लिंग । तो अणुकंपा भणई-किं कहियि त विणत्थेण ॥ २ ॥
सा वय ते घणिए, भणाहि—अत्थ पयच्छह मज्झम । तेण य गतु भणिया तो वेति येइ अह एक्को ॥ ३ ॥
फलो अत्थो अम्ह किं सउणी रूवए इह दगई । पीओ चगोरि भरेवि गिगउ ऊलयाण तु ॥ ४ ॥
गिण्हिसु जावइयाई पम्मत्ती गहिय तेन जावद्दो । विइयमि हायणगी किं गिण्हामो त्ति वे विंति ॥ ५ ॥
भणिओ सउणी इत्तो तणकट्ठ पत्थरूयरूपासे । नेहगुलपममाई अन्तो नयरस्स द्वावेहि ॥ ६ ॥
विइउ य तेहिं भणिओ सव्वदाणेण गिण्ह तणकट्ठ । नगरमहि ठावायय गहिएणुवरिं च वायासु ॥ ७ ॥
डइएसु नेहेसु पत्तिसे दड्ढ तओ उ त नगरं । तणकट्ठाण पुजो अइव महग्घो उ सो जाओ ॥ ८ ॥
दड्ढगियरस्स सव्व ताहे सो गतु भणइ आयरिय । उच्छाहिओ अहोइ किं तु न नाय इग तुब्भे ॥ ९ ॥
किं सउणी य निमित्त इग ति अम्ह ति भणइ नेमित्ती । होइ फयानि तहमय रूठ नाउ तओ खामे ॥ १० ॥

चूर्णौ भव्वग त्ति भागिनेय । प्रतिभग्नो व्रतपालनात्। चगोडगो च्छयदय रूवई भरिय मवलाण घेत्तूण उवट्ठिओ । तदनु घृतगुडादिपण्यस्य पत्तनान्तर्मध्ये राह्नोपदेश दत्तवान् । द्वितीयस्य रूपकदानुर्वेरातृणकाष्ठादीनां संग्रह पत्तनाद् बहिश्चादुपदिष्टवान् । पत्तनान्तर्दग्धपण्यस्य सम्मुख भवीति किं शकुनिका निमित्त ददते । एवंविधार्थोपा दानकारिण पुरुषस्याभ्युत्थितस्य मतग्रहणाय तत्र क्षेत्रे प्रायश्चित्त दातु न कल्पते ।

२७—14 **हत्थालम्बो त्ति**—हत्थाल न इव हत्याल्बस्य ददत् । अशिवपुररोधा(धा)दौ तत्प्रशमनार्थमभिचारु कमन्त्रविद्यादि प्रयुङ्क्ते इत्यर्थ । **हत्थायालो त्ति**—हस्तेन आताडन हस्तातालस्त क्लमाणे ददत् । यष्टिमुष्टिल गुडादिभिर्मरणादिनिरपेक्ष आत्मन परस्य वा प्रहरणमिति भाव । तत्र

आयरियस्स विणासे गच्छे अहवावि कुलगणे संघे । पर्चेदियवोरमण पि काउ णित्थारण कुज्जा ॥
एव तु करेंतेण अव्वोच्छित्ती कया उ तित्थमि । जयवि सरीरावाओ तहवि य आराहओ सो उ ॥

अन्यस्तु सामर्थ्ये सति आगाढेऽपि प्रयोजने न प्रयुङ्क्ते य स विराधक ।

२७—21 **फीरइ०** गाहा [८९] सो य आचार्यादि । **एत्थ चउभगो त्ति**—दव्वलिंग भावलिंगपदद्वयेन भङ्गचतुष्टय यथा—दव्वलिंगेन रजोहरणादिना अणवट्ठप्पो महाव्रतादिना भावलिङ्गेन च । १ । दव्वलिंगेणाऽण०, न भावलिंगेनेति शून्य । २ । भावलिङ्गेन अनवट्ठप्पो न दव्वलिंगेण । ३ । भावलिंगेण अणवट्ठप्पो, असंभवि भगोऽय ।४।

२७—24 सपक्खपरपक्खे प्रदुष्टस्तैन्यादिदोषे स्तैन्यद्वय सूचितम् । १ । खपक्षपरपक्षघातनोद्यतो निरपेक्षतया अनेन हस्तातालो गृहीत । हत्थालवो अत्थादाणो य इत्यनेन तृतीयभङ्गमाह । द्वितीयचतुर्थभङ्गौ असंभविनौ ।

२७—28 **जहा अत्थादाणिओ त्ति**—योऽर्थमुत्पादयति निमित्ता स । **उत्तमट्ठेत्यादि । तत्थेव त्ति**—स्वस्थाने । ओसन्नाइ अपरस्स स्वस्थानत्यागे सति भावलिङ्ग धीयते ।

२७—35 संघाधिक्षेपो जात्यादिना ज्ञेय ।

२८—4 **सुहसाय त्ति** सुखस्वाप ।

२८—2 **न जईण ति**—वचच्छला इति योज्यम् ।

२८—7 आशातनया तपोऽनवस्थाप्य कियता कालेन स्यादित्याह—**जहन्नेणेत्यादि** । एतावत्कालादूर्ध्व असौ व्रतेषु स्थाप्यते ।

२८—12 **तवस्सी य त्ति**—तपोऽन्वित ।

२८—14 **निज्जूहणारिहो त्ति**—गच्छात्पृथक्करणार्ह स । सूत्रे सव्वो वि ति पदम् ।

२८—17 आशातना-प्रतिसेवानवस्थाप्यो द्विप्रकारोऽपि मूलाह उक्त उत्सर्गत । अववाएण कुलादि-कार्यकारी । तदधीनानि कार्याणि । उत्तम कार्य बहुजनसाध्य राज्ञनादितकार्यमुच्यते । तत्प्रसाधित येन भवति ।

सवासो से कप्पइ त्ति—[मूलसूत्रस्थ वाक्यमिद]—एकत्र निवसन गच्छमध्ये तस्य कल्पते । आलपनसंभाषणादीनि । अयमत्र भावार्थ —गाथोक्तवन्दनादिक्रियाकरणसंभाषणादिक्रियापरिहारेण च एकत्र सवसनमात्र मुक्त्वा तपस अनवस्थाप्यलक्षणस्य विधिना प्रतिपत्ति स्वीकारोऽनवस्थाप्यतप प्रतिपत्ति ।

२८—20 तत्प्रतिपत्तौ विधिमाह—**पसत्थदव्वेत्यादिना**—परिहारतव पडिवज्जतो दव्वाइ अपसत्थे वज्जित्ता पसत्थेसु दव्वाइसु काउस्सग्गो कीरइ। तत्थ दव्वओ वडमाइखीररुक्खे। खेत्तओ इक्षुशालिक्षेत्रकुसुमितवनखड प्रदक्षिणावर्तजलपद्मसरश्चैत्यजिनगृहादिषु। कालओ पुव्वसूरे पसत्थाइदिणेसु य। भावओ चदतारावलेसु। तत्रापि सन्ध्यागतादिदिनवर्ज आलोचना प्रयुक्ते। यत उक्तम्—

'सझागय रविगय विड्डेरं सग्गह विलविं च। राहुहय गहभिन्न च वज्जए सत्तनक्खत्ते॥'

अत्र **लोकश्रीटीकाकारव्याख्या**—सूर्ययुक्तादनन्तरनक्षत्र सग्रहणम्। सूर्यास्तगमनकाले यन्नक्षत्रमुदय मुपयाति तद्विलम्बितम्। राहुणा मुखेनाक्रान्त पुच्छेन वा तद्राहुहतम्। अन्ये त्वाहु—यस्मिन् नक्षत्रे ग्रहणमा सीत्तयावद् रविणा न युक्त तावत्तद्राहुहतमिति। ग्रहभिन्न यन्मध्ये ग्रहो विभिद्य निर्गच्छति। केचिच्छकटभेदमेव ग्रहभेद इत्युदाहरन्ति। अन्ये त्वत्रैव ब्रुवते—यथा—

'जम्मि रविनक्खत्ते ततो सझागय तु चउदसम। विड्डेरं तु निइज्ज होइ चउत्थ विलविं च॥'

अन्यस्त्वाह—'सर्वविरुद्धे दिवसे यद्येको भवत्यमृतयोगस्तु। हिमवद्दिनकरकिरणै सर्वे दोषा प्रलीयन्ते॥'

कालत प्रतिपत्तिश्चास्य तपसो जहन्नेण मासो उक्कोसेण छम्मासा। तमि परिहारतव पडिवज्जतो आयरिओ भणइ—अणवट्ठप्पतवस्स निरुवसग्गनिमित्त ठामि काउस्सग्ग। 'अन्नत्थूससीएण'मित्यादि कायोत्सर्गदण्डको वाच्यो जाव वोसिरामि। 'लोगस्सुज्जोयरं' अणुपेहित्ता, 'नमो अरहताण'ति पारित्ता, 'लोगस्सुज्जोयरं' कड्डित्ता आयरिओ भणाइ—

'एस तव पडिवज्जइ न किंचि आलवइ, मा य आलवह। अत्तट्ठ(ट्ठ)चिंतगस्स उ वाघाओ भे न कायव्वो॥'

अस्यार्थ —एस अप्पविसुद्धिकारओ परिहारतव पडिवज्जइ। एस तुब्भे न किं चि आलवइ। तुब्भे वि एयं मा आलवह। एस तुब्भे सुत्तत्थेसु सरीरवट्टमाणीं वा न पुच्छइ। तुब्भे वि एय मा पुच्छह। एव च आत्मार्थचिन्तकस्य ध्यानपरिहारक्रियाव्याघातो न कर्तव्य। वन्दन कुरुते भवताम्, न चासौ भवद्भिर्वन्द्य। खेलकाइयसन्नामत्तग या न सो देइ। तस्सतिओ वा न घेप्पइ। उवगरण परोप्परं न पडिलेहति। सघाडगा परोप्परं न भवति। भत्तपाण परोप्परं न करेंति। एगमडलीए न भुजति। यच्चान्यत् किंचित्करणीय तत्तेन सार्ध न कुर्वन्ति। गीयत्था परिहारिया तस्स गच्छतस्स सव्वत्थ अणुगच्छति। पारणकदिने अलेवकड पारेइ। सयमाणीय निद्दिट्ठभणेण वा। इत्यन घस्थाप(प्य)विधिरुक्ता॥

२८—27 अधुना **पाराञ्चिकमभिधीयते**—तत्र पार तीरं तपसोऽपराधस्याधति गच्छति। ततो वीक्ष्यते य स एव पाराचिकस्तस्य यदनुष्ठान तच्च पाराञ्चिकमिति। दशम प्रायश्चित्तम्। लिङ्गक्षेत्रकालतपोभिर्बहि करणमिति भाव। तत्र पाराञ्चिकेत्यादि—इह सूत्रे प्रतिषेधक्पाराञ्चिक एव त्रिविध उक्त। तदुक्तम्—

'पडिसेवणा पारंची तिविहो सो होइ आणुपुव्वीए। दुट्ठे य १, पमत्ते य २, नायव्वे अन्नमन्ने य ३॥'

तत्र दुष्टो दोषवान्—कषायतो विषयतश्च। पुनरेकैको द्विधा—स्वपक्षपरपक्षभेदात्। उक्त च—

'दुविहो य होइ दुट्ठो—कसायदुट्ठो य विसयदुट्ठो य। दुविहो कसायदुट्ठो सपक्खपरपक्ख-चउभगो॥'

स्वपक्षकषायदुष्ट परपक्षकषायदुष्ट। १। स्वपक्ष०, न परपक्ष०। २। न स्वपक्षदुष्ट, परपक्षदुष्ट। ३। न स्वप०, न परपक्षदुष्ट। ४। चतुर्थ शून्य।

कोह करेंतो कसायदुट्ठो। तत्थ सपक्खे कषायदुट्ठस्स इमे सासवनालाई चत्तारि उदाहरणा।

२८—34 **तत्थ सासवनालेत्ति**—सा[स]वा भज्जिया। एगेण साहुणा भिक्खागएण सासव नालमेत्थ सुसभ्य लद्ध। तत्थ से अईव गिद्धी। तेण त गुरुणो उवणीय। तच्च गुरुणा सव्व भुत्त। इयरस्स कोवो जाओ, भडिय च। गुरुणा सो खामिओ तहा वि न उवसतो। भणाइ य—भजामि ते दंता। गुरुणा चिंतिय—मा एस म असमाहीए मारिस्सइ त्ति गणे अन्न आयरिय ठवित्ता अन्न गण गतु अणसण पडिवन्न। पुच्छइ ते साहू कत्थ मे गुरवो। पुच्छति कहिं गओ गुरू। न कहिंति साहवो। सो अन्नओ सोधा गओ जत्थ गुरवो। तेहिं कहिय—अज्ज चेव कालगओ परिट्ठविओ य। ताहे पुच्छइ—कत्थ से सरीरय गुरुणो। पुव्वकहिओ भजतो भणाइ—सासवनाल खाइसि त्ति। एय करेंतो दिट्ठो॥ १॥

मुहणंतए य त्ति—एगेण साहुणा लद्ध मुहणतग । आणिय त गुरुणा गहिय । इत्थ वि सव्व पुव्वखाणगस-रिष । नवरं त मुहणतग पच्चप्पिणतस्स न गहिय जीवते गओ राओ । साहुविरह लभित्ता, गेण्हसि भणतो, गाढ गले गिण्हइ । समूढेण गुरुणा वि सो गहिओ । दोवि मया ॥ २ ॥

सिहरिणि त्ति—एगेण साहुणा उक्कोसा मज्जिया सिहरिणी लद्धा । गुरुणो आलोइया निमतिया । गुरुणा सव्व आवीया । से साहू पत्थरं उग्गिरित्ता आगओ । अन्नेहिं वारिओ । तहावि अणुवसतो । गुरुणा सगणे चेव भत्त पच्चक्खाण, नो अन्न गच्छ गओ ॥ ३ ॥

उल्लुयच्छिओ त्ति—एगो साहू अत्थ गए सूरिए सीवतो गुरुणा भणिओ-पेच्छसि उल्लुगच्छी । सो रुट्ठो भणइ-एव भणतस्स दोवि अच्छीणि ते उद्धरामि । एत्थ वि गुरुणा खामिओ । नोवसतो भणइ-ते अच्छीणि उद्धरामि । तओ सो रओहरणाओ अयोमय किलय कड्ढिऊण दोवि अच्छीणि उद्धरित्तु छोवेइ ॥ ४ ॥

एए चउरो वि लिंगपारची । विसयदुट्ठे वि चउभगो त्ति—यथा सलिंगी सलिंगसाध्वीं सेवते । १ । सलिंगी गिहिलिंगीस्त्रीं । २ । सलिंगी अन्नलिंगे परिव्राजिका । ३ । अन्नलिंगी अन्नलिंगे । ४ । शून्योऽय । परपक्षकषाय दुष्टस्तु राजवधक उदायिनृपमारकवत् । सपक्षविषयदुष्टस्तु साध्वीकामुक । स च—

पावाण पावयरो दिट्ठिब्भासो वि सो न कप्पइ हु । जो जिणमुद्द समणिं नमिऊण तमेव धरिसेइ ॥

परपक्षविषयदुष्टस्तु—राजगमहिष्यधिगन्ता, अमात्ययुवराजसेनापत्यायमहिषीसेवकश्च । **दुट्ठे पारंचिए त्ति** व्याख्यातम् ।

सम्प्रति **मूढे पारंचिए त्ति** व्याख्यायते [**गाथा ९६**]—स्त्यानर्द्धिनिद्राप्रमादवान् प्रमत्त मूढोऽपि च एवात्र व्याख्येय —पचमनिद्रापरो य अतिसक्लिष्टपरिणामात् स्त्यानर्द्धिनिद्रोपगतो दिनदृष्टमर्थमुत्थाय प्रसाधयति । **वावारए त्ति**—व्यापारयति । तदुदये च केसवार्धबलसदशी शक्तिर्भवति प्रथमसहननिन । चूर्णिकृद्प्यमे पारां-चिकविधौ **पमत्तपारंचिए** इति पाठ दर्शयिष्यति ।

२९—१ **पोग्गलेत्यादि**—पोग्गल-मस १ मोदगा-लड्डुया २ द ता-हत्थिदता ३ फरुसगो-कुम्भकारो ४ वडसाला-डाली ५ एते थीणद्धीए उदाहरणा ।

तत्थ **पोग्गले** जहा-एगमि गामे एगो कुडुबी । पक्काणि य तेलियाणि य तिमण्णेसु य अणेगसो मसप्पगारा भक्खेइ । सो य तहारूवाण थेराण अतिए धम्म सोऊण पव्वइओ । विहरइ गामाइसु । तेण य एगत्थगामे मसत्थि-एहिं महिसो विगिंचमाणो दिट्ठो । तस्स मसे अभिलासो जाओ । सो तेण अभिलासेण अव्वोच्छिन्नेण भुत्तो । एव अव-वच्छिन्नेण वियारभूमिं गओ । चरिमा सुत्तपोरुसी क्या । पाउसीयावस्सया कया । तदभिलासी चेव सुत्तो । सुत्तस्से य थीणद्धी जाया । सो उट्ठिओ गओ महिसमडल । अन्न हतु भक्खिय सेस आगतु उवस्सयस्सोवरि ठविय । पच्चसे गुरूण आलोएइ—एरिसो सुविणो दिट्ठो । साहूहिं दिसावलोय करितेहिं दिट्ठ कुणिम । जहा एस थीणद्धी । थीणद्धिस्स लिंगपारंचिय पायच्छित्त । त से दिन्न ॥ १ ॥

मोयगे त्ति—एको साहू भिक्ख हिंडतो मोयगभत्त पासइ । सुचिरं उविक्खिय न लद्ध । गओ जाव तद-ज्झवसिओ सुत्तो । उप्पन्ना थीणद्धी । राओ त गिह गतु भतूण त कवाड मोयगे भक्खयति । सेसे पडिग्गहे घेत्तुमागओ । वियडण । चरिमाए भायणाणि पडिलेहतेण दिट्ठा । एयस्स लिंगपारंचिय ॥ २ ॥

दंते त्ति—एगो साहू गोपुरनिग्गओ हत्थिणा पक्खित्तो कहवि पलाओ । रुट्ठिओ चेव पसुत्तो । उदिन्ना थीणद्धी । उट्ठिउ गओ, पुरक्वाडे भतूण गजो घावाइओ । दतमुसले गहेऊणमुवागओ । उवस्सयबाहिं ठवित्ता पुणरवि पासुत्तो । पभाए उट्ठिओ सुविण आलोएइ । साहूण गयदतदरिसण नाय । तहेव विसज्जिओ ॥ ३ ॥

फरुसग त्ति—एगम्मि महते गच्छे कुम्भकारो पव्वइओ । तस्स राओ सुत्तस्स थीणद्धी उइन्ना । सो य मट्टी-यच्छेयब्भासा समीवत्थाण साहूण सिराणि छिंदिउमारद्धो । ताणि सिराणि कलेवराणि य एगते पडइ । सेसा ओस रीया । पुणरवि पासुत्तो । सुविणमालोयण । पभाए साहुसभारण नाय । दिन्न च से लिंगपारंचिय ॥ ४ ॥

२८—20 तत्प्रतिपत्तौ विधिमाह—**पसत्थदव्वेत्यादिना**—परिहारतव पडिवज्जतो दव्वाइ अपसत्थे वज्जिता पसत्थेसु दव्वाइसु काउस्सग्गो कीरइ। तत्थ दव्वओ वडमाइखीररुक्खे। खेत्तओ इक्खुसालिक्खेत्तकुसुमितवणखंड प्रदक्षिणावर्तजलपद्मसरश्चैत्यजिनगृहादिषु। कालओ पुव्वसूरे पसत्थाइदिणेसु य। भावओ चंदतारावलेसु। तत्रापि सन्ध्यागतादिदिनवर्जे आलोचना प्रयुक्ते। यत उक्तम्—

'संझागय रविगय विड्डेरं सग्गह विलंबि च। राहुहय गहभिन्न च वज्जए सत्तनक्खत्ते॥'

अत्र **लोकश्रीटीकाकारव्याख्या**—सूर्ययुक्ताद नन्तरनक्षत्र समहणम्। सूर्यास्तगमनकाले यन्नक्षत्रमुदय मुपयाति तद्विलम्बितम्। राहुणा मुखेनाक्रान्त पुच्छेन वा तद्राहुहतम्। अन्ये त्वाहु —यस्मिन् नक्षत्रे ग्रहणमासीत्तयावद् रविणा न युक्त तावत्तद्राहुहतमिति। ग्रहभिन्न यन्मध्ये ग्रहो निभिद्य निर्गच्छति। केचिच्छकटभेदमेव ग्रहभेद इत्युदाहरन्ति। अन्ये त्वन्यैव ब्रुवते—यथा—

'जम्मि रविनक्खत्ते ततो संझागय तु चउदसम। विड्डेरं तु निइज्ज होइ चउत्थ विलंबि च॥'

अन्यस्त्वाह—'सर्वविरुद्धे दिवसे यद्येको भवत्यमृतयोगस्तु। हिमवद्दिनकरकिरणे सर्वे दोषा प्रलीयन्ते॥'

कालत प्रतिपत्तिश्चास्य तपसो जहन्नेण मासो उक्कोसेण छम्मासा। तमि परिहारतव पडिवज्जतो आयरिओ भणइ—अणवट्ठप्पतवस्स निरुवसग्गनिमित्त ठामि काउस्सग्ग। 'अन्नत्थूससीएण'मित्यादि कायोत्सर्गदण्डको वाच्यो जाव वोसिरामि। 'लोगस्सुज्जोयरें' अणुपेहित्ता, 'नमो अरहंताण'ति पारित्ता, 'लोगस्सुज्जोयरें' कड्ढित्ता आयरिओ भणाइ—

'एस तव पडिवज्जइ न किंचि आलवइ, मा य आलवह। अत्तस्स(ट्ठ)चिंतगस्स उ वाघाओ भे न कायव्वो॥'

अस्यार्थ —एस अप्पविसुद्धिकारओ परिहारतव पडिवज्जइ। एस तुब्भे न किं चि आलवइ। तुब्भे वि एयं मा आलवह। एस तुब्भे सुत्तत्थेसु सरीरवद्धमाणीं वा न पुच्छइ। तुब्भे वि एय मा पुच्छह। एत च आत्मार्थचिन्तकस्य ध्यानपरिहारक्रियाव्याघातो न कर्तव्य। वन्दन कुरुते भवताम्, न चासौ भवद्भिर्वन्द्य। खेलमाइयसमायत्तग वा न सो देइ। तस्सतिओ वा न घेप्पइ। उवगरण परोप्परं न पडिलेहति। संघाडगा परोप्परं न भवति। भत्तपाण परोप्परं न करेंति। एगमडलीए न भुजति। यच्चान्यत् किंचित्करणीय तत्तेन सार्धं न कुर्वन्ति। गीयत्था परिहारिया तस्स गच्छतस्स सव्वत्थ अणुगच्छति। पारणकदिने अलेवकड पारेइ। सयमाणीय निद्दिट्ठभत्तेण वा। इत्यन**वस्थाप(प्य)विधिरुक्ता॥**

२८—27 अधुना **पाराञ्चिकमभिधीयते**—तत्र पार तीरं तपसोऽपराधस्याञ्चति गच्छति। ततो दीक्ष्यते य स एव पाराञ्चिकस्तस्य यदनुष्ठान तच्च पाराञ्चिकमिति। दशम प्रायश्चित्तम्। लिङ्गक्षेत्रकालतपोभिर्बहि करणमिति भाव। तत्र पाराञ्चिकेत्यादि—इह सूत्रे प्रतिपेधकपाराञ्चिक एव त्रिविध उक्त। तदुक्तम्—

'पडिसेवणा पारंची तिविहो सो होइ आणुपुव्वीए। दुट्ठे य १, पमत्ते य २, नायव्वे अन्नमन्ने य ३॥'

तत्र दुष्टो दोषवान्—कषायतो विषयतश्च। पुनरेकैको द्विधा—स्वपक्षपरपक्षभेदात्। उक्त च—

'दुविहो य होइ दुट्ठो—कसायदुट्ठो य विसयदुट्ठो य। दुविहो कसायदुट्ठो सपक्खपरपक्ख-चउभंगो॥'

स्वपक्षकषायदुष्ट॰ परपक्षकषायदुष्ट। १। स्वपक्षक॰, न परपक्षक॰। २। न स्वपक्षदुष्ट, परपक्षदुष्ट। ३। न स्वप॰, न परपक्षदुष्ट। ४। चतुर्थ शून्य।

कोह करेंतो कसायदुट्ठो। तत्थ सपक्खे कषायदुट्ठस्स इमे सासवनालाई चत्तारि उदाहरणा।

२८—34 **तत्थ सासवनालेत्ति**—सा[स]वा भजिया। एगेण साहुणा भिक्खागएण सासवनालसेलय सुसभृत लद्ध। तत्थ से अईव गिद्धी। तेण त गुरुणो उवणीय। तच्च गुरुणा सव्व भुत्त। इयरस्स कोवो जाओ, भडिय च। गुरुणा सो खामिओ तहा नोवसतो। भणाइ य-भजामि ते दंता। गुरुणा चिंतिय—मा एस म असमाहीए मारिस्सइ त्ति गणे अन्न आयरिय ठवित्ता अन्न गण गंतु अणसण पडिवन्न। पुच्छइ ते साहू कत्थ मे गुरवो। पुच्छति कहिं गओ गुरू। न कहिंति साहवो। सो अन्नओ सोधा गओ जत्थ गुरवो। तेहिं कहिय-अज्ज चेव कालगओ परिट्ठविओ य। ताहे पुच्छइ-कत्थ से सरीरय गुरुणो। पुव्वकहिओ भजतो भणाइ-सासवनाल खाइसि त्ति। एव करेंतो दिट्ठो॥ १॥

मुहणतय त्ति—एगेण साहुणा लद्ध मुहणतग । आणिय त गुरुणा गहिय । इत्थ वि सव्व पुव्वक्खाणगसरिसं । नवरं त मुहणतग पच्चप्पिणतस्स न गहिय जीवते गओ राओ । साहुविरह लभित्ता, गेण्हसि भणतो, गाढ गले गिण्हइ । समुद्देण गुरुणा वि सो गहिओ । दोवि मया ॥ २ ॥

सिहरिणि त्ति—एगेण साहुणा उक्कोसा मज्झिया सिहरिणी लद्धा । गुरुणो आलोइया निमतिया । गुरुणा सव्व आवीया । से साहू परयरं उग्गिरित्ता आगओ । अन्नेहिं वारिओ । तहावि अणुवसतो । गुरुणा सगणे चेव भत्त पच्चक्खाण, नो अन्न गच्छ गओ ॥ ३ ॥

उलुयच्छिओ त्ति—एगो साहू अत्थ गए सूरिए सीवतो गुरुणा भणिओ–पेच्छसि उलुगच्छी । सो रुट्ठो भणइ–एव भणतस्स दोवि अच्छीणि ते उद्धरामि । एत्थ वि गुरुणा खामिओ । नोवसतो भणइ–ते अच्छीणि उद्धरामि । तओ सो रओहरणाओ अयोमय किलय कड्ढिऊण दोवि अच्छीणि उद्धरित्तु ओवेइ ॥ ४ ॥

एए चउरो वि लिंगपारंची । विसयदुट्ठे वि चउभगो त्ति—यथा सलिंगी सलिंगसाध्वीं सेवते । १ । सलिंगी गिहिलिंगीस्त्रीं । २ । सलिंगी अन्नलिंगे परिव्राजिका । ३ । अन्नलिंगी अन्नलिंगे । ४ । शून्योऽय । परपक्षकषायदुष्टस्तु राजवधक उदायिनृपमारकवत् । सपक्षविषयदुष्टस्तु साध्वीकामुक । स च—

पावाण पावयरो दिट्ठिब्भासो वि सो न कप्पइ हु । जो जिणमुद्द समणिं नमिऊण तमेव धरिसेइ ॥

परपक्षविषयदुष्टस्तु—राजगमहिष्यधिगन्ता, अमात्ययुवराजसेनापत्यायममहिषीसेवकश्च । **दुट्ठे पारंचिए त्ति** व्याख्यातम् ।

सम्प्रति **मूढे पारंचिए त्ति** व्याख्यायते [गाथा ९६]—स्त्यानर्द्धिनिद्राप्रमादवान् प्रमत्त मूढोऽपि च एवात्र व्याख्येय —पञ्चमनिद्रापरो य अतिसंक्लिष्टपरिणामात् स्त्यानर्द्धिनिद्रोपगतो दिनदृष्टमर्थमुत्थाय प्रसाधयति । **वावारए त्ति**—व्यापारयति । तदुदये च केसवार्धबलसदृशी शक्तिर्भवति प्रथमसहननिन । चूर्णिकृदग्रमे पारांचिकविधौ **पमत्तपारंचिए** इति पाठ दर्शयिष्यति ।

२९—१ **पोग्गलेत्यादि**—पोग्गल-मस १ मोदगा-लड्डुया २ दन्ता–हत्थिदता ३ फरुसगो–कुम्भकारो ४ वडसाला–डाली ५ एते थीणद्धीए उदाहरणा ।

तत्थ **पोग्गले** जहा–एगमि गामे एगो कुडुवी । पक्काणि य तेलियाणि य तिमणेसु य अणेगसो मसप्पगारा भक्खेइ । सो य तहारूवाण थेराण अतिए धम्म सोऊण पव्वइओ । विहरइ गामाइसु । तेण य एगत्थगामे मसत्थिएहिं महिसो विगिंचमाणो दिट्ठो । तस्स मसे अभिलासो जाओ। सो तेण अभिलासेण अव्वोच्छिन्नेण भुत्तो। एव अवच्छिन्नेण वियारभूमिं गओ । चरिमा सुत्तपोरुसी कया । पाउसीयावस्सया कया । तदभिलासी चेव सुत्तो । सुत्तस्से-य थीणद्धी जाया । सो उट्ठिओ गओ महिसमडल । अन्न हतु भक्खिय सेस आगतु उवस्सयस्सोवरि ठविय । पचसे गुरुण आलोएइ—एरिसो सुविणो दिट्ठो । साहूहिं दिसावलोय करितेहिं दिट्ठ कुणिम । जहा एस थीणद्धी । थीणद्धिस्स लिंगपारंचिय पायच्छित्त । त से दिन्न ॥ १ ॥

मोयगे त्ति—एको साहू भिक्ख हिंडतो मोयगभत्त पासइ । सुचिरं उविक्खिय न लद्ध । गओ जाव तदज्झवसिओ सुत्तो । उप्पन्ना थीणद्धी । राओ त गिह गतु भतूण त कवाड मोयगे भक्खयति । सेसे पडिग्गहे भेत्तुमागओ । वियडण । चरिमाए भायणाणि पडिलेहतेण दिट्ठा । एयस्स लिंगपारंचिय ॥ २ ॥

दंते त्ति—एगो साहू गोपुरनिग्गओ हत्थिणा पक्खित्तो कहवि पलाओ । रुसिओ चेव पसुत्तो । उदिन्ना थीणद्धी । उट्ठित गओ, पुरकवाडे भतूण गजो वावाइओ । दतमुसले गहेऊणमुवागओ । उवस्सयबाहिं ठवित्ता पुणरवि पासुत्तो । पभाए उट्ठिओ सुविण आलोएइ । साहूण गयदतदरिसण नाय । तहेव विसज्जिओ ॥ ३ ॥

फरुसग त्ति—एगमि महते गच्छे कुम्भकारो पव्वइओ । तस्स राओ सुत्तस्स थीणद्धी उदन्ना । सो य मट्टीयच्छेयब्भासा समीवत्थाण साहूण सिराणि छिंदिउमारद्धो । ताणि सिराणि कलेवराणि य एगते पडइ । ओसा ओसरीया । पुणरवि पासुत्तो । सुविणमालोयण । पभाए साहुसंभारण नाय । दिन्न च से लिंगपारंचिय ॥ ४ ॥

वडसालभंजणं ति—एगो साहू भिक्खायरिउ गओ। तत्थ पहे वडसाला रुक्खो। तस्स [illegible] निभेण लघेउ गओ। सो य साहू उम्हाभिहयभालो भरियभायणो तिसयभुखतो इरियोवउत्तो वेगेण आग[illegible] ताए सालखधाए सिरेण फिडिओ। रुसिओ जाव पासुत्तो। थीणद्धी उदिन्ना। उट्ठिओ गओ। गंतूण त [illegible] क्षणमागओ। उवस्सयदुवारे ठविया। वियडणा। नाय थीणद्धी। लिंगपारंची कओ ॥ ५ ॥

केइ आयरिया भणति—सो पुव्व वणहत्थी आसी। तओ मणुयभवमागयस्स थीणद्धी जाया। पु[illegible] गंतूण वडसाला भजणाणय। सेस तहेव। इह स्त्यानर्धौ प्रथमसहननिन केसवार्द्धबलसदृशी शक्तिर्भवति। सामभबला दुगुण तिगुण चउगुण वा भणति।

अन्नमन्नं करेमाणे त्ति—सूत्रपदस्य व्याख्या—अन्योऽन्य परस्परं मुखपायुप्रयोगतो मैथुन कुर्व[illegible] युगमिति विशेष। अन्य (भण्य ?) ते च—'आसयपोसयसेवी केवि मणूसा दुवेयगा हुति।'

तेसिं लिंगविवेगो त्ति—तीर्थकराद्याशातनापरा आशातनापारंची भवति।

चरिमट्ठाणावत्तिसु त्ति [गाथा ९६]—चरिमट्ठाण पारंचियमेव। तत्रापत्तयस्तदतिचारसेवन[illegible] प्रसज्यते, स च पाराञ्चिकार्ह।

२९—*13* **दव्वभावलिंगे चउभंगो त्ति**—द्रव्यलिङ्ग रजोहरणादि, भावलिंग महाव्रतादि। द[illegible] पारंचिओ, भावलिंगेण य १ दव्वलिंगेण पारं०, न भावलिंगेण य २ भावलिंगेण पार०, न दव्वलिंगे[illegible] दव्वलिंगेण पार० न भावलिंगेण य ४ इति। चतुर्थ शून्य। अग्रमहिष्यादिसेवनादौ सप्रकटसेवी।

२९—*14* **उभयलिंगेणावि त्ति**—द्रव्यलिंगेन भावलिंगेन च पाराञ्चिको भवति।

२९—*15* **जत्थु० गाहा [९९]** दोसो मतलोपादिक ॥ क्षेत्राण्येवाह—**वसहीएत्यादि**—वसही-[illegible] निवेसन एकनिष्क्रमणप्रवेशानि द्व्यादीनि गृहाणि। पाटको ग्रामादेर्व्येवच्छिन्न सन्निवेश। साही ग्रामगृहाणामेव[illegible] नियोगो राजकृतपुरदेश, राज्यादिक प्रवेश, इत्येवप्रकारक्षेत्रे यस्य यो दोष सम्पन्नस्तस्माद् क्षेत्रात् [illegible] ञ्चिक क्रियेत्।

२९—*23* **अन्नमन्नं ति**—अन्योन्याधिष्ठासेवनम्।

२९—*28* सूत्रार्थपौरुषी द्वे अपि शिष्येभ्यो दत्वा गुरुस्तस्य समीपे गच्छति।

२९—*31* आचार्यप्रेषितस्य चागीतार्थस्य जत्थ गओ त्ति गव्यूतद्वयस्थितपाराञ्चिकान्तिके। **अतराले** तत्सकाशादागच्छत। **से** त्ति सूरिशिष्यस्य वा भक्त पान च उपनयन्ति साधव।

२९—*35* **अणवट्ठप्पो० गाहा [१०२]** परिहारतवो गिम्हसिसिरवासासु जहन्नमज्झिमुक्कोसो-गिम्हे[illegible] त्थछट्ठट्ठमाइ, सिसिरे छट्ठट्ठमदसमाइ, वासासु अट्ठमदसमबारसताइ, पारणए अलेवकड। एव तप पाराञ्चिक[illegible] यतो अभिहित-**अणवट्ठप्पो तवसा तवपारंचिया दोवि वोच्छिन्न त्ति।** *लिंगक्षेत्रकालैरनवस्थाप्य[illegible] ञ्चिकास्तीर्थं यावदनुज्ञाता।*

'**उद्देसऽज्झयणसुयखंधगेसु**' इत्यादि [२३] गाथात आरभ्य '**झोसिज्जइ सुबहुं पि हु**' इति [७९] पर्यन्तगाथा यावत् सप्तपञ्चाशद्गाथाभिर्ज्ञानातिचार [दर्शनातिचार] चारित्रातिचारवस्तुत्रय[illegible] तवारिह् पायच्छित्त भणिय। तदूर्ध्वं गाथात्रयेण च्छेदार्हं। तदनु गाथाचतुष्टयेन मूलार्हं। तदनु गाथासप्तकेन[illegible] स्थाप्यार्हं। तदनु गाथानवकेन पाराञ्चिकमुक्तमिति शास्त्रसमुदायार्थ।

३०—*1* अथ शास्त्रसमाप्त्यर्थमुपसहारगाथामाह-**इय एस० गाहा [१०३]** क्रियते अभिधीयते[illegible] नेनेति करण शब्द।

जीयकप्पो त्ति—जीतमाचरितव्य सर्वकालधरणा वा जीत, तस्य कल्प। कल्पशब्दो वर्णनाया[illegible] यतः पठ्यते—

'सामर्थ्ये वर्णनायां च च्छेदने करणे तथा। औपम्ये चाधिवासे च कल्पशब्द विदुर्बुधा ॥'

सामर्थ्येऽतो वर्तते कल्पशब्दस्तदर्थधातुनिष्पन्नत्वात् । वर्णनाया यथात्र । यद्वा कल्पितो वर्णित श्लाघित । छेदने कल्पित छेदित वस्त्रम् । करणे ब्राह्मणार्थं कल्पिता कृता पूपा । औपम्ये यथा-समुद्रकल्पमिदं तडागम् । अधिवासे यथा-कल्पिता अधिवासिता स्नानाय सज्जिता प्रतिमा । एतेष्वर्थेषु कल्पशब्द ।

३०—4 परिणामगा—उत्सर्गापवादवेदिन । कडजोगिणो—चउत्थाइ तवे कयजोगा । सग्गह-सीला—वस्त्रपात्रशिष्यादिसङ्ग्रहपरा: । अपरिश्रान्ता अखेदवन्त अङ्गोपाङ्गादिश्रुतार्थवेदिन । श्रुद्धिव तो-मे धाविन । एवमादीनि-आदिशब्दात्परिणता श्रुतेन वयसा च । तत्र षोलवरिसारेण वयसाऽव्वत्तो, परेण वत्तो । श्रुतेन च अधीतनिषीथो व्यक्त', शेषस्तद य । तथा तरमाणगा-जे ज तवोकम्म आढवेति त नित्थरंति तदन्ये तरमाणा इत्यादि ग्राह्यम् ।

३०—20 पावण ति—पवित्रम् । निश्चितसूत्रार्थदायकश्चासौ अमलचरणश्च, तम् ।

॥ इति जीतकल्पचूर्णिविषया [विषमपद-] व्याख्या समाप्ता ॥

जीतकल्पबृहच्चूर्णौ व्याख्या शास्त्रानुसारत ।
श्रीचन्द्रसूरिभिर्दब्धा स्वपरोपकृतिहेतवे ॥ १ ॥
मुनि नयन तरणि (१२२७) वर्षे श्रीवीरजिनस्य जन्मकल्याणे ।
प्रकृतग्रन्थकृतिरियं निष्पत्तिमवाप रविवारे ॥ २ ॥
सघचैत्यगुरूणा च सर्वार्थप्रतिविधायिन ।
वद्गा (विशो ?) ऽभयकुमारस्य वसतौ दब्धा सुबोधकृत् ॥ ३ ॥
एकादशशतविंशत्यधिकश्लोकप्रमाण (११२०) ग्रथाग्र ।
ग्रथकृति प्रविवाच्या मुनिपुगवसूरिभि सततम् ॥ ४ ॥
यदिहोत्सूत्र किञ्चिद् दब्ध छद्मस्थबुद्धिभावनया ।
तन्मयि कृपानुकलितै शोध्य गीतार्थविद्वद्भि ॥ ५ ॥

॥ समाप्ता चेयं श्रीशीलभद्रप्रभुश्रीधनेश्वरसूरिपादपद्मचंचरीक श्री श्री चद्रसूरिसंरचिता जीतबृहच्चूर्णि-दुर्गपदविषया निशीथादिशास्त्रानुसारतः संप्रदायाच सुगमा व्याख्येति ॥

यावल्लवणोदन्वान् यावन्नक्षत्रमडितो मेरु ।
यावच्चन्द्रार्कौ तावदिय वाच्यता भव्यै. ॥

परिशिष्टम् ।

पृष्ठ ५३ उपरि सूचितं (२४–14) जीतकल्पयन्त्रम् ।

निरपेक्ष	आचा०कृत	आचा० अकृत	उपा० कृत	उपा० अकृत	गी० स्थि० कृत	गी० स्थि० अकृत	गी० अस्थि० कृत	गी० अस्थि० अकृत	अगी० स्थि० कृत	अगी० स्थि० अकृत	अगी० अस्थि० कृत	अगी० अस्थि० अकृत
०	पाराचिक	अनवस्था०	अनवस्था०	मूल	मूल	छेद	छेद	६।	६।	६	६	४।
०	अनवस्था०	मूल	मूल	छेद	छेद	६।	६।	६	६	४।	४।	४
मूल	मूल	छेद	छेद	६।	६।	६	६	४।	४।	४	४	०
छेद	छेद.	६।	६।	६	६	४।	४।	४	४	०	०	०
६।	६।	६	६	४।	४।	४	४	०	०	०	०	२५
६	६	४।	४।	४	४	०	०	०	०	२५	२५	२०
४।	४।	४	४	०	०	०	०	२५	२५	२०	२०	१५
४	४	०	०	०	०	२५	२५	२०	२०	१५	१५	१०
०	०	०	०	२५	२५	२०	२०	१५	१५	१०	१०	५
०	०	२५	२५	२०	२०	१५	१५	१०	१०	५		
२५	२५	२०	२०	१५	१५	१०	१०	५				
२०	२०	१५	१५	१०	१०	५						
१५	१५	१०	१०	५								
१०	१०	५										
५												

मुनि जिनविजय–सम्पादित ग्रन्थावली

१ जैनतत्त्वसार–हिन्दी भाषांतर.
२ विज्ञप्तित्रिवेणि–संस्कृत हिंदी.
३ कृपारसकोष–संस्कृत हिंदी.
४ शत्रुंजयतीर्थोद्धार प्रबंध–संस्कृत हिंदी.
५ द्रौपदीस्वयंवर नाटक–संस्कृत हिंदी.
६ प्राचीन जैनलेखसंग्रह भाग १. संस्कृत गूजराती.
७ „ „ भाग २. „ „
८ जैन ऐतिहासिक गूर्जरकाव्य संचय–गूजराती.
९ हरिभद्राचार्यस्य समयनिर्णयः–(संस्कृतनिबन्धः)
१० कुमारपालप्रतिबोधः–(गायकवाडस् ओरिएन्टल सीरीज.)
११ प्राकृतकथासंग्रहः–(गूजरात पुरातत्त्व मन्दिर ग्रंथावली.)
१२ पालीपाठावली. „ „ „ „
१३ अभिधानप्पदीपिका–पालीशब्दकोष „ „
१४ जैनसाहित्यसंशोधक त्रैमासिक पत्र. खंड १–२.

छपाता ग्रन्थो

१५ प्राचीन गूजराती गद्यसन्दर्भ.
१६ पट्टावलीसंग्रहः
१७ विजयदेवमाहात्म्य.
१८ गूजरातनां इतिहासना साधनो.